

उसूले काफ़ी

भाग 1

शेख़ मो॰ याकूब कुलैनी अ.र.



बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

उसूले काफ़ी

जिल्द अव्वल

**किताबुल्अक़्ल वल जेहल
व किताबुत्तौहीद**

हज़रत सिकतुल इस्लाम अल्लामा फ़हहामा
मौलाना शेख़ बिन मोहम्मद याकूब
कुलैनी अलैहिर्रहमा

तरजमा

मुफ़स्सिरे कुर्आन आली जनाब अदीबे आज़म
मौलाना सय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िबला

नाशिर

अब्बास बुक एजेन्सी,
रूस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास अ0
लखनऊ–3

नाम : **उसूले काफ़ी** (जिल्द अव्वल)

मोअल्लिफ़ : सिक़तुल इस्लाम मौलाना शेख़ बिन मोहम्मद याकूब कुलैनी अहैहिर्रहमा

तरजमा : मुफ़स्सिरे कुर्आन आलीजनाब अदीबे आज़म मौलाना सय्यद **ज़फ़र हसन साहब** क़िबला

सन–ए–तबाअत : जून 2003

मतबूआ : ए. बी. सी. आफ़सेट प्रेस, दिल्ली

ज़ेरे एहतेमाम : मौलाना सय्यद अली अब्बास साहब तबातबाई

नाशिर : **अब्बास बुक एजेन्सी**

कम्पोज़िंग : **कम्पोजीटर**, (इमरान ज़ैदी) काज़मैन लखनऊ फोन न. : 0522–2262257

हदिया : रूपया

मिलने का पता

अब्बास बुक एजेन्सी

रूसतम नगर, हज़रत अब्बास अ0, लखनऊ

फोन न. : 2647590, 2001816

फेक्स : 0522–2265419

अर्ज़े नाशिर

कुरआने मजीद के बाद रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम और अइम्मए ताहेरीन अलैहिमुस्सलाम से मन्कूल हदीसें इस्लाम के लिये सरमायए हयात और मुसल्मानों के लिए सर चशमए हिदायत हैं। इन हदीसों के बग़ैर इन्सान न तो तौहीद का फ़लसफ़ा समझ सकता है न कुरआनी अहकाम से आगाह हो सकता है और न दीन से मुकम्मल तौर पर वाक़फ़ियत हासिल कर सकता है।

कुरआन की इजमाली आयात की तरफ़सीर, मुतशाबेहात की ताबीर, वाक़ेआत की तौज़ीह, अहकाम की अमली सूरत, नासिख़ व मन्सूख़ और आम व ख़ास का इल्म मासूमीन की हदीसों के सिवा और किसी ज़रिये से नहीं हो सकता।

सिर्फ़ कुरआने मजीद हमारी हिदायत के लिये काफ़ी नहीं है क्योंकि सामित (ख़ामोश) होने की बिना पर वह किसी आयत के ग़लत मफ़हूम समझने वाले को टोक नहीं सकता, उसके अमल की इस्लाह नहीं कर सकता इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम ने कुरआन के साथ साथ एक मासूम गिरोह को भी मौअय्यन किया है जिसका नाम अहलेबैत व इतरत है और हदीसे सक़लैन इस पर शाहिद है"।

लेहाज़ा मालूम हुआ कि हर ज़माने में एक मासूम ज़ात जो मकतब, 'इल्मे लदुन्नी' की सनद याफ़्ता हो और उसने दुनिया के किसी मदरसे में तालीम न हासिल की हो। और उससे किसी ग़लती का इम्कान न हो कुरआन के

साथ साथ रहे, ताकि वह गुम्राहों को सही रास्ता दिखलाती रहे।

वक़्त का अहम तक़ाज़ा है कि मासूमीन अलैहिमुस्सलाम की उन हदीसों को हिन्दी लिपि में भी मुन्तक़िल किया जाये जो अर्बी फ़ारसी और उर्दू किताबों का सरमाया हैं।

लेहाज़ा इस ख़्याल के तहत हमारे इदारे ने हज़रत सिक़तुल इस्लाम मौलाना शेख़ मोहम्मद याकूब कुलैनी अलैहिर्रहमः की किताब उसूले काफ़ी को जिसका उर्दू तरजमा आली जनाब अदीबे आज़म मौलाना स० ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला ने किया है, को हिन्दी में ब–तदरीज शाया करने का फ़ैसला किया और हम जिल्द अव्वल की इशाअत की सआदत हासिल कर रहें हैं और इन्शाल्लाह बहुत जल्द बाक़ी चार जिल्दें भी मन्ज़रे आम पर आ जायेंगी। हमें उम्मीद है कि हन्दी दां तबक़ा भी इस किताब से भरपूर इस्तेफ़ादा करेगा। यहां तक उसकी दुनिया व आख़िरत के चिराग़ रौशन व मुनव्वर हो जायें।

एहक़रुल इबाद
स० अली अब्बास तबातबाई
अब्बास बुक एजेन्सी,
दरगाह हज़रत अब्बास अ०
रूस्तम नगर, लखनऊ

फेहरिस्त किताबुश्शाफ़ी

तरजमा उसूले काफ़ी जिल्द अव्वल

Presented by: https://jafrilibrary.com

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर्ज़े मुतरजिम

खालिके़ कौनो मकां की हम्द और मोहम्मद स. व आले मोहम्मद अ. पर दुरूद व सलाम

मन्ज़ूर है गुज़ारिशे अहवाल वाक़ई ।
अपना बयान हुस्ने तबीयत नहीं मुझे ।।

अब कि मेरी उम्र का क़दम 81 वें साल की मन्ज़िल में है अपनी ज़िन्दगी के अज़ दस्ते राफ़्ता दौर पर एक ताएराना नज़र डाल रहा हूँ इन 81 साल के अन्दर क्या क्या किया है कैसी दुशवार गुज़ार मन्ज़िलें सामने आयीं। एक तवील दास्तान है जिस का मुफ़स्सल हाल मेरी सवानेह उम्री से मालूम हो सकेगा। अगर छप गयी। हुसूले तालीम के बाद शौक़ के बारे में अज़्म व इरादा ने जांकाही और जिगर कारी का एक लम्बा छोटा प्रोग्राम मेरे शबाब के सामने रखा। हमागीर तबीयत ने हर गोशे पर नज़र डाल कर हिम्मत को रफ़ीक़े कार और क़लम को वारदाते क़ल्बी का आइनादार बना कर तसनीफ़ व तालीफ़ के वसीअ व अरीज़ मैदान में दौड़ लगानी शुरू कर दी और मुख़तलिफ़ मज़ामीन की जुस्तुजू और अरबाबे इल्म व फ़ज़ल की तहक़ीक़ मालूम करने के शौक़ में कुतुब बीनी के मशग़ले को जुनून की हद तक पहुंचा दिया न दिन को चैन न रात को आराम।

तमत्तो जे हर गोशा याफ़्तम

ज़ेहर ख़िरमने खोशा याफ़्तम

शौक़ ने कद व काविश में लज़्ज़त पैदा की मगर बड़ी तकलीफ़ के साथ, किताबों का ज़ख़ीरा करना मुझ जैसे बे सरमाया आदमी के लिये आसान काम न था। बहुत सी ज़रूरतों से दस्त कश होकर इस शौक़ को साल हा साल पूरा करता रहा। मुख़तलिफ़ गुलज़ारों से बरसों की मेंहनत के बाद जो फूल जमा किये थे उनके गुलदस्ते बना कर अहले नज़र के सामने पेश करने का शौक़ भी रहा, मेरे सामने एक तलातुम ख़ेज़ समन्दर था जिस के हौलनाक गिरदाबों में कभी कभी ऐसा फ़ंस्ता था कि निकलना दुशवार हो जाता था तख़्य्युल की दुनिया में कितने चिराग़ जले और बुझ गये। तालीफ़ की सतह पर कितने बने और बिगड़ गये। ना–दीदा राहें यूँहीं तय होती हैं। हर काम की इबतेदाई मन्ज़िलें यूँ नहीं सर फ़ोड़ और सीना तोड़ होती हैं।

कि इश्क आसान नमूद अव्वल

दिले उफ़्ताद मुश्किलहा

यह ख़ुदा का फ़ज़्ल था कि हवादिस के सैलाब व अफ़कार व आलाम तेज़ आंधियों में मेरे इरादों के झन्ड़े सर निगूं न हुए और जो क़दम आगे बढ़ गये थे वह पीछे न हटे।

जहां तक मुझे याद है मैने 1918 ई. में अपने कमीयत क़लम को मैदाने तसनीफ़ व तालीफ़ में जौला किया था। इन 47 साल की तवील मुद्दत में आतिशे शौक़ की शोला फ़िशानी रोज़ ब–रोज़ बढ़ती ही चली गयी, जो क़लम

उंगलियों की गिरफ्त मे आया था आज तक न छूटा जिस तरह एक हरीफ़ माल अपनी ज़िन्दगी का हर लम्हा इस फ़िक्र में गुज़ारता है कि उस की दौलत में रोज़—ब—रोज़ इज़ाफ़ा हो मुझे भी यह धुन थी कि तसनीफ़ व तालीफ़ का वज़्न बढ़ता ही जाये इस मशक़्क़त आगीं धुन में ना—मालूम कितने क़लम चलते चलते घिस गये और कितने रिम सफ़ेद से सियाह बन गये इस कुतुब बीनी और ख़ामा फ़रसाई के शौक़ ने रातों की नींद हराम कर दी और दिनों का चैन रूख़सत कर दिया।

शबे तारीक व बीमजां व गिरदाबे चुनी हाल।
चे मी दानद हालेमा सुबुक सारां साएलहा।।

तसनीफ़ के साथ साथ 1940 ई. से रिसाला नूर के कम अज़ कम 40 सफ़हात हर माह पुर करने का बार भी सर पर आया। जिस ने औक़ाते फुरसत तंग से तंग तर बना दिये। मोहकमये तालीम में मुलाज़ेमत की अहम ज़िम्मादारियाँ भी अपने आहनी पंजों में जकड़े चली आ रही थी 38 साल तक हिन्दुस्तान के शबो रोज़ इसी मशग़ले में मुज़रते रहे। मई 1950 ई. में जब पाकिस्तान आया तो अपने इस दुश्मने अय्याम व आसाइशे शौक़ को साये की तरह अपने साथ लाया। यहाँ भी न दिन बदले न रातें। वही मेहनत वही जिगर कावी, यहाँ आकर मुलाज़ेमत का तौक़े ख़ारदार तो गरदन में न था। लेकिन जामिया इमामिया की तासीस व तन्ज़ीम का ऐसा भारी बोझ सर पर आया जिस से आज तक छुटकारा न मिला। कई साल ऐसे गुज़रे कि इसके सिवा और किसी काम की तरफ़ तवज्जोह करना दुशवार हो गया। अल—ग़रज़ जाँ बाज़िया वही रहीं मैदान बदल गया।

1918 ई. से अब कि 1966 ई. तक क्या क्या लिखा

गया एक तूलानी दासतान है मुख़तसर यह है कि तसानीफ़ की तादाद दो सौ तक पहुँच गयी। इसमें 8 सफ़ह से लेकर 800 सफे तक की किताब है जब तक हिन्दुस्तान में रहा अदबी और मज़हबी दोनों क़िस्म की किताबें लिखी जाती रहीं लेकिन पाकिस्तान में आकर तमाम तर तवज्जोह मज़हबी किताबें लिखने की तरफ़ मबजूल हो गयी। हदीस की मशहूर किताब जामेउल अख़बार का तरजुमा तोहफ़तुल अबरार हिन्दुस्तान में ही छपवा दिया था। पाकिस्तान में तरजुमें की ख़िदमत 1962 ई. से शुरू हुई पहले मनाक़िब इब्ने शहर आशोब अलैहिर्रहमा का तरजुमा मजमउल फ़ज़ाएल के नाम से क़िस्तन क़िस्तन रिसालए नूर में शाया करना शुरू किया जो सितम्बर 1964 ई. तक दो जिल्दों में मुकम्मल हो गया।

अगर चे अब दिमाग़ी कुव्वतें एक बड़ी हद तक मुज़महिल हो चुकी थीं और पीराना साली के तबर्रूकात ने इस क़ाबिल नहीं रखा था कि कोई अहम ख़िदमत अन्जाम दे सकूँ। मगर शौक़ की सितम ज़रीफ़ी देखिये कि उसने हिम्मत की तहे ख़ाक तर चिन्गारियों को हवा देनी शुरू कर दी। हौसेले ने ललकारा कि ख़बरदार क़लम हाथ से न रखना। अभी एक ज़रूरी काम और करना है उसूले काफ़ी का तरजुमा अभी तक शाया नहीं हुआ है क़ौम की इस ज़रूरत को भी पूरा करते जाओ अगर ज़िन्दगी ने मोहलत दी तो लगे हाथों यह मैदान भी मार लोगे और मरने के बाद लोग यह शेर पढ़ दिया करें गे।

लिखे जब तक लिखे गये नामें।
चल दिये हाथ में क़लम थामें ।।

अफ़सुरदा तबीयत ने उज़्र किया अब मेरा ज़ोर ख़त्म हो गया वह क़दम थक चुके जिन्होंने लम्बे चौड़े मैदानों में

दौड़ लगाई थी जिन्होंने हौलनाक ख़ारज़ारों को अपने तलवों से कुचला था अब उन हाथों में दम नहीं जिन्होंने छः छः घन्टे रोज़ाना क़लम चलाया था और पहाड़ खोद खोद कर तिनका निकाला था जोशे तबीयत पर ओस पड़ गयी है और कुव्वते हाफेज़ा मफ़लूज हो कर रह गयी है इतनी दुश्वार गुज़ार मंन्ज़िल इन थके हारे क़दमों, बुझी तबीयत और टूटी हिम्मत से कैसे सर होगी। काश यह काम जवानी में होता तो इस बाग़ की बहार ही कुछ और होती, इस तसनीफ़ का रंग ही निराला होता, अब सूखे दरिया में सेलाब कहां, बुझी आग में शोले कहां, मगर वक़्ती ज़रूरत और अहम दीनी ख़िदमत के पेशे नज़र इस बारे अज़ीम को उठाना ही पड़ा। जिसे अल्लाहो नेअमल वकील लरज़ते हाथों में क़लम ले कर अव्वल ख़ुदा से फिर चहारदह मासूमीन अलैहिस्सलाम की अरवाहे तय्यबा से तालिबे इम्दाद हुआ उन्हीं की ताईद पर भरोसा करके इन ईमान अफ़रोज़ और हक़ीक़त आगीं अहादीस का तरजुमा अपने ज़िम्मे ले लिया। सहो व निसयान का पैकर हूँ और पीरी की मन्ज़िल में पड़ा हुआ हूँ हर क़दम पर ठोकर खाने का इम्कान है अहले नज़र से चश्म पोशी की उम्मीद।

यह तरजुमा नवम्बर 1964 ई. रिसालए नूर में शाया होना शुरू हुआ था। जनवरी 1966 ई. में बिहम्दिल्लाह जिल्द अव्वल का तरजुमा मुकम्मल हो गया मैं अपने माबूदे बरहक़ का कहां तक शुक्रिया अदा करूँ कि उसने यह सआदते उज़मा मेरे नाम पर लिखी और रोज़े हश्र मेंरे लिये ज़रियए बख़शिश क़रार दिया।

ई सआदत ब ज़ोरे बाज़ू नीस्त ।
ता न बख़्शीद ख़ुदाए बख़्शिंदा।।

रोज़े क़ियामत जब सब लोग अपना अपना नामए आमाल लिये हुए होंगे मैं अपना यह तरजुमा बग़ल में दबाए बारगाहे बारी में अर्ज़ करूँगा ऐ ख़ालिक़े बरहक़ ऐ माबूदे मुतलक़ तेरा यह गुनाहगार व सियाहकार बन्दा अपनी बख़शिश का एक ज़रिया लेकर आया है पालने वाले मैं ने तेरे प्यारों की प्यारी प्यारी बातों को उन लोगों के सामने पेश किया जो अरबी ज़बान से ना–बलद थे और जो अपने हादियाने दीन की हदीसों से फैज़ियाब होने को तरसते थे लेहाज़ा मेरी इस मेहनत के सिले में मेरे मआसी को बख़्श दे, मुझे अपने उन मुक़द्दस बन्दों की ख़िदमत में पहुंचा दे जिनकी हिदायत को जिनकी हदीसों को मैंने इस किताब के ज़रिये अहले ईमान को पहुंचाया। तेरी पाक ज़ात ग़फ़ूर व रहीम है तू ज़र्रा नवाज़ है तेरी रहमत बहाना ढूंड़ती है।

रहमते हक़ बहाना न जोयद
रहमते हक़ बहाना मी जोयद

हर माह रिसाला नूर की कुछ कापियां ज़्यादा छपवा ली जाती थीं जिनकी तादाद 200 से ज़्यादा न थी तरजुमा तमाम होने के बाद उन सब शुमारों को किताबी सूरत में लाया गया ख़ुदा का शुक्र है कि मेरी यह ख़िदमत क़ौम को पसन्द आयी उन्होंने मुझे तहसीन व आफ़रीन के ख़ुतूत लिखे मेरी हिम्मत अफज़ाई की और हर तरफ़ से इस किताब की तलबी हुई जब मैंने यह देखा कि यह 200 नुस्ख़े बहुत जल्द ख़त्म होने वाले हैं तो जदीद एडीशन की तय्यारी की ख़ुदा करे यह ख़ुशनुमा किताब की सूरत जल्द शाएक़ीन तक पहुंच जाये।

अस्सईयो मिननी
बल्इत्मामो मिनल्लाह

पेश लफ़्ज़

कुरआने करीम के बाद हमारी हिदायत का सब से बड़ा सर–चश्मा चहारदह मासूमीन अलैहिस्सलाम की अहादीस हैं बग़ैर उनके अहकामे कुरआनी समझ मे नहीं आ सकते। कुरआन के इजमाल की तफसील, मुतशबेहात की तावील, आयात की शाने नुजूल, वाक़ियात की तौज़ीह, अहकाम की अमली सूरत, नासिख़ व मन्सूख़ आम व ख़ास का इल्म अहादीसे मासूम के सिवा और किसी ज़रिये से नहीं को सकता। मासूम के सिवा हम किसी के क़ौल को क़ाबिले वुसक़ व लाएक़े एतमाद नहीं जानते क्योंकि अहले बैत *अदरा माफ़िल्बैत* (घर वाला ही घर की बातों को ख़ूब जानता हैं) जिन के घर में कुरआन नाज़िल हुआ हो उनसे बेहतर कुरआन का समझने वाला कौन हो सकता है और सिवाए मासूमीन अ० के दूसरे के बयान को वुसूक़ के साथ कैसे माना जा सकता है।

सिर्फ़ कुरआन हमारी हिदायत के लिये काफ़ी नहीं, क्यों कि वह सामित है किसी आयत के ग़लत मफ़हूम समझाने वाले को वह टोक नहीं सकता। उसके अमल की इसलाह नहीं कर सकता। इस लिये पैग़म्बर स. ने कुरआन के साथ एक मासूम गिरोह को किया है जिन का नाम अहलेबैत व इतरत है हदीसे सक़लैन इस पर शाहिद है लेहाज़ा मालूम हुआ कि हर ज़माने में एक मासूम ज़ात जो मकतबे *मिन लदुन* की सनद याफ़्ता हो और जिसने दुनिया के किसी मदरसे में तालीम हासिल न की हो, सहो व निसयान से मुबर्रा हो। कुरआन के साथ साथ रहे ताकि

गुम करदा राहों को सही रास्ते पर लगाये और उस की तालीम में किसी वक़्त भी ग़लती का इमकान न हो और उसके अमल में नादुरुस्ती और ना–हमवारी आने वाहिद के लिये भी न पाई जाये उस का इल्म वहबी हो कसबी न हो, सिर्फ़ यही एक सूरत ऐसी है कि हर तालीम क़ाबिले कुबूल हो सके।

जिन लोगों ने अहलेबैत का दामन छोड़ा और उलूमे इलाहिया को दूसरे से लिया, वह *फ़ी कुल्ले दारिन मुहामेना* का मिसदाक़ बन कर रहे इसी का यह नतीजा था कि इस्लाम तिहत्तर फ़िरक़ो में तक़सीम हो गया और मज़ा यह है कि हर फ़िरक़ा अपने आप को कुरआन ही से मुतमस्सिक बनाता है। *इन्ना हाज़ा लशैइन ओजाब* अगर चे अबनाए रोज़गार की बदतमीज़ी, तास्सुब केशी और इस्लाम दुश्मनी ने हमारे अइम्मा को उलूमे दीनिया के नश्र का और आयाते कुरआनी की सही तफ़सीर बयान करने का मौक़ा न दिया और उनमें से अकसर को क़ैद व बन्द की तकलीफ़ में मुबतेला रखा। माल व दौलत के परस्तारों और सलतनत के हवा ख़्वाहों को उनकी मुख़ालेफ़त पर उभारा और उनके वक़ार को कम करने के लिये कोई दक़ीक़ा उठा न रखा और ताहम उनकी हिदायत की रौशनी लोगों तक न पहुंचने दी। ख़ुदा के यह बरगुज़ीदा बन्दे किसी हालत में भी अपने फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल न रहे तीर व तार क़ैद ख़ानों में भी तालीम व तबलीग़ का सिलसिला ब–दस्तूर जारी रहा चूंकि उनकी मुक़द्दस ज़िन्दगी का मक़सद ही सिर्फ़ यह था कि ख़ल्क़े अल्लाह की हिदायत करें लेहाज़ा उस राह में जिन तकलीफ़ का भी उन को सामना हुआ व ख़ुशी ख़ातिर उनको बरदाश्त किया।

ज़माने की जुल्म पसन्दी और सितम ज़रीफ़ी उस से ज़्यादा क्या होगी कि जो लोग उनकी ख़िदमत में इल्मे दीन हासिल करने के लिये आते थे उन पर सलतनत की कड़ी नज़र होती थी। उनको हुकूमत का बाग़ी और ग़द्दार क़रार दिया जाता था मआशी मराआत उनसे सल्ब करली जाती थीं तरह तरह से उनको सताया जाता था। इन्तेहा यह है कि उस मनहूस दौर में अइम्मा—ए—अहलेबैत में से किसी का नाम लेकर कोई हदीस नक़ल करना ना क़ाबिले मआफ़ी जुर्म था उसके क़त्ल के लिये तलवार थी या ज़हेर की पुड़िया। ऐसी हालत में यह मोजिज़ा ही कहा जा सकता है कि इन हौलनाक वाक़ियात के होते हुए भी उन हज़रात का कलाम महफ़ूज़ रहा अइम्मा अ० में सबसे ज़्यादा अहादीस बयान करने का मौक़ा हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अ० और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम को मिला। क्योंकि सलातीने वक़्त उस ज़माने में पेचीदा मसाएल से दो चार थे और सलतनत का इन्क़ेलाब रंग लाया था।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम मस्जिदे रसूल स० में दर्स देते थे दूर दूर से लोग अहादीस सुनने के लिये मदीना—ए—तय्येबा में आते थे। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से हदीस नक़्ल करने वाले चार हज़ार आदमी थे उनमें इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मालिक, सूफ़ियाने सूरी, शअबा अबू आसिम और यहया अन्सारी जैसे लोग जो सवादे आज़म में अइम्मए हदीस समझे जाते हैं। शामिल थे उस अहदे मुबारक में चार सौ कुतुबे अहादीस मुदव्वन हुई जिन को उसूले अरबए आम्मा कहा जाता है दुश्मनाने अहलेबैत अ. के तअस्सुब आगीं

दौर और बहीमाना दस्त बुर्द ने उन्हें तबाह व बरबाद करने में कोई कसर उठा न रखी, निहायत बेदर्दी से बनी उमय्या और बनी अब्बास के दौर में शियों के कुतुब खाने नज़्रे आतिश किये गये वह अहादीस का नापैदा किनार समन्दर था जिस से आज तक कुतुबे अरबा अहादीस का चमनिसतान तरो ताज़ा है यानी काफ़ी इस्तिब्सार, मन ला यहज़ोरूल फ़कीह। और तहज़ीबुल अहकाम से शबिस्ताने ईमान व इरफ़ाने अदब और ऐवाने फ़िक़हे अहलेबैत में ज़िया बारी है।

ज़माने की नामुसाएदत, सलतनतों की इन्क़ेलाबी हलचल उलमाए इस्लाम के इन्तेहाई तास्सुब और बादशाहाने वक़्त की इतरते रसूल स0 से दुश्मनी ने मुसलमानों को उन हज़रात की अहादीस से ऐसा नाकारा बना दिया कि लोगों ने उन को किसी मौजू पर दरख़ोरे एतना ना समझा। क्या यह सुन कर आप को ताज्जुब न होगा कि अबू हुरैरा जो फतहे मक्का के बाद ईमान लाये थे और जिनका शुमार फुक़राए सफ़ा में था और जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम की सोहबत का शरफ़ ज़्यादा से ज़्यादा ढाई साल ही तक हासिल हुआ था 5374 अहादीस मरवी हैं जिसमें सिर्फ सही बुख़ारी में 446 हैं और हज़रत अली अ0 से कुल रवायतें 586, और जनाबे फ़ातेमा ज़हरा सलवातुल्लाहे अलैहा से कुल 19, बाक़ी अइम्मा से सिफ़रे महेज़ सहाहे सित्ता वग़ैरा में क़ातिलाने हुसैन अ0 और दीगर बदनाम दुश्मनाने अहलेबैत अ0 तक से एक दो नहीं बहुत सी हदीसों को नक़्ल किया गया है लेकिन उन मासूम हस्तियों को अहादीस के हर सिलसिले में नज़र अन्दाज़ कर देना ज़रूरी समझा गया।

कुतुबे अरबा अहादीस और हम

जब रसूलुल्लाह स0 ने कुरआन के साथ अहलेबैत अ0 को किया है तो हर शिया का फ़र्ज़ है कि कुरआन के साथ अ–हदीसे अइम्मा को भी अपने घर में रखे। क्या हमारे इस अमल से रसूले ख़ुदा और अइम्मए ताहेरीन ख़ुश होगें कि हम उनकी अहादीस को ताक़े निसयां पर रख दें और कभी यह मालूम करने की कोशिश न करें कि उन हज़रात ने हिदायात व इरशादात के कितने दरवाज़े हम पर खोलें हैं काश उन को यह पता होता कि कुरआन की तरह कुतुबे अहादीस का घर में रखना भी बाएसे रहमत व बरकत है मोमिन की अलामतों में से एक यह भी है कि कम अज़ कम चालीस हदीसें तो उसे याद हों लेकिन यहां तो यह हाल है कि याद होना तो एक तरफ़ चालीस हदीसों को किसी किताब में पढ़ा भी नहीं। सिर्फ़ वाएज़ीन व ज़ाकेरीन से सरे मिम्बर जो दो चार हदीसें सुन ली जाती हैं। हुसूले सआदत के लिये उन्हीं को काफ़ी समझा जाता है हांलां कि मजलिस से बाहर आने के बाद शाएद ही उन में से एक आध याद भी रहती हो।

जो हज़रात अरबी ज़बान से ना वाक़िफ़ हैं वह यह उज़्र कर सकते हैं कि अहादीसे रसूल व अइम्मए ताहेरीन पर हमारा ईमान है लेकिन यह सब ज़ख़ीरा अरबी में है लेहाज़ा ऐसी सूरत में हम उन से क्यों कर फ़ाएदा हासिल करें यह उज़्र बिलकुल दुरूस्त है जो बात समझ में ही न आये उस से दिलचस्पी कैसे पैदा हो। यह एक तल्ख़ हक़ीक़त है कि कुतुबे अहादीस के उर्दू तरजुमे की तरफ़

हमारे उलमा ने बहुत कम तवज्जोह दी है जिस तरह कुरआन के मुतअद्दिद तरजुमे हुए, अहादीस के भी होने चाहिये थे खुसूसन उसूले काफ़ी की सारी जिल्दों का तरजुमा तो ज़रूर ही करना था। लेकिन बद क़िसमती से अब तक ऐसा न हुआ लोगों ने राक़िमुल हुरूफ़ को बार बार इसकी तरफ़ तवज्जेह दिलायी लेकिन मैं कई साल तक इस लिये टालता रहा कि अगर मुझ से बेहतर आदमी इस काम को कर गुज़रे तो अच्छा हो। कई साहेबाने इल्म को मैंने खुद तवज्जोह दिलाई। लेकिन जब किसी तरफ़ से सदाए बर नख़ास्त हुई, मजबूरन यह अहेम ख़िदमत मुझे अदा करना पड़ी। ख़ुदा मेरी इस ख़िदमत को कुबूल फ़रमाये।

हज़राते अहलेसुन्नत ने न सिर्फ़ सहाहे सित्ता का बल्कि अपने मज़हब की तमाम मशहूर किताबों का तरजुमा करा के छपवा दिया है जिन से अवामुन्नास तक फ़ाएदा हासिल कर रहें हैं मगर हम अपने इल्मे कलाम व हदीस की मख़सूस किताबों में से किसी का भी तरजुमा न कर पाये हालांकि अहले इल्म के नज़दीक कोई बड़ी बात न थी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं चूंकि अरबी और फ़ारसी के जानने वाले रोज़ ब–रोज़ कम होते जा रहें हैं लेहाज़ा शदीद ज़रूरत है कि अपनी ख़ास ख़ास किताबों के तरजुमे जल्द अज़ जल्द शाया किये जायें।

काफ़ी और उस के मुसन्निफ़ के मुताल्लिक़

कुतुबे अहादीस में काफ़ी को एक ख़ास दरजा हासिल है इस किताब के मोअल्लिफ़ रईसुल मोहद्दिसीनुलएज़ाम रूऊसुत्तालेहीनुल्कराम अल्मुहल्ली बिल्मज्दे वल्इकराम जनाब

सिक़तुल इस्लाम शेख़ अबू जाफ़र मोहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी अर्राज़ी अत्तरल्लाहो मरक़दूह व नव्वरल्लाहो मज़्जऊद है जो चौथी सदी हिजरी के आग़ाज़ में थे (940 ई.–329 हि.) जनाब कुलैनी अलैहिर्रहमा ने हज़रत साहेबुल अम्र अलैहिस्सलाम के ज़मानाए ग़ैबते सुग़रा में इन अहादीस को 20 साल की मुद्दत में मुदव्वन किया। बाज़ अकाबिर के कलाम से मालूम होता है कि किताबे काफ़ी में सोलह हज़ार एक सौ निन्नयानवे अहादीस हैं इस किताब में ज़ईफ़ रवायते भी हैं जिनकी तौज़ीह अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा ने मिरअतुल उक़ूल शरह उसूले काफ़ी में फ़रमा दी है यह क़ौल कि हज़रत हुज्जत ने इस किताब के मुताल्लिक़ फ़रमाया, ***हाज़ा क़ाफिन लेशीअतेना*** (यह हमारे शियों के लिये काफ़ी है।) सहीह नहीं है हमारे किसी आलिम ने ऐसा नहीं कहा। इस में सहीह मोअस्सक़, क़वी और ज़ईफ़ हर तरह की अहादीस हैं चूंकि कुलैनी अलैहिर्रहमा को अहादीस की तलाश में बीस साल तक बराबर जा–बजा जाना पड़ा, और जहां से जो हदीस मिली उसको ले लिया। लेहाज़ा बहुत सी अहादीस ऐसी भी उन को मिली हैं जिन को लोगों ने ब–सूरते तक़य्या बयान किया। लेकिन चूंकि इसमें ज़्यादातर अहादीस सही हैं लेहाज़ा यह हमारी मोतबर किताबों में है काफ़ी की बेहतरीन शरह मिरअतुल उक़ूल अरबी में है और अस साफ़ी फ़ारसी में है काफ़ी से पहले हदीस की इतनी बड़ी और जामे किताब न थी काफ़ी के बाद उलमा ने उन किताबों की तरफ़ रूजू कम करदी। उसूले काफ़ी जिल्द अव्वल में सिर्फ़ मसलए इमामत के मुताल्लिक़ 127 बाब में अहादीस दर्ज की गयी

हैं उनको पढ़ने से मालूम होगा कि इमाम मन्सूस मिनल्लाह की शान क्या होती है।

शेख़ अबू जाफ़र मोहम्मद कुलैनी 250 हि. में रे के करिया कुलैन में पैदा हुए, अज़मत व शोहरत व फन के लेहाज़ से जो दर्जा सिक़तुल इस्लाम जनाब कुलैनी को हासिल हुआ वह शिया मोहद्देसीन में किसी को न मिल सका। उनकी किताब काफी कुतुबे अरबा में सब से अहम ख़याल की जाती है इब्ने असीर ने उनको मुजद्दिदे मज़हबे इमामिया माना है उन का कुल ख़ानदान जिनमें बड़े बड़े उलमा थे क़रिया कुलैन में आबाद था उनकी विलादत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के ज़माने में हुई। कुलैनी अलैहिर्रहमा पहले शख़्स हैं। जिन्होंने अहादीस को अबवाब की सूरत में मुदव्वन किया वह नक़्ले अहादीस में औसकुन नास समझे जाते हैं उनकी वफ़ात बग़दाद में हुई और बाबे कूफ़ा के मक़बरे में दफ़्न हुए। मोहम्मद बिन जाफ़र हुसैनी ने उनके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी। अल्लामा सय्यद हाशिम बहरीनी ने रौज़तुल आरेफ़ीन में नक़्ल किया है कि एक सिक़ह आलिम ने मुझ से बयान किया कि बग़दाद के एक हाकिम ने जब कुलैनी अलैहिर्रहमा की क़ब्र देखी तो पूछा यह कौन है किसी ने कहा कि यह शिया आलिम थे उसने कहा कि उनकी क़ब्र ख़ोद डालो। जब क़ब्र खोदी गयी तो उनकी मय्यत मअकफ़न ब–दसतूर क़ब्र के अन्दर मौजूद थी उस ने हुक्म दिया कि क़ब्र बन्द कर दो और उस पर कुब्बा बना दो।

किताबुश्शाफ़ी

तरजमा उसूले काफ़ी

जिल्द अव्वल पर उलमाए शिया के तबसिरे
अज़ क़लम हक़ीकत रक़म सरकार
हुज्जतुल इस्लाम वल मुसलेमीन
सुलतानुल्मुतकल्लेमीन रईसुल मोहद्देसीन जनाब
अल्लामा मोहम्मद हसन साहब क़िबला
मुजतहिद
प्रिंसपल दारूल उलूम मोहम्मदिया
सरगोधा दामत बरकातोहू व अम्मत इफ़ाज़ातोहू

बे—इस्मेही सुब्हान्हू

मोक़द्दमा

तमहीद : सरकार अदीबे आज़म मद्देज़िल्लहू की नज़रे इन्तेख़ाब इस गुनाहगार पर पड़ी और हुक्म दिया कि अश्शाफ़ी तरजमा उसूले काफ़ी पर मुक़द्दमा लिखो मैं अपनी गोनागों मसरूफ़ियात की कसरत और वक़्त की क़िल्लत के बा—वजूद इस अम्र को बाएसे सआदत दारैन समझते हुए तामीले हुक्म का वादा कर लिया। बावजूद अपनी अदीमुल फुरसती के ख़याल यह था कि किताब की

जलालते क़द्र के पेशे नज़र हस्बे हाल क़द्रे मबसूत मोक़द्देमा लिखा जायेगा और इस में तमाम मुताल्लिक़ा मबाहिस पर शरह व बस्त से तबसिरा किया जायेगा मगर सरकारे मौसूफ़ ने यह पाबन्दी आएद करदी कि यह मोक़द्देमा आठ सफ़हात से ज़ाएद न हो इसलिये ब–मोजिबुल मामूर मजबूर वल मजबूरे माज़ूर शदीद इख़तेसार से काम लेना पड़ा। ताहम ब–मुताबिक़ ***मालायुदरको कुल्लोहू ला मुतर्बरको कुल्लहू*** इस मोक़द्दमे को जामेअ व मानेअ बनाने और तमाम मुताल्लिक़ा उमूर पर कुछ न कुछ रौशनी डालने की कोशिश ज़रूर की गयी है। अब रहा कि हम इस कोशिश में कहां तक कामियाब हुए हैं इस का फ़ैसला क़ारेईने किराम ही इन्दल मुतालेआ कर सकें गे। ***अस्सईयो मिन्नी वल्इत्मामो मिनल्लाह***।

हदीस की तारीफ़ : लुग़वी मआनी के एतबार से हदीस कलाम के मुतरादिफ़ है और इस्तेलाहे मोहद्देसीन में बिना बर मशहूर हदीस उस चीज़ का नाम है जिस में क़ौल या फ़ेल या तक़रीरे मासूम की हिकायत की जाए मोहद्देसीन के नज़दीक ख़बर भी मजाज़न इस मानी में इस्तेमाल होती है बल्कि सुन्नत को जिस के इसतेलाही हक़ीक़ी मानी क़ौल या फ़ेल या तक़रीरे मासूम के हैं बाज़ औक़ात हदीस के मानों में इस्तेमाल किया जाता है (अज़ हदयतुल मोहद्देसीन) इब्तेदाए इस्लाम में लोग हाफ़िज़े के ज़ोर से ज़बानी हदीसें याद करके बयान किया करते थे मगर मरूर अय्याम से उसकी तदवीन व तरवीज हो गयी और इस सिलसिले की इबतेदा पहली सदी ही में हो गयी थी और बाद में तो इस फ़न ने बड़ी अहमियत हासिल की और इस्लाम में बड़े बड़े

जलीलुल क़द्र मोहद्दिस और हाफ़िज़ुलहदीस बुज़ुर्ग पैदा हुए।

फ़ने हदीस की फ़ज़ीलत : यह हक़ीक़त है कि उलूमे इस्लामिया में इल्मुलहदीस एक निहायत अज़ीमुश्शान और जलीलुल क़द्र इल्म है इस में नजाते दारैन और इस्लाहे निशात पोशीदा है यही इल्म तमाम हक़ाएक़ व मआरिफ़ का सर चश्मा और कुरआन फ़हमी का वाहिद ज़रिया है और मासूम की सीरत व किरदार और उनके अख़लाक़ व अतवार मालूम करने और अपनी सीरत व किरदार को उन के अख़लाक़ व महासिन आदाब के आइने में तशकील देने का सबब है उन्ही हक़ाएक़ की बुनयाद पर होकमाए रब्बानिय्यीन यानी अइम्मए ताहेरीन अपने नाम लेवाओ को उस इल्मे शरीअत के हासिल करने उसके पढ़ने पढ़ाने और लिखने लिखाने की बहुत तरग़ीब त तहरीस दिलाते थे चुनांचे हज़रत सादिके आले मोहम्मद स0 मुफ़स्सल से फ़रमाते हैं (उसूले काफ़ी सफ़ा 29 तबा लखनऊ) लिखो और अपने इल्म को अपने भाइयों में नश्र व इशअत करो और मरते वक़्त अपनी औलाद को कुतुब का वारिस बनाओ। क्योंकि लोगों पर एक मुश्किल दौर आयेगा जिसमें उनकी किताबों ही से मानूस होंगे यही बुज़ुर्गवार फ़रमाते हैं लिखो क्यों कि जब लिखो गे नहीं तो उस वक़्त तुम अहादीस को याद नहीं रख सकते। नीज़ आ-जनाब फ़रमाते हैं यानी सिर्फ़ एक हदीस जो किसी सादिकुल क़ौल शख़्स से हासिल की जाये। तमाम दुनिया और जो कुछ इस दुनिया में अज़ क़िस्म तिलाव नुक़रा है इस से बेहतर व बरतर है। (बिहारूल अनवार तबा ईरान) सरकार अल्लामा मजलिसी

रहमतुल्लाहे अलैहा फरमाते हैं (बिहारूल अनवार जिल्द 1 सफ़ा 3) मुझे अपनी ज़िन्दगी की क़सम मैने अहादीस को ऐसी कशतिये नजात पाया है जो सआदत के ज़ख़ीरों से लबरेज़ है और मीनारहाए नूर से इस तरह मुज़य्यन व मामूर पाया है जो जिहालत की तारीकियों से नजात देने वाले हैं मैंने कहीं कोई ऐसी बात नहीं पाई है जिसका निचोड़ अहादीस में न हो।

फ़ितना इन्कारे हदीस : मगर अफ़सोस है कि बाईं हमा मुसलमानों में हमेशा से ऐसा गिरोह भी मौजूद रहा है जो न सिर्फ़ यह कि हदीस की इफ़ादियत का मुनकिर है बल्कि वह यह कहता है :–

ई दफ़्तरे बे मानी ग़र्क़े मीनाब औला

इस फ़ितने का हजरे असास तो पैग़म्बरे इस्लाम के आख़िरी लमहाते हयात में आंजनाब के मुतालेबए क़लम व दवात के जवाब में हसबोना किताबुल्लाह (बुख़ारी शरीफ़ तबा मुजतबाई दिल्ली जिल्द 2 सफ़ा 238, मिश्क़ात सफ़ा 548 तबा असेहहुल मताबेअ दिल्ली) कह कर दिखाया गया था और उन्हीं हस्बोना किताबुल्लाह के क़ाएल के दौरे ख़िलाफ़त में हदीस बयान करने वालों के दुर्रे लगते थे (अल फ़ारूक़ शिबली नोमानी तबा गुलाम अली एण्ड सन्स लाहौर सफ़ा 247)

यह नज़रियए फ़ासेदा इस्लाम के मुख़तलिफ़ अदवार से गुज़र कर मौलवी चकड़ालवी और मिस्टर परवेज़ के वक़्त ख़ूब बर्ग व बार ले आया अब जबकि अपने असली रंग व रूप और हक़ीक़ी ख़दो ख़ाल के साथ मन्ज़रे आम पर ज़ाहिर हुआ है तो हस्बोना किताबुल्लाह के क़ाएल भी

चिल्ला उठे हैं और इस ख़याल के इबताल पर मुतअद्दिद कुतब व रसाएल लिख डाले हैं मगर उन हज़रात को कौन समझाये कि *"ई बादे सबा ई हमा अवुदा तुस्त"* और *खुद करदा रा इलाज नीस्त*। बहरहाल अब क़रीबन क़रीबन सब मुसलमान इस हक़ीक़त को तसलीम करते हैं कि अगर अहादीस से इन्कार कर दिया जाये तो न कुरआन के हक़ीक़ी मतालिब व मानी समझ में आ सकते हैं न हक़ाएक़े इस्लाम मालूम हो सकते हैं और न उसूल व फुरूअ मुकम्मल हो सकते हैं सूरः इमरान की 7/3 आयए मुबारेका से ज़ाहिर है कि मुतशाबेहात कुरानिया की तावील *रासेख़ूना फ़िल इल्म* ही जानते हैं।

कुरआन को आसान बताने वाले हज़रात यह भूल जाते हैं कि कुरआन ज़रूर आसान है मगर जब उस का बयान पैग़म्बरे इस्लाम की ज़बाने फैज़ तरजुमान से हो। (दुखान पारा 25 आ. 16) ऐ पैग़म्बर हम ने कुरआन को तुम्हारी ज़बान पर आसान किया है इस लिये इरशादे कुदरत है।

(नहेल पारा 14 आ.12) ऐ रसूल हम ने यह कुरआन तुम पर नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों पर वाज़ेह करो कि खुदा ने क्या नाज़िल किया है और क्या मन्शाए कुदरत है अगर तमाम अहले ज़बान या अरबी दां हक़ाएक़े कुरआन को समझ सकते तो फिर पैग़म्बरे इस्लाम की ज़रूरत ही क्या थी उन का तो वज़ीफ़ा ही यह था कि वह आयाते इलाहिया की तिलावत करें। लोगों का तज़किए नुफ़ूस करें और कुरआन व हिकमत की तालीम दें। हक़ाएक़ से वाज़ेह व आशकार हो गया कि हक़ाएक़ व मअरिफ़े कुरआनिया

पैग़म्बरे इस्लाम समझ और समझा सकते हैं या फिर वह ज़वाते कुदसिया उसकी अहलियत रखते हैं जो अहलेबैते रसूल स., जानशीने रसूल स0 और वारिसे इल्मे रसूल स0 हैं जिन के मुतअल्लिक़ खुदा फ़रमाता है फ़ातिर 35/36 हम ने कुरआन का वारिस उन मख़सूस लोगों को बनाया है जिन को हमने अपने तमाम बन्दों में मुन्तख़ब कर लिया है यह मुन्तख़ब शुदा अइम्मए अहलेबैत अलैहिस्सलाम ही हैं (नयाबीउल मवद्दत तबअ बम्बई अरजेहुल मतालिब फ़रायदे इस्मतैन कुतुबे अहले सुन्नत) बिना बरीं सहीह तालीमे कुरआन वही है जो इस ख़ानवादए इल्म व इसमत से मन्कूल हो और सहीह हदीसे नबवी भी वही है जो इस मादिने सिदक़ व सफ़ा के वास्ते से मरवी हो।

जाफ़री बाश गर ख़ुदा ख़्वाही
वरना दर हर तरीक़ गुमराही

असहाबे अइम्मा अलैहिस्सलाम का हदीस में एहतेमाम

अहादीस की अहमिय्यत और अइम्मए दीन की तालीम व तलक़ीन का नतीजा था कि उनके असहाबे अतयाब अहादीस के जमा करने और ज़ब्ते तहरीर में लाने के मुताल्लिक़ बहुत गहरी दिलचस्पी लेते थे और इस सिलसिले में फौकुल आदत एहतेमाम करते थे, इस अम्र का अन्दाज़ा इस बात से ब—आसानी लगाया जा सकता है कि सिर्फ़ हज़रत सादिक़ आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में ज़ानुए तलम्मुज तह करने वाले और इस चश्मए फ़ैज़ से इस्तेफ़ादा करने वालों की तादाद चार हज़ार बयान की गयी है इस अहदे इल्म व फज़ल अन्गेज़ में अहादीस की चार सौ कुतुब लिखी गयी हैं जो "उसूले अरबए आम्मा"

कहलाती हैं दूसरे असहाबे अइम्मा का इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

उसूले काफ़ी की जमा व तालीफ़

जिन उसूले अरबए आम्मा का सुतूरे बाला में तज़किरा किया गया है चूँकि यह कुतुब बाक़ाएदा तौर पर मुरत्तब व मुबव्वने न थी बल्कि उसूल व फुरूअ, तफ़्सीर व अख़्लाक़ वग़ैरा मुतफ़र्रिक़ मौज़ूआत के बारे में अइम्मए ताहेरीन के इरशादात बाहम गडमड थे। क्योंकि लिखने वाले हज़रात क़लम व दवात साथ लेकर हाज़िर होते थे और जिन मुतफ़र्रिक़ मसाएल पर गुफ़्तुगू होती वह फ़ौरन उसे क़लम बन्द कर लेते। लेहाज़ा ज़रूरत थी कि उस को मुरत्तब व मुवव्वब किया जाये और पूरे हुस्न व सलीक़े से उन की लाइए आबदार व दुरहाए शहवार को मस्ल के तरतीब व तहज़ीब में पिरो दिया जाये। इस अज़ीम ख़िदमत के लिये जिस बतले जलील को सबसे पहले तौफीक़ व ताईदे ईज़दी हासिल हुई वह कि़दवतुल्अनाम कहफुल्ओलमाइल्आलाम व बिलादिल्मोहद्देसी नुलएज़ाम सिक़तुल इस्लाम हज़रत मौलाना शेख़ मोहम्मद बिन याकूब कुलैनी की ज़ाते बा–बरकत थी जिन्हों ने अपनी उम्रे करीमाना के पूरे बीस साल (किससुल्ओलमा जिल्द 2 सफ़ा 187 तबा बम्बई व फवाएदे मदीना जिल्द 2 सफ़ा 657 तबअ ईरान व कशफुल मुहज्जा शोहरतुल्महजा तबअ नजफ़े अशरफ) सर्फ़ करके उन उसूले अरबए आम्मा की वरक़ गरदानी करके और कुछ उलमा व फुज़ला की ख़िदमत करके और कुछ रावियाने अख़बार से इस्तेफ़ादा कर के ग़रज़ कि इस मुद्दते मदीद में कूचा गरदी और कोह पैमाई

सभी कुछ करके एक जामे किताब बनाम अल–काफ़ी क़ौम व मिल्लत के सामने पेश की जो सही मानों में इस्लाम का दाएरा अल मआरिफ़ है।

उसूले काफ़ी की बाज़ ख़ुसूसियात

उसूले काफ़ी कुतुबे अरबा काफ़ी, मन ला यहज़ोरूल फ़कीह, तहज़ीबुल अहकाम और इस्तिबसार में से सब से पहली और सब से अफ़ज़ल किताब है जिस रोज़ से यह लिखी गयी है उस रोज़ से आज तक बराबर मरजअ फुक़हा व मोहद्देसीन मलाजे उलमाए आलमीन और रौशनिये चश्मे शिया बनी रही है और चन्द ख़ुसूसियात की बिना पर दीगर कुतुबे हदीस से मुमताज़ मक़ाम रखती है जिन में से बाज़ ख़ुसूसियात यह हैं।

1. यह किताब हज़रत साहेबुल अम्र अल्अस्र वज़्ज़मान अज्जलल्लाहो फराजहू की ग़ैबते सुग़रा और नव्वाबे अरबा की मौजूदगी में लिखी गयी है लेहाज़ा अगर चे इन्दत्तहक़ीक़ इस किताब का हज़रत साहेबुल इमामुल्अस्रे वज़्ज़मान अज्जलल्लाहो फराजहू की बारगाह में पेश होना और आंजनाब का यह फ़रमाना कि *अल्काफ़ी काफ़िन लेशीअतेना* सुबूत को नहीं पहुंच सका। मगर उस का आंहज़रत के मख़सूस व कलां की मौजूदगी में लिखा जाना और इस हक़ीक़त का मुसल्लम होना कि यह किताब तमाम मिल्लते जाफ़रिया की दीनी फ़लाह व बहबूद और उनकी रूश्द व हिदायत के लिये लिखी जा रही है जो ज़मानए ग़ैबत में उनकी तवज्जोह का मरकज़ बनेगी। मगर उस के बा–वजूद उनकी रू मे नाजिया मोक़द्देसा से किसी तौक़ीए मुबारक का सादिर होना और न वोकलाए इमाम का रोकना टोकना।

इस से कम अज़ कम उनकी ताईद व रिज़ाए सुकूती तो ज़रूर हो जाती है और यही अम्र इस किताब की विसाक़त व जलालत की क़तई दलील है (कना) इस्तिदलालुल्अल्लामा मजलिसी फ़ी इमरात सफ़ा 6 जिल्द 1) उन्हीं हक़ाएक़ की बिना पर सय्यद जलील सय्यद इब्ने ताऊस अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया है (शेख़ जलील मोहम्मद बिन याकूब की तसानीफ़ व रवायात का वोकलाए इमाम अलैहिस्सलाम के दौर में होना उनके मनकूलात की तहक़ीक़ व वसाक़त की तरफ़ एक रास्ता खोल देता है)

2. यह किताब पूरे बीस साल की तहक़ीक़ व तदक़ीक़ व तौफ़ीक़ व ततब्बो व तफ़हहुस और तलाश व जुस्तुजू के बाद लिखी गयी है जैसा कि अभी इस का ज़िक्र ऊपर किया जा चुका।

3. इस किताब में यह भी इल्तेज़ाम किया गया है (*इल्ला नादिरन*) कि पूरा सिलसिलए सनद ज़िक्र किया जाता है जैसा कि मोहदिदस मोहसिन फैज़ काशाफ़ी ने ज़िक्र किया है।

4. इस किताब में यह भी इल्तेज़ाम है कि हर हर बाब में इसी के मवाफ़िक़ अहादीस दर्ज की जाती हैं और अख़बार मुतआविज़ा दर्ज करने से इजतेनाब किया गया है (रौज़तुल्जिनान स. 553)

5. काफ़ी की अहादीस जो कि सोलह हज़ार एक सौ निन्नयान्नवे 16199 क़िससुल्ओलमा रान्काही जिल्द 2 स0 187 व फ़वाएदे रिज़विया स. 657 हैं मजमूई तौर पर बरादराने इस्लामी की बुख़ारी व मुस्लिम बल्कि सहाए सित्ता की अहादीस से ज़्यादा हैं क्योंकि अहादीसे बुख़ारी

व मुस्लिम की तादाद सात हज़ार दो सौ पछत्तर 7275 है और अगर अहादीसे मुकर्रर को हज्फ़ कर दिया जाये तो बाक़ी सिर्फ़ चार हज़ार अहादीस रह जाती हैं (मुक़द्दमए इब्नुस्सलाह निहायतुद्दायः स. 225 कश्फुज़्ज़ुनून जि0 1 स. 543–544 अलामा नक़्लहुश्शेख अब्दुल्हुसैन फी मोक़द्देमा (इला ग़ैरे जालिका मिन ख़साएसिल्किबरः इन्ही खुसूसियात की बिना पर बिना ख़ौफ़ तरदीद कहा जा सकता है कि इबतेदाए इस्लाम से आज तक फ़ने हदीस में उसूले काफ़ी के पाए की कोई किताब नहीं लिखी गयी।

अज़मते काफ़ी और नज़रे उलमाए आलाम

उलमाए आलाम की निगाह में काफ़ी की क्या क़द्र व मन्ज़ेलत है उसका अन्दाज़ा मुन्दर्जा ज़ेल इक़्तेबासात से ब आसानी हो सकता है।

1. हज़रत शेख़ मुफ़ीद अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं काफ़ी तमाम कुतुबे शिया से अजल्ल व अरफ़ा और सब से ज़्यादा मुफीद है

2. हज़रत शहीदे अव्वल शेख़ मोहम्मद बिन मक्की रह0 अपने इजाज़े में फ़रमाते हैं हदीस में उसूले काफ़ी वह किताब है कि ऐसी किताब इमामिया ने नहीं लिखी।

3. मोहक़्क़िक़ शेख़ अली बिन अब्दुल आला किरकी अपने इजाज़े में लिखते हैं हदीस की बड़ी किताब काफ़ी जैसी कोई किताब नहीं लिखी गयी यह किताब इस क़द्र अहादीसे शरीआ असरारे दीनिया की जामेअ है जो इस के अलावा और किसी किताब में नहीं मिलते।

4. मोहद्दिसे जलील मुल्ला हसन फैज़ काशानी वाफ़ी में रक़म तराज़ हैं (तमाम कुतुबे अरबा में से अशरफ़ व

वासिके अतिम व अजमअ काफ़ी है क्योंकि यह अलावा फुरूअ के उसूल पर भी मुशतमिल है और फुजूल और बाएसे ऐब बातों से ख़ाली है।)

5. मोहद्दिस अमीन उस्तरा बादी फ़वाएदे मदीना में तहरीर फ़रमाते हैं। (हमने अपने असातेज़ा और उलमा से सुना है कि इस्लाम में ऐसी कोई किताब नहीं लिखी गयी जो काफ़ी के हम पाया हो।)

6. सरकार अल्लामा मजलिसी अलैहिर्रहमा मिरअतुल उकूल में फ़रमाते हैं (किताबे काफ़ी तमाम कुतुब से ज़्यादा जामेअ मोहकम और मुतयक़्क़न है और फ़िरक़ए नाजिया की तमाम कुतुब से अहसन व आज़म है।

काफ़ी के बाज़ शरह व तराजम :

काफ़ी की अज़मत व मक़बूलियत का इससे ब–ख़ूबी पता चलता है कि वह हमेशा हर दौर में उलमा व फ़ोज़ला की तवज्जोह का मरकज़ बनी रही है इसकी बे शुमार शरहें और हवाशी मौजूद हैं और मुताद्दिद तरजुमे हुए हैं बतौर नमूना बाज़ शरहों व तराजम का यहां इजमालन ज़िक्र करते हैं।

1. जामेउल अहादीस वल्अक़वाल शेख़ क़ासिम बिन मोहम्मद अल्वन्दी। 2. किताबुद्दारिल्मन्जूम व मिन कलामिल मासूम अश्शेख़ अली बिन मोहम्मद इब्नुल हसन शहीदे सानी। 3. अर्रिदा शेख़ुस्समाविया फ़ी शरहिल्अहादीसिल्इमामिया अस्समद मा0 बाक़िर दामाद 4. किताबुश्शाफ़ी शरहे उसूले काफ़ी अश्शेख़ ख़लील बिन अल्फ़ाज़ी क़ज़्वैनी 5. शराहिल्मुहद्दिस अल्अमीन अश्तराबादी 6. शरहिल्आलिम मुल्ला सालेह माज़िन्दरानी 7. शरहिल्फ़ैल

सौफ़िल्अज़ीम मुल्ला सदर शीराज़ी 8. अल्वाफ़ी वल्काफ़ी लिल आलिमिर्रब्बानी मुल्ला मोहसिनुल्फ़ैज काशानी 9. कश्फुल्काफ़ी अश्शेख़ मो0 शीराज़ी 10. मिरंअतुल्उकूल फ़ी शरहें अख़बारिर्रसूल अल्लामा मजलिसी 11. तोहफतुल्औलिया तरजुमा फारसी मो0 अली अरूकाफ़ी 12. साफ़ी तरजुमा महशरहे फ़ारसी उसूले काफ़ी अश्शैखुल्जलील कज़्वैनी 13. तर्जमा शरहे फ़ारसी अश्शैख़ मो0 बाक़िर अल्कोह कमरसी 14. तर्जुमा उर्दू बाज़ अजज़ाए उसूले काफ़ी मौसूल बिहिल्क़ौल अश्शाफ़ी मौलाना सय्यद ज़हूर हसन लखनवी 15. अश्शाफ़ी तर्जुमा काफ़ी सय्यद हसन अमरोहवी इसी तर्जुमे पर हम मोक़द्दमा लिख रहे हैं इस पर तर्जुमा बाद में किया जाएगा।

एक मशहूर एतेराज़ और उसका जवाब :

आम तौर पर यह एतेराज़ किया जाता है कि हज़रत शेख़ कुलैनी अलैहिर्रहमा ने मोक़द्देमए काफ़ी में यह अद्देआ किया है कि उन्हों ने इस किताब में तमाम अख़बारों आसारे सहीह जमा फ़रमाये हैं हांलाकि हम यह देखतें हैं कि काफ़ी की सोलह हज़ार एक सौ निन्नयान्नवे अहादीस में सिर्फ़ पांच हज़ार बहत्तर सही हैं बाक़ी एक सौ चालीस हसन और एक हज़ार एक सोलह मोअस्सक़ और तीन सौ दो क़वी और नौ हज़ार चार सौ ज़ईफ़ है। (क़िससुल उलमा जिल्द 1 सफ़ा 187) दरीं हालात मोअल्लिफ़ अल्लाम की फ़रमाइश को क्यों कर तसलीम किया जा सकता है।

इस एतराज़ का जवाब यह है कि यह एतराज़ मुतक़द्देमा व मुताख़्ख़िरीन की इसतेलाह से अदमे

वाक़िफ़ीयत की वजह से पैदा हुआ है। वरना हक़ीक़ते हाल से वाक़िफ़कार जानते हैं कि मोअल्लिफ़े अल्लाम की फ़रमाइश भी सही है और मज़कूरा बाला तक़सीम भी दुरूस्त है कि हदीस सहींह के बारे में मुतक़द्देमीन व मुताख़्ख़िरीन की इस्लाह अलाहेदा अलाहेदा है जिसे न समझने की वजह से यह एतराज़ पैदा हुआ है इस इजमाल को बाद अज़ ज़रूरत व गुन्जाइश तफ़सील यह है कि हर ख़बर दो हाल से ख़ाली नहीं या मुतवातिर होगी या वाहिद यानी अगर किसी ख़बर को हर तबक़े में इस क़दर जमाअते कसीर नक़्ल करे जिस का किज़्ब व इफ़तरा पर इत्तेफ़ाक़ करना आदतन मुहाल हो तो इस को ख़बरे मुतवातिर कहा जायेगा और जो ख़बर ऐसी न हो वह ख़बर वाहिद कहलाती है (हदयतुल मोहद्देसीन स. 35 नयाबतुद्दराय:) अब इस ख़बरे वाहिद की मुतक़द्देमीन के नज़दीक सिर्फ़ दो ही क़िस्में थीं सही और ग़ैर सही। ख़बरे सही हर उस हदीस को कहते थे जिस के साथ कुछ ऐसे क़राइने दाख़िलिया व ख़ारिजिया हों जिन की बिना पर उस पर एतमाद व वुसूक़ किया जा सके, अइम्मए ताहेरीन स. के क़रीबे एहद होने की वजह से मुरव्वेजुल के पास ऐसे क़राईन ब–कसरत थे कि जो हदीस इस तरह महफ़ूफ़ुल क़ुरआन न होती थी वह उसे ग़ैर सही समझते थे चुनांचे मोहद्दिसे जलील शेख़ अली अकबर मुरव्वेजुल इस्लाम फ़रमाते हैं (हिदायतुल मोहद्देसीन सफ़ा 23)

निज़्दे क़ोदमा सहीह इतलाक़ मीशुद बरआं हदीसे कि मोतज़िद बूद बउनवे इक़्तेज़ा मी कर्द एतमाद ईशान बर आं (यहां बख़ौफ़े तवालत उन क़राइन का तज़केरा नहीं

किया जा सकता और मोताख़्ख़ेरीन के नज़दीक (और इस इसतेलाह के बानी सय्यद जलील एहमद बिन ताऊस मताफ़ी मुतवफ़्फी 197 उस्ताद हज़रत अल्लामा हिल्ली या बक़ौल बाज़ उलमा ख़ुद अल्लामा हिल्ली कुद्स सरा हैं ख़बरे वाहिद के मुताद्दिद अक़साम हैं बाज़ अक़साम का ताल्लुक़ रावियाने अख़बार के सिफ़ात व अतवार से है और बाज़ का मतन अख़बार से और बाज़ का रब्त रावियों के मज़कूर व महज़ूफ़ होने से है नीज़ उनके नज़दीक सही का मीज़ान व मेयार और है। हम यहां ख़बरे वाहिद के सिर्फ़ बाज अहम अनवा व अक़साम का ज़िक्र करते हैं जिन का ताल्लुक़ रावियाने अख़बार के अक़ाएद व आमाल के साथ है और यह बिना बर मशहूर पांच क़िस्में है।

हदीसे सही : (हिदायतुल मोहद्देसीन अज़ सफ़ा 35 ता 45 व निहायतुद्दराया) इस्तेलाहे मुताख़्ख़ेरीन में हदीसे सही उस हदीस को कहा जाता है जिन का सिलसिला सनदे मासूम तक मुन्तही होता हो और हर तबक़े में उसके रावी शिया अस्ना अशरी और आदिल हों।

हदीसे हसन :– हदीसे हसन उस हदीस को कहा जाता है जिसकी सनद मासूम तक मुन्तही हो और तमाम तबक़ात में उसके रावी शिया अस्ना अशरी हो मम्दूह, मगर उनकी अदालत की तसरीह न की गयी हो।

हदीसे क़वी :– उस हदीस को कहा जाता है जिस के सिलसिलए सनद के तमाम रावी शिया अस्ना अशरी हों मगर उनकी मदह व ज़म के बारे में कोई नस मौजूद न हो।

हदीसे मौअस्सक़ :– हदीसे मौअस्सक़ उस हदीस को

कहा जाता है जिस का सिलसिलए सनद मासूम तक ऐसे रावियों के ज़रिये तक मुन्तही हो जो अगर चे सादिक़ुल लहजा और क़ाबिले वुसूक़ हों मगर हों फ़ासेकुल अक़ीदा (सिवाए शिया असना अशरिया के बाक़ी तमाम फ़िरक़ए इस्लाम उसमें दाख़िल हों।

हदीसे ज़ईफ़ :– इस्तिलाहे मुताख़्ख़ेरीन में हदीसे ज़ईफ़ उस हदीस को कहा जाता है जो उन तमाम शराएत से ख़ाली हो और जो ऊपर सही व हसन व क़वी व मौअस्सक़ के बयान में ज़िक्र किये गये हैं (वलहू अक़सामुन अदीदा लैसा हाहोना मौज़ए जिक्रोहा कल्ख़बरिल्मक़तूअ वलमुरसल वल्मजूइल वगैरहा)

इन हक़ाएक़ की रौशनी में यह हक़ीक़त वाज़ेह व आशकार हो जाती है कि हज़रत सिक़तुल इस्लाम कुलैनी की फ़रमाइश और मुतख़्ख़िरीन की तक़सीम में फ़िलहक़ीक़त कोई मआरिज़ व इख़तेलाफ़ नहीं है बल्कि अरबाबे मन्तिक की इल्मी इस्तेलाह में आम व ख़ास मुतलक़ की निसबत है यानी हर वह चीज़ जो इन्दल्मुताख़्ख़िरीन सही है वह इन्दल्मुतक़द्देमीन भी सही है लकिन यह ज़रूरी नहीं कि जो ख़बर इन्दल्क़ोदमा सही हो वह इन्दल्मुताख़्ख़िरीन भी सही हो। बिना बरीं उसूले काफ़ी की तमाम अहादीस इन्दल्मुतक़द्देमीन सहीं हैं मगर मुताख़्ख़िरीन के नज़दीक कुछ सहीं हैं कुछ हसन, कुछ मोअस्सक़ कुछ ज़ईफ़ वग़ैरा जैसा कि ऊपर मज़कूर हुआ।

एक ज़रूरी वज़ाहत :– यहां इस बयान का इज़हार भी ज़रूरी मालूम होता है कि अगर चे मुताख़्ख़िरीन की इस्तेलाह के मुताबिक़ काफ़ी में हर क़िस्म की सही व हसन व क़वी

व मोअस्सक़ व ज़ईफ़ वग़ैरा अक़साम की अहादीस मौजूद हैं मगर इस अम्र पर तमाम उलमाए अलाम का इत्तेफ़ाक़ है कि इस में एक हदीस भी मौजू व मजहूल नहीं है और इस के मुताल्लिक़ मुताख़्ख़िरीन की यह इन्तेहाई छान बीन भी महज़ इस लिये है कि अगर किसी वक़्त बिल फ़र्ज़ कुतुबे अरबा की अहादीस में बाहम तआरूज़ वाज़ेह हो जाये तो उसके बल बूते पर बाज़ रवायात को दूसरी बाज़ पर तरजीह दी जा सके वरना क़दमे तआरूज़ की सूरत में काफ़ी की तमाम अहादीस क़ाबिले एतमाद व अमल हैं। चुनांचें ग़वासबेहारूल अख़बार सरकार अल्लामा मजलिसी ने इस अम्र की वज़ाहत कर दी है फ़रमाते हैं (मिरअतुल उक़ूल जिल्द 1 सफ़ा 1)

मेरे नज़दीक हक़ यह है कि किसी हदीस का उसूले काफ़ी ऐसी मोतबर कुतुब में पाया जाना जवाज़े अमल के लिये काफ़ी है हां तआरूज़ के वक़्त बाज़ अहादीस को दूसरी बाज़ पर तरजीह देने के लिये सनद की तरफ़ रूजू करना ज़रूरी है यानी तमाम शिया ख़ैरूल बरिया का इस किताब की फ़ज़ीलत और उसके क़ाबिले अमल व वुसूक़ होने पर इत्तेफ़ाक़ है नीज़ उनका इस अम्र पर भी इजमाअ है कि इस किताब का दरजा तमाम कुतुबे अहादीस से अजल्ल व अरफ़ा है और यह किताब वह कुतुब है जिस पर क़ाबिले एतमाद रावी जो ज़ब्त व इत्तेक़ान में मशहूर हैं की रवायात का दारोमदार है।

सिक़तुल इस्लाम कुलैनी : चूंकि किसी किताब की हक़ीक़ी क़द्र व क़ीमत मालूम करने का एक तरीक़ा इसके मुसन्निफ़ व मोल्लिफ़ की जलालत भी है इस लिये काफ़ी

की अज़मत व क़द्र मालूम करने के लिये इस के मोल्लिफ़े अल्लाम की जलालत व नबालत को नजर अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। वैसे भी वह इसके हक़दार हैं कि उनके ज़िक्रे ख़ैर से उंर्दू दां तबक़े के मशाम को मोत्तर किया जाये।

सिक़तुल मोहद्देसीन शेख़ अब्बास क़ुम्मी ने इन अलफ़ाज़ के साथ उन का तज़किरा फ़रमाया है शेख़ उल इमाम क़िदवतुल अनाम कहेफ़ुल उलमा अबूज़ाफ़र सिक़तुल्इस्लाम व आप का इस्मे गिरामी मोहम्मद कुन्नियत अबू जाफ़र और मशहूर लक़ब सिक़तुल इस्लाम है उस दौर में आज कल की तरह बेजा अलक़ाब की बोहतात न थी बल्कि जो शख़्स फिल वाक़ेअ जिस लक़ब का अहल होता था उसे उस लक़ब से मुलक़्क़ब किया जाता था कुतुब सैर व तवारीख़ से मालूम होता है कि आप तवाएफ़े इस्लाम की निगाह में क़ाबिले वुसूक़ व एतमाद और लाएक़े हज़ार एहतेराम व इकराम शख़सियत के मालिक थे। और उन का क़ौल व फ़ेल सनद समझा जाता था इस लिये वह सिक़तुल इस्लाम के जलीलुल क़द्र लक़ब से याद किये जाते थे।

आप की विलादत बा–सआदत और इब्तेदाई नशो नुमा क़रिया कुलैन (बर वज़्ने ज़ुबैर) में हुई जो कि रे के मज़ाफ़ात में वाक़े है। बाद अज़ आं तकमील उलूम व फ़ुनूने इस्लामिया के लिये बग़दाद का रूख़ किया जो कि उन दिनों इल्म व अमल का गहवारा था वहां रह कर बहुत से उलमा व फ़ुज़ला से इल्मी व अमली इस्तेफ़ादा किया। यहां तक कि ख़ुद मरजए ख़लाएक़ बन गये।

सिक़तुल इस्लाम दर नज़रे उलमाए आलाम :– फ़रीक़ैन के कुतुब सैर व तवारीख़ देखने से मालूम होता है कि यह बुजुर्गवार फ़रीक़ैन के नज़दीक साहिबे इज़्ज़ो वक़ार और आली मिक़दार थे और इस अम्र के सुबूत के लिये यही बात काफ़ी है कि इब्ने असीर जज़री ने जामेउल उसूल में उन को क़र्ने सालिस का मुज़द्दिद मज़हब लिखा है जबकि क़र्ने दोएम का मुजद्दिद हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा है और क़रने चहारुम का सय्यद मुरतज़ा इल्मल्हुदा को शुमार किया है (मख़फी न रहे कि मुजद्दिदियत वाला नज़रिया हमारा नहीं बल्कि बरादराने इस्लामी का है वह इस सिलसिले में एक हदीस भी बयान करते हैं कि आं हज़रत सलअम ने फ़रमाया *इन्नल्लाहा यब्असो हाज़ल्अम्र अला रासे कुल्ले मेअता सनतिन मन मजेदहा फ़ला तग़फले* इस तरह इब्ने हजर असक़लानी ने लेसानुल मीज़ान में तबीबी ने शरह मिश्कात में ज़ुबैरी ने ताजुल उरूस में उनका बहुत वक़ीअ अलफ़ाज़ में तज़किरा किया है अपने उलमाए किराम में से 1. नजाशी ने अपने रेजाल में उन का तज़किरा किया है वह अपने वक़्त में हमारे उलमा के रें में बुजुर्ग रईस थे और हदीस में सब लोगों से ज़यादा क़ाबिले वुसूक़ व एतमाद थे। 2. अल्लामा हिल्ली ने ख़ास्सत रेंजाल में। 3. शेख़ तूसी ने अपनी फ़ेहरिस्त में इन्हीं अलफ़ाज़ बल्कि इन से ज़ोरदार अलफ़ाज़ के साथ उनका तज़किरा किया है। 4.सय्यद जलील इब्ने ताऊस ने *कशफुल मुहजा में अश्शैखुल्मुत्तफ़िक़ अला सिक़वहू व अमानतेहू* मोहम्मद बिन याक़ूब कुलैनी वग़ैरा अलफ़ाज़ से याद किया है। 5. मजलिसी अव्वल मरहूम ने शरह

मशीख़ए मन ला महज़ोरूल फ़क़ीह में लाने के बारे में लिखा है। (हक़ यह है कि जिस क़दर उलमा हमने देखे हैं उनमें उनका कोई मिस्ल व नज़ीर नहीं मिलता और जो शख़्स उनकी किताब की अहादीस और उनके जमा व तरतीब पर ग़ौर करे उस से मालूम हो जाता है कि यह बुज़ुर्गवार मुअय्यद मिनल्लाह थे)। 6. क़ाज़ी नूरूल्लाह शोस्त्री (शहीदे सालिस अलैहिर्रहमा) ने मजालिसुल मोमिनीन में उन को रईसुल मोहद्देसीन शेख़ुल हाफ़िज ऐसे अलक़ाबे जलीला के साथ याद किया है। 7. अल्लामा मजलिसी अलैहिर रहमा ने मिरअतुल उकूल में उनके मुताल्लिक़ लिखा है 8. शेख असदुल्लाह शोस्त्री ने अपनी किताब मक़ालीसुल अनवार में उन का तज़किरा किया है। 9. मौलाना सय्यद बाक़िर ख़वान्सारी ने रौज़ातुल्जिन्नात में तार्रूफ़ कराया है यह बुज़ुर्गवार इस्लाम के अमीन तरीक़े में उलमाए आलाम के रहबर और शरीअत में जलीलुल क़द्र पेश रौ हैं और उनकी वसाक़त व रिफ़अत मन्ज़िलत में किसी को कोई इख़तेलाफ़ नहीं। 10. हज़रत शेख़ अब्बास क़ुम्मी का कलाम क़ब्ल अज़ ई. पेश किया जा चुका है।

सिक़तुल इस्लाम के असातेज़ा व तलामेज़ा :– जनाब सक़्क़तुल इस्लाम के असातेज़ा व तलामेज़ा की फेहरिस्त काफ़ी तवील है आप के असातेज़ा में बाज़ वह बुज़ुर्गवार भी शामिल हैं जिन्हें अइम्मए अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम की सोहबत का शरफ़ हासिल है कि हम इख़्तेसार के पेशे नज़र उनके असमाए गिरामी पेश करने से माज़ूर हैं।

तालीफ़ाते सिक़तुल इस्लाम :– काफ़ी के अलावा सरकारे

सिक़्तुल इस्लाम की बाज़ तालीफ़ाते क़य्यमा का भी तज़किरा मिलता है जैसे किताब ताबीरूर्रोया 2. किताबुर्रेजाल 3. किताबुर्रद अलल्क़रामत 4. रसाएलुल अइम्मा 5. किताब मा क़ब्लफ़िल्उम्मते मिन्श्शेर जिस से मालूम होता है कि आं–हज़रत दर्स व तदरीस के तसनीफ़ व तालीफ़ में भी इसकी अहमीयत के पेशे नज़र ख़ास दिलचस्पी लेते थे। जज़ाकल्लाहो अन्ना ख़ैएल जज़ा।

वफ़ात व मदफ़न :– 329 हि. में यानी इमाम अस्र की ग़ैबते कुबरा से एक साल पेशतर आसमाने फ़ज़्ल व कमाल का यह बद्रे मुनीर ग़ुरूब हुआ इस साल बे शुमार सितारे टूटे। जिसकी वजह से वह साल "तनासुरून्नुजूम" के नाम से मशहूर हुआ। रईसुल मोहद्देसीन शेख़ सुद्दूक़ के वालिदे माजिद हज़रत शेख़ अली बिन हुसैन बाब्वैत की वफ़ात भी इसी साल हुई। नीज़ हज़रत साहेबुल अस्र वज़्ज़मान के आख़िरी नाएब ख़ास जनाब अली बिन मोहम्मद समरी की वफ़ात हसरत आयात भी इसी साल हुई। बग़दाद में दरियाए दजला के शरक़ी तरफ़ एक मस्जिद के साथ जनाब का मदफ़न है जो आज कल एक बाज़ार में वाक़े है जो पुले बग़दाद के ग़रबी तरफ़ उबूर करते हुए बाई तरफ़ वाक़ेअ है राक़िम आसिम क़यामे नजफ़े अशरफ़ के दौरान कई बार बग़दाद में आप के अत्बए आलिया की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ है।

सिक़्तुल इस्लाम की करामत :– बाज़ कुतुब व सैर व तवारीख़ में मज़कूर है (क़िससुल्ओलमा जि–2 स.177–178) बाज़ नासिबी हुक्काम ने जब देखा कि लोग बड़े ज़ौक़ व शौक़ से हज़रत अइम्मए अहलेबैत की ज़ियारत पर जाते

हैं। तो उनकी आतिशे अदावत मुश्तइल हो गयी और हज़रत इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम के मरक़दे अक़दस को शिगाफ़्ता करने का इरादा किया और कहा कि अगर शिया का एतक़ाद बरहक़ है तो वह इस वक़्त सही व सालिम क़ब्र में मौजूद होगें वरना हम, लोगों को उनकी ज़ियारत से रोक देंगे बाज़ लोगों ने हाकिम से कहा कि शियों का अपने उलमाये आलाम के मुताबिक़ भी यही अक़ीदा है कि उनके बदन हर क़िस्म के तग़य्युर व तबद्दुल से महफूज़ हैं चूंकि यहां बग़दाद में एक बहुत बड़े आलिमे जलील शेख़ मोहम्मद याकूब कुलैनी की क़ब्र मौजूद है लेहाज़ा पहले उसे ख़ोद कर हक़ीक़ते हाल मालूम करना चाहिये। चुनांचें जब आप की क़ब्र को ख़ोदा गया तो सरकार शेख़ कुद्दसा सर्रह उसी तरह तरो ताज़ा मौजूद थे कि गोया अभी दफ़्न हुए हैं हुनूज़ कफ़न भी मैला न हुआ था। हाकिम उस करामत से बहुत मुतास्सिर हुआ और नब्शे क़ब्रे इमाम मशऊम से बाज़ आ गया। बल्कि शेख़ मरहूम की क़ब्र पर एक अज़ीमुश शान कुब्बा भी तामीर कराया।

कुतुबे इलमिया में तराजम की ज़रूरत :– यह मसला अरबाबे इल्म व फ़ज़्ल के लिये ग़ौर तलब है कि इल्मी कुतुब के तरजुमे होने चाहिये या नहीं। अल्लामा सय्यद गुलाम हुसैन साहब किन्तूरी मरहूम ने इस अम्र पर इन्तेज़ारूल इस्लाम जिल्द 2 में मुफ़स्सल बहेस फ़रमाई है बहरहाल जिस अम्र पर मोहक़्क़ेक़ीन की राये मुसतक़र हुई है वह यह है कि हर चन्द तराजुम में बाज़ ज़रर रसां पहलू भी हैं मगर मजमूई तौर पर इफ़ादियत वाला पल्ला भारी

है यही वजह है कि आज मुतमादि्दन (अवाम बुजुर्गों के कारनामों के तराजुम करके अबनाये वतन को उनसे मुतमत्ते होने के मौक़े फ़राहम करती हैं इस लिये ज़रूरत है कि हर फ़न में हमारे उलमाए आलाम ने जो कारहायें नुमायां अन्जाम दिये हैं उनके तराजुम कराके अफ़रादे क़ौम व अबनाये वतन को रूशनास कराया जाये और उन दफ़ातिरे इलमिया से उनके मुनतफ़ा होने का इन्तेज़ाम व इन्सेराम किया जाये मगर अफ़सोस है कि उस मरहले में हमारी क़ौम दीगर अक़्वाम से बिल्उमूम और बरादराने इस्लामी से बहुत पीछे है उनके सहाहे सित्ता के उर्दू ज़बान में मुतादि्दद तरजुमे लिखे जा चुके हैं मगर हमारी कुतुबे अरबा में से ता हाल एक किताब का भी तरजुमा मुकम्मल नहीं हुआ।

कुछ मौजूदा उर्दू तरजुमे और शरह के बारे में :–

ख़ुदा जज़ाए ख़ैर दे हमारी क़ौम के मायानाज़ सद इज़्ज़ो व इफ़्तेख़ार शम्सुल वाएज़ीन सरकार अदीबे आज़म मौलाना ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला मद्देज़िल्लहुल आली को जिन्होंने इस कमी को महसूस किया और पीराना साली के आलम में (74 साल ख़त्म कर चुके हैं) जिसमें बित्तबा इन्सान को आराम व सुकून की शदीद ज़रूरत होती है रात दिन एक करके उसूले काफ़ी ऐसी अज़ीमुश्शान किताब के तरजुमे में मशगूल हो गये, मक़ामे शुक्रिया है कि उनकी मुसाईयेजमीला समर आवर हो रही हैं जिल्द अव्वल का तरजुमा ख़त्म हो कर प्रेस में पहुंच गया है पहले ये तरजुमा क़िस्तन क़िस्तन नूर में तबा हुआ। अब बेहतरीन किताबत व तबाअत के साथ दोबारा छापा जा रहा है और जिल्द दोम का तरजुमा क़रीबे ख़त्म आ लगा है इन्शाल्लाह वह भी ज़ेवरे तबा से

आरास्ता हो गा। ब–फ़ज़्ले तआला अब हमारी क़ौम जिसकी अकसरियत मुद्दत से ख़याली पुलाव पकाने और बग़ैर कुछ गये दौलते दीन व दुनिया हासिल करने के ख़्वाब देखने की आदी हो चुकी है और इल्म व अमलियात से जान चुराती है अब उसमें भी हक़ाएक़ बीनी और मआरेफ़ते मज़हबी हासिल करने का जज़बाए ख़्वाबिदा बेदार हो रहा है कुतुबे अरबा के उर्दू तराजुम की ज़रूरत तो अरसएदराज़ से हमदरदाने दीन महसूस कर रहे थे मगर इस अहम काम की अन्जाम देही की किसी को तौफ़ीक़े ईज़दी शामिले हाल न हुई थी चुनान्चें बाज़ उलमाए किराम ने इस काम को शुरू भी किया। मगर वह पायए तकमील तक न पहुंचा सके मालूम होता है कि यह सआदते उज़मा कातिबाने क़ज़ा ने हमारे बूढ़े मुजाहिद सरकार अदीब आज़म मद्देज़िल्लहू के मुक़द्दर में लिख दी थी जो तक़रीबन निस्फ़ सदी से तक़रीर व तहरीर के ज़रिये क़ौम व मिल्लत की गराक़द्र ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं दो सौ से ज़ाएद तसानीफ़ व तालीफ़ात व तराजुम उनके आसार ख़ालिदात हैं और जामिया इमामिया कराची की तामीर व तरक़्क़ी उनके बाक़ियास्सालेहात और मुजल्ला नूर कराची उन निगारिशात की मुंह बोलती तसवीरें हैं सच है। *ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाहे यूतीहे मय्यशाओ वल्लाहो ज़ुल्फ़ज़्लुल्अज़ीम* 57/21 हदीस ।

ज़ेरे नज़र तरजुमा सिर्फ़ तरजुमा ही नहीं बल्कि उसमें जा बजा मुफ़ीद तौज़ीहात व तशरीहात भी मौजूद हैं और तरजुमे के साथ मतन भी है जिस से उसकी इफ़ादियत को चार चान्द लग गये हैं अपनी अदमुल फुरसती ने इस अम्र

की इजाज़त तो न दी कि उस हसीन वादी की कमाहक़्क़हू सैर की जाती और इस चश्मए साफ़ी से कमाहक़्क़ाहू इस्तेफ़ादा किया जाता, ताहम बाज़ मक़ामात बासेरा नवाज़ होते हैं।

क़तरे में दजला दिखाई न दे और जुज़ में कुल।
ख़ेल बच्चों का हुआ दीदाए बीना न हुवा।।

इस तरजुमे की शुस्तगी और शगुफ़तगी में क्या कलाम हो सकता है जो सरकार अदीबे आज़म मद्‌देज़िल्लहू के ख़ामा फैज़ शमामा का असर हो।

अल्लाह करे ज़ोर क़लम और ज़्यादा दुआ है कि खुदा वन्दे करीम उनकी इस सई को मशकूर फ़रमाये और क़ौम को उनके इस अज़ीम कारनामें यानी अश्शाफ़ी तरजुमा उसूले काफ़ी की सही क़द्र व क़ीमत करने और उस से सही इस्तेफ़ादा करने की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाये।

अश्शाफ़ी तरजुमा उसूले काफ़ी के मुताल्लिक़ उलमाये दीन के गंराक़द्र तबसिरे

अज़ जनाब फ़ाज़िले जलील आलिमे नबील मोहक़्क़िक़े बे अदील सरकार अल्लामा मौलाना व मुक़तेदाना सय्यद मुरतुज़ा हुसैन साहब क़िब्ला

सदरूल्अफ़ाज़िल लखनवी दामत बरकातहू मुक़ीम लाहौर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दीन के इल्मी व अमली पहलू वही हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मालूम हुए रसूलुल्लाह ने हक़ाएक़ बताये। आप ने नुकात समझाये आप ने इबादात व

मामलात के हुदूद व फ़राएज़ इरशाद किये तो दीन की तकमील हुई।

कलिमाए तय्यबा : ला इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुर्रसूलिल्लाह अलीयुन युली उल्लाह वसीयो रसूलिल्लाह व ख़लीफ़तोहू बिला फ़स्ल।

नमाज़े पंजगाना, अरकान, व वाजेबात, मुसतहिब्बात, मकरूहात व मोहर्रेमात

रोज़ा माहे रमज़ान, हुदूद व फ़राएज़, मुज़तेरात व मुबतेलात।

हज उमरह, तवाफ़, सई व जमरात अरकान व हुदूद

चन्द मोटे मोटे उनवान हैं जिन के बारे में हमें जो कुछ मालूम हुआ वह आं हज़रत की ज़बानी मालूम हुआ। आप के ज़माने में मुसलमान जिस तरह कलमा पढ़ते थे वह आप ही का बताया हुआ था। आप स० के ज़माने में लोगों की नमाज़ रसूलुल्लाह की नमाज़ की पैरवी थी आप ने फ़रमाया। नीयत करो तकबीर कहो, सूरत पढ़ो, रूकू करो, लोगों ने उस पर अमल किया। आप अ० ने रोज़े रखे और उसके क़ानून व क़ाएदे बताये तो लोगों को रमज़ान की इबादत की शरई हैसियत मालूम हुई हज व जेहाद की तफ़सीलात उसी तरह फ़िक़ाह का जुज़ व और दीन का इल्म क़रार पाये।

अहदे नबवी से अहदे अमीरूल मोमिनीन सन 40 हि. तक आं–हज़रत स० को देखने वाले, आप स० के पीछे नमाज़ें पढ़ने वाले आप अ० के साथ जेहाद करने वाले ब–कसरत मौजूद थे यह लोग जो कुछ करते होंगे वह

बराहे रास्त बानिये इस्लाम की तालीमात होंगी और जिनके अमल इस तरीक़े के ख़िलाफ़ होगें उनका दीन से ताल्लुक़ न होगा या फिर बे–ख़बर होगें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़ैज़याब होने वालों के बाद उसूल व फ़ुरूअ, अक़ीदा और अमल मालूम करने के लिये आम तरीक़ा तो यही रहा है कि पहले मुसलमानों के तरीक़ों को अख़्तियार किया गया और अक़ली तौर पर मान लिया गया कि फलां सहाबी सहाबी चूंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम के ज़माने में इस तरह नमाज़ पढ़ते थे लेहाज़ा हमारी मौजूदा नमाज़ का तरीक़ा उनके वास्ते से तरीक़ए नमाज़े रिसालत–मअब स0 है हम जो कलमा पढ़ रहे हैं वह इस लिये सनद है कि हम ने सलमाने फ़ारसी को इसी तरह पढ़ते हुए सुना और उन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम से उसी तरह सीखा था। बस जहां से रसूलल्लाह स0 के क़ौल व फ़ेल के बारे में किसी दूसरे का ज़िक्र आया वहां से रवायत शुरू हुई

रवायत के मानी :– *रवा मरवी खायतन ज़रब यज़रेबो* के ब़ाब से ताल्लुक़ रखने वाला मसदर है इस के माने हैं उठाना, मुनतक़िल करना, किसी बात का एक से दूसरे तक पहुंचाना।

"दीनी नुक़तए नज़र और उलमा के रोज़ मर्रा में रवायत का मतलब है : वह बात जो यके बाद दीगरे मासूम तक पहुंच जाये।" जो शख़्स वह बात नक़्ल या नक़्ल दर नक़्ल करे उसे रावी कहते हैं रवायत की जमा रवायात और रावी की जमा रवात है।

मोहद्दसीन, उलमाए हदीस और उलमाए दरायत ने जो बहेस की है उस का बयान सरे दस्त मक़सूद नहीं सिर्फ यह सुन लीजिये कि उलमाए एहले सुन्नत में कुछ लोग रवायत से सुन्नत भी मुराद लेते हैं और कुछ लोग हदीसे मौकूफ, कुछ के नज़दीक नक़्ले अक़वाले सहाबा भी रवायत है।

हदीसे के माने :– रवायत के बाद दीनी गुफ़्तुगू और मसाएल के माख़ज़ या बहस के दौरान भी हदीस का लफ़्ज़ ब–कसरत इसतेमाल होता है और मेरे उन मारूज़ात से भी इसी का ताल्लुक़ है तो आइये सरसरी तौर पर इस लुफ़्ज़ के लग़वी व इसतेलाही माने भी कर लें।

हदीस : बाब अस्र, यन्सोरो से मुताल्लिक़ मादा है और उसके मानी हैं

1. क़दीम की ज़िद : अदम के बाद वुजूद पाने वाली चीज़, चूंकि कलाम भी आहिस्ता आहिस्ता अदम से वुजूद में आता है इस लिये उसे भी हदीस कहते हैं और अरबी रोज़ मर्रा में बयान और कलाम के माने में आज तक मुस्तामिल है (लुग़त)

2. वह बात या वह चीज़ जो पैग़म्बर अलैहिस्सलाम के ज़रिये शरीअत में आई हो (फ़िक़ह)।

3. साहेबे दरायत व मोहद्दिस के नज़दीक हदीस से मुराद है।

(अलिफ) : वह कलाम जो मासूम के क़ौल व फ़ेल या तक़रीर की हिकायत करे (बे) मासूम का क़ौल या फ़ेल या तक़रीर की हिकायत, फ़ेल या तक़रीरे

मासूम हिकायत को यूं समझिये जैसे रावी कहे।

हज़रत रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहि व आलेहि वसल्लम कैलूला फ़रमाया करते थे या आं–हज़रत अपनी दाढ़ी में हमेशा कन्घी किया करते थे तो यह फ़ेल मासूम की हिकायत हुई।

तक़रीरे मासूम की हिकायत की मिसाल यह है कि रावी कहे कि फ़लां शख़्स ने मासूम के सामने नमाज़ पढ़ी और हर तकबीर में दोनों हाथ कानों तक उठाये मासूम ने इस अमल को देखा और मना नहीं फ़रमाया।

इस क़िस्म की चीज़ें रवायत, हदीस, ख़बर, असर, सुन्नत के नामों से याद की जाती हैं उलमाये हदीस और हदीस को समझने वालों ने रावियों के एतबार से उसके नाम रखे, अलफ़ाज़ के ऐतबार से इस की दरजा बन्दी की, मानी के एतबार से उन्हें तक़सीम किया। अब कोई रवायत मुतावातिर है कोई सही, कोई हसन है कोई मोअस्सक़, कोई ज़ईफ़ कोई मरफ़ूअ, कोई ग़रीब है कोई मुअनअन, शेख़ुल हाज अली अकबर ने हदियतुल मोहस्सेलीन में हदीस के औसाफ़े मुशतरका के लेहाज़ से पच्चीस क़िस्में हैं

मुतालेअए हदीस की मुश्किलात :– इस के बाद एक एक रावी की ज़ाती हैसियत परखी और देखी जाती है। रावी जिससे रवायत कर रहा है वह एक दूसरे को जानता है या नहीं। ज़मानों में कितना फ़ासला या कितनी कुरबत है जिस वक़्त वह बात कही या देखी गयी उस वक़्त कोई ख़ास हालत तो न थी। साएल ने मासूम से सवाल किया। तो उसका मक़सद क्या था ख़ुद रावी का अक़ीदा क्या था उसका किरदार क्या है उसके इल्म व बसीरत का क्या

हाल है वह दोस्त है या दुश्मन उस का हाफ़ेज़ा कैसा है दरोग़ गो है या नहीं।

इन मबाहिस की तरफ़ इशारों से मेरी मुराद यह है कि फ़क़त क़ौल व फ़ेले मासूम के बारे में किसी से सुन लेना काफ़ी नहीं। बल्कि लुग़त व अदब, सर्फ़ व नह्व, तारीख़ व फ़िक़ह, उसूले अक़ाएद और उसूले दरायत से वाक़िफ़ होना भी ज़रूरी है फिर अहादीस का आम मुतालेआ उसकी मुशकिलात का इल्म हो। जब जाकर हदीस पर बहस करने का सवाल होता है जदीद उलूम व मसाएल पर यूं बहस करने का जिस का दिल चाहे बहस करे। मगर हक़ीक़तन न हर आदमी की बात समझदार आदिमियों के नज़दीक सनद होती है न साहेबाने फ़न उसे कोंई हैसियत देते हैं। अब क़ानून ही देख लीजिये। इस इल्म पर बे शुमार किताबें मौजूद हैं। आप भी इस का मुतालेआ कर सकते हैं मैं भी उन्हें देख सकता हूँ सवाल यह है कि रूम के क़ानून से पाकिस्तान के दस्तूर तक मुतालेआ कर लेने के बाद हमें यह हक़ हासिल है कि जिस अदालत में चाहें खड़े होकर किसी नुकते की तशरीह कर सकें! क्योंकि क़ानून का तन्हा मुतालेआ साहेबे राए नहीं बनाता। इस के लिये तारीख़ उसूल, इस्तेहक़ाक़ उस नुकते पर अहले कमाल की बहस और अदालतों के फ़ैसले पेशे नज़र हों और माहिर असातेज़ा ने उसी की क़ाबिलियत को क़ाबिले सनद मान कर सनद भी दी हो।

तफ़सीर व फ़िक़ह, हदीस और तमाम उलूमे दीन की यही हालत है हर इल्म से पहले कुछ मुक़द्देमात होते हैं उन मुक़द्देमात व मबादी की तहसील के बाद अस्ल इल्म

पर बहस व नज़र सूदमन्द भी है और सनद भी वरना मुतालेआ तौसीए नज़र का फ़ाएदा तो देता है लेकिन हक़े इस्तिदलाल जुदागाना चीज़ है।

जमएहदीस की मुश्किलात :– शियों को दीनी मसाएल में हमेशा बड़ी आसानियां रही हैं रिसालत–मआब सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम के बाद हज़रत अली अलैहिस्सलाम उन के बाद हज़रत इमाम हसन अ० और हज़रत इमाम हुसैन अ० मौजूद थे यह सिलसिलातुज़्ज़हब और मासूम के बाद मासूम का सिलसिला इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलाम की शहादत 260 हि. मुताबिक़ 837 ई. सब के सामने है हक़ीक़त पसन्द मुसलमान इन हज़रात की मौजूदगी में दीनी मालूमात व अहकाम में किसी ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह न हो सकें। उन का अक़ली और मन्तिक़ी, मुशाहेदाती और वाक़िआती तास्सुर यह था कि अहकामें ख़ुदा और रसूल स० के शारेह यहीं हैं इस बिना पर जो कुछ पूछना होता था। इन्हीं से पूछते, इमामुलकुलफ़िल्कुल मानते रहे उनके अक़वाल व अफ़आले मुबारेका लिखते और जमा करते नक़ल करते और शियों तक पहुंचाते थे।

हर इमाम के असहाब में मुतादि्दद उलमा ऐसे हैं जिन्हों ने अपने इमाम के इरशादात जमा किये और बाक़ाएदा तालीफ़ाती यादगार छोड़े इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के अहदे मुबारक में ऐसे शिया उलमा की बहुत बड़ी तादाद यकजा हो गयी और फ़क़त उस ज़माने में चार सौ किताबें लिखी गयीं जो फ़ने हदीस में क़ाबिले फ़ख़्र इज़ाफ़ा थे। मोहद्‌देसीन उन किताबों को उसूले अरबा के नाम से याद करते हैं।

असहाबे अइम्मा की तालीफ़ात के मुस्तक़िल नाम और अलग अलग मौज़ू थे उनकी हर किताब को अस्ल कहा जाता था हुकूमतों के सियासी मद व जज़र और शिया दुशमन बादशाहों के हाथों अइम्मए अहलेबैत अलैहिस्सलाम पर जो ज़ुल्म ढ़ाये गये वह सब को मालूम हैं आख़िर मशीयते ईज़दी ने आख़िरी इमाम हज़रत महदी अलैहिस्सलाम को हमारी निगाहों से हटा कर पर्दए ग़ैब में जलवा नशीं होने का हुक्म दिया। इमाम अलैहिस्सलाम बिहम्देही ज़िन्दा सही व महफ़ूज़ तौर पर मौजूद हैं और हम सिर्फ़ हुज़ूर ही की निगाहे फ़ैज़ की बदौलत ज़िन्दा हैं (मज़ीद बहेस व तफ़सील के लिये देखिये मेरी किताब तारीख़े तदवीने हदीस)।

ढ़ाई पौने तीन सौ बरस में हमारे उलूम व ज़ख़ाएर पर क्या क्या गुज़री? वह एक तवील दास्तान है जिस का ख़ुलासा यह है कि आग़ाज़ से अन्जाम तक हमारे उलमा जहां जाते वहां उन्हें क़त्ल क़ैद और जिला वतनी के मसाएब का शिकार होना पड़ता था उनके कुतुबख़ाने जलाये जाते। उनका असासा लूटा जाता रहा। मगर यह हज़रात कस्बे उलूम के लिये ज़ुल्म सहते रहे और काम करते रहे जिस तरह होता था छिप छिप कर उलमा के पास जाते और अहादीसे मोहम्मद व आले मोहम्मद का ज़ख़ीरा मालूम करते और उन्हें पढ़ते पढ़ाते और लिखते लिखाते रहे।

सिक़तुल इस्लाम कुलैनी :– आख़िर तक़रीबन 250 हि. मुताबिक़ 864 ई. में ऐसे मर्दे मुजाहिद और आलिमे जलील की विलादत हुई जिसे सआदत की वह बलन्दी

नसीब हुई जिस की मिसाल कम याब है रै (मौजूदा तेहरान) के एक मौज़ा कुलैन में जनाबे याकूब का घर इल्म व उलमा का घर था। उन्ही याकूब को खुदा वन्दे आलम ने एक फ़रज़न्द मरहमत फ़रमाया जो आगे बढ़ कर अबू जाफ़र मोहम्मद कुलैनी के नाम से मशहूर हुआ और उलमाए मोहद्देसीने इस्लाम ने सिक़तुल इस्लाम के लक़ब से याद किया।

अबू जाफ़र मोहम्मद बिन याकूब कुलैनी रहमतुल्लाहे अलैह ने इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलाम का अहदे मुबारक पाया था शियों के ग्यारहवें इमाम अलैहिस्सलाम की शहादत के वक़्त जनाबे कलीनी बहुत ज़्यादा कम सिन थे जब होश संभाला और जवानी आई तो जनाब अल्लामा उलूमे दीन की तकमील कर चुके थे आप ने शियों की मुशकिलों का जाएज़ा लिया। दुश्मनों की मन्सूबा बन्दियां मुलाहेज़ा फ़रमाईं आप के सामने कुतुब ख़ानों की तबाही और उलमा की परेशानियों की सूरते हाल थी। ख़ुदा ने हिम्मत बलन्द, ज़ेहन रसा, हाफेज़ा हैरत अन्गेंज़ मरहमत फ़रमाया था इस लिये कमरे हिम्मत चुस्त की और फ़ैसला फ़रमाया कि कुलैनी जिस तरह हो सके तालीमाते मोहम्मद व आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम को ज़ाया होने से बचाओ, जो ख़िदमत तुम कर सकते हो करो। उठो और यह सोच कर तलबे हदीस और जमए कुतुब के लिये निकल खड़े हुए। बीस साल के बाद अल-काफ़ी मुरत्तब फ़रमाई।

अल-काफ़ी :- किताब अल-काफ़ी फ़ने हदीस की वह मारेकतुल आरा किताब है जिस के अबवाब व फ़ुसूल इस क़दर जामेअ और ऐसे अच्छे अन्दाज़ से मुरत्तब किये कि

उसके बाद आम लोगों को "उसूले अरबा" और साबेक़ीन के ज़ख़ीरए अहादीस का फरदन फ़रदन मुतालेआ करने की ज़रूरत न रही। आप को जिस क़दर किताबें मिल सकीं उन को शुयूख़ रवायत हदीस के सिलसिले से जान्च कर उसूल व फोरूअ, अक़ाएद व आमाल की तरतीब से मुरत्तब किया। बीस बरस की शनव रोज़ की मेहनत का आज कोई क्या अन्दाज़ा कर सकता है जबकि अमन का दौर है वसाएल की फ़रावानी कुतुब ख़ानों की बोहतात, काम करने की आज़ादी है। अल्लामा कुलैनी का शहर शहर जाना घर घर से किताबें लाना, क़रया क़रया में शुयूख़ का पता मालूम करना, उन से मिलना फैज़ उठाना अहादीस जमा करना फिर उनमें से इन्तेख़ाब और फिर उनकी तरतीब ऐसा काम है उस पर जितना भी फख़्र किया जाये कम है जनाब हुसैन अली शुयूख़ ने छत्तीस शुयूख़ के नाम मालूम किये हैं और बताया है कि कुलैनी रहमतुल्लाह अलैह ने उन हज़रात से रवायात लिये हैं।

तक़रीबन सोलह हज़ार हदीसों का यह मजमूआ फ़ज़ाएल सफ़ात व अक़ल से मीरास बल्कि ज़मीमा तक इक्कीस बड़े और कई सौ ज़ैली अबवाब पर मुशतमिल है। अल्लामा मरहूम ने बड़े मौज़ूआत को किताब और ज़ैली उनवानात को बाब के नाम से शुरू किया है।

किताबुल अक़्ल से किताबुल्हुज्जत के आख़िर तक और किताबुल–कुफ़्र वल्ईमान से किताबुलअशरा तक आठ किताबों उनवानात का मजमूआ अल–उसूल मिनलकाफ़ी के नाम से मशहूर है और किताबुत्तहारत से किताबुल ईमान वल्उज़्र वल्कफ़्फ़ारात और किताबुर्रोज़ा के आख़िर

तक अल—फुरूअ मिनलकाफ़ी है।

काफ़ी की ख़ुसूसियात :— काफी चूंकि अहदे ग़ैबते सुग़रा और ज़मनए सफ़राए अर्बा में तालीफ़ की गयी है इस लिये सनदी हैसियत से निहायत अहम किताब है इस के तरक व असनाद की बड़ी अज़मत है तमाम उलमाए इमामिया इसके ख़ोशाचीन हैं और पूरी मिल्लते इस्लामिया इसका एहतेराम करती है हज़रत सिक़तुल इस्लाम रहमतुल्लाह अलैह ने अहादीस के नक़्ल में मुन्दरजाज़ेल उसूल पेशे नज़र रखें है।

1. हदीस का पूरा सिलसिलए रवायत बयान करते हैं या माख़ज का हवाला देते हैं।

2. मौज़ू और मसाएल में अक़्ली और मन्तिक़ी तरतीब क़ाएम की है मसलन पहले अक़्ल की अहमियत फिर इल्म का बयान इस के बाद तौहीद के मसाएल फिर हुज्जत के मबाहिस ईमान व कुफ़्र पर मोहम्मद स. व आले मोहम्मद स. के इरशादात, दुआ पर अहादीस का ज़ख़ीरा कुरआन की फ़ज़ीलत से मुताल्लिक़ रवायात मुआशरती ज़िन्दगी के बारे में तालीमात दीं। इसी तरह अमली ज़िन्दगी के लिये शरीअत के अहकाम का तरबीयती बयान है।

3. हर किताब और हर बात में अहादीस की तरतीब में इस बात का ख़याल रखा है कि पहले ऐसी अहादीस वारिद करते हैं जो मफ़हूम के लेहाज़ से ज़्यादा वाज़ेह हों फिर इस से मुख़्तसर इस के बाद इस से ज़्यादा मुख़्तसर।

4. इलाहियात में बिलकुल नये गोशों को उनवान बनाया है फिर इस के ज़ैल में अइम्मा के इरशादात को जमा कर

लिया है जिन से तौहीदे सिफ़ात और असमाए कैफ़ियत व कुदरत व इख़्तियार जैसे अहम मुबाहिस पर मबसूत मवाद यकजा हो गया है।

5. मुतआरिज़ अहादीस बहुत कम नक़्ल की हैं। उनवान के ज़ैल में उमूमन ऐसी रवायात जमा की हैं जो मौजू को रौशन और मुद्दआ को साबित करती है।

6. काफ़ी फन्नी तौर पर इल्मे हदीस की पहली किताब है जिस में मुतालेए की वुसअत मसाएल की फ़रावानी और माख़ज़ को एहतियात से जमा करने का एहतेमाम किया गया है। फिर तन्क़ीह व तहक़ीक़ के लिये उमूमन रावियों के नाम लिख कर मज़ीद तहक़ीक़ की गुन्जाइश भी रखी है।

7. मुसल्लेमा तौर पर हमारी किताबों में काफ़ी अव्वल दरजे की किताब शुमार की जाती है और ख़लफ़ से ख़लफ़ तक सब इस का एहतेराम करते हैं इस की नक़्ल, तबाअत और शरह नवीसी तदरीस और तालीम में हमेशा एहतेमाम किया गया है फ़ारसी व अरबी में मुताद्दिद शरहें लिखी जा चुकी हैं जिन में से कुछ छपी और कुछ क़लमी हैं हवाशी और ख़ुलासे जमा बैनल कुतुबिल अरबा का काम भी हो चुका है।

उर्दू तरजुमा काफ़ी :– बर्रे सग़ीर के मदारिसे दीनिया में भी काफ़ी की तालीम आम है और मुताद्दिद हज़राते उलमा ने इस की शरह और हाशिया की तरफ़ तवज्जेह फ़रमाई है लेकिन हमारे रोज़ मर्रा के मसाएल और हज़रात अहले सुन्नत की तरफ़ से हमारे ऊपर शदीद हमलों की वजह से हमारी मुहिम इतनी तेज़ न रही कि जिस तरह मुनाज़ेरे की बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी किताबें लिखी गयीं हैं इस

तरह हदीस और ख़ुसूसन काफ़ी की शरह पर मुद्दतों पूरी तवज्जोह न दी जा सकी।

ज़ादुस्सालेहीन जनाब मौलाना सय्यद मोहम्मद तक़ी साहब सिरसिवी की एक ज़ख़ीम उर्दू तालीफ़ जिस की कम व बेश जिल्दें नवल किशोर प्रेस लखनऊ से छप चुकी हैं इस किताब में अहादीस का मतनूअ ज़ख़ीरा शायद सबसे ज़्यादा जमा किया गया लेकिन यह किताब मुस्तक़ल तालीफ़ है।

उसूले काफ़ी के तराजुम व शुरूह में ख़ालिस और फ़क़त काफ़ी पर उर्दू में जो काम हुआ है वह न तो फ़ेहरिस्तों के ज़रिये महफ़ूज़ हो सका न इशाअत पज़ीर हुआ। मुख़तलिफ़ चीज़ों की छानबीन और मुख़तलिफ़ हज़रात के मज़ामीन से जो कुछ इल्म हुआ उसकी तफ़सील इन्शाअल्लाह तारीख़े तदवीन की दूसरी इशाअत में अर्ज़ होगी। फेहरिस्ते मुख़तसर हाज़िरे ख़िदमत है।

1. आयतुल्लाह मौलाना सय्यद ज़हूर हुसैन साहब क़िब्ला बिन सय्यद फ़रज़न्द अली साहब क़िब्ला बारहवी मौलूद 1282 हि. मुताबिक़ 1865 ई. मतूनी यकुम ज़िलहिज्जा 1357 हि. मुताबिक़ 23 दिसम्बर 1938 ई. अपने एहद के बहुत बड़े मुक़द्दस आलिम थे फ़िक़ह व हदीस व तफ़सीर व कलाम के अलावा मन्तिक़ व फलसफ़ा व हयात में यगानए रोज़गार थे। अरबी नज़म व नस्र में मुतादि्दद चीज़े उनसे यादगार है। नवाब हामिद अली ख़ान साहब आलल्लाहो मक़ामहू ने चाहा था कि पूरी काफ़ी और कुतुबे अरबा का तरजुमा किया जाये इस लिये मुतादि्दद उलमा को रामपूर बुलाया। जनाब मौलाना सय्यद ज़हूर हुसैन साहब क़िब्ला के सिपुर्द

काफ़ी का तरजुमा हुआ। लेकिन फिर एक दूसरा मन्सूबा बन गया जिस में सिर्फ़ काफ़ी की किताब अल ईमान वल कुफ़्र का तरजुमा व शरह नवाब साहब रामपुर के हुक्म से 372 सफ़हात पर रामपुर ही से शाया हुई।

2. मौलाना जुल्फ़ेक़ार हुसैन क़िब्ला अपने एक मज़मून "सिक़तुल इस्लाम कुलैनी और काफ़ी" लिखते हैं एक साहब जो हैदराबाद दक्किन के रहने वाले थे या वहां उनका क़याम था उन्हों ने काफ़ी की किताब अल कुफ़्र वल ईमान के कुछ अबवाब का उर्दू में तरजुमा किया था। अल्लामा ज़हूर हुसैन साहब ने जब काफ़ी का उर्दू तरजुमा शुरू किया तो मौसूफ़ ने अपना तरजुमा भेज दिया। तक़रीबन पन्द्रह बरस हुए जब मैने उसको मौलाना के पास देखा था तरजुमा मतलब ख़ेज़ और अच्छा था अफ़सोस है कि मुतरजिम साहब का नाम मुझे मालूम नहीं।

3. जनाब नवाब सय्यद मोहम्मद हुसैन साहब कौसर कानपुरी ने उसूले काफ़ी का बहुत बड़ा हिस्सा उर्दू में मुन्तक़िल कर लिया था लेकिन किताबुल्अक़्ल वल जेहल किताबुलइल्म किताबुल मआशेरत तीन हिस्से बिला मतन शाया हुए।

ज़ेरे नज़र तरजुमा :– जनाब मौलाना सय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला अमरोहवी मद्देज़िल्लहुल आली ने एक मुद्दत से इल्मी ख़िदमतों का सिलसिला क़ाएम कर रखा है आप का माहनामा रिसाला "नूर" शियों का बहुत पुराना महबूब रिसाला है इसके अलावा मुख़्तलिफ़ मुफ़ीद मौज़ूआत पर तक़रीबन दो सौ किताबें और किताब्चे शाया किये हैं जिनमें अइम्मए मासूमीन अ० की सवानेह मुबारक,

तरजुमा किताबुलमनाक़िब इब्ने शहर आशोब के अलावा तरजुमा जामेउल अख़बार ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं मौलाना का यह तरजुमा हमारे यहां बहुत मक़बूल हुआ और इस की इशाअत भी एक मरतबा से ज़्यादा हुई, मौलाना ने इस के बाद मनाक़िब इब्ने शहर आशोब का तरजुमा मजमउल फ़ज़ाएल के नाम से दो जिल्दों में किया फिर उसूले काफ़ी का तरजुमा किया जो अपनी अहमियत और वक़्त की ज़रूरत के लेहाज़ से ख़ुसूसियत रखता है यह तरजुमा कई हैसियतों से क़ाबिले क़द्र है।

1. उर्दू में पहली मरतबा उसूले काफ़ी का हामिलुल मतन तरजुमा मारिज़े वजूद में आया।

2. पाकिस्तान में पहली मरतबा हदीस की इस मोहतमिम बिश्शान किताब पर अकेले एक बुजुर्ग ने काम किया।

3. तरजुमे को तरजुमे ही की हदों मे रखा ताकि मुख़तलिफ़ साहेबाने नज़र इस से फ़ाएदा उठा सकें और बहस व मुबाहेसे से किताब भारी न हो।

4. मुसतनद शरहो को सामने रखा है ताकि अकाबिर उलमा ने जो इफ़ादात फ़रमाए हैं वह भी समो दिये जायें।

5. मौलाना का क़लम रवां अन्दाज़े तहरीर सादा व आम फ़हेम है हदीस का मानीख़ेज़ तरजुमा किया है लफ़्ज़ी तरजुमे की पेचीदगी नहीं है।

दुआ है कि ख़ुदा वन्दे आलम जनाब मौलाना को तादेर तन्दुरूस्त व बा हयात रखे और मज़ीद तौफ़ीक़ात से सरफ़राज़ फ़रमाये। आमीन ब–हक़–के मोहम्मद स0 व आले मोहम्मद स0।

अहक़रूल्कौनैन

सय्यद मुर्तुज़ा हुसैन अफ़ी अन्हू

जनाब सरकार शरीअत मदार रईसुल मोहद्देसीन अफ़क़हुल्फ़ोक़हा आलमुल उलमा अल्लामुल्अस्र मौलाना मोहम्मद मुस्तफ़ा साहब क़िब्ला जौहर मद्दा ज़िल्लहुल आली

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दो लिल्लाहे व कफ़ा व सलामुन अला एबादिहिल्लज़ीनस्तवा अमाबाद हज़रत अदीबे आज़म जनाब ज़हीरूल उलमा मौलाना सय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला मुदीर रिसाला "नूर" की ज़ाते वाला सिफ़ात मोहताजे तार्रुफ़ नहीं कि मौसूफ़ इस सरहद में क़दम रख चुके हैं जो सैकड़ों मन्ज़िलों से आगे हैं। बल्कि इस दौर के नाम बर आवर वह बनने वाले तार्रुफ में मौसूफ की गरदिशे क़लम के मोहताज हैं मौसूफ़ की ज़िन्दगी इफ़ादियते दीनिया और नशरे उलूमे आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम में गुज़री। कई सौ किताबों के मुसन्निफ़ हैं और उनका मुतालेआ करने वाले हज़रात मौसूफ़ की महारते तहरीर और वसाक़ते इल्मी की ब–क़द्र सई थाह लगा चुके होंगे। मौसूफ़ के जेहादे क़लम का एक और मुफ़ीद दर मुफ़ीद नतीजा पेशे नज़र है और वह है "उसूले काफ़ी" का तरजुमा यह किताब शियी अक़ाएद की जामेअ और मुस्तनद किताब है इसकी मदद और उसकी हदीसों से इस्तिम्बात करके उलमाये ख़लफ़ व सलफ़ ने अक़ाएद में सिपुर्दे क़लम फ़रमाई मुतकल्लेमीन ने इसी किताब से इस्तेफ़ादा किया। मोर्रेख़ीन ने तस्हीह तारीख़ में इस से मदद ली। मोहद्देसीन ने फ़ने रेजाल में इसे सामने रखा। अरबाबे ईमान ने अपनी दुनिया और दीन

की इस्लाह इसी किताब से की और अरबाबे इरफ़ान ने इसी की मदद से सलमान और अबूज़र अ0 की बलन्दीए इरफ़ानी को समझा। इन ख़ूबियों और न जाने कितने फ़वाएद पर मुशतमिल यह किताब अरबी ज़बान में थी और उलूम उसके मतालिब से ब वसातते ज़ाकेरीन व मोक़र्रेरीन व मुसन्नेफ़ीन फ़ैज़याब होते हैं हज़रत अदीबे आज़म दामा ज़िल्लहू की सई व कोशिश ने आज इस के मज़ामीने हालिया को उर्दू का लेबास पहना कर हाथों हाथ कर दिया है यह मुसल्लम है कि एक ज़बान के अक़वाल का तरजुंमा दूसरी ज़बान में जामे तरीक़े से ना मुम्किन के क़रीब है कहीं मुहावेरा बदल जाता है कहीं अदबी नुकता नज़र से ओझल हो जाता है कहीं इस ज़बान के सर्फ़ व नहो पर कुदरत कामेला न होने से तरजुमा कहीं का कहीं पहुंच जाता है लेकिन हज़रत अदीबे आज़म के लिये अरबी ज़बान में मज़कूरा बाला ख़तरों में से किसी एक की तरफ़ से तरद्दुद का महेल नहीं है सब से अज़ीम मन्ज़िल यह है कि तरजुमा है मासूमीन अलैहिमुस्सलाम के अक़वाल का। ख़्वाह कुलैनी की जामेअ किताब काफ़ी ही क्यों न हो। वह यह भी नहीं कह सकते थे कि मैने मासूम के इस इरशाद को कमा हक़्क़हू समझ लिया है लेहाज़ा मुम्किन है कि नाज़ेरीन तरजुमा पढ़ते वक़्त कभी किसी मक़ाम पर चौंक उठे कि उन्हों ने इस हदीस का तरजुमा बर सरे मिम्बर फ़लां ज़ाकिर से यह सुना था और इस किताब में यह है इस इख़तेलाफ़ को दफ़ा करने की सूरत यह है कि अक़वाले मासूमीन अलैहिमुस्सलाम हमागीर हदीस रखते थे उनमें नफसियाती पहलू भी होता है और अक़्ली भी, इन्फेरादी

भी होता है और इजतेमाई भी। व अला हाज़ल्क़यास इसी लिये मुख़तलिफ़ शारेहीन की अहादीस को शरहों में इख़्तेलाफ़ नज़र आता है हालां कि वह इख़तेलाफ़ नहीं है। फ़ितरते इन्सानियां के हर पहलू की इस्लाह का रूख़ है यही मसला तरजुमे में काम आ सकता है बहर हाल मौलाना ने क़ौमे शिया पर यह एहसान फ़रमाया है कि उन्हें बराहे रास्त हक़ाएक़ व मआरिफ़ से रू–शनास करा दिया और अपने ज़ख़ीराए आख़ेरत को सद चन्द व हज़ार चन्द से भी आगे बढ़ा दिया है बड़ी ग़नीमत बात यह है कि तरजुमा मोतबर और ज़िम्मादार क़लम के ज़रिये पेश हुआ है और इस मन्ज़िल में इससे ज़्यादा की ज़रूरत नहीं इस से आगे मुजतहेदीन किराम कस्रूल्लाहे अम्सालहुम का फ़रीज़ा है ख़ुदा वन्दे आलम हज़रत अदीबे आज़म दामा ज़िल्लहू का सायए आतेफ़त क़ौम के सरों पर दराज़ रखे। आमीन

अहक़र

मोहम्मद मुस्तफ़ा अफ़ी अन्हो 3 शाबान 1384 हि.

जौहर

सुलतानुल वाएज़ीन, फ़ख़रूल मोहक़्क़ेक़ीन हज़रत सिक़तुल इस्लाम अल्लामा मौलाना मोहम्मद बशीर साहब क़िब्ला अन्सारी मद्देज़िल्लहू

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जनाब अदीबे आज़म मौलाना सय्यद ज़फ़र हसन साहब क़िब्ला अमरोहवी मद्देज़िल्लहुल आली का तार्रुफ़ मुझे उस वक़्त से हासिल है जब मोहल्ला दरबार शाह, अमरोहा में मजालिसे अशरए अरबईन की ख़िदमत अन्जाम दिया करता था और यह ख़िदमत पन्द्रह साल अन्जाम दी।

उसी ज़माने में आप के बलन्द पाया मोअल्लेफ़ात से रू–शनास होता रहता था। ममदूह ने उसी दौर में एक किताब यदुल्लाही तमाचा तहरीर फ़रमा कर महमूद अहमद अब्बासी की किताब ज़रबे अब्बासी का ऐसा मसकत जवाब दिया था कि वह इस तमाचे की ताब न ला सका।

मौलाना मौसूफ़ दो सौ से ज़्यादा किताबें तसनीफ़ व तालीफ फ़रमा चुके हैं पाक व हिन्द के उलमाए मुताख़्ख़ेरीन में शायद ही कोई ऐसा मुसन्निफ़ हो जिस की तसानीफ़ की तादाद इस हद तक पहुंची हो।

1940 में रिसालए नूर भी मौसूफ़ ही की इदारत में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रहा है इस में अक्सर व बेशतर मज़ामीन आप ही के जवाहर रेज़ होते हैं।

मजालिस ख़्वानी के सिलसिले में जो छः किताबें आप ने तहरीर फ़रमाई हैं अस्रे हाज़िर के ज़ाकेरीन उनसे इस्तेफ़ादा कर रहे हैं। और शाएक़ीन मजलिस ख़्वानी के लिये उस्ताद का दरजा रखते हैं।

अपने ज़मानए क़याम मुरादाबाद में मौसूफ़ ने जनाब सुद्दूक़ अलैहिर्रहमा की किताब जामेउल अख़बार का तरजमा "तोहफ़तुल अबरार" के नाम से शाया फ़रमाया था जो तालेबाने अक़ाएद और आमाले सहीह के लिये बेहतरीन ज़ख़ीरा है।

पाकिस्तान में तशरीफ़ आवरी के बाद आप ने मनाक़िबे शहर आशोब अलैहिर्रहमा जैसी बलन्द इल्मी किताब का तरजमा फ़रमाया जो मजमूउल फ़ज़ाएल के नाम से दो जिल्दों में शाया हो चुका है।

इस के बाद आप की तबाए मौज़ू ने बा–वजूद पीराना साली एक ऐसे अहम काम की तरफ़ मुतवज्जेह किया कि जंवा साल उलमा भी उस की अन्जाम देही में अपनी हिम्मतों

में इस्तेआश पातें हैं वह है तरजमा उसूले काफ़ी मगर आप ने हबीब इब्ने मज़ाहिर की तअस्सी में कमरे हिम्मत बांधी और रिसालए नूर में इस का तरजमा शुरू कर दिया जो जनवरी 1966 में मुकम्मल हो कर किताबी सूरत में आ गया और अब फ़रवरी 1966 ई. से काफ़ी जिल्द दोम का तरजमा शाया हो रहा है।

यह वह दीनी ख़िदमत है जिस का जवाब नहीं। आज तक हमारी कुतुबे अरबा का तरजमा उर्दू में न हो सका यह ख़ुदा वन्दे आलम का ख़ास फ़ज़्ल और ख़ुसूसी तौफ़ीक़ है कि इसका सेहरा भी आप ही के सर रहा।

आज कल यह तरजमा मेरे पेशे नज़र है निहायत सलीस और बा–मुहावरा है और लक़ब अदीब आज़म की तौफ़ीक़ व तस्दीक़ है यह तरजुमा मअ अस्ल इबारत है और आप की इल्मी सलाहियतों का बेहतरीन शाहकार है मैं आप की ख़िदमत में हदयए तबरीकात पेश करता हूं और तूले उम्र के लिये दुआ करता हूं ताकि कुतुबे अरबा का तरजमा आप के क़लमे इफ़ादत रक़म से मोमिनीने किराम की ख़िदमत में पहुंच जाये। काफ़ी जिल्द अव्वल का तरजुमा अज़ सरे नौ निहायत शानदार तरीक़े पर शाया हो रहा है किताबत व तबाअत का बेहतरीन इन्तेज़ाम हो रहा है ख़ुदा वन्दे करीम मोमिनीन को उन तबर्रुकात से बहरा–अन्दोज़ होने का मौक़ा अता फ़रमाये।

जनाब मौलाना ने जो क़लमी ख़िदमात अन्जाम दी हैं वह एक तरफ़ है मगर दूसरी तरफ़ वह एक बुनयादी ख़िदमते दीन अन्जाम दी है जिस की नज़ीर पाकिस्तान में नहीं है। और वह है जामेआ इमामिया मदरसतुल वाएज़ीन कराची जिस का मै मौसस हूं और मोअस्सिस के मुबारक हाथों से मेरी इस तासीस की तकमील हुई है।

मैंने और बरादरम सय्यद मुसय्यब अली साहब ज़ैदी ने जब इस जामेआ की बुनयाद का इरादा मौलाना की ख़िदमत में पेश किया तो आप इस के तसव्वुर और इस अहम तामीरी प्रोग्राम की तकमील को ना–मुम्किन सा समझने लगे मगर मैंने और ज़ैदी साहब ने अपनी मुकम्मल ख़िदमात का यक़ीन दिलाया मगर फ़िर भी राज़ी न होते थे बिल आख़िर कुरआने मजीद से तफ़ावुल के लिये हामी भरी। मैंने बा–वज़ू होकर तफ़ावुल किया तो आयत निकली

या अय्योहल रसूलो बल्लिग़ ————————अल्अस

अब क्या था मौलाना को राज़ी होना पड़ा। वरना हस्बे मफ़ाद आयत तमाम ख़िदमात के ज़ाया होने का अन्देशा हुआ। चुनांचें मैंने आप को सद्र और ज़ैदी साहब को सिक्रेट्री तजवीज़ करके काम शुरू कर दिया और मोमिनीन की बर वक़्त तवज्जो ने उसकी तकमील कर दी तो अब यह तामीरी बुनयादी यादगार क़ौम के सामने है।

मोहम्मद बशीर अन्सारी

24 जून, 1966, रिज़वी हाउस, फेडरल ऐरिया, कराची



पहला बाब

किताबुल अक़्ल वल जेहेल

1. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि जब ख़ुदा ने अक़्ल को पैदा किया तो उसे कुव्वते गोयाई देकर फ़रमाया। आगे आ, वह आगे आई फ़िर कहा पीछे हट वह पीछे हटी। फिर फ़रमाया। अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैने तुझसे ज़्यादा महबूब कोई चीज़ नहीं पैदा की। मै तुझको सिर्फ़ उस शख़्स में कामिल करदूँगा जिसको मैं दोस्त रखता हूँ मै तेरे पुख़्ता होने पर अम्र व नही (हुक्म देता रहूँगा और मना करता रहूँगा) करता हूँ और सवाब देता हूँ। इसी हदीस में बताया गया है कि मदारे तकलीफ़े बशरी अक़्ल है जब अक़्ल पुख़्ता न हो, एहकामे इलाही का तअल्लुक़ इन्सान से नहीं होता।

तौज़ीह : दूसरे यहाँ अक़्ल से मुराद ख़ल्क़े तदबीरी नहीं बल्कि तक़दीरी है। यानी बतौर इस्तेआरए तमसीलिया ख़ल्क़ कहा गया है तीसरे अक़्ले सहीह की तारीफ़ यह है कि जहाँ आगे बढ़ने का हुक्म दिया गया है वहां आगे बढ़े। जहाँ पीछे हटने का हुक्म है वहां पीछे हटे। चौथे कमाले अक़्ल का मज़हर अम्बिया व मुरसलीन और अइम्मा–ए–ताहेरीन हैं जिनकी अक़्ल वक़्ते पैदाइश ही से कामिल होती है। पाँचवें ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब अक़्ल है क्योंकि वह

ज़रियए मारेफ़ते बारिये ताला है। छटे यही अक़्ल वज्हे फ़ज़ीलत है तमाम मख़लूक़ पर।

2. हदीस हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : जब जिबराईल ज़मीन पर आये तो आदम से कहा। मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मै तुम्हें तीन चीज़ों में से एक के लेने और दो के छोड़ने का अख़्तियार दूँ, आदम ने पूछा वह तीन क्या हैं। जिबराईल ने कहा। अक़्ल हया व दीन है। आदम ने कहा मैने अक़्ल को ले लिया। जिबराईल ने हया व दीन से कहा तुम वापस जाओ। और अक़्ल को छोड़ो। उन्होने कहा ऐ जिबराईल हमारे लिये हुक्म यह है कि हम अक़्ल के साथ हैं। जहाँ कहीं भी वह रहे। जिबराईल ने कहा ठीक है और आसमान पर चले गये।

इस हदीस से साबित हुआ कि हया व दीन अक़्ल के साथ हैं अगर अक़्ल नहीं तो फ़िर इन्सान का वास्ता हया से रहता है न दीन से खुदा के दीन को छोड़ना इसकी दलील है कि अक़्ल रूख़सत हो गयी।

3. हदीस इमाम जाफ़र–ए–सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : किसी ने सादिक़े आले मोहम्मद से पूछा। अक़्ल की तारीफ़ क्या है फ़रमाया जिससे रहमान की इबादत की जाये और जन्नत को हासिल किया जाये। पूछा माविया मे क्या चीज़ थी। फ़रमाया नकरा, नकरा से मुराद वह चीज़ है जिससे दूर भागना चाहिये। (चालाकी, मक्कारी)

मतलब यह है कि अगर पैरवी हक़ की न की जाये तो यह निशाने अक़्ल नहीं बल्कि अक्ल से मिलती जुलती एक चीज़ है जिसे अरबी ज़बान में नकरा कहते हैं जो शख़्स

ख़ुदा की इबादत नहीं करता वह अपने लिये ज़ादे आख़िरत मोहय्या नहीं करता। उसने अक़्ल के तक़ाज़े को पूरा नहीं किया। अक़्ल इस लिये ख़ुदा ने दी है कि उसकी मारेफ़त हासिल करके उसके एहकाम पर अमल किया जाये। जिसने इस ग़रज़ को पूरा न किया उसने अक़्ल के बजाये अग़वाये शैतानी से काम लिया।

4. हदीस इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : हर शख़्स का दोस्त उसकी अक़्ल है और उसका दुश्मन उसकी जिहालत यानी जो कोई अक़्ल रखता है पैरवीये हक़ करता है उस सूरत में दुश्मन की दुश्मनी उसे नुक़्सान नहीं पहुचा सकती और अगर अक़्ल नही है बल्कि जिहालत है तो कोई उसे नफ़ा नहीं पहुचा सकता।

5. रावी ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा। हमारे पास एक ऐसी जमाअत है कि उनको आप से मोहब्बत तो है लेकिन वह बात नहीं जो दोस्ती के लाएक़ है क्यों कि उन्हो ने अपने दीन को मोहकमाते क़ुर्आन से इल्म व यक़ीन व बसीरत के साथ नहीं लिया जिस तरह हम इक़रार करते हैं उस तरह नहीं करते क्या वह लोग मोमिन हैं फ़रमाया यह लोग उनमें नहीं जिनकी अदब आमोज़ी ख़ुदा ने की है अल्लाह ने ऐसे लोगों से ख़िताब नहीं किया। अक़्लमन्दों से ख़िताब करते हुये सूरः हश्र में फ़रमाया है। ऐ बसीरत वालों इबरत हासिल करो। यानी यह क़ौम सहीह मानी में मोमिन नहीं बल्कि एहले शक हैं।

6. हदीस फ़रमाया इमामे जाफ़र–ए–सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जो साहेबे अक़्ल हैं उसका इमान हक़ीक़ी है वह दाख़िले जन्नत होगा।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा वन्दे आलम रोज़े क़यामत अपने बन्दों से मुहासेबा इसी लेहाज़ से करेगा जितनी अक़्ल उनको दुनिया में दी है।

8. रावी कहता है कि मैं ने इमाम जाफ़र-ए-सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि फ़लां शख़्स अपनी इबादत और दीन व फ़ज़्ल में ऐसा ऐसा है। फ़रमाया उसकी अक़्ल कैसी है मैंने कहा मैं यह नहीं जानता, फ़रमाया सवाब ब-कद्रे अक़्ल मिलता है। बनी इस्राईल में एक आबिद अल्लाह की इबादत ऐसे जज़ीरे में कर रहा था जो निहायत सर सब्ज़ व शादाब था। ब-कसरत दरख़्त थे और साफ़ व शफ़्फाफ़ पानी। एक फ़रिशता उधर से गुज़रा। कहने लगा यारब मुझे इस बन्दे का सवाब दिखा दे, ख़ुदा ने दिखा दिया। फ़रिशते को ब-लेहाज़े इबादत कम मालूम हुआ। खुदा ने वही की कि तू इसकी सोहबत में जा कर रह। फ़रिशता बशरी सूरत में उसके पास गया। उसने पूछा तू कौन है उसने कहा मैं एक मर्दे आबिद हूँ मुझें पता चला है तेरे मकाने इबादत का दिल चाहा कि तेरे साथ अल्लाह की इबातद करूँ। पस वह उसके साथ दिन भर रहा। सुब्ह को फ़रिशते ने कहा। यह बड़ी फ़रहत की जगह है इबादत के लिये बड़ी मौजूं है आबिद ने कहा हाँ अच्छी है मगर एक बात ख़राबी की है उसने कहा वह क्या है। कहा हमारे रब के पास कोई चौपाया नहीं। अगर गधा होता तो हम चराते और यहाँ की घास बेकार न जाती। ख़ुदा ने फ़रिशते को वही की कि हम इसको सवाब ब-कद्र उसकी अक़्ल के दें गे।

9. रसूलल्लाह स0 ने फ़रमाया : जब तुम को किसी

शख़्स के मुताल्लिक़ अच्छी इबादत का हाल मालूम हो तो यह देखो उसकी अक़्ल कैसी है क्योंकि बदला अक़्ल के मुताबिक़ दिया जायेगा।

10. रावी कहता है कि मैने इमाम जाफ़र–ए–सादिक़ अलैहिस्सलाम के सामने एक शख़्स का ज़िक्र किया जो वुज़ू व नमाज़ में मुब्तिलाये वस्वास था मैने कहा वह मर्द आक़िल है फ़रमाया उसके पास अक़्ल कहाँ जो शैतान की पैरवी करता है मैने कहा यह कैसे। फ़रमाया उससे पूछो। यह वस्वास जो तेरे दिल में पैदा होतें है यह कहाँ से आते हैं वह कहेगा यह अमले –शैतान है।

11. रावी कहता है कि फरमाया रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने खुदा ने अपने बन्दों पर अक़्ल से अफ़ज़ल कोई चीज़ तक़सीम नहीं की। आक़िल का सोना जाहिल के जागने से बेहतर है और मुक़ीम होना बेहतर है जाहिल के सफ़रे हज वग़ैरा करने से। खुदा ने जिस रसूल को भेजा वह अज़–रूहे अक़्ल कामिल था उसकी अक़्ल अफ़ज़ल होती है तमाम आबिदों की अक़्लों से ज़्यादती–ए–इबादत की वजह से और वह ऊलुल्अल्बाब हैं जिनका ज़िक्र खुदा ने कुर्आन में किया है : *"वमा यतज़क्करो इल्ला ऊलुल्अल्बाब"* ।

असल हश्शाम बिन अल–हकम से मरवी है कि अबुल हसन मूसा बिन जाफ़र अलैहिस्सलाम ने मुझ से बयान फ़रमाया कि ऐ हश्शाम खुदा एहले अक़्ल व फ़हम के लिये अपनी किताब में फ़रमाता है *"फ़बश्शिर इबादियल्लाना मस्तमेऊनल्क़ौला फमब्तगूना अहसनहू ऊलाएकल्लज़ीना हदाहुमुल्लाहो व ऊलाएका हुम ऊलुल्अलबाब"* ऐ मोहम्मद

स0! बशारत दे दो मेरे उन बन्दों को जो कान लगाकर मेरा कलाम सुनते हैं और अच्छी बात पर अमल करते हैं यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत की है और वह अक़्लमन्द हैं।

ऐ हश्शाम खुदा ने उकूल के ज़रिये से अपनी हुज्जत को इन्सानों पर तमाम किया और बयान से अम्बिया की नुसरत और दलाएल से अपनी रूबूबियत की तरफ़ उनकी रहनुमाई फ़रमाई और फ़रमाया बेशक आसमानों और ज़मीन की ख़िलक़त में और रात दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो दरिया में चलती हैं और लोगों को नफ़ा पहुँचाती है और आसमान से पानी नाज़िल होता है और उससे ज़मीन ज़िन्दा की जाती है और हर क़िस्म के चौपाये जो इस पर चलते फिरते हैं और हवाओं का चलना और आसमान व ज़मीन के दरमियान बादल का मुसख़्ख़र होना यह सब उन लोगों के लिये ख़ुदा की निशानियाँ हैं जो अक़्ल रखते हैं।

ऐ हश्शाम खुदा ने उनको अपनी मारेफ़त की दलील क़रार दिया है उनसे मालूम होता है कि कोई मुद्ब्बिर है। वह फ़रमाता है तुम्हारे लिये रात और दिन और सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र कर दिया और सितारे उसके हुक्म से मुसख़्ख़र हैं उनमें अक़्लमन्दों के लिये ख़ुदा की मआरेफ़त की निशानियां है यह भी फ़रमाता है कि ख़ुदा वह है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर नुत्फे से फिर अल्क़े से फिर तुम्हें बच्चा बना कर निकालता है फ़िर तुम्हें शबाब की मन्ज़िल तक पहुँचाता है फिर तुम बड़े हो जाते हो और बाज़ उससे ले मर जाते हैं। ताकि तुम पहुँचो मुद्दते

मुअय्यन तक और ताकि तुम समझो बूझो ख़ुदा मरने के बाद ज़मीन को जिन्दा करता है। हम ने अपनी आयात तुम से बयान कर दीं ता कि तुम समझो।

और फ़रमाता है अन्गूरों के बाग़ हैं और खेतियाँ है और ख़ुरमे के दरख़त हैं एक तने के और दो शाख़ों के जो एक ही पानी से सेराब होते हैं और हमने ज़ाएक़े में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है यह निशानियाँ हैं उस क़ौम के लिये जो समझ वाली हैं।

और फ़रमांया उसकी निशानियों में से एक यह है कि तुमको बिजली दिखाता है जो तुम्हारे लिये उम्मीद व बीम का बाएस होती हैं और आसमान से पानी बरसाताहै जिस से ज़मीन मरने के बाद ज़िन्दा हो जाती है उसमें आयात हैं उस क़ौम के लिये जो साहेबे अक़्ल हैं।

और फ़रमाता है आओ मैं तुम्हें बताऊँ कि ख़ुदा ने तुम पर क्या हराम किया है किसी चीज़ को ख़ुदा का शरीक न बनाओ। वालिदैन से एहसान करो और मुफ़सिली के ख़ौफ़ से अपनी औलाद को क़त्ल न करो। हम तुम्हें भी रिज़्क़ देने वाले हैं और उनको भी। और बदकारियों के क़रीब न जाओ। ज़ाहिर हो या छिपी हुई और बे ख़ता किसी की जान न लो। हाँ हक़ पर क़त्ल करो तो ठीक है। मेरी तुम को यही हिदायत है ताकि तुम अक़्लमन्द हो। और फ़रमाया आया तुम्हारे शरीक हैं तुम्हारे तमाम गुलाम और कनीज़ें उस चीज़ में जो हमने तुमको रिज़्क़ दिया है तो क्या तुम उस माल के तसर्रुफ़ में सब बराबर हो कि तुम डरते हो क्या तुम्हें उनसे ऐसा ही ख़ौफ़ है जैसा तुम्हें अपने

लोगों का हक़ व हिस्सा देने में ख़ौफ़ होता है (फ़िर बन्दों को ख़ुदा का शरीक क्यों बनाते हो हम अक़्लमन्दों के लिये अपनी आयात यूहीं तफ़सील से बयान करते हैं।)

यानि जब तुम इक़रार करते हो इस बात का कि तुम उस अम्र पर राज़ी नहीं होते कि तुमहारे कनीज़ और गुलाम बग़ैर तुम्हारे हुक्म के तुम्हारे उस माल में तसर्रुफ़ करें जो हम ने तुम को दिया है तो ख़ुदा क्यों कर इस बात पर राज़ी होगा कि उसके बन्दें पैरवी ज़न (गुमान) करके उसके कारख़ानए कुदरत में तसर्रुफ करे जिसमें उसने किसी का शरीक नहीं बनाया।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ हश्शाम! ख़ुदा ने अपनी हुज्जत पूरी करने के लिये अक़्लों और पैग़म्बरों की हिदायत पर इक्तेफ़ा नहीं की बल्कि उसके बाद अक़्लों को नसीहत की और आख़ेरत की तरफ़ रग़बत दिलायी। इस तरह कि फ़रमाया नहीं है ज़िन्दगानिये दुनिया मगर लहबो लाब, अलबत्ता दारे आख़िरत बेहतर है उन लोगों के लिये जो अज़ाबे आख़िरत से डरते हैं और अक़्ल से काम लेते हैं फिर पन्द (नसीहत) के बाद उसने उन लोगों को डराया जो समझ बूझ से काम नहीं लेते, फ़रमाया हमने दूसरों को हलाक कर दिया ऐ एहले मक्का तुम गुज़रते हो सफ़र में उस तरफ़ से जहाँ क़ौमे लूत को हलाक किया था सुब्हो शाम (यह मन्ज़र देखते हो) तो क्या समझ से काम न लोगे हम नाज़िल करने वाले हैं उस गाँव के बाशिन्दों पर आसमान से अज़ाब, क्योंकि वह फ़ासिक़ हैं और हमने उस अज़ाब से रौशन दलीलें छोड़ी है उन लोगों के लिये जो अक़्ल वाले हैं।

ऐ हश्शाम फिर ख़ुदा ने मज़म्मत की है। उन लोगों की जो अक़्ल नहीं रखते फरमाता है जब उन से कहा गया जो कुछ अल्लाह ने नाज़िल किया है उस की पैरवी करो। तो उन्हों ने कहा कि हम तो पैरवी करे गें उसकी जिस पर हम ने अपने आबाओ अजदाद को पाया है अगर चे उनके आबाओ अजदाद ने कुछ भी नहीं समझा और न हिदायत पायी। और फ़रमाया काफ़िरों की मिसाल उन लोगों जैसी है जो निदा करते हैं उन (बकरियों) को जो आवाज़ के सिवा कुछ नहीं सुनतीं। वह बहरे गूँगें और अन्धे हैं जो कुछ नहीं समझते और फ़रमाता है बाज़ ऐसे हैं कि ऐ रसूल तुम्हारी बात सुनते हैं। मगर (राह पर नहीं आते) पस तो क्या तुम बहरों को सुनाते हो चाहे वह अक़्ल न रखते हों और फ़रमाता है तो क्या ऐ रसूल तुम यह गुमान करते हो कि अकसर लोग जो तुम्हारी बात सुनतें और समझतें हैं तो ऐसा नहीं वह चौपायों की मानिन्द हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा सबील, ज़्यादा गुमराह, ऐ हश्शाम फिर फरमाता है यहूदी तुमसे जंग नहीं करते, मगर ऐसे क़रियों में जो ख़नदक़ों से महफ़ूज़ हैं या दीवारों के पीछे। क्योंकि वह अपनों से भी बहुत डरते हैं तुम उनको बाहम दोस्त जानते हों हाँलाकि उनके अन्दर इख़तेलाफ़ है और वह अक़्ल नहीं रखते और फ़रमाता है सूरः बक़रा में तुम अपने नफ़्सों को भूले जाते हो हांलाकि तुम किताब पढ़ते हो, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते।

ऐ हश्शाम ख़ुदा ने कसरत की मज़म्मत की है फ़रमाता है अगर तुम उस अकसरियत का इत्तेबा करो जो रूए ज़मीन पर है तो वह तुमको ख़ुदा के रास्ते से गुमराह कर

देगी फिर फ़रमाता है अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और ज़मीन को किस ने पैदा किया। तो वह कहें गे अल्लाह ने। कहदो हम्द है अल्लाह के लिये और अकसर उन में से नहीं जानते और ख़ुदा ने फ़रमाया। अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से किसने पानी बरसाया, जिस से मरने के बाद ज़मीन को ज़िन्दा किया गया। तो वह कहें गे अल्लाह ने। कहो हम्द है अल्लाह के लिये लेकिन उनके अकसर नहीं समझते।

हजरत ने फ़रमाया – ऐ हश्शाम ख़ुदा ने अकसर की मज़म्मत के बाद क़िल्लत की मदह फ़रमायी है। फ़रमाता है :– मेरे शुक्रगुज़ार बन्दें कम है (सबा) और इमान व अमले सालेह रखने वाले कम हैं (साद) एक बन्दा मोमिन जो आले फ़िरऔन में से था कहा क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करते हो। जो यह कहता है मेरा रब अल्लाह है (मोमिन) और सूरः हूद में है कि नूह पर कम लोग ईमान लाये लेकिन उनके अकसर नहीं जानते और उनके अकसर समझ नहीं रखते।

ऐ हश्शाम! फिर खुदा ने साहेबाने अक़्ल का ज़िक्र बेहतरीन सूरत में किया है और बेहतरीन जेवरे फ़ज़्ल व कमाल से उनको आरास्ता किया है और फ़रमाया है ख़ुदा जिसे चाहता है हिकमत देता है और जिसे हिकमत दी गयी है उसे ख़ैरे कसीर दी गयी और नहीं ज़िक्र करते मगर ऊलुल अलबाब और फ़िर फ़रमाता है आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने रात दिन के बार बार आने जाने में साहेबाने अक़्ल के लिये ख़दा की निशानियाँ हैं जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ ऐ रसूल तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है वह हक़ है वह उस अन्धें की तरह नहीं जो कुछ

नहीं समझता। तज़किरा करने वाले तो साहेबाने अक़्ल ही हैं जो रात की तारीकी में सुजूद व क़याम के साथ अल्लाह की तरफ रूजू करने वाले हैं और वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत की उम्मीद करता है। कहदो ऐ रसूल जो लोग जानते हैं और जो नहीं जानते। क्या वह बराबर हैं, बेशक साहेबाने अक़्ल ही तज़किरा करते है और फ़रमाया ऐ रसूल जो किताब हमने तुम पर नाज़िल की है वह मुबारक है और ग़रज़े नुजूल यह है कि लोग उसकी आयात में ग़ौर व तआम्मुल करें और तज़किरा करते हैं उसका साहेबाने अक़्ल, हमने मूसा को हिदायत भरी किताब दी और वारिस बनाया। बनी इसराईल की उस किताब का जो हिदायत व नसीहत है अक़्लमन्दों के लिये ज़िक्र करो क्योंकि ज़िक्र करना मोमिनीन को नफ़ा देता है।

ऐ हश्शाम ख़ुदा अपनी किताब में फ़रमाता है नसीहत उसके लिये सूदमन्द है जो दिल यानी अक़्ल रखता है हमने लुक़मान को हिकमत दी (इमाम ने फ़रमाया इससे मुराद अक़्लमन्दी और होशमन्दी है।)

ऐ हश्शाम लुक़मान ने अपने बेटे से कहा, एहकामे किताबुल्लाह के आगे फ़रोतनी कर ताकि तू लोगों में सब से ज़्यादा अक़्लमन्द हो, बेशक अक़्लमन्द लोग ख़ुदा–ए–हकीम के नज़दीक कम हैं (क्योंकि अकसर लोगों ने किताबुल्लाह को छोड़ कर अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करली है) ऐ फ़रज़न्द दुनिया एक गहरे समन्दर के मानिन्द है जिस में बहुत से लोग डूब गये पस चाहिये कि तेरी कश्ती इस पुर शोर दरिया में तक़वा हो और मताअ कश्ती *तुअज्जेरो इलल्लाह* और उसका बादबान तवक्कुल अलल्लाह हो।

और उसकी कारफ़रमा अक़्ल हो और नाख़ुदा हिल्म और पत्वार सब्र हो।

ऐ हश्शाम हर शै के लिये एक दलील होती है और दलीले अक़्ल फ़िक्र है अवाक़िबे उमूर में और रहनुमाई फ़िक्र ख़मोशी में है। हर शै का एक मददगार है अक़्ल का मदार फ़रोतनी पर है क्यों कि तकब्बुर करना और शेखी मारना अक़्लमन्दी की राह से हटा देता है और बेअक़्ली के लिये इतनी बात काफ़ी है कि जिस चीज़ से ख़ुदा ने मना किया है तू उसे बजा लाये।

ऐ हश्शाम ख़ुदा ने बन्दों की तरफ़ अपने अंम्बिया व मुरसलीन को इस लिये भेजा है कि वह अक़्लमन्दों के साथ अल्लाह से यानी कुरआन से इल्म हासिल करें और अज़रू–ए–इस्तेजाबत व मारेफ़त अम्र अल्लाह में सबसे बेहतर हों और अक़्ल में कामिल हों और दुनिया और आख़िरत में अज़रू–ए–दरजात बलन्द हों।

ऐ हश्शाम अक़्लमन्द वह है कि हलाल रोज़ी की कमी उसके शुक्र को कम नहीं करती है और हराम की ज़्यादती उसके सब्र को कम नहीं करती है यानी हराम चीज़ों की ज़्यादती देख कर वह उनमें तसर्रुफ़ को रवा नहीं रखता।

ऐ हश्शाम जिस ने तीन चीज़ों को तीन पर मुसल्लत किया उसने अपनी अक़्ल को ख़राब होने में मदद की और जिसने तूले अमल से अपनी फ़िक्र को तारीक किया उसने अपने फ़ुज़ूल कलाम से अपनी हिकमत के नवादिर को अपने से अलग किया और अपने नूरे ग़ैरत को बुझा दिया। गोया उसने अक़्ल की ख़राबी पर अपनी ख़्वाहिशों की मदद की और जिसने अपनी अक़्ल को ख़राब किया उसने अपने

दीन व दुनिया को तबाह किया।

ऐ हश्शाम क्योंकर पाक साफ़ रहे गा तेरा अमल। दरआंहाले कि तूने हुक्मे रब से दिल को हटा लिया और अक़्ल के तबाह करने में ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी की है।

ऐ हश्शाम तन्हाई पर सब्र करना कुव्वते अक़्ल की अलामत है जिसने (किताबे) ख़ुदा से इल्म हासिल किया तो वह अहले दुनिया और उसकी तरफ़ रग़बत करने वालों से अलग हो गया और ख़ुदा की तरफ़ रूजू की पस ख़ुदा दहशत में उसका अनीस और वहदत में उसका साथी और मुफ़लिसी में उकी तवंगरी और ग़ैर क़बीला उसके लिये इज़्ज़त हुआ।

ऐ हश्शाम ख़ुदा अपनी किताब में कहता है उस किताब में नसीहत है उस शख़्स के लिये जिसके पास क़ल्ब या अक़्ल हो। ऐ हश्शाम हक़ ताअते ख़ुदा है और नहीं है निजात मगर इताअते ख़ुदा में और ताअत होती है इल्म से और इल्म होता है हासिल करने से और हासिल किया जाता है अक़्ल से और नहीं इल्म लेना चाहिये मगर आलिमे रब्बानी से और मारेफ़ते इल्म का ताल्लुक़ अक़्ल से है।

ऐ हश्शाम आलिम का क़लील अमल मक़बूल और दो चन्द है और अहले हवा व जेहेल का कसीर अमल भी मरदूद है।

ऐ हश्शाम अक़्लमन्द आदमी हिकमत व दानाई पाकर कम से कम मताए दुनिया पर राज़ी हो जाता है और नहीं राज़ी होता कम ख़िरदमन्दी पर जो ज़्यादतीए सामाने दुनिया के साथ हो।

ऐ हश्शाम दुनिया के सामान की ज़्यादती को अक़्लमन्द लोगों ने तर्क किया। पस सुदूरे गुनाह उनसे क्यों हो, तर्के दुनिया फ़ज़ीलत है और तरके गुनाह फ़र्ज़।

ऐ हश्शाम अक़्लमन्द आदमी ने नज़र की दुनिया और उसके अहल की तरफ़; पस मालूम हुआ कि दुनिया नहीं मिलती मगर मशक़्क़त से और फ़िर नज़र की आख़ेरत की तरफ़ पस मालूम हुआ कि वह भी मशक़्क़त से हासिल होती है पस उसने तलब किया मशक़्क़त के साथ इन दोनों में ज़्यादा बाक़ी रहने वाली को यानी आख़िरत को।

ऐ हश्शाम अक्लमन्दों ने ज़ोहोद फ़िद दुनिया अख़्तियार किया और आख़िरत की तरफ रग़बत की क्योंकि उन्होंने यह जान लिया कि दुनिया तालेबा और मतलूबा है और आख़िरत भी तालिबा और मतलूबा है पस जिसने आख़िरत को तलब किया। दुनिया उसकी तालिब बनी यहाँ तक कि उसका रिज़्क़ दुनिया से पूरा हुआ और जिसने दुनिया को तलब किया आख़िरत ने उसको तलब किया जब उसको मौत आयी तो उसकी दुनिया और आख़िरत दोनों तबाह हुई।

ऐ हश्शाम जो चाहता है आरज़ू से छुटकारा मिले और हसद से दिल दूर रहे और अम्रे दीन में सलामती हासिल हो उसे चाहिये कि अल्लाह की तरफ़ रूजू करके यह सवाल करे कि वह उसकी अक़्ल को कामिल बना दे जिसकी अक़्ल कामिल हुई उसने क़नाअत की बक़द्रे किफ़ायत चीज़ पर और जिसने क़नाअत की उस पर वह मुसतग़नी हो गया और जिसने बक़द्रे ज़रूरत इकतेफ़ा न की उसने इस्तिग़ना को कभी न पाया।

ऐ हश्शाम ख़ुदा ने हिकायत की है नेक लोगों की बईतौर कि उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब हमारे दिलों को कज न कर उसके बाद कि तूने हमको हिदायत की, ऐ माबूद हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर बेशक तू बड़ा बख़्शने वाला है जब उन्होने यह जान लिया कि कुलूब कज होते है और बेसब्री और हलाकत की तरफ़ लौटते हैं तो यह समझ लिया जिसने अल्लाह से अक़्ल हासिल नहीं की यानी किताबे ख़ुदा से इल्म हासिल नहीं किया वह अल्लाह से नहीं डरता। जिसने ख़िरदमन्दी को किताबे ख़ुदा से हासिल न किया और अपने दिल में मारेफ़ते पाइन्दा को जगह न दी जिससे मदद हासिल करता और हक़ीक़त को पा लेता यह तो वही करेगा। जिसका क़ौल उसके फ़ेल की तसदीक़ करता हो, और ज़ाहिर बातिन के मुताबिक़ हो क्योंकि ख़ुदा ने लोगों की रहनुमाई नहीं की बातिन ख़फ़ी पर। जिससे मुराद अक़्ल है मगर मोहकमाते कुरआन से यानी रसूले सुख़न सरीह से हिदायत फ़रमाते थे और मना करते थे इख़्तेलाफ़ और पैरवी–ए–ज़न से।

ऐ हश्शाम अमीरूल मोमिनीन अ० फ़रमाया करते थे कि अक़्ल से बेहतर इबादत ख़ुदा की किसी ने नहीं की। आदमी की अक़्ल कामिल नहीं होती जब तक उसमें चन्द ख़सलतें जाहिर न हों। 1. उसको कुफ़्र व शिर्क से अमन हो। 2. उससे नेकी और ख़ैर की उम्मीद हो। 3. ज़रूरत से ज़्यादा माल को राहे ख़ुदा में ख़र्च करे। 4.दुनिया से उसका हिस्सा कूव्वते ला–यमूत हो। 5. इल्म की तहसील से सेर न हो। 6. राहे ख़ुदा में ज़िल्लत उसके नज़दीक ज़्यादा महबूब हो उस इज़्ज़त से जो ग़ैर से मिले। 7. ग़ैर का थोड़ा

एहसान ज़्यादा जाने। और 8. अपना एहसान दूसरे के साथ कम समझे। सबको अपने से बेहतर और अपने को उनसे बदतर जाने।

अक़्लमन्द झूठ नहीं बोलता, हर चन्द ख़्वाहिशे तबा हो।

ऐ हश्शाम जिसके लिये मुरव्वत नहीं उसके लिये दीन नहीं। और मुरव्वत उसी के लिये नहीं जिसके पास अक़्ल नहीं अज़रूए क़द्र व मन्ज़िलत सबसे बड़ा आदमी वह है जो अपने लिये दुनिया को कोई बड़ी चीज़ नहीं समझता। आगाह रहो कि तुम्हारे अबदान की क़ीमत जन्नत के सिवा कुछ नहीं पस उन को जन्नत के सिवा किसी के बदले में न बेचो।

ऐ हश्शाम! अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे अक़्लमन्द की अलामत यह है कि उसमें तीन ख़सलतें हों। जब सवाल किया जाये तो जवाब दे और जब क़ौम आजिज़ हो तो बोले ओर मशवरा दे ऐसी राये से जिस से उसके अहल की इस्लाह हो जिसमें तीन ख़सलतें न हो या उनमें से एक भी न हो वह अहमक़ है अमीरूल मोमिनीन अ0 ने फ़रमाया मजलिस के सदर में न बैठे मगर वह शख़्स जिसमें यह तीन ख़सलतें हों या कम से कम उनमें से एक हो और जिसमें एक भी न हो वह अहमक़ है।

इमामे हसन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब तुम हाजतों को तलब करो तो उसके अहल से तलब करो किसी ने कहा यबना रसूलिल्लाह अहल कौन है फ़रमाया यह वह लोग हैं जिनका ज़िक्र ख़ुदा ने किया है कि ऊलुल अल्बाब नसीहत हासिल करते हैं और हज़रत ने फ़रमाया वह

साहेबाने अक़्ल हैं।

हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नेकों की सोहबत में बैठना सलाह व दोस्ती का सबब होता है और आदाबे उलमा बाएसे ज़्यादतीए अक़्ल है और आक़िल हुक्मुरानों की इताअत सबबे इज़्ज़त है और अपने माल को नफ़्क़ाए अहल व अयाल में ख़र्च करना मुरव्वत है ओर तालिबे मशवेरत को राहे नेक दिखाना हक़्क़े नेमत है और ईज़ा रसानी से बाज़ रहना कमाले अक़्ल और राहते बदन है जल्द या ब–देर।

ऐ हश्शाम अक्लमन्द बात नहीं करता उस से जिस के झुठलाने से डरता है और नहीं सवाल करता उस से जिस के मना करने से डरता है और जिस पर क़ाबू न हो उस का वादा नहीं करता और ना हीं उम्मीद करता है उस चीज़ की जिस की उम्मीद बाएसे सर ज़निश हो और नहीं क़दम उठाता है ऐसी चीज़ की तरफ़ कि ख़बर की बिना पर उस के फौत होने का ख़ौफ़ हो।

अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अक़्ल एक परदा है पिनहा है और बख़शिशे माल ब ख़ूबी नुमाया है पस अपने ख़ल्क़ की ख़राबी को बख़शिश से छुपाले और अपनी बद ख़्वाहिशों को अपनी अक़्ल से क़त्ल कर तेरे लिये बातिनी मोहब्बत क़ाएम रहेगी और लोगों की ज़ाहिर दोस्ती नुमायां होगी।

समाआ से मरवी है कि मै इमाम जाफरे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप की ख़िदमत में आप के दोस्तों की एक जमाअत मौजूद थी

और अक़्ल व जेहेल का ज़िक्र हो रहा था हज़रत ने फ़रमाया अक़्ल और उसके लशकर को और जेहल और उसके लशकर को पहचानों हिदायत पा जाओ गे समाआ ने कहा मेरी जान आप पर फ़िदा हो हम तो उतना ही जानते हैं जितना आप ने बताया है हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ला ने अक़्ल को पैदा किया और वह रूहानिय्यीन में सब से पहली मख़लूक है जिस को अपने नूर से यमीने अर्श से पैदा किया उससे कहा पीछे हट वह पीछे हट गयी। फ़िर कहा आगे आ वह आगे आयी ख़ुदा ने फ़रमाया मै ने तुझ को ख़िलक़ते अज़ीम के साथ पैदा किया और अपनी तमाम मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत दी। फिर जेहेल को पैदा किया। खारी दरिया से जो ज़ुल्माती था उससे कहा पीछे हट वह पीछे हट गया फिर कहा आगे आ वह आगे न आया। ख़ुदा ने कहा तूने तकब्बुर किया और उस पर लआन की। फिर ख़ुदा ने अक़्ल के लिये पछत्तर ख़ूबियों का लशकर अता किया। जब जेहेल ने अक़्ल का यह इज़्ज़त व इकराम देखा तो अक़्ल की अदावत उसके दिल में समा गयी। जेहेल ने कहा ऐ मअबूद तूने मेरी तरह अक़्ल को भी पैदा किया तूने उसको साहेबे करामत व कुव्वत बना दिया। मैं उसकी ज़िद हूँ मेरे लिये कोई कुव्वत नहीं पस जैसा लशकर उसे दिया है अपनी रहमत से मुझे भी दे। ख़ुदा ने फ़रमाया अच्छा अगर तूने इस लशकर की नाफ़रमानी की तो मैं तुझे और तेरे लशकर को अपनी रहमत से दूर कर दूंगा। उसने कहा मै राज़ी हूँ ख़ुदा ने उसे भी पछत्तर फौजी दिये।

पस अक़्ल की फ़ौज जिन पछत्तर से बनाई गयी है

वह यह हैं :–

ख़ैर जो वज़ीरे अक़्ल है उसकी ज़िद शर है जो वज़ीरे जेहेल है ईमान जिस की ज़िद कुफ्र है तस्दीक़ जिसकी ज़िद इन्कार है उम्मीद जिसकी ज़िद मायूसी है अद्ल जिसकी ज़िद जुल्म है रिज़ा जिसकी ज़िद गुस्सा है शुक्र जिस की ज़िद कुफरान है तमा (उमूरे ख़ैर में ज़्यादती की ख़्वाहिश) उसकी ज़िद यास है। तवक्कुल जिसकी ज़िद हिर्स है। मेहरबानी या नर्म दिल जिसकी ज़िद सख़्त दिली है। रहमत जिसकी ज़िद ग़ज़ब है इल्म जिसकी ज़िद जेहेल है। फ़हम जिसकी ज़िद हिमाक़त है। तफक़ा जिसकी ज़िद तहतक है ज़ोहोद जिसकी ज़िद रग़बत है खुश खूई जिसकी ज़िद बदखूई है। डरना जिसकी ज़िद जुर्रात है यानी बदी से डरना जिसकी ज़िद बेबाकी है फरोतनी जिसकी ज़िद दावा व बुजुर्गी है और फ़िक्र व सुख़न में आहिस्तगी। उसकी ज़िद जल्दबाज़ी है और हिल्म की ज़िद दुश्नाम–दिही है और ख़ामोशी की ज़िद हरज़ाह गोई है और कुबूलियत की ज़िद सर कशी है। तस्लीम की शक है सब्र की ज़िद बेक़रारी है दर गुज़र की ज़िद इन्तेक़ाम है इस्तिग़ना की ज़िद फक्र है तज़क्कुर की ज़िद सहू है हिफ़्ज़ की ज़िद निसयान, मेहरबानी की ज़िद क़तए ताल्लुक़ और क़नाअत की ज़िद हिर्स है। मोहताजों से हमदर्दी इसकी ज़िद हमदर्दी को रोक देना है और मोहब्बत की ज़िद अदावत है और वफ़ा की ज़िद उज़्र और ताअत की ज़िद मासियत है और गिरया व ज़ारी की ज़िद सर कशी और सलामती की ज़िद बला और मोहब्बत की ज़िद बुग्ज़ है और सच की ज़िद झूठ और हक़ की ज़िद बातिल और अमानत की ज़िद ख़यानत

है और बेग़रज़ कहने की ज़िद ग़रज़ आलूद बात करना है और चीज़ों का जल्द तसव्वुर करना इस की ज़िद को दिन बन्ना है फ़हम की ज़िद ग़बी होना है और मअरेफ़त की ज़िद इन्कार है और किसी की बदी से चश्म पोशी की ज़िद उसका ज़ाहिर कर देना और नमाज़ को अदा करना, उसकी ज़िद ग़फ़लत से पैरवी–ए–अइम्मा को ज़ाया करना है और रोज़ा रखना उसकी ज़िद है शिक़म परस्ती, जंग करना दुश्मने दीन से उसकी ज़िद हक़ से रूगरदानी, और हज की ज़िद है पैमाने इलाही को पसे पुश्त डालना, और लोगों की बातों पर निगाह रखना उसकी ज़िद है चुग़लख़ोरी, माँ बाप के साथ एहसान करना उसकी ज़िद है उनकी ना फ़रमानी, और हक़ीक़त की ज़िद है रिया और मारूफ़ की ज़िद मुनकिर है और सतर की ज़िद है इज़हार, ख़ूबी और तक़य्या की ज़िद है इज़हारे हक़ बेबाकी से करना और इन्साफ़ की ज़िद है लोगों के दरमियान तफ़ावुत क़ाएम करना। बे वजह दुश्मन से रिज़ा जोई जिस में दोनों के लिये बेहतरी हो इस की ज़िद ज़्यादा रवी है और पाकीज़गी ज़िद चरक है शर्म की ज़िद बे शर्मी है और मियाना रवी की ज़िद हद से गुज़रना है राहत की ज़िद ताब और सहूलत की ज़िद सऊबत और बरकत की ज़िद नहूसत और आफ़ियत की ज़िद बला और वलक़वाएम की ज़िद मुकासरह ज़िदे हिकमत ख़्वाहिश हाये बद और वक़ार की ज़िद सुबकी और सआदत की ज़िद शक़ावत, तौबा की ज़िद इज़रार है, इस्तिग़फ़ार की ज़िद है एतज़ार बा वजूदे गुनाह नेमत हाये इलाही खाना और निगेहदारी अम्र व नही की ज़िद है सहल इन्कारी और दुआ की ज़िद है उस से रूगरदानी और

निशात की ज़िद है काहिली, खुशी की ज़िद हुज़न है उलफ़त की ज़िद फुरक़त और सख़ावत की ज़िद बुख़्ल है।

अजनादे अक़्ल की यह तमाम क़िस्में नहीं जमा होतीं मगर नबी या वसीए नबी में उस मोमिन में जिसके ईमाने क़ल्बी का इम्तेहान ख़ुदा ने ले लिया हो रहे बाक़ी हमारे मवाली तो उन में से कोई ऐसा नहीं जिस में जुनूदे अक़्ल से कोई चीज़ न पाई जाती हो मगर जुनूदे जेहेल से भी उसमें कुछ होगा। लेहाज़ा वह बुलन्द दर्जे में अम्बिया और औसिया के साथ होगा और वह यह दर्जा पायेगा अक़्ल और उसके लशकर की मआरेफ़त और जेहेल से दूर कर देने की बिना पर ख़ुदा हम को और तुम को अपनी ताअत और मर्ज़ी की तौफ़ीक़ दे।

15. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नहीं कलाम किया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने बन्दों से उनकी अक़्ल के और हज़रत सल्अम ने फ़रमाया हम गिरोहे अम्बिया को हुक्म दिया गया है कि लोगों से ब–क़द्र उनकी अक़्लों के कलाम करो।

16. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जुल्हाल के दिल उन शिकारी जानवरों की तरह हैं कि तमा उनको अपनी जगह से निकालती है और वह शैतानी फ़रेब के जाल में फ़ंस जाते हैं।

17. अली इब्ने इब्राहीम ने अपने वालिद से उन्होंने जाफ़र बिन मोहम्मदिल्अशअरी से और उन्होंने हबीबुल्लाह अद्देहकां से। उबैदुल्लाहिद्देहकां ने दुरूस्त और दुरूस्त ने इब्राहीम बिन हमीद से कहा कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस का ख़ुल्क़ अच्छा है वही लोगों में

कामिल–उल–अक़्ल है।

18. अबू हाशिम जाफ़री से मरवी है कि हम इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर थे पस अक़्ल और अक़्लमन्दी का तज़किरा होने लगा। हज़रत ने फ़रमाया ऐ अबू हाशिम अक़्ल बख़शिशे इलाही है जो किसी को कम मिली है और किसी को ज़्यादा और ख़िरदमन्दी अख़्तेयारी है जो बढ़ाना चाहे गा बढ़ा लेगा और जो दावते अक़्ल व फ़हम करेगा इल्म को अपने से बलन्द पाया इन्सान से हासिल न करे वह जिहालत को बढ़ाएगा।

19. इसहाक़ बिन अम्मार से मरवी है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की कि मेरा एक पड़ोसी है जो बहुत नमाज़ें पढ़ता है बहुत सदक़ा देता है और बहुत हज करता है फ़रमाया ऐ इसहाक़ उसकी अक़्ल कैसी है मैंने कहा उसे अक़्ल नहीं। फ़रमाया तो वह उन इबादात से फ़ाएदा नहीं पायेगा।

20. अबू याकूब बग़दादी से रवायत है कि इब्ने सकीत ने इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम से सवाल किया कि क्यों भेजा ख़ुदा ने मूसा अलैहिस्सलाम को असा और यदे बैज़ा और दीगर चीज़ें देकर जो जादू जैसी थीं और ईसा अलैहिस्सलाम को आलाते तिब जैसी चीज़ों के साथ भेजा। और मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को ख़ुदा का दुरूद हो इन पर और तमाम अम्बिया पर कलाम व ख़िताब के साथ भेजा। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिस ज़माने में ख़ुदा ने मूसा अलैहिस्सलाम को मबऊस किया उस ज़माने में लोगों पर सेहेर का बड़ा ग़लबा था पस मूसा अलैहिस्सलाम ने दिखाई यह उनको ख़ुदा की

तरफ़ से ऐसी चीज़ कि उसकी मिस्ल लाना उन की ताक़त से बाहर था इन मोजिज़ात से उनके सेहेर ज़ाएल हो गये और ख़ुदा की हुज्जत उन पर साबित हो गयी और ईसा के ज़माने में तिब का बड़ा ज़ोर था पस ख़ुदा ने उन को वह चीज़ दी जो लोगों से पास न थी पस उन्होने मुर्दों को ज़िन्दा किया और मबरूसों और मजज़ूमों को अच्छा किया ब-इज़ने ख़ुदा और इस तरह ख़ुदा की हुज्जत उन पर तमाम होई।

और अल्लाह तआला ने भेजा मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम को ऐसे ज़माने में जब कि लोगों पर ख़ुतबों और कलाम का ज़्यादा असर था। पस ख़ुदा ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम को मवाएज़ दिये और अपना कलाम जिस ने उन लोगों के क़ौल को बातिल कर दिया और ख़ुदा की हुज्जत उन लोगों पर क़ाएम कर दी। इब्ने सकीत ने यह सुन कर कहा मैंने आप जैसा आलिम कभी नहीं देखा। फिर कहा यह भी इरशाद हो कि अब ख़ुदा की हुज्जत उसकी मख़लूक़ पर कौन है फरमाया : अक़्ल जिससे पहचाना जाता है उस सादिक़ को जो अल्लाह की तरफ़ से हिदायत लाता है पस अक़्ल उसकी तसदीक़ करती है और झूठे को पहचान कर उसकी तकज़ीब करती है इब्ने सकीत ने कहा बेशक यही जवाब है।

21. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब हमारा क़ाएम खुरूज करेगा तो ख़ुदा अपनी रहमत का हाथ लोगों के सर पर रखेगा जिससे उनकी अक़्लें दुरुस्त और इफ़हाम कामिल होंगे।

22. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नबी ख़ुदा के बन्दों पर उस की हुज्जत है और अल्लाह और बन्दों के दरमियान अक़्ल हुज्जत है।

23. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि सुतूने इन्सानियत अक़्ल है और ख़िरदमन्दी से चार चीज़े हासिल होती हैं। **अव्वल** मोहकमाते कुरआनी से बातिल इमामों के ऐब बताना और **दूसरे** इमामाने हक़ के मरतबे को समझना, **तीसरे** अपनी हद को निगाह रखना मुतशाबेहाते कुरआन वग़ैरा में **चौथे** याद करना मसाएले दीन का इमामाने हक़ से और अक़्ल से आदमी कामिल होता है अक़्ल रहनुमाए इन्सान होती है चराग़े चश्म है और कलीद कारबस्ता पस अक़्ल की मदद से इन्सान दलाएले रूबूबियत और मोहकमाते कुरआन का आलिम होता है और मसाएले दीन की हिफ़ाज़त करता है और सनाए इमामाने हक़ करता है और उनके मरतबे का समझने वाला होता है पस वह जान लेता है कि पैग़म्बर के बाद उस की उम्मत का हाल क्या हुआ और क्यों हुआ। और कहाँ हुआ और वह जानता है कि किस से मिले और किस से अलग रहे तो उस ने हक़ के मजराने व मौसूल को पहचान लिया। फ़िर उस ने तौहीदे रब को खुलूस से लिया और उस की इताअत का इक़रार किया। जब ऐसा तो उसने फ़ौत शुदा चीज़ को पा लिया और आने वाली हालत को समझ लिया ओर यह भी जान लिया कि वह किन हालात में है और किस वजह से है कहाँ से आया और कहाँ जा रहा है यह सब ब–ताईदे अक़्ल है।

24. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अहैहिस्सलाम ने अक़्ल मोमिन की रहनुमा है।

25. हज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया जिहालत से बढ़ कर मोहताजी नहीं और अक़्ल से ज़्यादा मुफ़ीद तर कोई चीज़ नहीं।

26. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : ख़ुदा ने अक़्ल को पैदा किया पस उस से कहा आगे आ वह आगे आयी। फिर कहा पीछे हट वह पीछे हटी। फिर फ़रमाया क़सम है अपने इज़्ज़त व जलाल की मैने कोई मख़लूक़ तुझ से ज़्यादा अच्छी पैदा नहीं की मै तुझ ही को अम्र व नही का हुक्म देता हूँ और तुझ ही से सवाब दूगां और तुझ ही से अज़ाब दूंगा।

27. इस्हाक़ बिन अम्मार से मरवी है कि मैनें इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि यह क्या बात है कि मैं एक शख़्स के पास आता हूँ और उससे कलाम करता हूँ थोड़ा सा वह मेरे कुल कलाम का मतलब समझता है और बयान कर देता है जो कुछ मैने उस से बयान किया। दूसरा वह है कि जब मैं उससे पूरी बात बयान कर देता हूँ तब समझता है और तीसरा वह है कि जब मैं उससे बयान करता हूँ तो वह एआदा चाहता है। फ़रमाया जो बाज़ कलाम से पूरी बात समझ जाता है वह वह है जिस के नुत्फे में अक़्ल ख़मीर है और दूसरा वह है जिसको अक़्ल मिली है बत्ने मादर में और तीसरा वह है जिस को बड़ा होने पर अक़्ल मिली है।

28. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जब तुम किसी को नमाज़ रोज़ा करने वाला पाओ तो उस पर फख़्र न करो जब तक यह न देख लो कि उस की अक़्ल कैसी है।

29. मुफ़ज़्ज़ल इबने उमर ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि हज़रत ने फ़रमाया : नहीं फ़लाह पाएगा वह जिसे अक़्ल नहीं और नहीं उसको अक़्ल जिसके पास इल्म नहीं। जो फ़हेम रखता है वह शराफ़त हासिल करेगा और जो हलीम है वह फ़तह पायेगा। इल्म सिपर है रासती इज़्ज़त है, जेहेल ज़िल्लत है और फ़हेम और माल से सख़ावत करना बाएसे निजात है और हुस्ने ख़ल्क़ जालिबे मवद्दत है आलिमे ज़माना पर वसवासे शैतानी का ग़लबा नहीं होता और पुख़्ता कारी यह है कि लोगों की ज़ाहिरी हालत से धोखे न खायें क्यों कि अकसर लोगों का बातिन ख़राब होता है आदमी और हिकमत के दरमियान। आलिम, दाना नेमत है और जाहिल शक़ी है उनके दरमियान ख़ुदा दोस्त है जिसने उस की मारेफ़त हासिल की और पैरवीयेज़न (औरत की पैरवी) न की। और दुश्मन है उस का जिसने उसे रब्बुल आ—लमीन न समझा। ख़िरद मन्द बख़्शने वाला बे अदबी का है और जाहिल फ़रेब देने वाला है अगर तू गिरामी क़द्र होना चाहता है तो नरमी कर और अगर चाहता है कि लोग तुझे ज़लील समझें तो सख़्ती कर जिसकी नस्ल बुजुर्ग होती है उसका दिल नर्म होता है जिसकी ज़ात बद होती है उसका दिल सख़्त होता है जो बोलने में जल्दी करता है वह नजात से दूर होता है जो आफ़ियत अन्देश है वह जिस चीज़ को नहीं जानता उससे दूर रहने में ख़ुद्दारी करता है और बग़ैर इल्म किसी चीज़ में दख़्ल देता है वह ज़लील होता है जो नहीं जानता कि इमामे हक़ कौन है वह नहीं समझता और जो नहीं समझता वह शुबहात से महफ़ूज़ नहीं रहता और

जो ऐसा नहीं वह एज़ाज़ नहीं इन्दल्लाह मुकर्रम है और जो ऐसा है वह लोगों के दरमियान सरज़निश किया हुआ है और जो ऐसा है वह मलामत किया हुआ है और जो ऐसा है उसका नतीजा निदामत है।

30. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस में नेक ख़सलतों मे से एक भी पाऊगॉ तो मैं अपने शियों में शुमार करूगां उस एक ख़सलत की वजह से और माफ़ करूंगा उसके मा सिवा को और नहीं माफ़ करूंगा फ़ुक़दाने अक़्ल को और फ़ुक़दाने दीन को क्योंकि दीन से मुफ़ारेक़ते ख़ौफ़ है और उस ख़ौफ़ के साथ ज़िन्दगी ख़ुश गवार नहीं और अक़्ल का न होना ज़िन्दगी का न होना है जिस का क़यास मर्दों पर करना चाहिये।

31. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। इन्सान का अपने नफ़्स पर मग़रूर होना उसकी अक़्ल की कमज़ोरी की दलील है।

32. हसन इब्ने जहम से मरवी है कि इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के सामने अक़्ल का ज़िक्र आया, हज़रत ने फ़रमाया अहले दीन के लिये वह लोग साक़ितुल एतबार हैं जिन को अक़्ल नहीं है मैने कहा हम शियों में ऐसे लोग भी है जिन में बज़ाहिर कोई ऐब नज़र नहीं आता, लेकिन वह साहेबे अक़्ल नहीं फरमाया तो यह लोग उनमें से नहीं जिन को अल्लाह तआला ने ख़िताब फ़रमाया है कि जब उसने अक़्ल को पैदा किया तो उस से फरमाया। आगे आ पस वह आगे आयी फिर कहा पीछे हट पस वह पीछे हटी फिर फ़रमाया क़सम है अपने इज़्ज़त व जलाल की मैने तुझ से बेहतर किसी को पैदा नहीं किया तू मुझे सब से ज़्यादा

महबूब है मैं तेरी ही वजह से मुवाख़ेज़ा करूंगा और तेरी ही वजह से अता करूंगा।

33. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कुफ़्र व ईमान के दरमियान नहीं है फर्क़ मगर क़िल्लते अक़्ल का। लोगों ने पूछा यह कैसे यबना रसूलुल्लाह फ़रमाया कभी बन्दा अपनी हाजत को दूसरे बन्दे की तरफ़ ले जाता है पस अगर उस अम्र में उसकी नीयत ख़ालिस होती है और अल्लाह की तरफ़ उसकी रूजू बाक़ी रहती है तो अल्लाह जल्द उसकी हाजत को बर लाता है।

34. हज़रत इमाम ज़ाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमया कि अक़्ल से हिकमत हासिल होती है और हिकमत से अक़्ल और अच्छी निगहबान से अदबे सालेह हासिल होता है और यह भी फ़रमाया कि तफ़क्कुर अक़्ल मन्द की हयात है जैसा कि चलता है चलने वाला तारीकियों में नूर के साथ ख़ूबी निजात और कमी व रंग को लेकर।



दूसरा बाब

किताब फ़ज़्ल इल्म

फ़र्ज़े इल्म व वुजूबे तलबे इल्म व तरग़ीबे इल्म

1. हज़रत रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलौही व आलेहि वसल्लम ने फरमाया इल्म का तलब करना वाजिब है हर मुसलमान पर।

2. फरमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इल्म का तलब करना फर्ज़ है।

3. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा क्या यह दुरूस्त है कि इन्सान को जिस चीज़ के मालूम करने की ज़रूरत हो उसके मुताल्लिक़ सवाल तरक कर दे। फरमाया नहीं।

4. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया लोगों समझ लो कि कमाले दीन तलबे इल्म और उस पर अमल करने मे है। आगाह हो कि इल्म का तलब करना तुम्हारे लिये माल के तलब करने से ज़्यादा वाजिब है क्यो कि माल तुम्हारे लिये तक़सीम शुदा है और ख़ुदा उसका ज़ामिन है (यानी रिज़्क का) वह तुम तक ज़रूर पहुँचे गां और इल्म महफूज़ है उसके अहेल के पास और उसकी तलब का तुमको हुक्म दिया गया है पस जो उसके अहेल हैं (अइम्मए ताहिरीन) उन से तलब करो।

5. रसूलुल्लाह ने फ़रमाया इल्म का तलब करना फर्ज़ है रसूलुल्लाह ने फ़रमाया इल्म का तलब करना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है आगाह हो कि अल्लाह तालिबाने इल्म को दोस्त रखता है।

6. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि दीनी मसाएल को याद करो जो तुम में ऐसा न करेगा वह बद्दू अरब की मानिन्द होगा। ख़ुदा कुरआन में कहता है इल्मे दीन लोग हासिल करें और डरायें अपनी क़ौम को जब वह उनकी तरफ़ रूजू करें ताकि वह हज़र करे।

7. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम्हारे लिये इल्मे दीन हासिल करना लाज़िम है और तुम बद्दू अरब न बनो कि वह इल्मे दीन हासिल नहीं करते तुम उनमें से न बनो जिन पर अल्लाह रोज़े क़यामत नज़रे रहमत नहीं करेगा और उसके लिये कोई अमल छोड़ा न जायेगा।

8. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं दोस्त रखता हूँ उस बात को कि मेरे असहाब के सरों पर कोड़े मारे जायें ताकि वह इल्मे दीन हासिल करें।

9. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि किसी ने कहा कि एक शख़्स है जिसने आप की इमामत को पहचान लिया है और ख़ाना नशीन हो गया है अपने भाईयों में से किसी से नहीं मिलता। फरमाया उसको इल्म कैसे हासिल होगा। दर आंहालेकि मालूमात का दरवाज़ा उसने अपने ऊपर बन्द कर लिया।



तीसरा बाब

सिफ़ते इल्म व फ़ज़ीलते इल्म व उलमा

1. इमाम मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रसूलल्लाह मसजिद में थे तो लोगों को एक शख़्स के गिर्द जमा पाया। फरमाया यह कौन है लोगों ने कहा यह अल्लामा है फरमाया कैसा अल्लामा, उन्होंने कहा – यह इन्सान अरब का सबसे बेहतर जानने वाला है और उनके वाक़ाए का आलिम है और अय्यामे जाहिलियत के अरबी के अशआर से वाक़िफ़ है हज़रत ने फ़रमाया यह ऐसा इल्म है जिसके न जानने से कोई नुक़्सान नहीं और जानने से कोई फ़ायदा नहीं। हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फरमाया **बस इल्म तीन हैं** आयाते मोहकमात के मुताल्लिक़, फ़रीज़ए आदिला के मुताल्लिक़ और सुन्नते क़ाएमा के मुताल्लिक़ और जो उसके अलावा है वह फ़ज़्ले इलाही है।

2. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उलमा वारिसे अम्बिया हैं और अम्बिया नहीं मालिक होते दिरहम व दीनार के वह तो वारिस होते हैं उनकी अहादीस के। पस जिसने इन अहादीस से कुछ ले लिया उस ने काफ़ी नसीबा पा लिया पस तुम इस पर नज़र रखो कि तुम इस इल्म को किस से लेते हो। यह इल्म हम अहलेबैत अ0 का है क्यों कि जो इल्म पैग़म्बर ने उम्मत के लिये छोड़ा है उस के वारिस हम अहलेबैत रसूल स0 हैं जो आदिल हैं जो रद करते है ग़ालीन की तहरीफ़ और अहले बातिल के तग़य्युरात और जाहिलों की तावीलों को।

3. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब ख़ुदा किसी बन्दे से नेकी का इरादा करता है तो उसे इल्मे दीन अता करता है।

4. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कमाल नाम है इल्मे दीन हासिल करने, मुसीबत पर सब्र करने और ख़र्च में मियाना रवी अख़्तियार करने का।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अ0 ने उलमा असरारे इलाही के अमानत दार और अतक़िया मुसतहकम क़िले हैं कि दुश्मनों के हम्लों से बचाते हैं और औसिया सरदारे उम्मत हैं। दूसरी रवायत में है कि उलमा मीनारे हिदायत हैं अतक़िया क़िले हैं और औसिया सरदार हैं।

6. बशीररूददहां से मरवी है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : हमारे असहाब में बेहतरी नहीं है इस लिये कि जो इल्मे दीन हासिल नहीं करता। ऐ बशीर जो शख़्स इल्मे दीन हासिल नहीं करता वह दूसरों की तरफ़ मोहताज होता है और जब मोहताज होता है तो वह उसको गुमराही के दरवाज़े में दाख़िल कर देते हैं। और फिर वह कुछ नहीं जानता।

7. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलौहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐश में बेहतरी नहीं है मगर दो शख़्सों के लिये एक वह जो सुनता है और अमल करता है दूसरे वह जो सुनता है अपने दिल में महफ़ूज़ रखता है।

8. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : जो आलिम अपने इल्म से फ़ायदा हासिल करता है वह सत्तर हज़ार आबिदों से बेहतर है।

9. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि एक शख़्स आप की अहादीस की रवायत करता है और उसको लोगों में मशहूर करता है और लोगों के और आप के शियों के कुलूब की इस्लाह करता है दूसरा शख़्स आबिद है मगर वह रवायत नहीं करता आप की अहादीस को उनमें कौन अफ़ज़ल है।

फ़रमाया हमारी अहादीस की रवायत करने वाला और हमारे शियों के कुलूब की इस्लाह करने वाला हज़ार आबिदों से बेहतर है।

चौथा बाब

बयान अस्नाफ़े मरदुम

1. अमीरूल मोमिनीन अ0 ने फ़रमाया कि लोगों ने बादे रसूलुल्लाह स0 तीन क़िस्म के लोगों को अपना वाली बनाया। एक वह आलिम जो अल्लाह की तरफ़ से हिदायत याफ़्ता है और अल्लाह ने उसको इल्मे ग़ैर से बे परवा कर दिया है दूसरे जाहिल मुद्दईये इल्म जिसके पास इल्म नहीं मगर जो कुछ उसके पास है उस पर मग़रूर है दुनिया ने उसे धोका दिया है और उसने लोगों को। तीसरे वह है जो ऐसे आलिम से इल्म हासिल करता है जो अल्लाह की तरफ़ से हिदायत पर है वह साहेबे निजात है पस जिसने झूठा दावाए इल्म किया वह हलाक हो गया जिस ने इफ़्तेरा परवाज़ी की वह नुक़सान में रहा।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : आदमी तीन क़िस्म के हैं। आलिम, मुताल्लिम और हिरज़ाकार (जो हक़ व बातिल को नहीं जानते)

3. अबू हम्ज़ा समाली से मरवी है कि हज़रत अबू अब्दिलल्लाह ने फ़रमाया कि हर सुब्ह को तीन में से एक बनो या आलिम या मुताल्लिम या एहले इल्म के दोस्त, चौथा उम्मत बनो वरना तुम उनकी अदावत में हलाक हो जाओगे।

4. जमील से मरवी है कि मै अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से सुना कि लोग तीन किस्म के होते हैं आलिम मुताल्लिम और हिरज़ाकार। पस हम आलिम हैं हमारे शिया मुताल्लिम हैं और लोग हिरज़ाकार।

पाँचवा बाब

सवाबे आलिम व मुताल्लिम

1. हज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया : जो शख़्स तलबे इल्म के लिये रास्ता तै करता है अल्लाह उसको जन्नत की तरफ़ ले जाता है और मलाएक अपने परों को तालिबे इल्म के लिये बिछाते हैं क्यों कि वह उससे ख़ुश होते हैं और आसमान और ज़मीन के रहने वाले हत्ता कि दरिया की मछलियां तालिबे इल्म के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं।

और फ़रमाया कि अलिमे दीन की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसे चाँद की फ़ज़ीलत सितारों पर और चाँदनी रात पर और उलमा वारिसे अम्बिया हैं और अम्बिया नहीं छोड़ते अपनी उम्मत के लिये दिरहम व दीनार बल्कि छोड़ते हैं इल्मे दीन को पर जिस ने उसको हासिल किया उसने बड़ा नसीबा पाया।

तौज़ीह : इस से मुराद यह है कि वह निज़ामे सरमाया दारी

क़ाएम करने दुनिया में नहीं आते बल्कि इल्मे दीन की तालीम के लिये दुनिया में आते हैं जो माल ख़ुदा ने उनके और उनकी औलाद के बसर औक़ात के लिये महफ़ूज़ किया हाता है वह अम्बिया के बाद उनकी औलाद को विरसे में पहुँचता है ताकि ज़िल्लत की ज़िन्दगी बसर न करें और दूसरों के मोहताज बन कर अपनी ख़ुद्दारी और अपने रूहानी इक़तेदार को न छोड़ बैठें हमारे रसूल स0 ने जो तरका छोड़ा वह उसी ज़रूरत को पूरा करने के लिये था अगर हदीस *ला नरेसो वला नूरेसो* को सही तसलीम किया जाये तो रसूल स0 ने अपने बाप के तरके से उनकी कनीज़ उम्मे अमीन को कैसे विरसे में पाया और रसूल स0 के विरसे में अज़वाज ने कैसे मकानात हासिल किये।

2. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : बेशक वह जो तालीम देते हैं इल्म की तुम मे से उनका अज्र वैसा ही है जैसा तालिबे इल्म का है और उसके लिये फ़ज़्ले ख़ुदा वन्दी है पस जिन्हो ने इल्म हासिल किया साहेबाने इल्म से और अपने भाइयों को तालीम दी जैसा कि तुम को उलमा ने तालीम दी है।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जिस ने किसी को इल्मे दीन दिया उसको अमल करने वाले सा अज्र मिले गा। मैंने कहा अगर वह अपने ग़ैर को सिखाये तो फ़रमाया अगर वह तमाम लोगों को सिखाता रहेगा तो भी यही सूरत रहेगी हर एक का सवाब उसको मिले गा मैंने कहा अगर मर्दे अव्वल मर जाये और दूसरा उसकी तालीम लोगों को याद दिलाये तो भी सवाब मिले गा फ़रमाया तो भी सवाब मिले गा।

4. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो अम्रे दीन मे से किसी एक चीज़ की तालीम कर दे उसका वही अज्र होगा जो काम करने वाले का होता है उस के अज्र से कोई शै कम न होगी और जो गुम्राही की कोई बात तालीम दे गा तो उसका वही गुनाह होगा जो काम करने वाले का होता है कोई शै कम न होगी।

5. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम से मरवी है कि अगर लोग जानते हैं कि तलबे इल्मे दीन में क्या फ़ायदा है अलबत्ता तलब करते उसको जान के ज़वाल की सूरत में मसाएब के गिरदाबों में ग़ोता लगाने की सूरत में ख़ुदा ने दानियाल पैग़म्बर को वही की कि मेरा सबसे ज़्यादा दुश्मन वह जाहिल है जो अहले इल्म के हक़ को छुपाता है और उनकी पैरवी को तर्क करता है और मेरा सबसे ज़्यादा महबूब बन्दा सवाबे अज़ीम का तालिब है वह उलमा के साथ रहता है हुकमा का ताबे है और हुकमा की बातों को क़ुबूल करने वाला है।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने जिसने इल्मे दीन को सिखाया उस पर अमल किया और फ़ी सबीलिल्लाह तालीम दी तो मलकूते समावात में वह बड़ी इज़्ज़त के साथ पुकारा गया और उसके लिये कहा गया कि उसने ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये अमल किया और ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये दूसरों को सिखाया।



छठा बाब

सिफ़ते उलमा

1. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इल्मे दीन को हासिल करो और हिल्म व वक़ार से उसको ज़ीनत दो और फ़रोतनी करो उनके सामने जिन से इल्म तलब करते हो और जब्र पसन्द आलिम न बनो तुम्हारी बातिल परस्ती हक़ से तुम को हटा देगी।

2. इमामे जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आयत—*इन्नमा यख़्शल्लाह* (अलख़) के मुताल्लिक़ कि मुराद वह उलमा हैं कि जिनका फ़ेल उनके क़ौल के मुताबिक़ हो और जिनका फ़ेल मुताबिक़े क़ौल न हो वह आलिम नहीं।

3. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने आगाह हो कि मैं तुम्हें बताता हूँ कि सच्चा आलिमे दीन कौन है जो मायूस न करे लोगों को अल्लाह की रहमत से, और न बेख़ौफ़ बनाये उनको अज़ाबे ख़ुदा से और न इजाज़त दे उनको ख़ुदा की नाफ़रमानी की और कुरआन की तिलावत तर्क न करे दूसरी किताबों की तरफ़ रग़बत से, आगाह हो नहीं है नेकी उस इल्म में जिसमें दानिशमन्दी न हो और नहीं है बेहतरी उस क़िरात में जिसमें तदबीर न हो और नहीं है बेहतरी उस इबादत में जिसमें तफ़क्कुर न हो।

एक दूसरी रिवायत में है नहीं है बेहतरी उस इल्म में जिस में फ़हम न हो, नही है बेहतरी उस क़िरात में जिसमें तदब्बुर न हो, नहीं है बेहतरी उस इबादत में जो इल्मे दीन की वाक़फ़ियत के बग़ैर हो और नहीं है बेहतरी उस इबादत में जिस में परहेज़गारी न हो।

उठना चाहे और जब उसके पास जाओं और कुछ लोग उसके पास बैठे हों तो सब को सलाम करो और ख़ुसूसियत से उसको सलाम करे उसके सामने बैठो पीछे न बैठो और अपनी आँख से इशारा न करो और हाथ से भी इशारा न करो और ज़्यादा न बोलो कि फ़लाँ फ़लाँ ने आप के क़ौल के ख़िलाफ़ यह कहा है और तूले सोहबत से उसको परेशान न करो। आलिम की मिसाल दरख़्त की सी है कि तुम इन्तेज़ार करते रहो कि उससे कोई शै तुम्हारे ऊपर गिरे। आलिम का अज्र रोज़ा दार, नमाज़ गुज़ार और फी सबीलिल्लाह ग़ाज़ी से ज़्यादा है।

आठवाँ बाब

मौते उलमा

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि इबलीस के लिये आलिमे दीन की मौत हर मोमिन की मौत से ज़्यादा महबूब है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब कोई मोमिन आलिमे दीन मर जाता है तो इस्लाम में ऐसा रख़ना पड़ता है जिसे कोई शै बन्द नहीं कर सकती।

3. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब कोई मोमिन फ़कीह मर जाता है तो मलाएका उसके लिये रोते हैं और ज़मीन के वह हिस्से रोते है जिस पर उसने ख़ुदा की इबादत की हो और वह आसमान के दरवाज़े जिन से उस के आमाल ऊपर को गये हैं और उसके मरने से इस्लाम में ऐसा रख़ना पड़ता है जिसे कोई

4. हज़रत इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अलिमे दीन की अलामत यह है कि आलिमे दीन साहेबे इल्म व ख़मोशी है।

5. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया सुफ्फ़ा व गिर्रा क़ल्बे आलिम में नहीं होते यानी शैतानी फ़रेब में आलिम नहीं आता।

6. हज़रत ईसा अ0 ने अपने हवारियों से फ़रमया मेरी एक हाजत है उसे पूरा करो उन्होने कहा ऐ रूहुल्लाह हम ज़रूर पूरा करेंगे। पस हज़रत उठे और उनके पैर धोने लगे उन्होने कहा ऐ रूहुल्लाह ये काम तो हमारे लिये ज़्यादा ज़ेबा था हम इस ख़िदमत के ज़्यादा हक़दार थे फ़रमाया मैने अज़ राहे तवाज़ो किया है ताकि मेरे बाद तुम भी इसी तरह फ़रोतनी इख़्तियार करो। फ़रमाया तवाज़ो से हिक्मत हासिल होती है न कि तकब्बुर से। इसी तरह ज़मीन हमवार में नबातात उगती हैं न कि पहाड़ पर।

7. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमया : आलिमे दीन की तीन अलामतें हैं, इल्म हिल्म और ख़ामोशी और बा–तकल्लुफ़ आलिम बनने वाले की तीन अलामतें है मासियत में अपने माफ़ौक़ के साथ झगड़ा करता है अपने से कम पर ग़लबा चाहता है और ज़ालिमों की मदद करता है।

सातवाँ बाब

आलिम का हक़

हज़रत अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आलिम का हक़ यह है कि उससे बहुत ज़्यादा सवाल न करो और उसका दामन न पकड़ो अगर वह मजलिस से

शै बन्द नहीं कर सकती क्योंकि उलमाए दीन इस्लाम के उसी तरह के क़िले हैं जिस तरह शहर पनाह वाली दीवारें शहर के गिर्द होती हैं।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि शैतान के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब आलिमे दीन की मौत है।

5. फ़रमया हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि मेरे पदरे बुज़ुर्गवार ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने इल्म को नाज़िल करने के बाद नहीं रोका। मगर जब कोई आलिम मर जाता है वह अपने साथ अपना इल्म ले जाता है उसकी जगह ले लेते हैं वह ज़न परस्त और बातिल नवाज़ जो ख़ुद गुमराह होते हैं और दूसरों को गुमराह करते हैं। वह ऐसी बातें कहते हैं जिन की अस्ल नहीं होती।

6. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि तकलीफ़ होती है मेरे नफ़्स को सुरअते मौत और क़त्ल से और हमारे बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है क्या नहीं देखा उन्होंने कि हम आते हैं और ख़राब करते हैं अतराफे ज़मीन को और उससे मुराद है उलमा का मरना।

नवाँ बाब

मुजालिसते उलमा और उनकी सोहबत

1. लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा ऐ फ़रज़न्द मजालिसे उलमा को अपनी नज़र में रख अगर तू ऐसे लोगों को पाये जो अल्लाह का ज़िक्र करते हैं तो उनके पास बैठ, अगर तू आलिम है तो तुझ को तेरा इल्म नफ़ा देगा और अगर तू

जाहिल है तो वह तुझे तालीम देगे और शायद अल्लाह उन पर अपनी रहमत नाज़िल करे और अगर वह लोग अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते तो उनके पास मत बैठ अगर तू आलिम है तो तेरा इल्म नफ़ा न देगा और अगर तू जाहिल है तो वह तुझमें और जिहालत पैदा कर देंगे और शायद कि अल्लाह उन पर अपना अज़ाब नाज़िल करे जो तुझे भी घेर ले।

2. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आलिमों के साथ मज़बलों (कूड़ा घर) पर बैठना बेहतर है जाहिल के साथ मसनदों पर बैठने से।

3. हज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया : हवारियों ने हज़रत ईसा से पूछा हम किन लोगों के साथ बैठे, फ़रमाया जिन की सूरत से ज़िक्रे ख़ुदा याद आये जिनकी गुफ़्तुगू से तुम्हारा इल्म ज़्यादा हो जिनके इल्म से आख़िरत की तरफ़ रग़बत हो।

4. हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) ने फ़रमाया अहले दीन के पास बैठना शरफ़े दुनिया व आख़िरत है।

5. फ़रमया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि मै बैठता हूँ मर्दे दाना की मजलिस में जिस पर मुझे एतमाद हो यह बैठना मुझे पसन्द आता है उसकी एक साल की इबादत से।

दसवाँ बाब

आलिम से सवाल और मुज़ाकिरा

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि चेचक वाला जुनुब हुआ लोगों ने उसे नहला दिया।

जिस से वह मर गया। फ़रमाया उन्होने उसे क़त्ल किया, किसी आलिम से क्यों न पूछा। आगाह हो कि मसाएले दीन से नादानी एक दर्द है जिसकी दवा सिर्फ़ सवाल है।

2. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हमरान इब्ने ऐन से फ़रमाया लोग इसलिये हलाक होते हैं। कि वह सवाल नहीं करते।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि इल्मे दीन पर ताला लगा हुआ है जिस की कुन्जी सवाल करना है।

4. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मालूमात में वुसअत पैदा न होगी जब तक लोग पूछें गे नहीं इल्मे दीन हासिल न करें गे और अपने इमाम को पहचाने गे नहीं उनको चाहिये कि ब–हाले तक़य्या भी जो इमाम कहें उसको लें।

5. फ़रमाया रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने वाये हो उस शख़्स पर जो फ़ारिग़ नहीं बताता अपने नफ़्स को हर काम से रोज़े जुम्आ अम्रे दीन के लिये ताकि मसाएले दीन लोगों से पूछे और अपनी आख़ेरत को दुरूस्त करले। एक रवायत में बजायें *उफ़्फ़िनलेरजोलिन* के *उखरा लेकुल्ले मुस्लिमिन* है।

6. रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया है कि इल्म का मुज़ाकिरा मेरे बन्दों के दरमियान मुर्दा कुलूब को ज़िन्दा करता है ब–शर्ते कि वह अपनी गुफ़्तुगू में मेरे हुक्म की तरफ़ रूजू करें।

7. मै ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना।

ख़ुदा रहम करे उस बन्दे पर जो इल्म को ज़िन्दा करे मैंने कहा उसकी ज़िन्दगी क्या है फ़रमाया उसे अहले दीन व अहले वरा का ज़िक्र करना चाहियें।

8. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा ने इल्मे दीन को आपस में ज़िक्र करो और एक दूसरे से मुलाक़ात करो और आपस में बात चीत करो कि यह चीज़ें कुलूब में जिला पैदा करती हैं कुलूब भी इसी तरह चमकदार रहते हैं जिस तरह तलवार का ज़ंग दूर करने से तलवार और हदीस उस को जिला बख़्शती है।

9. मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि मुज़ाकिरा इल्म होता है और दर्स का सवाब मक़्बूल नमाज़ के बराबर होता है।

ग्यारहवां बाब

बज़्ले इल्म

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्ला अलैहिस्सलाम ने कि मैने किताबे अली अलैहिस्सलाम में पढ़ा कि अल्लाह तआला ने नहीं लिया जाहिलों से एहेद तलबे इल्म का जब तक उलमा से एहेद नहीं लिया है इल्म सिखाने का जाहिलों को, क्यों कि इल्म क़ब्ले जिहालत है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस आयत के मुताल्लिक़, मत रू–गरदानी करो लोगों से, फ़रमाया हज़रत ने मुराद यह है कि लोग तुम्हारे नज़दीक इल्म में बराबर हो जायें।

3. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

इल्म की ज़कात वह है कि लोगों को तालीम दो।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ईसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से फ़रमाया : जुहहाल से दानाई की बातें करो वरना यह उन पर जुल्म होगा और एहले इल्म की सोहबत से रूको मत।

बारहवां बाब

बग़ैर इल्म बात कहने की मुमानिअत

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मै तुम को दो ऐसी खसलतों से मना करता हूँ जिन से लोग हलाक हो गये मैं नही करता हूँ, एहकाम दीन की तरवीज बातिल से न करो। और जो नहीं जानते उस के मुताल्लिक़ लोगों को फतवे न दों।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने को दो आदतों से बचाओ कि उन की वजह से लोग हलाक हो गये अपनी राये से फ़तवा न दो और जो बात नहीं जानते उस पर पैरविए ज़न न करो।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जो लोगों को फ़तवा देता है बग़ैर इल्म के उस पर मलाएका–ए–रहमत और मलाएका–ए–अज़ाब लानत करते हैं और जिस ने उस के फ़तवे पर अमल किया है उस का गुनाह भी उसी के सर आता है।

4. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो नहीं जानते उसके मुताल्लिक़ फ़तवा न दो और कहो

अल्लाह दाना तर है एक आदमी जो मुतशाबेहाते कुरआन की वह तफ़सीर बयान करता है जो हक़ीक़त से इतनी दूर होती है जैसे ज़मीन आसमान से तो उसका ठिकाना जहन्नुम में होगा।

5. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आलिम को चाहियें कि जब उस से कोई ऐसा मसएला पूछा जाये जिसे वह नहीं जानता तो कहें अल्लाह बेहतर जानता है और ग़ैर आलिम यह कहने का भी हक़दार नहीं क्यों कि उससे लोगों को धोका उसका आलिम होने का होता है।

6. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि आप ने फ़रमाया जब तुम में से किसी से ऐसा सवाल किया जाये जिस का जवाब मालूम न हो तो उसे कहना चाहिये कि मैं नहीं जानता। यह न कहे कि अल्लाह जानता है वरना साएल के दिल में शक पड़ेगा कि यह जानता है और जब कहे गा कि मैं नहीं जानता तो साएल उसको मुत्तहिम न करेगा।

7. मै ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा बन्दों पर अल्लाह का क्या हक़ है फ़रमाया वक़्ते ज़रूरत जो जानते हों बयान करें और जो नहीं जानते उस से रूक जायें।

8. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा ने अपने बन्दों को रग़बत दिलायी है अपनी किताब में दो बातों की तरफ़, एक बे जाने कुछ न कहो (और) दूसरे जो मालूम नहीं उसकी रवायत न करो। फ़रमाता है क्या मैने उन से यह एहद नहीं लिया कि ख़ुदा के बारे में हक़ बात के सिवा कुछ न कहो और फ़रमाया

बल्कि उन्होने तकज़ीब की उस चीज़ की जो उन के अहातए इल्म से बाहर थी और जिस की तावील उनको नहीं आती थी।

9. इब्ने शुब्रह से मरवी है कि मै जब उस हदीस को याद करता हूँ जिस को मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना तो मेरा क़ल्ब कांप जाता है हज़रत ने फ़रमाया मेरे पदरे बुजुर्गवार ने मेरे जद से और उन्होंने रसूलल्लाह स0 से नक़्ल फ़रमाया है इब्ने शुब्रह ने कहा मै ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ कि न उनके बाप ने झूठ बोला और न उनके दादा ने फ़रमाया रसूलुल्लाह (स0) ने, जिस ने क़यास पर अमल किया वह ख़ुद भी हलाक हुआ और दूसरे को भी हलाक किया और जिस ने ऐसी हालत में फ़तवा दिया कि न नासिख़ को मन्सूख़ से तमीज़ करता है न मोहकम की मुतशाबेह से तो वह ख़ुद भी हलाक हुआ और दूसरों को भी हलाक किया।

तेहरवाँ बाब

बग़ैर इल्म अमल करने वाला

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बग़ैर अक़्ल व फ़हम के अमल करने वाला ग़लत रास्ते पर चलने वाले के मानिन्द है कि जितना तेज़ चलेगा उतना ही मन्ज़िल से दूर रहेगा। मैनें इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि अल्लाह नहीं कुबूल करता किसी अमल को बग़ैर मारेफ़त के और मारेफ़त मुफीद नहीं बग़ैर अमल के। जिसको मारेफ़त है तो वह रहनुमाई करती है अमल की तरफ और जो अमल नहीं करता उस के लिये मारेफत ही

नही आगाह हो कि ईमान का ताल्लुक़ है एक दूसरे से।

2. रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने बग़ैर इल्म के अमल किया तो उस ने नेकू कारी के ज़्यादा हिस्से को फ़ासिद कर दिया।

चौदहवाँ बाब

इस्तेमाले इल्म

1. मैनें सुना कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमया कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमया : आलिम दो शख़्स में एक वह जिस ने अपने इल्म से फ़ायदा हासिल किया। पस वह निजात पाने वाला है दूसरा वह जो अपने इल्म का तारिक है यह जहन्नुमी है ऐसे आलिम की बदबू से अहले दोज़ख़ को अज़ीयत पहुँचे गी और अहले दोज़ख़ में शदीद तरीन निदामत व हसरत उस शख़्स को होगी जिसने बन्दे को अल्लाह की तरफ़ बुलाया उसने दावत को कुबूल किया अल्लाह की इताअत की ख़ुदा उसको तो जन्नत में दाख़िल करेगा और दाई को ब–सबबे तरके इल्म और हवा व हवस की पैरवी और उम्मीदों की दराज़ी के दाख़िले नार करेगा। ख़्वाहिशाते बद की पैरवी इन्सान को अम्रे हक़ से रोक देती है और उम्मीदों की दराज़ी आख़ेरत को भुला देती है।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि इल्म मिला हुआ है अमल से जिस ने इल्म हासिल किया तो उसने अमल भी किया और जिस ने अमल किया उसने इल्म भी हासिल किया इलम आवाज़ देता है अमल को पस

अगर अमल ने जवाब दिया तो ठहर जाता है वरना उससे रूख़सत हो जाता है यानी अमल के साथ इल्म की वक़अत होती है वरना नहीं।

3. फ़रमाया सादिके आले मोहम्मद ने : आलिम जब अपने इल्म के मुताबिक़ अमल नहीं करता तो उसके वाज़ का असर लोगों के दिल से ज़ाएल हो जाता है जैसे बारिश का साफ़ पानी चट्टान से।

4. एक शख़्स हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आया और चन्द मसाएल दरयाफ़्त किये आप ने उन का जवाब दे दिया वह फ़िर वैसे ही सवाल करने के लिये आ गया आप ने फ़रमाया इन्जील में है कि जो इल्म नहीं जानते उसको हासिल करो और जब जान लो। तो उस पर अमल करो। क्योंकि जब इल्म के मुवाफ़िक़ अमल नहीं होता तो साहेबे इल्म का कुफ़्र ज़्यादा होता है और ख़ुद से उसकी दूरी बढ़ जाती है।

5. मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर ने रवायत की है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मैने पूछा कि रोज़े क़यामत निजात पाने वाले की पहचान क्या है फ़रमया जिस का फ़ेल उसके क़ौल के मुताबिक़ हो कि यह गवाही होगी पेशे ख़ुदा और जिस का फ़ेल उसके क़ौल के मुवाफ़िक नहीं तो उसका ईमान आरज़ी होगा।

6. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने अपने एक ख़ुत्बे में फ़रमाया लोगों जब तुम इल्म हासिल करो तो अमल भी करो ताकि हिदायत पाओ, जो आलिम अपने इल्म के ख़िलाफ़ अमल करता है वह उस जाहिल हायर की मानिन्द है जिसको जिहालत से इफ़ाक़ा नहीं होता मैने किताबे ख़ुदा

में देखा है कि ऐसे आलिम पर जिस से इल्म अलाहेदा हो गया हो। ख़ुदा की बड़ी हुज्जत तमाम होगी और हमेशा, हसरत का शिकार रहेगा और उसके अहल जो जिहालत की वजह से हसरतो यास में रहते हैं दोनों दरमान्दा जहन्नुमी है शक को तलब न करो वरना शक में पड़ जाओ गे और ख़ुदा की शिकायत न करो काफ़िर हो जाओ गे नफ़्सो को इजाज़त न दो कि वह पैरवीये ज़न करें वरना सहल इन्कारी करने लगोगे और अम्रे हक़ पर सहल इन्कारी से ख़सारा पाओ गे हक़ बात यह है कि इल्मे दीन हासिल करो ताकि ठोकर न खाओ बे शक तुम में अज़रूए नफ़्स इख़्लास मन्द वह है जो अल्लाह की सबसे ज़्यादा इताअत करने वाला है और बदतरीन इन्सान वह है जो अपने रब की मासियत करने वाला है जो अल्लाह की इताअत करेगा उसको बशारत दी जाती है कि वह अम्न में रहेगा। जो अल्लाह की ना—फ़रमानी करेगा वह नाकाम व नादिम रहेगा।

पन्द्रहवाँ बाब

इल्म को ज़रिया बनाना माल खाने और फ़ख़्र करने का

1. रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया दो हरीस सेर नहीं होते तालिबे दुनिया और तालिबे इल्म। जिसने माले दुनिया से हलाल रोज़ी पर क़नाअत की, उसने निजात पाई और जिसने माले हराम खाया वह हलाक हुआ। लेकिन ऐसी सूरत में कि तौबा करे। या जिनका माल लिया है उन्हें लौटा दे। उम्मीदे निजात हो सकती है जिसने इल्म को

उसके अहल से लिया और अमल भी किया उसने नजात पाई जिसने दुनिया पाने का इरादा किया उसे वही मिली।

2. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिसने इल्मे हदीस हासिल करके नफ़्ये दुनिया का इरादा किया आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं और जिसने आख़िरत की बेहतरी चाही ख़ुदा ने उसको दुनिया व़ आख़िरत में बेहतरी अता की।

3. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस ने इल्मे हदीस हासिल करके नफ़ा चाहा तो आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जब तुम किसी आलिमे दीन को उमूरे दुनिया में मुनहमिक पाओ तो उमूरे दीन में उस पर एतमाद न करो। हर मुहिब को वही मिलता है जिसे वह दोस्त रखता है हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा ने वही की दाऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ कि मेरे और अपने दरमियान ऐसे आलिम को क़रार न दो जो दुनिया का आशिक़ हो क्योंकि वह तुम को मेरी मोहब्बत के रास्ते से रोक देगा यह लोग मेरे ख़ास बन्दों के लिये रहज़न हैं कम से कम मैं जो उन के साथ करता हूँ वह यह है कि मैं अपनी मुनाजात की तिलावत को उनके दिल से निकाल लेता हूँ।

5. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया फुक़हा रसूलों के अमीन हैं जब तक कि वह दुनिया में दाख़िल न हों पूछा कि दुनिया में उनके दाख़िले की सूरत क्या है। फ़रमाया सुल्तान जाबिर की पैरवी, जब वह ऐसा करें तो तुम अपने दीन को उनसे बचाओ।

6. हज़रत इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस ने इल्म को इस लिये हासिल किया कि वह उलमा की मजलिस में फ़ख़्र करे या जाहिलों की मजलिस में बहस करे या इस ग़रज़ से कि लोग उसकी तरफ़ तवज्जोह करें तो ऐसे शख़्स का ठिकाना जहन्नुम में है रियासत का सज़ावार नहीं है मगर इल्म वाला।

सोलहवाँ बाब

इल्म पर लुज़ूमे हुज्जत और उस पर सख़्त गीरी

1. हफ़्स बिन ग़ियास ने रवायत की है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जाहिल के सत्तर गुनाह आलिम के एक गुनाह से पहले माफ़ कर दिये जायेंगे (क्योंकि जाहिल न जान कर गुनाह करता है और आलिम जान बूझ कर)।

2. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उलमाए सू के लिये आतिशे जहन्नुम के शोले बुरी तरह उसकी ख़बर लेंगे।

3. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : जब साँस यहां तक आये गा और इशारा किया अपने हल्क़ की तरफ़ तो आलिम की तौबा उस वक़्त क़ुबूल न होगी, फिर आयत पढ़ी। ख़ुदा से जो लोग तौबा करें जो जिहालत से बुरे काम करते हैं।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने उस आयत के मुताल्लिक़ पस औन्धे मुँह जहन्नुम में दाख़िल

किये जायेंगे वह (कुरैश जिन्होंने बग़ैर हक़ इमामत को पाया) और उनके गुमराह पुजारी इमाम ने फ़रमाया वह वह हैं जिन्होंने मोहकमाते कुरआनी को पहचाना फिर उस के बाद पैरवीए ज़न करके गुमराही की बातें करने लगे।

सत्तरहवाँ बाब

नवादिर

1. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : तालिबे इल्म के लिये कसीर फ़ज़ीलतें हैं। उस का सर तवाज़ोह है। आँख़ हसद से दूर रहना है उसका कान मसाएले दीन को समझता है, उसकी ज़बान सच है हिफ़ाज़ते इल्म तलाशे हक़ है उसका दिल अच्छी निय्यत है उसकी अक़्ल अशिया व उमूर की मारेफ़त है उसका हाथ रहम है उसका पावं ज़ियारते उलमा उसकी हिम्मत सलामतिये नफ़्स है उसकी हिकमत परहेज़गारी है उसकी जाये क़रार नजात है उसका रहनुमा आफ़ियत है उसकी सवारी वफ़ा है उसके हथियार नर्म गुफ़्तुगू है उसकी तलवार रिज़ाए ख़ुदा है उसकी कमान हमदरदी है उसकी मजलिस सोहबते उलमा है उसका माल अदब है उसका ज़ख़ीरा गुनाहों से इजतेनाब है उसकी ज़ादे राह नेकी है और उसकी आबरू झगड़े का तर्क करना है उसकी रहबर हिदायत है उसका रफ़ीक़ नेकियों की तरफ़ रग़बत हैं

2. रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया : ईमान का अच्छा वज़ीर इल्म है और हिल्म का अच्छा वज़ीर लोगों से अच्छा बरताव है और रिफ़क़ का अच्छा वज़ीर इबरत हासिल करना है।

3. एक शख़्स रसूलुल्लाह स0 के पास आया कहने लगा इल्म क्या है फ़रमाया ख़ामोश रहना, पूछा फिर फ़रमाया कान लगा कर अहादीस व आयात का सुन्ना। पूछा फिर फ़रमाया उनको याद करना और उन पर अमल करना पूछा फिर क्या फ़रमाया उनका नश्र करना।

4. अली इब्ने इब्राहीम ने रवायत की है कि फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने तालिबाने हक़ तीन क़िस्म के हैं मैं उनके ईमान व सिफ़ात को जानता हूँ। एक गिरोह वह है जो इल्म को तलब करता है लोगों से जाहिलाना बहस के लिये दूसरा गिरोह,. इल्म हासिल करता है तकब्बुर व फ़रेब के लिये और तीसरा गिरोह उसको हासिल करता है फ़िक़्ह और अक़्ल के लिये पस जाहिल और झगड़ालू लोगों को सताने वाला और उनसे लड़ने वाला होता है लोगों के जलसों में साहेबाने इल्म व हिल्म का वस्फ़ इसलिये बयान करता है कि वह उसकी लचर बातों पर एतराज़ न करें वह ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ के लिबास में नज़र आता है। दर आं हालेकि परहेज़गारी से ख़ाली होता है ख़ुदा उसको ज़लील करता है और ज़बान क़त्आ करता है। साहेबाने फ़रेब की दो हालतें है या वह साहेबाने इल्म के सामने हिरज़ा सराइयां करते हैं और पुर शोर व शर शेख़ियां मारते हैं या ओमरा की चापलूसी करके उनके हलवे पराठे पर हाथ मारते हैं और अपने दीन को बरबाद करते हैं पस ख़ुदा ने इनकी बातों पर परदा डाल दिया है और अहले इल्म के नज़दीक उनकी बातों को बे असर बना दिया है जो साहेबाने इल्मे दीन व अक़्ल हैं वह बज़ाहिर रन्ज व अन्दोह में हैं। रातों को बेदार रहने वालें है ख़ुशनूदिये ख़ुदा के लिये टाट का लिबास पहनते हैं और तारीकिये शब में इबादत

करते हैं और इस ख़याल से कि इबादत कुबूल न हो ख़ाएफ़ व तरसां रहते हैं। और दुआ करते हैं और डरते हैं कि मबाद उनकी दुआ कुबूल न हो और अपने ज़माने के अहले बातिल को पहचान कर उनसे अलग रहते हैं और अपने भाइयों तक पर एतमाद नहीं करते उनकी बे वफ़ाई देख कर। पस ख़ुदा ने इस परहेज़गारी को देख कर उनके उसूले दीन को मुस्तहकम बना दिया और रोज़े क़यामत उनको अमान दी।

5. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया किताबे ख़ुदा के रावी तो बहुत हैं और कुरआन पर अमल करने वाले कम हैं। बहुत से ख़ालिस समझतें हैं हदीस को और गै़र ख़ालिस जानतें हैं कुरआन को। जब उसको मुख़ालिफ़े हदीस पातें हैं पस उलमा फ़िक्र करते हैं रवायते कुरआन में और मज़म्मत करते हैं मुख़ालिफ़ों की और जहां फ़िक्र करते हैं रवायत के मुताल्लिक़ पस ताबेईन दो क़िस्म के हैं एक जावेदानी ज़िन्दगी का चाहने वाला दूसरे हलाकते अबदी के ख़्वास्त गार (इस लिये यह लोग दो गिरोह में तक़सीम हो गये एक वह जो कुरआन पर आमिल है और जो हदीस मुवाफ़िक़े कुरआन न हो उसे तर्क कर देते है। दूसरा गिरोह हदीस को मुक़द्दम जानता है चाहे मुख़ालिफ़ कुरआन हो। जैसे हदीस *ला नरेसो वला नूरेसो*)

6. अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से मरवी है आप ने फ़रमाया जिस ने हमारी 40 हदीसें महफ़ूज़ कर लीं तो अल्लाह उसको रोज़े क़यामत आलिम व फ़क़ीह उठायेगा।

7. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत *फ़ल्यन्ज़िल्इन्सानो इला तआमेही* (सूरः अबस, 24) के

मुताल्लिक़ फ़रमाया रावी ने पूछा इमाम से क्या मुराद है आप ने फ़रमाया उसका इल्म जिससे भी हासिल करे।

8. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया शुब्हे के मौक़े पर किरदार व गुफ़्तार से महफ़ूज़ रहना। इससे बेहतर है कि अपने आप को ख़तरे में डाला जाये। नक़्ल न करना ऐसी हदीस का तेरे लिये बेहतर है उस सूरत में रवायत करने से कि उसके तमाम अजज़ा तेरे दिमाग़ में महफ़ूज़ न हों।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने तुम्हारे लिये सज़ावार नहीं कुछ कहना या करना उस अम्र के मुताल्लिक़ जिस का तुम को इल्म नहीं। बेहतर है कि उस से रूक जाओ और रूजू करो उस अम्र के बारे में अइम्मए हुदा की तरफ़ कि वह तुमको उसमें सही रास्ता बतायेंगे और नादानी को तुम पर वाज़ेह कर देगे और अम्रे हक़ की मारेफ़त करायेंगे। ख़ुदा फ़रमाता है कि अगर तुम नहीं जानते तो अहले इल्म से पूछो।

10. मैने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना। मैने तमाम आदमियों के हिल्म को चार सूरतों में पाया, अव्वल यह कि तू अपने रब की मारेफ़त हासिल करे, दूसरे यह कि पहचाने कि ख़ुदा ने तेरे ऊपर क्या एहसान किये हैं तीसरे यह जाने कि ख़ुदा तुझसे क्या चाहता है चौथे यह कि क्या बातें तुझे दीन से ख़ारिज कर देगीं।

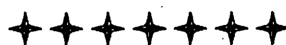
11. रावी कहता है कि मैने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से पूछा अल्लाह का क्या हक़ है अपनी मख़लूक़ पर फ़रमाया वह कहें जो जानतें हैं और बाज़ रहें उससे जो नहीं जानते। ऐसी सूरत में वह अल्लाह का हक़ अदा

करेंगे।

12. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के नज़दीक लोगों के मरातिब का हाल मालूम करने के लिये यह देखो के वह हम सब में रवायत करने में कैसे हैं कतरे बुयूत तो नहीं करते और (अपनी तरफ़ से उसके मानी तो बयान नहीं करते।)

13. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने एक ख़ुत्बे में फ़रमाया है कि लोगो जान लो कि वह शख़्स अक़्लमन्द नहीं जो अपने मुताल्लिक़ किसी झूठी बात के कहने पर ख़ुशी से उछल पड़ा। और कहने वाले को सरज़निश न करे और अक़्लमन्द व हकीम नहीं वह शख़्स जो जाहिल की तारीफ़ पर राज़ी हो।

14. हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब आप के पास बसरे का एक शख़्स उसमान नाबीना बैठा हुआ था और उस ने कहा कि हसन बसरी का गुमान यह है कि जो लोग इल्म को छुपाते हैं उनके बदन की बदबू दोज़ख़ियों को तकलीफ़ पहुँचाए गी हज़रत ने फ़रमाया तो इस सूरत में मोमिने आले फ़िरऔन जहन्नमी क़रार पाया, क्योंकि वह इल्म व ईमान को छुपाता था जब ख़ुदा ने नूह अ० को मबऊस किया इल्म तो (उनके औसिया में) छुपा ही रहा। हसन बसरी के दायें बायें जाकर यह सुना दो कि यहा के सिवा (यानी अइम्मए मासूमीन के सिवा) इल्म और कहीं पाया ही नहीं जाता।



अट्ठारहवाँ बाब

रवायत कुतुब व हदीस व फ़ज़ीलते किताबत व तमस्सुक बिल्कुतुब

1. मैने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुताल्लिक़ पूछा *अल्लीना यस्तमेऊना* फ़रमाया इससे मुराद वह शख़्स है जो हमारी हदीस को वैसे ही बयान करता है जैसा सुनता है न उसमें कुछ ज़्यादा करता है और न कम।

2. मैने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि मैं आप से जो कलाम सुनता हूँ चाहता हूँ कि उसकी रवायत बे कम व कास्त करूं। लेकिन याद नहीं आता। फ़रमाया अमदन तो ऐसा नहीं करते कि जो बयान करते हो उससे लोगों को बदगुमानी में डालो। मैंने कहा नहीं फ़रमाया मानी व मफ़हूम तो बे कम व कास्त बयान करते हो। मैने कहा हाँ फ़रमाया तो कोई मुज़ाएक़ा नहीं।

3. मैने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से कहा कि मैं जो हदीस आप से सुनता हूँ जब दूसरों से नक़्ल करता हूँ तो अलफ़ाज़ में कमी बेशी हो जाती है क्या यह जाएज़ है फ़रमाया कि अगर मानी में कोई कमी या ज़्यादती नहीं होती और हमारे मफ़हूम को नहीं बदलता तो कोई मुज़ाएक़ा नहीं

4. मैंने सादिक़े आले मोहम्मद स0 से कहा जो हदीस मैं आप से सुनता हूँ आप के वालिदे माजिद के नाम से रवायत करता हूँ और जो उनसे सुनता हूँ आप के नाम से

बयान कर देता हूँ इसमें कोई हरज तो नहीं। फ़रमाया कोई मुज़ाएक़ा नहीं, बात बराबर है आगाह हो जो तुम मेरे पदरे बुज़ुर्गवार के नाम से मेरी हदीस नक़्ल कर दिया करो (अज़रू–ए–तक़य्या) वह ठीक है।

5. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि लोग मेरे पास आप की किताबे हदीस सुनने के लिये आते हैं (तो आप लोगों की कसरते हदीस) से दिल तंग परेशान और कमज़ोरी महसूस करने लगता हूँ। फरमाया हदीस के तीन हिस्से करके उन्हें सुनाओ। पहले अव्वल हिस्सा पढ़ो फ़िर दरमियान फिर आख़िर।

6. मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से पूछा हमारे सहाबा में से एक शख़्स मुझे हदीस की किताब देता है और यह नहीं कहता कि मेरी तरफ़ से उसकी रवायत करना पस मेरे लिये जाएज़ है कि मैं उस की तरफ़ से रवायत करूँ जब तुम यह जान लो कि उसी ने हम से लिखा है तो उस की तरफ़ से रवायत करो।

7. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब तुम कोई हदीस नक़्ल करो तो उस रावी का ज़िक्र करो जिससे तुमने सुनी है पस अगर वह सच्ची है तो उसका फ़ाएदा तुम्हें पहुँचेगा और अगर झूठी है तो उसका नुक़्सान उस रवायत करने वाले को पहुँचेगा।

8. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स0 ने दिल एतमाद करता है लिखे पर। यानी जो हदीस सुनो उसे लिख लो ताकि उसमें शक न रहे।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जब कोई हदीस सुनो तो उसे लिख लिया करो। इस लिये

कि तुम बग़ैर लिखे याद न रख सको गे।

10. उबैद बिन जुरारा से मरवी है कि फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जो हदीस सुनो उसे लिख लो और फिर अपने भाईयों में नश्र करो।

11. अगर तुम मरने लगो तो उसको अपनी औलाद में ब–तौरे मीरास छोड़ दो। एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि लोग किताबों से मानूस होंगे।

12. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने को किज़्ब व मुफ़तरा से बचाओ। पूछा गया कि किज़्ब व मुफ़तरा क्या है फ़रमाया तुम किसी हदीस को इमाम से रवायत करो और उसका नाम न बताओ।

13. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स0 ने कि हमारी अहादीस पर एराब लगाओ कि तुम ख़ानवादए रिसालत व फुसहाये अरब में हमारे कलाम में तग़य्युर व तबद्दुल न हो। एराब लगाने के बाद लोग पढ़ने में ग़लती न करेंगे।

14. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मेरी हदीस मेरे वालिदे माजिद की हदीस है और उनकी हदीस मेरे हुसैन अ0 की और उनकी हदीस हसन अ0 की और उनकी हदीस अमीरूल मोमिनीन अ0 की और उनकी हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम की और रसूल स0 की हदीस ख़ुदाए अज़्ज़ा व जल्ला का क़ौल है।

15. यानी मैने इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से कहा। मै आप पर कुरबान कि जिस जमाअत से हमको अहादीस पहुँची हैं उन्होंने रवायत की है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से उस ज़माने में

सख़्त तक़य्या था उन्होंने अपनी कुतुबे हदीस को छुपा दिया, पस उन किताबों से अहादीस नक़्ल न की गई उनके मरने के बाद वह किताबें मिलीं पस उन किताबों से हम नक़्ले हदीस करें या नहीं फ़रमाया करो वह सही व कारामद हैं।

उन्नीसवाँ बाब

तक़लीद

1. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत है कि रावी कहता है कि मैंने हज़रत के सामने यह आयत पढ़ी नसरानियों ने ख़ुदा को छोड़ कर अपने उलमा और रोहबानों को अपना रब बना लिया और उसका मतलब पूछा फ़रमाया नसारा को उनके उलमा व रोहबान ने अपने नफ़्सों की परस्तिश की दावत नहीं दी थी और अगर ऐसी दावत देते तो वह कुबूल नहीं करते लेकिन उलमा ने यह किया कि हलाल को हराम बताया और हराम को हलाल पस उन्होने अपने उलमा की तक़लीद की। इस तरह ला–शऊरी तौर पर उनकी इबादत की।

2. मोहम्मद बिन उबैदा से रवायत है कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने मुझ से फ़रमाया : ऐ मोहम्मद तुम शिया अपने इमाम की बात ज़्यादा सुनने वाले हो या तुम्हारे मुख़ालिफ़, मैने कहा उन्होंने भी तक़लीद की हमने भी तक़लीद की हज़रत ने फ़रमाया मेरा यह सवाल नहीं है मैने कहा इसके अलावा मेरे पास जवाब नहीं। हज़रत ने फ़रमाया मेरा कहना यह है कि मरजिया फ़िरक़े ने ऐसे को अपना इमाम बनाया जिसकी इताअत उन पर फर्ज़ न थी मगर उस

पर भी उन्होंने उसकी तक़लीद की और बात मानी। और तुमने इमाम माना ऐसे शख़्स को जिसकी इताअत को तुमने फर्ज़ समझा है मगर उस पर भी तुमने उसकी पैरवी न की पस तक़लीद के बारे में वह तुमसे ज़्यादा रहे।

3. अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से मरवी है उस आयत के मुताल्लिक़ (नसारा ने अपने उलमा और रहबरान को छोड़ कर अपना रब बनाया) फ़रमाया वल्लाह नसारा ने न उनके लिये रोज़े रखे थे और न नमाज़ पढ़ी थी बल्कि उनके उलमा ने हलाल को उनके लिये हराम क़रार दे दिया था और हराम को हलाल, पस उस अम्र में उन्होंने अपने उलमा का इत्तेबा किया था।

बीसवाँ बाब

बिदअत व राए व क़यास

1. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने एक ख़ुतबे में फ़रमाया लोगों फ़ित्नों की इत्तेबा, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी और अपनी तरफ़ से उन अहकाम की ईजादात हुई है जो किताबुल्लाह के सरासर ख़िलाफ़ होते हैं और लोगों को उस में साहेबे तसर्रूफ बना लेते हैं पस अगर बातिल की सूरत से सामने आता है तो साहेबाने अक़्ल से पोशीदा न रहता और हक़ ख़ालिस सूरत में होता तो इख़्तेलाफ़ पैदा ही न होता। यह है कि कुछ बातिल से लिया जाता है ओर कुछ हक़ से। और यह दोनों ख़ल्त मल्त होकर लोगों के सामने आते हैं इस सूरत में शैतान अपने औलिया पर ग़ालिब आ जाता है और नजात पाते हैं बातिल से वह लोग

जिन के लिए मशीयते ईज़दी में बेहतरीन मन्ज़िल है यानी जन्नत।

2. रसूलुल्लाह सल्लुल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब बिदअत मेरी उम्मत में ज़ाहिर हो तो आलिमे दीन को चाहिये कि वह अपने दीन को ज़ाहिर करे और जो ऐसा नहीं करेगा उस पर अल्लाह की लानत।

3. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो कोई साहेबे बिदअत के पास आया और उसकी बुजुर्गी का इक़रार किया तो उसने इस्लाम को तबाह करने की कोशिश की।

4. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुदा ने साहेबे बिदअत की तौबा क़ुबूल करने से इन्कार फ़रमाया है किसी ने पूछा या रसूलल्लाह ये क्यों? फ़रमाया इसलिये कि उसके दिल में बिदअत की मोहब्बत रासिख़ हो गयी। ख़ुदा जानता है कि वह तर्के बिदअत नहीं करेगा।

5. फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने हर बिदअत पर जो वाक़े होगी मेरे बाद तो उस पर जंग की जायेगी ख़ुदा और रसूल स० की तरफ़ माएल करने के लिये और उसके लिये वली होगा। मेरे अहलेबैत अ० से एक शख़्स जो निगहबाने दीन व मोवक्किल होगा दुश्मनों के हमलों को अहकामे दीन के मुताल्लिक़ दफ़ा करेगा अम्रे हक़ का एलान करेगा और मुताबिक़े एलाने इलाही कलाम करेगा और मक्कारों के मक्र व फरेब को दफ़ा करेगा। ज़ईफ़ो की तरफ़ से गुफ़्तुगू करेगा पस ऐ साहेबाने अक़्ल इबरत हासिल करो और अल्लाह पर तवक्कुल

करो।

6. अमीरूल मोमिनीन अैहिस्सलाम ने फ़रमाया : कि ख़ुदा के नज़दीक सबसे बदतर दुश्मन दो हैं एक वह कि ख़ुदा ने छोड़ा उसके काम को उस पर कि सल्बे तौफीक़ की उस से कि वह इमामे हक़ से बे मुकाबरा व इख़्तेलाफ अम्रे हक़ को हासिल करे पस वह रहे रास्त से हट गया। और अपने पुर अज़ बिदअत कलाम का आशिक़ बन गया और बजाये अहकामे कुरआन व सही दलाएल को लेने के वह रोज़ा व नमाज़ पर फरीज़ा हो कर रह गया वह एक फित्ना है अपने मुरीदों के लिये और राहे हक़ से हटाने वाला है अपनी ज़िन्दगी में उन लोगों को जो उसकी बात कुबूल करें और अपनी मौत के बाद भी अपनी पैरवी करने वालों के लिये वह दूसरों के गुनाहों का उठाने वाला है और अपने गुनाहों में गिरफ़तार है दूसरे वह क़ाज़ी व मुफ़ती वग़ैरा हैं जो जेहले मुरक्कब का शिकार होकर दूसरों को जिहालत में फांसता है और फ़ितनों को फैलाने में मदद देता है और अवामुन नास ने जो जाहिल हैं उसको आलिम समझ रखा है हांलाकि उसका एक दिन भी अहकामे इलाहिया के मुताबिक़ शुब्हे से ख़ाली नहीं। उसके जेहले मुरक्कब का निशान यह है कि जल्दी जल्दी उसने बहुत कुछ हासिल कर लिया उस चीज़ को जिसका कम बेहतर है उसके ज़्यादा से यहां तक कि जब वह आबे गन्दा से सेराब हो गया और ला ताएल बातों से पुर हो गया तो क़ाज़ी बन बैठा और ज़ामिन बन बैठा लोगों को शुब्हात से निकालने का। अगर उसने अपने से पहले के क़ाज़ी के हुक्म की मुख़ालेफ़त की तो वह बे ख़ौफ न हुआ इससे कि उसके बाद आने वाला उसके हुक्म को इस तरह तोड़ देगा जिस तरह उसने अपने से पहले के

हुक्म को तोड़ा है और अगर कोई सख़्त मसला सामने आ जाता है तो अपनी राए से अन्ट सन्ट बयान करने लगता है फिर उन ना माकूल बातों पर मामले को ख़त्म कर देता है और शुब्हात की परदा पोशी के लिये हुक्म लगाता है जिसकी मिसाल मकड़ी के जाला तन्ने की है न उसे यह पता कि यह राये उसकी सहीह है या ग़लत। और उसके गुमान में यह बात नहीं कि जिस से इन्कार किया है इल्म उसमे है और यह नहीं समझता कि पैरवीए ज़न और क़यास आराई में पड़ा हुआ है मज़हब बिलकुल उससे अलग है अगर क़यास करता है एक चीज़ का दूसरी चीज़ पर बे सबब दोनों के मुशाबे होने के तो अपनी फ़िक्र को ग़लत नहीं समझता। अगर कोई अम्र मख़्फ़ी उस पर तारीक होता है यानी अपने क़यास की राह में नहीं पाता तो छुपाता है उसको अपने जिहालत आंगीं इल्म से, ताकि लोग यह न समझें कि वह नहीं जानता, पस जसारत करके हुक्म लगाता है और कुन्जी बनता है अन्धे पन की निसयार शुब्हात की और शुकूक व औहाम से ख़बतुल हवासी करता है जो नहीं जानता उसके मुताल्लिक़, उज़्र नहीं करता। ताकि गुम्राही से बचे और पूरी कुव्वत से इल्म हासिल नहीं करता ताकि ग़नीमत इल्म व दानिश हासिल करे। और अहादीस इस तरह परागन्दा करता है जैसे तेज़ हवा घास को। उसके ग़लत हुक्म देने से मीरास रोती हैं और मज़लूमों के ख़ून चीख़ें मारते है उसने अपने फतवे से हराम शर्मगाहों को हलाल कर दिया और अपने फ़ैसले से हलाल शर्मगाहों को हराम बना दिया जो अहकाम उससे सादिर हुये वह उनके लिये पुर अज़ इल्म नहीं और इल्मे हक़ के मुताल्लिक़ जो कसरत से अमादा करता है वह उसका अहल नहीं

नोट : हज़रत ने अपने ख़ुत्बे में यह ज़ाहिर फ़रमाया है कि एक गिरोह तो इन सूफ़ी साहेबान का है जो अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम के सहीह रास्ते से हट कर अपना एक नया रास्ता बनाने वाले हैं बज़ाहिर रोज़े नमाज़ के बड़े पाबन्द बन कर अपने मुरीदों को अपनी राय और क़यास पर अमल करा के उनको गुमराह कर रहे हैं दूसरा गिरोह उन क़ाज़ियों और मुफ्तियों का है जो जेहले मुरक्कब का शिकार हैं वह मुददई तो उसके हैं कि लोगों के शुब्हात को ज़ाएल करने वाले हैं हांलाकि वह पैरवीए शैतान करके खुद जिहालत में मुबतिला हैं और उसका सुबूत यह है एक क़ाज़ी या मुफ़्ती दूसरे के हुक्म को तोड़ देता है।,

7. मैनें हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से सुना कि क़यास करने वाले लोग इल्म को क़यास में तलाश करते हैं लेकिन यह क़यासात उन्हें हक़ से दूर ही हटाते जाते हैं दीन क़यासात से हासिल नहीं होता।

8. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हर बिदअत ज़लालत है और हर जिहालत का रास्ता जहन्नम की तरफ़ है।

9. मोहम्मद इब्ने हकीम से मरवी है कि मैंने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ। हमने इल्मे दीन हासिल किया और आप की वजह से हम दूसरों से इल्म हासिल करने से बे परवाह हो गये यहाँ तक कि हम में से कुछ लोग जब जलसों में जाते हैं। और लोग हमसे सवाल करते हैं तो हम उनके जवाब दे देते हैं इसलिये कि ख़ुदा ने हम पर एहसान किया है आप लोगों की वजह से लेकिन बाज़ औक़ात ऐसे सवालात भी सामने आ जाते है

कि हमने उनका जवाब न आप से हासिल किया न आप के आबाए ताहेरीन से पस ऐसे मौक़े पर जो हमे आता है उसके हर पहलू पर ग़ौर करके जवाब दे देते हैं ऐ इब्ने हकम अफ़सोस सद अफ़सोस क्या यह सही है फ़रमाया इसमें हलाकत है जिसने ऐसा किया वह हलाक हुआ। फिर फ़रमाया ख़ुदा लानत करे अबू हनीफ़ा पे कि वह कहता है इस मसले में अली अ0 यह कहते हैं और मैं यह कहता हूँ यानी मेरा क़ौल उनके क़ौल से बेहतर है मोहम्मद बिन हकीम कहते है कि मैंने हश्शाम बिन अब्दुल हकम से कहा। वल्लाह मैं चाहता था कि मुझे मसाएले दीन में क़यास करने की इजाज़त मिल जाती।

10. यूनुस बिन अब्दुर्रहमान से मरवी है कि मैने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से पूछा। क्या अम्र है जिस से वहदानियते बारिये ताला की शनाख़्त किसी में पाई जाए। फ़रमाया ऐ यूनुस बिदअत पसन्द न बन। जिसने अहकामे दीन में अपनी राये से अमल किया वह हलाक हुआ और जिस ने अपने नबी स0 के अहलेबैत को छोड़ा हलाक हुआ और जिसने किताबे ख़ुदा और क़ौले नबी को तर्क किया वह काफ़िर हुआ।

11. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि हम पर कभी ऐसे मसाएल पेश किये जाते हैं जिन का जवाब हम को न कुरआन से मिलता है न हदीस में। पस हम ख़ुद ही ग़ौर करके जवाब दे देते हैं। फ़रमाया ख़बरदार ऐसा न करना। अगर तुम्हारा क़यास ठीक हुआ तो उसका अज्र न मिलेगा और अगर तुमने ग़लती की तो अल्लाह तआला पर झूठ बोला।

12. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हर बिदअत ज़लालत है और हर ज़लालत का नतीजा जहन्नम है।

13. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया : हर बिदअत ज़लालत है। समाआ बिन मेहरान ने इमाम मूसा काज़िम अ0 से कहा। अल्लाह आप की हिफ़ाज़त करे। जब हम एक जगह जमा होते हैं तो आप की अहादीस को याद करते हैं जो सवाल हम से किया जाता है हम उस का जवाब इन अहादीस में पा लेते हैं जो हमारे पास लिखी हुई हैं और यह वह नेमत है जो अल्लाह ने आप की बदौलत हमको दी है लेकिन बाज़ औक़ात कोई हलका सा मसला ऐसा भी हम से पूछा जाता है जिसका जवाब इन अहादीस में हम को नहीं मिलता। और हम एक दूसरे को तकने लगते हैं। और दिलों में शुब्हात पैदा होते हैं हम उस वक़्त किसी अच्छे क़यास से काम लेते हैं। फ़रमाया क़यास से तुम्हारा क्या तअल्लुक़ उसी क़यास की बिना पर तुम से पहले बहुत से लोग हलाक हो गये। फिर फ़रमाया जब तुम से ऐसा सवाल किया जाये जिसका जवाब तुमको मालूम है तो उसे बयान करो और अगर मालूम न हो तो हज़रत ने अपने दहने मुबारक की तरफ़ इशारा किया कि हम से पूछा करो। फिर फ़रमाया। अल्लाह लानत करे अबू हनीफ़ा पर कि वह कहा करता है अली ने यह कहा है और मैं यह कहता हूँ यानी मेरा क़ौल अली से बेहतर है और सहाबा ने यह कहा है और मैं यह कहता हूँ मेरा क़ौल उनसे बेहतर है फिर फ़रमाया क्या तुम उसके पास बैठा करते हो। मैने कहा नहीं लेकिन यह जानता हूँ कि वह ऐसी बातें करता

है। मैने कहा ख़ुदा आप का निगेहबान हो, क्या रसूलुल्लाह ने लोगों को इतना बता दिया था जो हज़रत के ज़माने में उनके लिये काफ़ी होता। फ़रमाया बेशक इतना बता दिया था जिस की ज़रूरत उनको क़यामत तक होगी। मैने कहा क्या उससे कुछ ज़ाया हो गया, फ़रमाया नहीं वह इल्म उसके अहल यानी हमारे पास है।

14. रावी कहता है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना फ़रमाया कि इब्ने शुबरमा का इल्म (अहदे अब्बासिया का क़ाज़ी) ज़ाया हो गया जामेआ से (मुस्हफ़े फ़ातेमा) जिसको लिखवाया रसूलुल्लाह ने और अपने हाथ से लिखा अली अलैहिस्सलाम ने उसमें कोई बात ऐसी नहीं छोड़ी गयी जिसमें किसी को कलाम की गुन्जाइश हो। उसमें इल्मे हलाल व हराम है क़यास करने वालों ने इल्म को क़यास में किया। नतीजा यह हुआ कि अम्रे हक़ से दूर होते चले गये। ख़ुदा के दीन में क़यास का हक़ नहीं।

15. अबाम बिन तुग़लक़ से मरवी है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ ने फ़रमाया कि शरीअत में क़यास को दख़्ल नहीं क्या तू नहीं देखता कि औरत ज़मानए हैज़ के रोज़े अदा करती है मगर नमाज़ें नहीं। हांलाकि नमाज़ रोज़े से अफ़ज़ल है जब शरीअत में क़यास को दख़्ल होगा तो दीन बरबाद हो जायेगा।

16. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मैने पूछा क़यास के मुताल्लिक़ फ़रमाया, क़यास से तुम्हारा क्या ताल्लुक़। ख़ुदा से यह सवाल नहीं होगा कि किसी चीज़ को हलाल क्यों किया और हराम क्यों (सिवाए ख़ुदा के कोई नहीं

जानता कि हलाल व हराम करने की वजह क्या है।)

17. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने वालिद माजिद से रवायत की है कि हज़रत अली अ0 ने फ़रमाया : जिस ने एहकामे इलाहिया में कयास को राह दी वह हमेशा शुब्हात में मुब्तिला रहा। और जिस ने अमले आख़िरत अपनी राये और पैरवीए ज़न से किया वह हमेशा शुब्हात में डूबा रहा। फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि इमाम बाक़िर अ0 फ़रमाते हैं कि जो लोगों को फ़त्वे देता है वह अपनी राये से। अमले आख़िरत करता है उस चीज़ से जिसको वह नहीं जानता और जो बा–वजूद जानने के ऐसा करता है वह ख़ुदा का मुक़ाबला करता है हराम व हलाल क़रार देने में इन चीज़ों के जिनका उसको इल्म नहीं।

18. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि शैतान ने क़यास किया अपने नफ़्स का नफ़्से आदम पर और कहा तूने मुझे आग से पैदा किया और आदम को मिट्टी से, उसने क़यास किया आग का मिट्टी पर। अगर वह क़यास करता उस जौहर का। जिससे ख़ुदा ने आदम अ0 को पैदा किया तो वह पाता उसको नूर और ज़िया में नार से बेहतर।

19. मैने इमाम जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम से हलाल व हराम के मुताल्लिक़ पूछा : फ़रमाया जिसको आं हज़रत ने हलाल बताया है वह क़यामत तक हलाल है और जिसे हराम क़रार दिया है वह क़यामत तक हराम है उसके सिवा अब कोई शरीअत न होगी और हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, जिस ने शरीअत में कोई नई चीज़ ईजाद की उसने रसूले ख़ुदा के तरीक़े को छोड़ दिया।

20. अबू हनीफ़ा एक रोज़ इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के पास आये। हज़रत ने फ़रमाया मैने सुना है कि तुम शरअ में क़यास करते हो उन्होंने कहा कि हाँ। फ़रमाया क़यास न किया करो। सबसे पहले क़यास करने वाला इबलीस है उसने कहा तूने मुझे आग से पैदा किया और आदम अ0 को मिट्टी से। उसने आग और मिट्टी के दरमियान क़यास किया। अगर क़यास करता नूरानियते आदम का आग पर तो दोनों की नूरानियत ज़ाहिर हो जाती और नूर को जो फ़ज़ीलत नार पर है वह उससे पोशीदा न रहती।

21. एक शख़्स इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के पास आया और एक मसअला पूछा। आप ने जवाब दिया, उसने कहा कि अगर यह मसअला इस तरह होता तो आप का क्या जवाब होता। फ़रमाया ख़ामोश मैनें जो जवाब दिया वह वही है जो मैने रसूल स0 से नक़्ल किया है। हम ख़ुद अपनी तरफ़ से नही कहते।

22. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : अख़ज़े अहकामे शरीअत में ख़ुदा का शरीक किसी को न बनाओ। वरना मोमिन न रहोगे। हर सबब व नसब व क़राबत शिर्क व बिदअत व शुब्हा है रोज़े क़यामत काम न देगी मगर वही चीज़ जो कुरआन से साबित है।



इक्कीसवां बाब

हर मसअले में किताब व सुन्नत की तरफ़ रूजू करना, हलाल व हराम और हर वह चीज़ जिसकी तरफ़ इन्सान मोहताज है किताब व सुन्नत में पाई जाती है

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि अल्लाह तआला ने हर शै को कुरआन में बयान फ़रमाया है और जिस जिस चीज़ के बन्दे मोहताज थे उनमें से एक को भी नहीं छोड़ा कोई यह कहने की ताक़त नहीं रखता कि यह चीज़ भी कुरआन में नाज़िल की जाती है आगाह हो कि ख़ुदा ने कुरआन में उसको ज़रूर नाज़िल किया है।

2. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने किसी ऐसी चीज़ को कुरआन में नहीं छोड़ा जिसकी तरफ़ उम्मत मोहताज थी उसको अपनी किताब में नाज़िल किया और अपने रसूल पर ज़ाहिर कर दिया और हर शै की एक हद क़रार दी और उस पर एक दलील भी क़ाएम करदी और अज़ाब रखा उसके लिये जो उस हद से तजावुज़ करे।

3. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाते हुये सुना आप ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने क़रार नहीं दिया हलाल व हराम को मगर हर एक के लिये एक हद मुकर्रर की है घर की हद की तरह पस जो चीज़ राह में है वह

दाख़िले ख़ाना नहीं बल्कि राह में है और जो दाख़िले ख़ाना है ज़ाहिर है वह राह में नहीं और जो हदीस को मजरूह करे। उसकी ऐसी ही सज़ा है जैसे जिस्म को मजरूह करने वाले की। ब—क़द्रे एक ताज़ियाना या निस्फ़ ताज़ियाना।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हर वह चीज़ जिसकी एहतियाज लोगों को होती है किताब व सुन्नत में मौजूद है।

5. अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : अगर तुम्हें किसी मसअलें में शुब्हा वारिद हो मुझ से पूछो किताबुल्लाह में कहाँ है फिर एक हदीस में फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने मना किया है क़ील व क़ाल और फ़साद माल और कसरत सवाल से। किसी ने पूछा यब्ना रसूलिल्लाह यह किताबे ख़ुदा में कहा है फ़रमाया ख़ुदा फ़रमाता है कि उन की ज़्यादा सरगोशी में फ़ायदा नहीं मगर यह कि सदक़ा यानी ज़कात वग़ैरा के लिये हो या एहसान करने के मुताल्लिक़ या लोगों के दरमियान इसलाह करने के सिलसिले में और ख़ुदा फ़रमाता है कि अपना वह माल जो तुम्हारे लिये सरमायए मआश है बेवक़ूफ़ों के हवाले न करो। वरना वह तलफ़ कर देगे ख़ुदा फ़रमाता है चीज़ों के मुताल्लिक़ सवाल न करो कि बाज़ चीज़े ऐसी होंगी) अगर तुम पर ज़ाहिर की गयीं तो तुम को बुरा मालूम होगा। (इमाम अलैहिस्सलाम ने तीनों बातों का जवाब आयते कुरआनी से दे दिया।)

6. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नही है कोई ऐसा अम्र जिसमें दो आदमी इख़्तेलाफ़ रखते हों मगर यह कि वह किताबुल्लाह में है लेकिन लोगों की

अक़्लों तक नहीं पहुँचती।

7. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया लोगों अल्लाह तआला ने तुम्हारी तरफ़ रसूल स0 को भेजा और उन पर किताबे हक़ नाज़िल की और तुम अनपढ़ थे न किताब को जानते थे न उसके नाज़िल करने वाले को न रसूल से वाकिफ़ थे और न उस ज़ात से जिसने उन को रसूल बना कर भेजा था आं हज़रत को उस वक़्त भेजा जब कि रसूल की आमद का सिलसिला क़ता हो गया था और ग़फ़लत लोगों पर छाई हुई थी और जिहालत और फ़ितनों का दौर दौरा था और पैग़म्बरों के कामों से रूगरदानी और अम्रे हक़ में अन्धा पन और ज़ुल्म व जौर की ज़्यादती और आतिशे हर्ब की हर वक़्त शोला फिशानी और दुनिया के बाग़ों पर ज़रदी छाई हुई है उसकी शाख़ें सूखी हुई हैं उसके पत्ते बिखरे हुए हैं उसके फल मायूसी हैं उसका पानी ज़मीन की तह में घुसा हुआ है हिदायत के निशानात मिटे हुये हैं हलाकत के निशानात उभरे हुए हैं दुनिया अपने अहल के साथ तुर्श रूई से मुह चढ़ाए हुये है पीछे को जाने वाली आगे को न आने वाली उसके फल फ़ितना हैं उसका खाना मुरदार है उस का शेआर (वह कपड़ा जो नीचे पहना जाता है) ख़ौफ़ है उसका दिसार (जो कपड़ा ऊपर पहना जाता है) तलवार है उसने अपने अहल के टुकड़े टुकड़े कर दिये और उनकी आख़ें अन्धी कर दीं और उनके अय्याम को तारीक बना दिया। इन दुनिया वालों ने अपने रहम को क़ता किया आपस में ख़ूँ रेज़ी की अपनी जिन्दा लड़कियों को ज़मीन में दबा दिया हांला कि वह इन्ही की औलाद थीं उन्होंने दुनिया में ऐश व राहत को तलब किया और अल्लाह से सवाब की उम्मीद न रखी और उसके अज़ाब से नहीं

डरते हैं उनके ज़िन्दा अन्धे और सितमगार और उनके मुर्दा दोज़ख़ी और नजात से ना उम्मीद, पस लाये हज़रत रसूले ख़ुदा उनके लिये एक दस्तूर जो कुतुबे सादिक़ा में था और तस्दीक़ की उनकी जो सामने है यानी इन्जील और कुरआन में तफ़सील है हराम व हलाल की पस उसकी सिफ़तों को बयान करो। वह तुम से नहीं बोलेगा मैं तुमको ख़बर देता हूँ उसमें उन चीज़ों का भी इल्म है जो गुज़र चुकीं और उन बातों का भी है जो आने वाली हैं क़यामत तक और तुम्हारे नज़ाआत का फैसला भी है और जिन बातों से तुम इख़्तेलाफ़ करते हो वह भी अगर तुम मुझसे दरयाफ़त करो तो मैं बता दूँ।

8. मैने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना। मैं फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम हूँ मैं सबसे ज़्यादा किताबे ख़ुदा का जानने वाला हूँ उसमें इब्तेदाये ख़ल्क़ का हाल भी है और जो क़यामत तक होने वाला है वह भी उसमें है, आसमान की ख़बर भी है और ज़मीन की भी, उसमें जन्नत की भी ख़बर है और दोज़ख़ की भी जो हो चुका उसकी भी और जो होने वाला है उसकी भी हद मेरी नज़र के सामने यह सब चीज़ें ऐसी ही बदीही हैं जैसे मेरी, हथेली मेंरे सामने है ख़ुदा फ़रमाता है उस कुरआन में हर शै का बयान है।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने किताबुल्लाह में जो तुम से पहले है उसकी भी ख़बर है और जो तुम से बाद मे होगा उसकी भी तुम्हारे बाहमी नज़रयात का फैसला भी है और यह हम सब बातें जानते हैं।

10. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से मैने पूछा क्या

हर शै कुरआन और सुन्नते नबी स0 में है : जो लोग कहते है उसमें हर शै, जो आप कहते है क्या वह भी है। फ़रमाया हर शै किताबुल्लाह और अहादीसे नबवी में है।

बाइस्वां बाब

इख़्तेलाफ़े हदीस

1. सलीम बिन क़ैस हलाली से मरवी है कि मैंने अमीरूल मोमिनीन अ0 से कहा कि मैने सलमान व मिक़दाद व अबूज़र से तफ़सीरे कुरआन और हदीसे नबवी के मुताल्लिक़ ऐसी चीज़ें सुनी हैं जो बिलकुल अलग हैं उन चीज़ों से जो तफ़सीरे कुरआन के मुताल्लिक़ आम लोग बयान करते हैं आप हज़रात का गुमान यह है कि वह सब बातिल हैं तो क्या यह सब लोग रसूलुल्लाह स0 पर झूठ बोलते हैं अमदन और कुरआने मजीद की तफ़सीर अपनी राये से करते हैं।

अमीरूल मोमिनीन अ0 ने मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाया तुमने जो सवाल किया उसका जवाब सुनो, लोगों के हाथों में हक़ व बातिल है और सिदक़ व किज़्ब है और नासिख़ व मन्सूख़स और आम व ख़ास, मोहकम व मुतशाबेह है और हिफ़्ज़ व वहम और लोगों ने रसूलुल्लाह के ज़मानें में उन पर झूठ बोला। उसकी जगह जहन्नम है और हज़रत के बाद भी आप पर झूठ बोला गया।

तुम्हारे पास अहादीस चार तरीक़े से पहुँची हैं उनके अलावा पाँचवां तरीक़ा नहीं, अव्वल मर्दे मुनाफ़िक़ से जो ईमान को ज़ाहिर करता है और तसन्नो से इस्लाम कुबूल

किये हुए है वह रसूल पर अमदन झूठ बोलने को न गुनाह समझता है न उसमें कोई ख़राबी समझता है अगर लोग यह जानते कि यह बड़ा मुनाफ़िक़ और झूठा है तो उसकी बात कुबूल न करते और उसकी तसदीक़ न करते। लेकिन उन्होंने तो यह कहा। यह रसूलल्लाह का सहाबी है उसने हज़रत स0 को देखा है और उन से अहादीस को सुना है लेहाज़ा उन्होंने अहादीस को उससे ले लिया और वह उसके हाल से वाक़िफ़ न थे और मुनाफ़िक़ों के बारे में अल्लाह ने जो ख़बरें दी हैं वह दी है और जो औसाफ़ उनके बयान किये है वह किये है फ़रमाता है ऐ रसूल स0 जब तुम उनको देखते हो तो उनके भारी भरकम डील तुमको ताज्जुब में डाल देतें हैं और वह कहते हैं कि तुम उनकी बातें सुनों, यह कि वह आंहज़रत के बाद भी बाक़ी रहा। अब उन्होंने अईम्मए ज़लालत से तक़र्रुब हासिल किया और जहन्नम की तरफ़ मक्र व फ़रेब से बुलाने वालों से जा मिले और हुकूमत उनके सिपुर्द कर दी और लोगों की गरदनों पर उन्हें सवार कर दिया और उनसे मिल कर ख़ूब ख़ूब मज़े उड़ाए लोग तो बादशाहाने दुनिया के साथ हो ही जाया करते हैं, मगर वह जिसे ख़ुदा बचाये पस यह चार में का एक का गिरोह है।

और दूसरे वह हैं जिसने रसूलुल्लाह से किसी बात को सुना लेकिन उसको पूरी तरह याद न रख सका और वहम को उसमें दख़ल दिया और अमदन झूठ न बोला। पस यह हदीस उसके पास है और वह अमल भी करता है और दूसरों से उसकी रवायत भी करता है और कहता है मैंने हज़रत रसूले ख़ुदा स0 से ऐसा सुना। पस अगर मुसलमानों को मालूम होता कि वह अज़ रूहे वहम व गुमान ऐसा कह

रहा है उसे सहीह हदीस याद नहीं तो वह उसकी बात को न मानते और अगर वह ख़ुद जानता कि ग़लत बयानी कर रहा है और मुबतेलाए वहम है तो उसको ख़ुद ही न बयान करता।

और तीसरा वह है कि जिसने रसूल स0 से एक ऐसी हदीस को सुना जिस में हज़रत ने किसी चीज़ का हुक्म दिया था उसके बाद उसकी नही भी फ़रमा दी थी लेकिन उसको इस नहीं का इल्म न हुआ या नहीं सुन ली और अम्र का इल्म हुआ। पस उसने हुक्मे मन्सूख़ को तो याद कर लिया और नासिख़ को याद न रखा। अगर उसको इल्म होता कि यह हुक्म मन्सूख़ शुदा है तो वह उस का बयान तर्क कर देता और अगर मुसलमान यह जान लेते कि यह मन्सूख़ुल हुक्म हदीस बयान कर रहा है तो वह उस पर अमल तर्क कर देते।

चौथा वह है जिसने रसूलुल्लाह स0 पर झूठ नहीं बोला उसे झूठ से अदावत है वह अल्लाह से ख़ौफ़ करता है और रसूल स0 की अज़मत उसके दिल में है और वह नहीं भूला उसको जो रसूल से सुना है और अच्दी तरह से उसे याद भी है पस जैसा रसूल से सुना है वैसा ही बयान करता है न उसमें कुछ ज़्यादा करता है न कम वह नासिख़ व मन्सूख़ का इल्म रखता है और मन्सूख़ को तर्क करता है।

हज़रत रसूले ख़ुदा स0 के अहकाम भी कुरआन की तरह है जो नासिख़ भी हैं मन्सूख़ भी, ख़ास भी हैं और आम भी, मोहकम भी हैं मुतशाबे भी, कभी रसूल स0 के अहकाम की दो सूरतें होती हैं, कलामे आम और कलामे ख़ास

कुरआन की तरह–अल्लाह तआला अपनी किताब में फ़रमाता है रसूल जो तुमको दे उसे लेलो, और जिस से मना करे उससे रूक जाओ यह अम्र उन लोगों पर मुश्तबा हो गया जिन्होंने न जाना और न समझा कि अल्लाह और उसके रसूल का मक़सद उससे क्या है।

और आं हज़रत के तमाम असहाब ऐसे न थे कि जो सवाल करते हों, उसके जवाब को समझ भी लेते हों बाज़ ऐसे भी थे जो सवाल तो करते थे मगर समझना नहीं चाहते थे यहाँ तक कि वह चाहते थे कि कोई बद्दू अरब या अजनबी मुसाफ़िर आ जायें और वह रसूल स0 से सवाल करे तो हज़रत के जवाब को हम सुने (क्योंकि ख़ुद बार बार सवाल नहीं कर सकते थे) और मेरा यह हाल था कि दिन और रात में जब चाहता हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर होता। हज़रत मुझ से तख़लिया फ़रमाते और जो हज़रत बयान फ़रमाते मैं उसको अपने दिल में जगह देता जाता।

असहाब इस बात को जानतें थे कि आं हज़रत मेरे सिवा किसी और के साथ ऐसा नहीं करते थे। बसा औक़ात यह अमल मेरे घर में होता था जब हज़रत मेरे घर में तशरीफ़ लाते तो ज़्यादा वक़्त ख़िलवत में गुज़ारते और अज़वाज हमारे पास से हट जातीं। मेरे सिवा कोई हज़रत के पास न रहता, और जब मेरे घर में ख़िलवत होती तो न फ़ातेमा स0 अलग होतीं और न मेरा कोई लड़का। जब मैं हज़रत से सवाल करता तो मुझे जवाब देते और जब चुप हो जाता और सवालात ख़त्म हो जाते तो हज़रत इब्तेदा करते।

कुरआन की कोई आयत रसूलुल्लाह स0 पर ऐसी

नाज़िल नहीं हुई कि हज़रत ने मुझे पढ़ कर न सुनाई हो और उसे लिखवाया न हो मैने अपने हाथ से उसे लिखा है।

और मुझे तालीम की हर आयत की तावील और तफ़सीर और उसका नासिख़ और मन्सूख़ और मोहकम व मुतशाबेह और ख़ास व आम, और हज़रत ने दुआ की कि वह मुझे उस के समझने और हिफ़्ज़ करने की सलाहियत अता फ़रमाये। पस किताबे ख़ुदा की कोई आयत मैं नहीं भूला और न उस चीज़ को जो रसूलुल्लाह स0 ने लिखवाई और मैंने लिखी और दुआ की। आं हज़रत ने मेरे लिये जो दुआ की, आंहज़रत स0 को इल्मे ख़ुदा से जो मिला, उस में से कोई चीज़ मेरे लिये बग़ैर बताये न छोड़ी, हलाल से हो या हराम से अम्र से हो या नही से, ताअत से हो या मासियत से मैने उसे सीखा है और हिफ़्ज़ किया है और एक हर्फ़ तक उसका नहीं भूला।

फिर अपना हाथ मेरे सीने पर रखा और अल्लाह से मेरे लिये दुआ की कि वह मेरे क़ल्ब को इल्म व फ़हम व हिकमत व नूर से पुर कर दे। मैने कहा या नबीयल्लाह मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों जब से आप ने दुआ की है मैं कोई बात नहीं भूला। और जिस चीज़ को मैने नहीं लिखा उसे फ़रामोश नहीं किया। क्या आप को यह ख़ौफ़ है कि बाद में भूल जाऊँगा। फ़रमाया नहीं मुझे तुम्हारे मुताल्लिक़ निसयान व जेहेल का ख़ौफ़ ही नहीं होता।

2. रावी कहता है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि कुछ लोग रवायत करते हैं अस्हाब के एक सिलसिले के साथ रसूलुल्लाह से जो कि वह हदीस मुतवातिर होती है। लेहाज़ा हम उन रावियों को

दरोग़ गो नहीं कह सकते, लेकिन आप से सुनतें हैं तो वह उनकी बयान करदा हदीस के ख़िलाफ़ साबित होती हैं फ़रमाया आयते कुरआनी की तरह अहादीस भी मन्सूख़ुल हुक्म होती हैं।

3. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि यह क्या बात है कि एक मसअला जब मैं आप अ० से पूछता हूँ तो आप अ० मुझे उसका जवाब देते हैं, फ़िर मेरा ग़ैर जब आप से यही मसअला पूछता है तो आप उसका दूसरा जवाब देते हैं। फ़रमाया हम जवाब देते हैं लोगों को कभी ज़्यादती के साथ कभी कमी के साथ, मैंने कहा इस बिना पर कि आंहज़रत स० ने कम व बेश बयान नहीं किया और असहाब ने ऐसा किया तो उन्होंने रसूल स० के मुताल्लिक़ सच कहा या झूठ, फरमाया सच कहा, मैंने कहा जब उनके बयान में इख़्तेलाफ़ है एक कहता है रसूल ने यह बयान फ़रमाया और दूसरा कहता है यह, तो फिर क्या सूरत होगी, फ़रमाया, तुम नहीं जानते एक शख़्स रसूल के पास आता है और एक मसअला दरयाफ़्त करता है आप उसका जवाब दे देते हैं। उसके बाद वहीए ईलाही उस हुक्म को मन्सूख़ कर देती है उसके बाद एक दूसरा शख़्स आता है और वही बात पूछता है आप उसको नासिख़ हुक्म बतातें हैं चूकि एक हदीस दूसरी हदीस की नासिख़ हो जाती है लेहाज़ा असहाब के बयान में इख़्तेलाफ़ हो जाता है।

4. अबू उबैदा से मरवी है कि इमाम मोहम्मदे बाक़िर अलैहिस्सलाम ने मुझ से कहा "ऐ ज़ियाद (नाम अबू उबैदा) तुम क्या कहते हो इस मामले में कि हम फ़तवा दें अपने

दोस्तों में से किसी एक को ऐसे अम्र का जिसमें तक़य्या हो। मैंने कहा फ़रज़न्दे रसूल आप अ0 बेहतर जानते हैं फ़रमाया अगर वह उस पर अमल करेगा तो उसके लिये बेहतर होगा और बाएसे अज्रे अज़ीम"

और एक रवायत में है कि अगर उस पर अमल करे गा तो अज्र पायेगा और तर्क करेगा तो गुनाहगार होगा।

5. ज़ोरारा बिन आयुन से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मैंने एक मसअला पूछा हज़रत ने उसका जवाब दिया फिर एक और शख़्स आया और यही मसअला पूछा आप ने मेरे जवाब के अलावा जवाब दिया। फिर एक और शख़्स आया उसको मेरे जवाब से अलाहेदा जवाब दिया और दूसरे के जवाब से भी अलग। जब वह दोनों आदमी चले गये तो मैंने कहा यबना रसूलिल्लाह यह दोनों इराक़ी आप के पुराने शियों में से हैं उन सवालों के जवाब आप ने अलग अलग क्यों दिये ऐ ज़ोरारा यही बेहतर है हमारे और तुम्हारे लिये अगर तुम एक ही अम्र पर जमा हो जाओ तो मुख़ालिफ़ तुमको मजलिस से निकाल देगें और फिर तुम हमारे पास कहते आओगे ख़ुरूज कीजिये। इस तरह हमारा और तुम्हारा दुनिया में रहना कम हो जायेगा। इसके बाद मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि आप के शिया ऐसे पक्के हैं कि अगर आप हुक्म दें कि जंग में नैज़ों पर सीने तान दें या आग में कूद पड़े तो वह आप के हुक्म से मुंह न फेरे गें फिर क्या वजह कि वह आप अ0 से मुख़तलिफ़ जवाब सुनें पस हज़रत ने वही जवाब दिया जो उनके वालिदे माजिद ने दिया था।

6. मैने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना,

जो शख़्स यह जानता है कि हम नहीं कहते मगर हक़ तो उसको चाहिये कि इक्तेफ़ा करे उस पर जो हम से जाना है और अगर हमसे कोई ऐसी बात सुनी है जो हुक्मे ख़ुदा के ख़िलाफ़ हो तो समझ ले कि हम ने तुम से दुश्मनों के ज़रर का दिफ़ाअ चाहा है यानी ब–सूरते तक़य्या उसको बयान किया है।

7. रवायत है इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से : रावी कहता है कि मैने इमाम अलैहिस्सलाम से पूछा उस शख़्स के मुताल्लिक़ जिस के दो दीनी भाइयों ने एक अम्र के मुताल्लिक़ दो मुख़्तलिफ़ हदीसें बयान कीं। एक से करने का हुक्म साबित होता है। दूसरे से नहीं। ऐसी सूरत में वह क्या करे। फ़रमाया उस को चाहिये कि अमल में ताख़ीर करे। यहां तक कि ऐसे शख़्स से मिले जो अम्रे वाक़े से आगाह हो उसके मिलने तक ताख़ीरे अमल जाएज़ होगी।

और एक और रवायत में साहेबुज़ ज़मान अलैहिस्सलाम से है कि उन दोनों रवायतों में से किसी एक पर अमल कर ले इस एतेक़ाद से कि इमाम मुफ़्तरेजुत्ताअत का क़ौल है न इस एतबार से कि एक क़ौल को दूसरे पर तरजीह देकर।

8. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने एक शिया से फ़रमाया कि अगर मैं तुम से इस साल एक हदीस बयान करूँ और दूसरे साल जब आऊं तो उसके ख़िलाफ़ हदीस बयान करूँ तो तुम किस पर अमल करोगे। मैने ने कहा आख़िर वाली पर, इमाम ने फ़रमाया : अल्लाह तुम पर रहमत नाज़िल करेगा। (यानी पहली रवायत बिना बर तक़य्या थी।)।

9. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि अगर कोई हदीस हम से पहले इमामों से पहुंचे। मसलन इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम से और दूसरी उनके बाद वाले इमाम से (इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से) तो हम किस पर अमल करें। फ़रमाया अमल करो बाद वाली पर जब तक कि ज़िन्दा इमाम से दूसरी हदीस तुम तक न पहुँचे जब यह ज़िन्दा इमाम से मिले तो उस पर अमल करो। फिर इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हमने बाद वाले इमाम और ज़िन्दा इमाम के क़ौल पर अमल करने को इस लिये कहा कि हम हर ज़रर को तुमसे दूर रखना चाहते हैं और अगर एहतेमाले ज़रर न हो तो जिस पर चाहो अमल करो और एक रवायत में है कि जो ताज़ा तर हदीस हो उस पर अमल करो।

10. मैंने इमाम जाफ़रे सदिक़ अलैहिस्सलाम से अपने असहाब में से किसी ऐसे दो शख़्सों के बारे में पूछा जो आपस में झगड़ा करने वाले थे। क़र्ज़ में या मीरास में वह अपना मुक़द्मा ले गये, शैतान सिफ़त बादशाह या ग़ैरे आदिल क़ाज़ी के पास, आया यह जाएज़ है उनके लिये। फ़रमाया जो हकम बनायेगा। उनको हक़ या बातिल में वह मुक़द्मा ले जायेगा। एक शैतान सिफ़त के पास और जो वह हुक्म देगा वह रिशवत के तहत होगा। अगर चे मुद्दई के लिये हक़ साबित हो। क्योंकि वह फ़ैसला शैतान से लिया गया है। हांलाकि उस से कुफ्र करने (बचने) का हुक्म दिया गया है। ख़ुदा फ़रमाता है वह चाहते हैं कि अपना मोहकमा शैतान की तरफ़ ले जायें हालांकि ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया है कि वह शैतान के फ़रेब में न आयें।

फ़रमाया इन दोनों नज़ाअ करने वालों को चाहिये कि वह अपना मामला ले जायें तुम में से उस शख़्स की तरफ़ जो हमारी हदीस रवायत करता है और हमारे हलाल व हराम को जानता है और हमारे अहकाम को पहचानता है उनको चाहिये कि उनके फ़ैसले पर राज़ी हो जायें। और अगर इस को कुबूल न किया तो, तौहीन की हुक्मे ख़ुदा की और हमारी तरदीद की, और जिसने हमारी तरदीद की उसने अल्लाह की तरदीद की, वह अल्लाह के साथ शिर्क है।

मैने कहा अगर दोनों में से हर एक आदमी एक एक हुक्म इन्तेख़ाब करे हमारे असहाब में से और वह दोनों इस बात पर राज़ी हो जायें कि इन दोनों के हक़ के बारे में ग़ौर करेगें। फिर मुख़तलिफ़ हो उनका हुक्म और आप हज़रात के बारे में भी मुख़तलिफ़ हों तो क्या किया जाये। फ़रमाया उनमें से उसके हुक्म को माना जाये जो दोनों में ज़्यादा आदिल हो और ज़्यादा तौफ़ीक़ दिया हुआ हो और बयाने हदीस में ज़्यादा सादिक़ हो और ज़्यादा मुत्तक़ी व परहेज़गार हो और दूसरे के हुक्म की तरफ़ तवज्जोह न की जाये।

मैने कहा अगर वह दोनों यकसां आदिल हों और हमारे असहाब उन दोनों को पसन्द करते हों और उनमें से एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत न दी जाती हो तो क्या हो। फ़रमाया यह हमारे शियों से मालूम किया जाये कि कौन सी हदीस हमारी उनमें ज़्यादा मानी जाती है उसी पर अमल किया जाये और जो शाज़ है और तुम्हारे असहाब में ज़्यादा मशहूर नहीं उसे छोड़ दिया जाये क्योंकि जिस पर लोगों का एतक़ाद हो उसमें शक न होगा और उमूरे शरीअत तीन

क़िस्म के हैं अव्वल वह कि जिनकी रुश्द व रास्ती सराहतन कुरआन व हदीस में बयान कर दी गयी है उन पर अमल किया जाये दूसरे वह उमूर जिनकी गुमराही बयान कर दी गयी है उनसे इजतेनाब किया जाये। तीसरे जो मुश्किल है उनकी सराहत नहीं उनमें अल्लाह और रसूल स0 की तरफ रूजू की जाये। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया, कि हलाल बयान कर दिये गये वह वाज़ेह हैं हराम बयान कर दिये वह वाज़ेह हैं, रहे उनके दरमियान शुब्हात, पस जिसने उनको तर्क किया नजात पाई मोहर्रेमात से और जिसने उन पर अमल किया वह मुरतकिबे मोहर्रेमात हुआ और नादानी की सूरत में वह हलाक हुआ।

रावी ने कहा अगर आप दोनों (इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम और इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से दो हदीसें मशहूर हों और सिक़ा हज़रात ने उन दोनों की रवायत भी की हो तो क्या किया जाये। फ़रमाया देखा जायेगा कि कौन सी हदीस कुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ और राये आम्मा के ख़िलाफ़ है जो मुवाफ़िक़े किताब व सुन्नत होगी उस पर अमल किया जायेगा। उस हदीस को जो किताब व सुन्नत के ख़िलफ़ होगी और राये आम्मा के मुवाफ़िक़। रावी कहता है मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ अगर दो फ़क़ीह इस हदीस के हुक्म को किताब व सुन्नत से हासिल करें हम उनमें से एक को आम लोगों के मुवाफ़िक़ पायें और दूसरी को मुख़ालिफ़ तो किस ख़बर पर अमल करें। फ़रमाया जो आम्मा के ख़िलाफ़ होगी हिदायत उसमें होगी।)

मैनें कहा अगर मुख़ालिफ़ों के दोनों गिरोह दोनों ख़बरों के मुवाफ़िक़ हों तो क्या किया जाये, फ़रमाया यह देखा जायेगा उनके अहकाम व क़ाज़ी किस ख़बर की तरफ़ ज़्यादा माएल हैं उसको छोड़ कर दूसरे पर अमल किया जाये, मैंने कहा अगर वह सब दोनों ख़बरों पर मुवाफ़िक़ हों तो क्या हो, फ़रमाया तवक़्क़ुफ़ करो क्योंकि शुब्हात की सूरत में अमल से रूक जाना बेहतर है हलाकत में पड़ने से।

तेइसवां बाब

अख़ाज़ बिस्सुन्नते व शवाहिदे किताब

1. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा स0 ने हर ईमान की अलामत है आमाले सालेह से और रौशनी है मोहकमाते कुरआन से, पस जो हदीस, किताबे ख़ुदा के मुवाफ़िक़ हो उसे ले लो और जो मुख़ालिफ़ किताब हो उसे छोड़ दो।

2. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा इख़्तेलाफ़े हदीस के बारे में जिनको ऐसे लोग बयान करते हैं जिन पर आप अ0 का एतमाद है तो उस सूरत में क्या हो, फ़रमाया अगर उस हदीस की तसदीक़ किताबे ख़ुदा या क़ौले रसूलल्लाह (स0) से होती है तो उसे ले लो वरना उसको रद कर दो।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हर शै को रद कर दो किताब व सुन्नत की तरफ़, हर वह हदीस जो मुवाफ़िक़े किताबुल्लाह न हो दरोग़ है।

4. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स0 ने जो हदीस

मुवाफ़िके कुरआन न हो वह झूठ है।

5. हज़रत रसूले ख़ुदा ने ख़ुत्बे में फ़रमाया जो हदीस मेरी तुम्हारे सामने आये अगर वह किताबे ख़ुदा के मुवाफ़िक़ हो तो मेरी है और अगर मुख़ालिफ़े किताबे ख़ुदा है तो मेरी नहीं।

6. मैने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना जिसने किताबे ख़ुदा और सुन्नते मोहम्मद स० की मुख़ालेफ़त की उसने कुफ्र किया।

7. फ़रमाया इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने अफ़ज़ल आमाल इन्दल्लाह वह है कि मुवाफ़िक़े सुन्नत हो चाहे कम हो।

8. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से किसी ने एक सवाल किया। आप अ० ने उस का जवाब दिया उसने कहा फुक़्हा तो ऐसा नहीं कहते, फ़रमाया वाये हो तुझ पर तूने कभी फ़क़ीह को देखा है। असल फ़क़ीह वह है जो तारेकुद्दुनिया हो आख़िरत की तरफ़ राग़िब हो और सुन्नते नबी स० से तमस्सुक रखने वाला हो।

9. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया नहीं है क़ौल मगर अमल के साथ, और नहीं है क़ौल व अमल, मगर नीयत के साथ और नहीं है नीयत मगर सुन्नते रसूल स० की मुवाफ़िक़त के साथ।

10. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हर शख़्स के लिये ख़्वाहिश व रग़बत होती है (बचपन व जवानी में तलबे दुनिया की) और सुस्ती होती है (बुढ़ापे में) पस जिसकी सुस्त रफ़्तारी सुन्नत की तरफ़ है उसने हिदायत

पाई और जिसकी बिदअत की तरफ़ है वह गुमराह हो गया।

11. फ़रमाया इमाम मोहम्मदे बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जिसने दर गुज़र की सुन्नते पैग़म्बर से और (पैरवीए ज़न व क़यास की) वह पलटा गया सुन्नत की तरफ़ से, यानी जिस को कुदरत हो उस पर वाजिब है उस रविश से उसे रोके।

12. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि सुन्नत (माजाअन्नबी) की दो क़िस्में हैं एक सुन्नते फ़रीज़ा (जैसे फ़राएज़ें यौमिया) कि उस पर अमल करना हिदायत है और उसका तर्क ज़लालत, दूसरे ग़ैर फ़रीज़ा है (नवाफ़िले यौमिया) उस पर अमल करना बाएसे फ़ज़ीलत है और तर्क करना गुनाह नहीं।



किताबुत्तौहीद

पहला बाब

दूसरे आलम व इस्बातुल्मोहदित

1. अली बिन मन्सूर से मरवी है कि हश्शाम बिन हकम ने बयान किया कि मिस्र में एक ज़िन्दीक़ (दहरिया) था उस ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की कुछ अहादीस सुनीं। वह हज़रत से मुनाज़ेरा करने मदीना आया लेकिन मुलाक़ात न हुई लोगों ने कहा कि हज़रत मक्के तशरीफ़ ले गये हैं वह मक्के आया। हम तवाफ़ में हज़रत के साथ थे उस ज़िन्दीक़ का नाम अब्दुल मलिक था और कुन्नियत अबू अब्दिल्लाह उसने हज़रत के शाने से शाना रगड़ा।

इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तेरा नाम क्या है उस ने कहा मेरा नाम अब्दुल मलिक है। फ़रमाया तेरी कुन्नियत क्या है फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह हज़रत ने फ़रमाया यह कौन मलिक है जिसका तू बन्दा है आया यह ज़मीन के बादशाहों में से है या आसमान के और मुझे अपने बेटे के मुताल्लिक़ बता। यह आसमान के अल्लाह का बन्दा है या ज़मीन के अल्लाह का इन दोनों शिक़ों में से जो भी तू बताएगा मुलज़िम क़रार पायेगा। हश्शाम इब्ने हकम ने उस दहरिये से कहा तू हज़रत की बात का जवाब क्यों नहीं देता। उसको मेरा यह कहना बुरा मालूम हुआ। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "जब मैं तवाफ़ से फ़ारिग़ होऊ तू मेरे पास आना। जब आप फ़ारिग़ हुए तो ज़िन्दीक़ आया और आप अ० के पास बैठ गया हम सब भी हज़रत के पास

जमा थे आप अ0 ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि ज़मीन के लिये तहत व फ़ौक़ हैं उस ने कहा हां, आप अ0 ने कहा क्या ज़मीन के नीचे गये हो, उसने कहा हां फरमाया क्या तुम जानते हो कि उसमें क्या है उसने कहा कि मुझे इल्म नहीं मगर मेरा गुमान है कि उसके नीचे कुछ नहीं। फरमाया तुम आसमान पर चढ़े हो, कहा नहीं फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि उसमें क्या है उसने कहा नहीं। फ़रमाया कैसी अजीब बात है कि तुम न मशरिक़ में गये न मग़रिब में, न ज़मीन के अन्दर गये न आसमान के ऊपर और जब तुम वहां से नहीं गुज़रे और तुमको पता नहीं कि क्या क्या वहां पैदा किया गया है तो इस सूरत में उन चीज़ों से तुम्हारा इन्कार कैसा, क्या अक़ल्मन्द के लिये जाएज़ है कि जिस चीज़ को नहीं जानता उससे इन्कार करदे।

ज़िन्दीक़ ने कहा आप के सिवा और किसी ने ऐसा कलाम मुझ से नहीं किया। हज़रत ने फ़रमाया कि इस मामले में तुम्हें शक है कि शायद आसमान व ज़मीन में कुछ हो या न हो। ज़िन्दीक़ ने कहा कि हां ऐसा ही है हज़रत ने फ़रमाया कि ऐ शख़्स जो कोई नहीं जानता वह जानने वाले पर हुज्जत तमाम नहीं करता। जाहिल के लिये तो हुज्जत ही नहीं।

ऐ मिस्री भाई मुझ से समझ हम कभी अल्लाह के बारे मे शक नही करते क्या तुम सूरज और चाँद और रात दिन को नहीं देखते कि वह आते जाते हैं उनकी मुक़ररह हालत में कोई इश्तेबाह नहीं होता। वह जाते हैं फ़िर पलट आते हैं यह उनकी इज़्तेरारी हालत है जो उनकी मोअय्यन जगह है। उससे हट नहीं सकते उन्हें इस पर कुदरत नहीं

कि जाकर वापस न आयें। अगर ग़ैर मुज़तर होते तो रात दिन न बनती और दिन रात न होता। ऐ मिस्री भाई यह दोनों हमेशा से मुज़तर हैं पस जिस ने उन्हें मुज़तर बनाया है वह उनसे ज़्यादा ताक़तवर और बड़ा है।

ज़िन्दीक़ ने कहा आप ने सच फ़रमाया। फिर अबू अब्दिल्लाह ने कहा ऐ मिस्री भाई लोग जिस तरफ़ जा रहे हैं और गुमान करते हैं कि वह दहर है और दहर इन को लेजाता है तो दहर उनको लौटाता क्यों नहीं और अगर लौटाता है तो फिर उनको मारता क्यों है बाक़ी क्यों नहीं रखता (हरकत तो उसकी एक जैसी है फ़िर यह दो मुतज़ात बातें कैसी) ऐ मिस्री भाई लोग मुज़तर हैं। क्यों आसमान को बलन्द किया क्यों ज़मीन को बिछाया।

आसमान ज़मीन पर क्यों नहीं गिर पढ़ता (अगर उसका कोई मुदब्बिर व मुक्तज़िम नहीं) और ज़मीन अपने तबक़ात को लेकर क्यों धंस नहीं जाती अगर कोई मुदब्बिर हकीम नहीं होता तो यह ज़मीन व आसमान क़ाएम न रहते और ज़मीन पर लोग चल न सकते।

ज़िन्दीक़ ने कहा अल्लाह दोनों का रब उनको रोके हुये है और उनको मज़बूत बनाया है पस ज़िन्दीक़ हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के हाथ पर ईमान ले आया। हमरान ने कहां मैं आप अ० पर फ़िदा हों ज़नादेक़ा आप के हाथ पर ईमान लाये और कुफ़्फ़ार आप के पदरे बुज़ुर्गवार पर।

उस मोमिन ने जो हज़रत के हाथ पर ईमान लाया था हज़रत से कहा मुझे आप अ० अपने शागिर्दों में बना लीजिये हज़रत ने हश्शाम बिन हकम से फ़रमाया इनको

अपने साथ रखो, पस हश्शाम ने तालीम दी और फिर उसने अहले शाम और अहले मिस्र को ईमान की तालीम दी और उसकी पाकीज़गिए नफ़्स से हज़रत ख़ुश हुए।

2. मन्सूरिल्मुतबब्बिब से मरवी है कि ख़बर दी मेरे एक सहाबी ने कि मैं और इब्ने अबी ल्औजा और अब्दुल्लाह बिन अबील्मुक़न्ना मस्जिद में बैठे थे इब्नुल मक़्फ़ा ने कहा कि तुम उस मख़लूक़ को देखते हो और इशारा किया जाये तवाफ़ का और कहा उनमें से कोई सज़ा वार ब-लफ़्ज इन्सानियत नहीं। मगर यह बुजुर्ग जो बैठे हुए हैं यानी इमाम जाफ़रे सादिक अलैहिस्सलाम और बाक़ी तो नाक का पानी हैं और बहाएम सिफ़त इब्ने औजा ने कहा तुमने सबको छोड़ कर उन्हीं बुजुर्ग के लिये ऐसा क्यों कहा। उसने कहा जो बात मैं उनमें पाता हूँ दूसरों में नहीं पाता हूँ, इब्ने अबी औजा ने कहा जो तुमने कहा है उसकी आज़माईश ज़रूरी है इब्ने मक़्फ़ा ने कहा ऐसा न कर मुझे डर है कि तेरा अक़ीदा फ़ासिद न हो जाये उसने कहा कि तेरा अक़ीदा नहीं है बल्कि तू डरता है कि तेरी राये मेरे नज़दीक कमज़ोर साबित हो उनकी इस सिफ़त के बारे में जो तूने बयान की है इब्ने मक़्फ़ा ने कहा कि अगर तेरा ऐसा गुमान है तो उठ और उनके पास चल और ग़लती से हत्तल मक़दूर अपने आप को बचा।

और उम्मीद है कि तू अपनी बाग को उनकी मजलिस में राहे हमवार से न फेरे गा और वह सौपे गें तुमको दो चीज़ें अव्वल वह बन्दिश जो हरकते बद से मानेअ हो, दूसरे वह अलामत जिस से तू जाने कि क्या बात तेरे फ़ाएदे की है और क्या नुक़सान की।

इब्ने अबी औजा उठ कर चला गया और मैं और मक़्फ़ा बैठे रहे, जब लौटा तो उसने कहा वाये हो तुझ पर यह शख़्स बशर नहीं फरिशता है जब चाहता है ब–जसद इस दुनिया में ज़ाहिर होता है और जब चाहता है फ़रिशतों की तरह पिन्हां हो जाता है (ज़नादेक़ा का यह अक़ीदा है कि मजरवात अपने अफ़आल में बदन की एहतियाज नहीं रखते और हर शै को जानतें है यहा तक कि ग़ैब को भी, लेहाज़ा उसने अपना यही अक़ीदा हज़रत के मुताल्लिक़ ज़ाहिर किया।)

उसने कहा कि यह कैसे इबने अबी औजा ने कहा मैं हज़रत के पास गया जब मेरे सिवा कोई ओर न रहा तो हज़रत ने ख़ुद ही फ़रमाया। अगर वह अम्र जिसको नज़दीक लोग कहते हैं, ख़िलाफ़ उसके है जो अहले तवाफ़ कहते हैं पस अगर हमारी बात सहीह हो और ख़ुदा का वजूद हुआ तो मुसलमान नजात पायेंगे और तुम हलाक होगे।

और अगर जैसा तुम कहते हो वह सहीह हुआ यानी ख़ुदा नहीं है और किसी तरह की बाज़ पुर्स न होगी और अहले तवाफ़ यानी (मुसलमानों) का अक़ीदा ग़लत हुआ तो वह और तुम बराबर, ख़ुदा परस्ती ने उन्हें कोई ज़रर न पहुँचाया।

मैने कहा, अल्लाह आप पर रहम करे कौन सी चीज़ है जो हम कहते हैं और कौन सी चीज़ है जो वह कहते हैं मेरा क़ौल और उनका क़ौल एक ही है। हज़रत ने फ़रमाया तुम्हारा और उनका क़ौल एक कैसे हो जायेगा। वह कहते हैं कि उनके लिये मआद है सवाब है अज़ाब है और उनका अक़ीदा है कि आसमान में भी माबूद है और आसमान

(फ़रिशतों से आबाद है) तुम कहते हो कि वह वीरान है और उजाड़ है उसमें कोई भी नहीं।

इब्ने अबी औजा ने कहा : मैंने हज़रत का यह कहना (सवाब व एताब वग़ैरा) ग़नीमत समझा मैने उनसे कहा अगर ऐसा ही है जैसा लोग कहते है यानी ख़ुदा का वजूद है तो वह अपनी मख़लूक़ के सामने क्यों नहीं आता और सामने आकर अपनी इबादत की दावत क्यों नहीं देता इस सूरत में दो आदमियों के दौरान भी इख़्तेलाफ़ न होता वह उनसे क्यों छिपा और अपने रसूलों को उनकी तरफ़ भेजा। अगर ख़ुद ही यह काम करता तो लोग उस पर ज़्यादा ईमान लाते।

हज़रत ने मुझ से कहा वाये हो तेरे ऊपर कहां पोशीदा है तुझ से वह ज़ात जिसकी कुदरत को तू अपने नफ़्स में देखता है तू नहीं था उसने तुझे पैदा किया और बचपन से तुझको बड़ा किया और ज़ोफ़ के बाद तुझे कुव्वत दी और कुव्वत के साथ तुझे ज़ईफ़ बनाया सेहेत के साथ बीमारी दी और बीमारी के बाद सेहत दी और रिज़ा के बाद ग़ज़ब और ग़ज़ब के बाद रिज़ा दी और ख़ुशी के बाद ग़म दिया और.ग़म के बाद ख़ुशी, और मोहब्बत के बाद दुश्मनी, इरादे के बाद सुस्ती और सुस्ती के बाद इरादा दिया, और ख़्वाहिश के बाद कराहियत और कराहियत के बाद ख़्वाहिश, और रग़बत के बाद ख़ौफ़ और ख़ौफ़ के बाद रग़बत, और उम्मीद के बाद मायूसी और मायूसी के बाद उम्मीद को दिया, और दिल में डाला उस चीज़ को जो तेरे वहम में न थी और ग़ाएब कर दिया तेरे ज़ेहेन से जिसको तू ज़ेहन में लिये हुए था और हमेशा शुमार करता है मुझ पर अपनी

कुदरत से वह चीज़ें जो मेरे नफ़्स में इस तरह हैं कि मैं उनको हटा नहीं सकता, यहां तक कि मैने गुमान किया कि वह ज़ाहिर करेगा उस चीज़ को जो मेरे और उसके दरमियान है।

(हासिले इस्तेदलाल यह है कि जब तूने अपने नफ़्स में कुदरत के वह आसार पाये जो तेरी ताक़त और कुदरत से बाहर हैं तो ज़रूर तू जानेगा कि कोई ख़ुदाए क़ादिर है और वह क्यों कर ग़ाएब हो सकता है उस शख़्स से जो उसके आसार से दम भर ख़ाली नहीं)

असल : बाज़ नुस्ख़ों में इब्ने औजा के सवालात के सिलसिले में है कि दूसरे रोज़ फिर इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आया हज़रत ने फ़रमाया, जो गुफ्तुगू तेरे और हमारे दरमियान हुई थी क्या उसके एयादे के लिये आया है तो उसने कहा यब्ना रसूलिल्लाह स० इरादा तो यही है आप ने फ़रमाया कैसी अजीब बात है अल्लाह से इन्कार करता है और मुझे इब्ने रसूलिल्लाह कहता है उसने कहा आदत की बिना पर ऐसा कह दिया। हज़रत ने फ़रमाया फिर तुझे कलाम करने से किस चीज़ ने रोका, उसने कहा आप की जलालत शान मेरी ज़बान को कलाम करने की इजाज़त नहीं देती मैने बहुत से उलमा को देखा और उनसे मुनाज़रा किया। मगर ऐसी हैबत मुझ पर कहीं नहीं छाई, हज़रत ने फ़रमाया उन बातों को छोड़ और मेरे सवाल का जवाब दे।

हज़रत ने फ़रमाया या तू किसी का बनाया है या बनाया हुआ नहीं, उसने कहा मैं बनाया हुआ नहीं हूँ, हज़रत ने फ़रमाया अगर तू मस्नूअ होता तो कैसे होता, यह

सुन कर वह मबहूत होकर रह गया और कोई जवाब न बन पड़ा। उसने एक लकड़ी उठाई और कहने लगा इसका तूल है अर्ज है गहराई है कोताही है यह मुतहर्रिक है यह सवाल है उसमें यह सब बातें उसकी ख़िलक़त है।

हज़रत ने फ़रमाया अगर तूने नहीं जाना उन सिफतों के ग़ैर को तो तू अपने नफ़्स को मस्नूअ क़रार दे क्यों कि तूने अपने नफ़्स में न पाया उस चीज़ को जो उन उमूर से पैदा होती है अब्दुल करीम ने कहा इस मसले में ऐसा सवाल मुझ से न आप से पहले किसी ने किया और न आप के बाद करेगा।

हज़रत ने फ़रमाया ऐ अब्दुल करीम फ़र्ज़ करले तूने यह जान लिया कि जो कुछ गुज़र गया उसके मुताल्लिक़ तुझसे किसी ने सवाल नहीं किया पस तूने यह कैसे मालूम कर लिया कि बाद में भी न करेगा। ऐ अब्दुल करीम तेरा क़ौल टूट गया क्योंकि तेरा गुमान तो यह था कि वुजूदे अशिया अव्वल से बराबर हैं फ़िर तक़द्दुम व तअख़्ख़ुर कैसा, फिर फ़रमाया ऐ अब्दुल करीम मै इसकी वज़ाहत करता हूँ।

ग़ौर कर अगर तेरे पास थैली में जवाहरात हों और एक कहने वाला कहे, क्या इसमें दीनार हैं तू कहे दीनार नहीं, हैं वह कहे दीनार की तारीफ़ तू बता, दरांहालेकि तू उसकी सिफत से वाक़िफ़ नहीं तो क्या तू यह कह देगा कि थैली में दीनार नहीं। उसने कहा मैं यह नहीं कह सकता। हज़रत ने फ़रमाया पस यह दुनिया जो बहुत बड़ी और ज़्यादा लम्बी चोड़ी है थैली से और इस में बहुत सी सिफतें ऐसी हैं जो तेरी न जानी हुई हैं तो तू बग़ैर इल्म उनसे कैसे

इन्कार कर रहा है उससे जवाब न बन पड़ा उसके बाज़ साथी तो मुसलमान हो गये और बाज़ उसके साथ रहे।

तीसरे रोज़ वह फिर आया कहने लगा। अब मैं सवाल बदलता हूँ, हज़रत ने फ़रमाया जो चाहे पूछ, क्या दलील है अजसाम के हादिस होने पर, फ़रमया मैं हर छोटी बड़ी चीज़ को इस हालत मे पाता हूँ कि जब उस से उसी जैसी चीज़ और मिल जाती है तो वह पहले से बड़ी हो जाती है उस पहली सूरत के ज़ाएल होने और एक हालत से दूसरी हालत की तरफ़ बदलने से पता चला कि वह हादिस है अगर क़दीम होती तो न पहली सूरत ज़ाएल होती और न उसकी हालत में तबदीली वाक़ेअ होती। जो चीज़ ज़वाल और तबदीली रखती है तो जाएज़ है उसके लिये वह पाई जाये और न पाई जाये। पस जिस का वजूद बादे अदम हो।

वह हादिस है जो अज़ल में पैदा हुआ उसका दाख़ला अदम में लाज़िम, अज़ल और अदम हुदूस व क़दम, दोनों ज़िद सिफ़तें एक चीज़ में जमा नहीं हो सकतीं, अब्दुल करीम ने कहा, फ़र्ज़ कीजिये कि दोनों हालतों और दोनों ज़मानों का जो आप ने ज़िक्र किया और उनके हुदूस पर आप दलील लाये, मैने उस को मान लिया, लेकिन यह तो बताइये कि अगर अशिया अपनी छोटी हालत पर बाक़ी रहें तो फिर आप उनके हुदूस पर आप क्या दलील लायें गे। हज़रत ने फ़रमाया ऐ अब्दुल करीम हम गुफ़्तुगू कर रहे हैं इस आलम मौजू पर अगर हम उसको हटा कर दूसरा आलम इस जगह रख दें तो यह दलीले हुदूस होगी। लेकिन अब मैं एक ऐसा जवाब देता हूँ कि तुम्हें मानना

पड़ेगा। यह तमाम अशिया अगर छोटाई की हालत में हमेशा रहें तो हमारे वहम व ख़याल में यह बात ज़रूर रहे गी कि जब उन्हीं जैसी कोई चीज़ उनसे मिले गी तो यह पहले ही बड़ी हो जायेगी। पस उन पर तग़य्युर का जवाज़ उनके क़दम से ख़ारिज कर देगा। क्योंकि तग़य्युर का साबित हो जाना हादिस होने की दलील है उसके बाद अब कोई हुज्जत तेरे लिये बाक़ी नहीं रही पस उस ने बहस को क़ता किया और ज़लील हुआ।

साले आइन्दा वह हरम में फिर मिला एक शिया ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा, इब्ने अबी औजा मुसलमान हो गया, हज़रत ने फ़रमाया वह इस तरह से अन्धा है इस्लाम नहीं लायेगा। जब वह हज़रत के सामने आया तो कहने लगा ऐ मेरे सरदार ऐ मेरे मौलाना, हज़रत ने पूछा तुम यहां कैसे आयें उसने कहा जिसमानी आदत लायी है ताकि (मौसमे हज़ में) इस शहर के तरीक़े देखूं, लोगों की मजनूनाना हरकात, उनका सर मुंडाना, कन्करियां फेंकना, देखूं, हज़रत ने फ़रमाया ऐ अब्दुल करीम तू अपनी इसी सरकशी और ज़लालत पर बाक़ी है, पस उसने फिर कलाम शुरू किया हज़रत ने फ़रमाया इस वक़्त बहस मसाएले हज से नहीं है बल्कि वुजूदे बारी है पस जैसा तू कहता है (न ख़ुदा है न सवाब न अज़ाब) और ऐसा नहीं है हम कहते हैं तू न हमें खटका और न तुझे? हमारी भी नजात और तेरी भी, अगर ऐसा हुआ जैसा हम कहते हैं (यानी ख़ुदा है और आमाल की बाज़ पुर्स होनी है) और ऐसा ही है तो हम नजात पायें गे और तू हलाक होगा यह सुन कर वह अपने साथियों की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और कहने

लगा मैं अपने दिल में दर्द पाता हूँ पस मुझे यहां से ले चलो, लोग ले गये और वह मर गया, अल्लाह का रहम उसके लिये नहीं।

3 एक दहरिया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के पास आया हज़रत के पास बहुत से लोग बैठे थे आप अ0 ने फ़रमाया ऐ शख़्स ग़ौर कर अगर तेरा क़ौल सच्चा है (ख़ुदा नहीं) हांला कि जो तुम कहते हो ऐसा नहीं तो तुम और हम बराबर हैं हमारे लिये कोई नुक़्सान न होगा। नमाज़ें पढ़ने, रोज़ा रखने और ज़कात देने से और ख़ुदा का इक़रार करने से, यह सुन कर वह चुप हो गया, फिर हज़रत ने फ़रमाया अगर हमारा कहना सच्चा हुआ और वह सच ही है तो क्या तुम हलाक न होगे और हम नजात न पायेंगे।

उसने हस्बे आदत कहा अल्लाह आप पर रहम करे। अब मुझे बताइये वह क्योंकर है और कहां से फ़रमाया वाये हो तेरे ऊपर जो ख़याल तूने किया है वह ग़लत है वह तो हर जगह का पैदा करने वाला है ख़ुद किसी जगह में नहीं, कैफ़ियतों का पैदा करने वाला है ख़ुद किसी कैफ़ियत में नहीं है वह कैफ़ियत और मकाम से नहीं पहचाना जाता, हम ने जब आजिज़ पाया। अपने हवास से उसके इदराक को यक़ीन कर लिया कि वह हमारा रब हर शै से अलाहिदा है।

उस ने कहा जब वह हवास और इदराक से नहीं पहचाना जा सकता तो वह ला–शै है हज़रत ने फ़रमाया वाये हो तुझ पर जब तेरे हवास इदराक से क़ासिर हुए तो तूने उसकी रुबूबियत से इन्कार कर दिया। और हम ने जब हवास से क़ाबिले इदराक न समझा तो उसका यक़ीन कर

लिया कि वह अशिया में कोई चीज़ नहीं।

उसने कहा यह बताइये ख़ुदा कब से है, हज़रत ने फ़रमाया मुझे बताओ वह कब न था। मैने जब अपने जिस्म पर नज़र की और यह देखा कि जिस्म तूल व अरज़ में ज़्यादती पर है न कमी पर, न उससे तकलीफ़ दूर करने पर उसके लिये मुनफ़अत हासिल करने पर, तो मैने जान लिया कि उस इमारत का कोई बनाने वाला है चुनांचें मैंने उसकी रुबूबियत का इक़रार कर लिया। उसके साथ मैने उसकी कुदरत से फलक की गरदिश को देखा और सूरज, चान्द और सितारों के चलने की जगह, उनके अलावा और बहुत सी रौशन निशानियां उसकी कुदरत की देखीं तो जान लिया कि उनका कोई मुदब्बिर व मुनतज़िम है।

4. अब्दुल्लाहि द्‌दैसानी ने हश्शाम बिन हकम से सवाल किया। क्या तुम्हारा रब है, उन्होंने कहा है उसने कहा क्या वह क़ादिर है उन्होने कहा कि हां वह क़ादिर व क़ाहिर है उसने कहा कि क्या उसे यह कुदरत है कि वह तमाम दुनिया को एक अण्डें में दाख़िल कर दे न तो अण्डा टूटे न दुनिया छोटी हो और न अण्डा बड़ा हो। हश्शाम ने कहा इस के जवाब के लिये मुझे मोहलत दें। उस ने कहा एक साल की मोहलत दी। यह कह कर वह चला गया और हश्शाम इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुये और अर्ज़ की यब्ना रसूलिल्लाह, अब्दुल्लाह दैसानी ने मुझ से सवाल किया है मैं उसके जवाब के लिये सिवाये अल्लाह के या आप अ0 के दूसरे पर एतमाद नहीं कर सकता। हज़रत ने फ़रमाया क्या सवाल है हश्शाम ने बयान किया, इमाम ने फ़रमाया ऐ हश्शाम तेरे कितने हवास

है उन्होंने कहा पाँच, फ़रमाया उनमें सबसे छोटा कौन है। उन्होंने कहां आँख़ की पुतली। फ़रमाया उसकी मिक़दार क्या है? कहा मसूर के दाने के बराबर या उससे भी कम। फ़रमाया ऐ हश्शाम अपने आगे देखो, अपने ऊपर देखो और बताओ क्या देखते हो ? कहा कि मैं आसमान को, ज़मीन को, घरों को, महलों को, जंगलों को, पहाड़ों, और नहरों को देखता हूँ, हज़रत ने फ़रमाया पस जो ज़ात इस पर क़ादिर है कि एक मसूर या उससे भी कम वाली चीज़ में उन सब को दाख़िल कर दे जिस को तुम देखते हो तो वह उस पर भी क़ादिर हैकि दुनिया को अण्डे में दाख़िल करदे दरांहालेकि न दुनिया कम हो न अण्डा टूटे, यह सुन कर हश्शाम ख़ुशी से उधल पड़े और हज़रत के हाथ पैर को बोसा दिया और कहा यब्ना रसूलिल्लाह! यह जवाब काफ़ी है पस वह अपने घर चले आये, दूसरे रोज़ दैसानी आया और कहने लगा ऐ हश्शाम मैं तुमको सलाम करने आया हूँ जवाब के तक़ाज़े के लिये नहीं, हश्शाम ने कहा जवाब भी हाज़िर है दैसानी यह जवाब सुन कर हज़रत के दरवाज़े पर आया और इजाज़त चाही आप ने इजाज़त दे दी। जब वह बैठा तो कहने लगा ऐ जाफ़र बिन मोहम्मद मुझे मेरे माबूद को बताओ, फ़रमाया यह बता तेरा नाम क्या है पस वह बग़ैर नाम बताये चला गया। उसके साथियों ने कहा तूने नाम क्यों नहीं बताया। उसने कहा अगर मैं कहता अब्दुल्लाह तो वह क़हते यह अल्लाह कौन है जिसका तू बन्दा है उन्होंने कहा फिर जा और कहना मेरा नाम पूछे बग़ैर बताइये कि मेरा माबूद है कौन? उसने आकर ऐसा ही कहा, इत्तेफ़ाक़न एक कमसिन लड़के के हाथ में अण्डा था, आप ने उससे फ़रमाया यह अण्डा मुझे दे दे, फिर दैसानी से फ़रमाया देख यह एक

महफ़ूज़ क़िला है इसकी मोटी जिल्द है और मोटी जिल्द के नीचे एक बारीक जिल्द है और उसके अन्दर बहता हुआ सोना है और पिघली हुई चाँदी है लेकिन न तो सोना चाँदी से मिलता है और न चाँदी सोने से मिलती है दोनों अपनी अपनी जगह पर हैं न कोई उसके अन्दर से निकला कि उसके दुरस्तिये हाल की ख़बर देता और न उसके अन्दर कोई दाख़िल हुआ कि अन्दुरूनी फ़साद की ख़बर लाता न किसी को यह पता है कि नर पैदा होगा या मादा, नागाह वह फटता है और उसमें से मोर के नक़्श व निगार पैरों पर लिये हुये एक बच्चा पैदा होता है तो क्या तेरे नज़दीक कोई मुदब्बिर नहीं यह सुन कर उसने सर झुका लिया और फिर कहा मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह वहदहू ला शरीक है और मोहम्मद स0 उसके अब्द व रसूल हैं और आप अ0 इमाम हैं और अल्लाह की तरफ़ से उसकी मख़लूक़ पर हुज्जत हैं ओर मैं अपने गुज़िश्ता अक़ाएद से तौबा करता हूँ।

5. हश्शाम बिन हकम से हदीसे ज़िन्दीक़ में मरवी है कि वह आया। अबू अब्दिल्लाह (इमाम जाफ़रे सादिक़) अलैहिस्सलाम के पास। आप ने उससे फ़रमाया तेरा क़ौल तीन हाल से ख़ाली नहीं। या तो वह दोनों क़दीम और क़वी हैं या दोनों ज़ईफ़ हैं या एक क़वी है और दूसरा ज़ईफ़ पस अगर दोनो क़वी हैं तो दफ़ा करता। हर एक उनमें से दूसरे को, और ख़ुद साहबे तदब्बुर नहीं बनता। और अगर तेरा ख़याल यह है कि एक क़वी है और दूसरा ज़ईफ़ तो साबित हुआ कि एक है जैसा कि दूसरे का इजज़ ज़ाहिर करता है।

अगर तू कहे कि दो ही हैं तो दो हाल से ख़ाली नहीं या तो वह मुत्तफ़िक़ हैं हर काम में या मुतफ़र्रिक़ हैं हर काम में लेकिन जब हम मख़लूक़ को एक निज़ाम के तहत पाते हैं और आसमान को गर्दिश में देखते हैं और रात दिन और चाँद सूरज को सही तरीक़े पर और एक तदबीर के तहत काम करता देखते हैं और उनके कामों में मुवाफ़िक़ पाते हैं तो हमें यक़ीन होता है कि मुदब्बिर एक है।

अगर तूने दो ख़ुदा होने का दावा किया तो लाज़िम आयेगा कि जहान को एक जुदा करने वाला हो ताकि दो कहलायें। इस सूरत में जुदा करने वाला उनके दरमियान तीसरा क़दीम और हो जाये गा। पस अगर तीन का तूने दावा किया तो फिर वही सूरत पेश आये गी जो मैने दो के दरमियान कही। पस उन तीन को जुदा करने वाले दो और हो जायेंगे और इस सूरत में पाँच क़दीम हो जायेंगे।

हश्शाम ने कहा ज़िन्दीक़ का सवाल यह था कि वुजूदे ख़ुदा पर दलील क्या है? इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया दुनिया की अजीब व ग़रीब चीज़ों का वजूद उसकी दलील है कि उन का कोई सानेअ है जिसने उन को बनाया है क्या तुम किसी मज़बूत इमारत को देखते हो तो यह नहीं समझते कि ज़रूर इस का कोई बानी है अगर चे तुम ने उसको देखा न मुशाहेदा किया। उसने फिर कहा वह है क्या? फ़रमाया वह एक ज़ात है ब-ख़िलाफ़ तमाम अशियाए आलम के, मैं रूजूअ करता हूँ अपने क़ौल की तरफ़ उस मफ़हूम को साबित करने के लिये कि वह एक शै है हक़ीक़ते अशिया के साथ न उसके जिस्म है न सूरत, वह महसूस होता है न हवासे ख़म्सा से, उसका इदराक होता

है न औहाम उस को पाते हैं न गर्दिशे दहर उसको नाक़िस बनाती है, न ज़माने उसमें तग़य्युर पैदा करते हैं।

6. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि अक़्लमन्दों के लिये यही दलील काफ़ी है कि दुनिया की हर शै उसकी तसख़ीर में है अब वह रब क़ाहिर है साहेबे अज़मत व जलाल है और उसकी कुदरत ज़ाहिर है उसका नूर बाहिर है उसकी कुदरत की दलीलें रौशन हैं ओर वह सादिक़ है उसकी कुदरत की दलील उसके बन्दों की ज़बानें हैं और रसूलों को भेजना है और जो बन्दों पर नाज़िल किया हैं।

दूसरा बाब

इसका बयान कि अल्लाह शै है

1. अब्दुर्रहमान बिन अबी नजरान ने कहा मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से तौहीद के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया मैं किसी चीज़ को अपने ख़याल में लूँ, फ़रमाया वह ज़ात अक़्ल में आने वाली और हुदूद में महदूद होने वाली नहीं जो चीज़ तेरे वहम में आये वह उसके ख़िलाफ़ है, न वह किसी चीज़ से मुशाबे है न उस से मुशाबेह कोई शै। वहम उसको पा नहीं सकता और वहम पायेगा कैसे वह ख़िलाफ़ है उस चीज़ के जो अक़्ल में आये और ख़िलाफ है उस शै के जिस का तसव्वुर वहम में हो जो ग़ैर माकूल और ला महदूद ज़ात हो, वह वहम में नहीं आ सकती।

2. इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से पूछा गया कि

क्या यह कहना जाएज़ है कि ख़ुदा कोई शै है, फ़रमाया हां, दो बातों से अलग कर दिया जाये अव्वल उसके ग़ैर यक़ीनी बन्दों से उसे जुदा किया जाये, दूसरे किसी चीज़ से उसे तशबीह न दी जाये।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह अलग है सिफ़ाते मख़लूक़ से और मख़लूक़ जुदा है उसके सिफ़ात से हर वह चीज़ जिस पर इतलाक़े शै हो वह मख़लूक़ है अल्लाह की।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे स़ादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला मख़लूक़ से अलग है (यानी वह वजूद जिसके लिये न कोई सूरत है न जगह) और मख़लूक़ उससे अलग है जिस पर लुत्फ़े शै बोला जाये वह अल्लाह के सिवा है और उसकी मख़लूक़ है और वह हर शै का ख़ालिक़ है पाक है अल्लाह जिस का मिस्ल कोई नहीं और वह बड़ा सुनने वाला और देखने वाला है।

5. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह अपनी मख़लूक़ से अलग है और मख़लूक़ उस से जुदा है और जिस पर लुत्फ़े शै बोला जाये वह अल्लाह के सिवा है और उसकी मख़लूक़ है वह हर शै का ख़ालिक़ है।

6. हश्शाम बिन हकम ने रवायत की है कि फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि एक ज़िन्दीक़ ने सवाल किया कि ख़ुदा क्या है। फ़रमाया वह शै है मगर अशिया के ख़िलाफ़, उससे मेरी मुराद यह है कि वह शै है हक़ीक़ते अशिया के साथ, लेकिन न उसका जिस्म है न सूरत, न वह महसूस होता है न हवासे ख़म्सा उसका इदराक करते हैं और न औहाम उसको पाते हैं, न दहर की गरदिश उसको

कम करती है और न ज़माने उसमें तग़य्युर पैदा करते हैं। साएल ने कहा आप तो यह कहते हैं कि वह सुनने वाला ओर देखने वाला है फ़रमाया बे शक वह समीअ व बसीर है लेकिन बग़ैर किसी अज़ो के सुनता है और बग़ैर किसी आले के देखता है।..... अपने नफ़्स से देखता है अपने नफ़्स से मेरी मुराद यह नहीं है कि वह और शै है और उसका नफ़्स और शै है बल्कि इरादा किया है मैंने इज़हार का उस चीज़ के जो मेरे दिल में है जब कि मुझ से पूछा गया है तेरे समझाने के लिये, जब तू सवाल कर रहा है तो मैं कहता हूँ कि वह सुनने वाला कुल के साथ, मगर उससे यह मुराद नहीं कि.......... इस कुल का कोई जुज़ है मैंने तो सिर्फ़ तेरे समझाने के लिये ताबीर की है उस शै से जो मेरे दिल में है और यह कि वह समीअ व बसीर व आलिम व ख़बीर है लेकिन कोई सिफ़त उसकी ज़ात से अलग नहीं और न कोई मफ़हूम उससे जुदा (यानी उसकी तमाम सिफ़ात ऐने ज़ात हैं ज़ाएद बर ज़ात नहीं और वह सुनने या देखने में कान या आँख का मोहताज नहीं वह ऐसी ज़ात है जो मख़लूक़ से बिलकुल अलग है)

एक साएल ने यह सवाल किया कि ख़ुदा क्या है? इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वह रब है वह माबूद है, वह अल्लाह है, लेकिन मेरी मुराद अल्लाह का उन हुरूफ़ से साबित करना नहीं। अलिफ, लाम, हे, और न रब का बल्कि मेरी मुराद वह ज़ात है जो ख़ालिके अशिया और उनका सानेअ है और उन हुरूफ़ को ज़िक्र करने से वह मानी मुराद हैं जिन पर लफ़्ज़े अल्लाह, रहमान, रहीम और अज़ीज़ वग़ैरा उसके अस्मा का इतलाक़ होता है वह

माबूद है जलाल व इज़्ज़त वाला (साएल का सवाल यह था कि हक़ीक़त ज़ात का क़ाएम मक़ाम कोन इस्म है? इमाम ने फ़रमाया अल्लाह है रब है लेकिन उन अलफ़ाज़ के हुरूफ़ उस हक़ीक़त और मानीए ज़ात को नहीं समझाते, वह सब का माबूद है उसकी ज़ात को कोई नहीं पा सकता।)

ज़िन्दीक़ साएल ने कहा हम नहीं पाते मौहूम शै को मगर मख़लूक़ (यानी जब सानेए आलम का तसव्वुर उस के नामों से किया जा सकता है, जैसे मफ़हूम रब से तो वह मख़लूक़ होगा) हज़रत ने फ़रमाया अगर तू ऐसा कहता है तो लोगों के लिये हक़ीक़ते तौहीद बयान करने की तकलीफ़ हम से साक़ित हो जायेगी क्योकि ग़ैरे मौहूम की मख़्लूक़ियत और उसके मुताल्लिक़ के तौहीद के बयान की हमें तकलीफ़ ही नहीं दी गयी, यानी हमारा काम बयाने तौहीद के मुताल्लिक़ ज़्यादा आसान हो जायेगा। क्योंकि इस्तिदलाल के लिये एक अच्छा मुक़द्दमां हमें मिल जायेगा और वह हुदूसे आलम है इसबाते मोहद्दिस है जो बदीही है क्योकि आलम ग़ैर मौहूम नही है और उससे तौहीद साबित हो गयी जो मौहूम बिल हवास हो और उसका इदराक हवास के सामने आये तो ज़रूर मख़लूक़ है वरना उसके इबतेलाल व अदम मानना होगा। दूसरे किसी से मुशाबेहत होना सिफ़ते मख़लूक़ है और उसका मुरक्कब होना ज़ाहिर करता है।

जब अशियाए आलम की तरकीब व तालीफ़ साबित हो गयी तो ज़रूर उस मसनूअ का कोई सानेअ भी हो अजज़ाए आलम का इज़तेरार उसका सुबूत है कि उनका सानेअ उनका ग़ैर है और वह उनकी मिसाल नहीं। क्योंकि जो मिस्ल होगा वह उनका मुशाबेह होगा ज़ाहिरी

तरकीब व तालीफ़ में और उन चीज़ों में जिनका उनके हुदूस से ताल्लुक़ है जैसे नीस्त से उसका हस्त होना और सिग़र से किबर की तरफ़ और सफ़ेदी से सियाही और ज़ईफ़ से कुव्वत की तरफ़ जाना और यह हालात हुदूस के लिये ऐसे वाज़ेह सुबूत हैं कि उनके मुताल्लिक़ किसी तौज़ीह की ज़रूरत नहीं।

ज़िन्दीक़ ने कहा जब आप ने वजूदे ख़ुदा को साबित किया तो आप ने उसको महदूद कर दिया हज़रत ने फ़रमाया मैने महदूद नहीं किया बल्कि उसके वजूद को साबित किया है क्योंकि नफ़ी व इसबात के दरमियान और तो कोई दरजा ही नहीं।

साएल ने कहा (जब वजूद आप के नज़दीक है तो उसके लिये इस्मे मुशतक़ या जामिद भी होगा फ़रमाया हर शै के लिये इस्मे मुशतक़ या जामिद ज़रूरी है।)

साएल ने कहा अगर उसका नाम मुशतक़ है (जैसे क़ादिर) तो ला–मोहाला उसके लिये कैफ़ियत मानना पड़ेगी, फ़रमाया ऐसा नहीं है क्योंकि कैफ़ियत तो सिफ़त की एक सूरत है और उसके लिये अहाता ज़रूरी है और ख़ुदा कि लिये लाज़िम है कि मख़लूक़ से उसको जुदा किया जाये। और किसी से उसे तशबीह न दी जाये। क्योंकि उन दोनों सूरतों में उसका इन्कार लाज़िम आयेगा और उसकी रूबूबियत से अलग होना पड़ेगा और उसके वजूद को बातिल क़रार देना पड़ेगा। जिस ने ख़ुदा को उसके ग़ैर से तशबीह दी तो उस ने मुशाबेह बनाया। ऐसे लोंगो से जो मुसतहक़े रूबूबियत नहीं है ख़ुदा के लिये तो ऐसे सिफ़ात हैं जिसका ग़ैर उसका ग़ैर

नहीं और रास में शरीक है और उनको उसका ग़ैर जानता ही नहीं।

साएल ने कहा जब ख़ुदा की तदबीर उसकी मख़लूक़ से मुनक़ता नहीं होती तो लामोहाला उसको ताब व तकान लाहिक़ होगी, हज़रत ने फ़रमाया वह अजल्ला व अरफ़अ है उससे कि अशिया में तसर्रुफ़ करने से उसे तकान होगी यह तो मख़लूक़ की सिफत है कि उनको काम करने और हाथ पाओं हिलाने में तकान होती है वह उससे बरतर है और अपने इरादे और मशीयत को जारी करने वाला है और जो चाहता है उसका करने वाला है।

7. रावी कहता है और इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने पूछा आया ख़ुदा के लिये यह कहना जाएज़ है कि वह कोई शै है उसने कहा हां फ़रमाया उसे तातील व तशबीह की हदूद से अलग कर।

तीसरा बाब

वह नहीं पहचाना गया मगर अपनी ज़ात से

1. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह को पहचानों उन्हीं असमा "सिफ़ात" से जो उस ने ख़ुदा बयान किया है और रसूल स0 को पहचानों उसके मोजिज़ात से और ऊलिल अम्र को अम्र बिल मारूफ और अद्ल व एहसान से।

ख़ुदा ने पैदा किया है अशख़ास व अनवार व जवाहेर व आयान को और आयान से मुराद हैं अबदान व

जवाहेर व अरवाह और साहिबे इज़्ज़ो व जलाल ज़ात। न जिस्म से मुशाबेह है न रूह से और न हस्सास व दराक रूहों के पैदा करने में किसी को दख़्ल और न ताक़त वह ख़ल्क़े अजसाम व अरवाह है अकेला ही ख़ालिक़ है पस जब उसने अजसाम व अरवाह की मुशाबेहत को दूर कर दिया जाये तो यह अल्लाह की मारफ़त से है और जब उसको रूह बदन व नूर से मुशाबेह कर दिया जाये तो फिर अल्लाह से मारफ़त न होगी।

अमीरूल मोमिनीन अ0 से किसी ने पूछा आप ने अपने रब को कैसे पहचाना। फ़रमाया उस चीज़ से जिस से उसने अपनी ज़ात का तार्रुफ कराया, उसने पूछा कैसे कराया, फ़रमाया वह किसी सूरत से मुशाबेह नहीं और न हवास से महसूस होता है न किसी शै पर उसका क़यास किया जाता है वह बा वजूद बोद के क़रीब है और बावजूद क़रीब होने के दूर है हर शै से फौक़ है उससे माफौक़ कोई शै नहीं, हर शै से अलग है उस से आगे कोई शै नहीं वह अपनी कुदरत से अशिया में दाख़िल है लेकिन उस चीज़ की मानिन्द नहीं जो किसी शै में दाख़िल हो वह अशिया से ख़ारिज है लेकिन इस तरह नहीं जैसे कोई शै किसी चीज़ से निकलती है पाक है वह ज़ात जो ऐसी है और ग़ैर उसका ऐसा नहीं हर शै की इब्तेदा है।

रावी कहता है कि मैने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से कहा कि मैने एक क़ौम से मुनाज़िरा किया और कहा कि अल्लाह बुजुर्ग तर है उस से कि उस के असमा व सिफ़ात को पहचाना जाये। मख़लूक़ के क़यास पर बल्कि

उसके मख़सूस बन्दे उसकी मारेफ़त रखते हैं फ़रमाया तुम पर रहमते ख़ुदा हो।

चौथा बाब

अदने मारेफ़त

1. इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि अदना मारफ़त क्या है फ़रमाया इक़रार करना कि उससे सिवा कोई माबूद नहीं न कोई उसकी नज़ीर है न मिस्ल व मानिन्द और वह क़दीम और साबितुल वजूद और मौजूद है और फ़ना होने वाला नहीं है और उसकी मिस्ल कोई शै नहीं।

2. ज़ाहिर बिन हातिम से मरवी है उसने अइम्मा के बारे में गुलू से बाज़ आने के बाद इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा, वह क्या है जिस के बग़ैर मारेफ़ते ख़ालिक़ काफी नहीं है हज़रत ने लिखा। उस का इक़रार कि वह हमेशा से आलिम है सामेअ है बसीर है और जो इरादा करता है उसका पूरा करने वाला है और इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा वह क्या है जिसके बग़ैर मारेफ़त काफी नहीं है फ़रमाया उसका इक़रार कि उसके मिस्ल कोई शै नहीं और न उससे मिलती जुलती कोई शै है और यह कि हमेशा से समीअ व बसीर है।

3. इब्राहीम बिन उमर से मरवी है कि मैने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से सुना कि उन्हों ने फ़रमाया ख़ुदा का हर एक अम्र अजीब है लेकिन उसने तुम पर

हुज्जत तमाम की है उसी चीज़ से जिस से उसने अपनी ज़ात का तअर्रुफ़ तुम से कराया है।

पाचँवा बाब

बाबुल-माबूद

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस ने ज़ाते बारी की इबादत तवह्हुम से की उसने कुफ्र किया। (यानी जिसने यह ख़याल किया कि उसका कोई नाम उसकी फ़र्दे हक़ीकी है। जैसे कोई उसको साहेबे जिस्म या क़ाबिले रवायत जाने) और जिस ने मानी को छोड़ के सिर्फ़ नाम को पूजा वह भी काफ़िर हुआ। यानी (जिसने यह समझा कोई अस्माये इलाही से ऐने मुस्म्मा नहीं है) जिसने इस्म व मानी दोनों की इबादत की उसने शिर्क किया (यानी जो अस्मा को फी नफ़्सेही ख़ारिज में मौजूद समझता है जैसे अशाएरा, पस उसने इस्म व मानी दोनों की इबादत की और जिसने उसकी इस अक़ाएद से इबादत की कि उस के नाम उन सिफतों के साथ है जिनका वस्फ उसने ख़ुद बयान किया है और उस अक़ीदे को अपने दिल में जगह दी ओर जबान से नातिक़ हुआ। उसके ख़ुफ़िया और ऐलानिया अम्र में। वह सच्चे अस्हाबे अमीरूल मोमिनीन अ0 हैं एक रवायत में है सच्चे मोमिन हैं।

2. हश्शाम बिन हकम ने सवाल किया इमाम जाफ़रे सदिक़ अलैहिस्सलाम से अस्माए इलाहिया के इशतेक़ाक़ के मुताल्लिक़ और यह कि लफ़्ज़े अल्लाह किस से

मुशतक़ है। फ़रमाया वह मुशतक़ है लफ़्ज़े इलाह से और वह मुक़्तनामायदा है और यह इस्म गै़रे मुसम्मा है पस जिसने मानी को छोड़ा इस्म की इबादत की उसने कुफ्र किया और किसी की भी इबादत न की, और जिसने इस्म व मानी दोनों की इबादत की उसने कुफ़्र किया और दोनों की इबादत की और जिस ने मानी की इबादत की न कि इस्म की तो यह तौहीद है।

हज़रत ने फ़रमाया ऐ हश्शाम तुम समझ गये मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा वाज़ेह कीजिये। फ़रमाया ख़ुदा के निन्नानवे नाम हैं पस अगर हर इस्म मुसम्मा बन जाये तो उनमें से हर नाम एक माबूद बन जायेगा लेकिन लफ़्ज़े अल्लाह से मुराद वह मानी है जिसकी तरफ़ यह तमाम अस्मा दलालत करते हैं वह सब उसके गै़र हैं ऐ हश्शाम रोटी एक खुरदनी चीज़ का नाम है ख़ुद वह चीज़ नहीं पानी नौशीदनी की एक चीज़ है कपड़ा पहनने की चीज़ है आग जलाने वाली एक चीज़ का नाम है (यह नाम ख़ुद वह शै नहीं बल्कि उसको बताने वाले हैं ऐ हश्शाम अब तो समझ गये, अब तुम हमारे दुश्मनों के ऐतराज़ात को दफ़ा कर सकते हो। ख़ुदा के सिवा गै़र को माबूद बनाने वालों को राहे हक़ दिखा सकते हो। मैने कहा बेशक। फ़रमाया ख़ुदा तुमको उन दलाएल से नफ़ा पहुँचाये और हर मारेके में तुम्हें साबित क़दम रखे हश्शम ने कहा वल्लाह उसके बाद मसलए तौहीद में कोई मुझ पर ग़ालिब न आया और मैं अपने मक़ाम पर साबित क़दम रहा।

3. अब्दुर्रहमान बिन अबी नजरान ने कहा मैने इमाम

मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को लिखा मैं आप पर फ़िदा हूँ आप अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हम इबादत करते हैं। रहमान व रहीम व वाहिद, व अहद व समद की, फ़रमाया जिसने मुसम्मा को छोड़ कर किसी नाम की इबादत की उसने शिर्क व कुफ़्र किया और किसी चीज़ की इबादत न की। मैं इबादत करता हूँ ख़ुदाए वाहिद, व अहद व समद की जो नाम रखा गया है उन अस्मा से यह अस्मा तो सिफ़ात हैं जिन से उसने अपना वसफ़ बयान किया है।

छठा बाब

बाब-ए-कौन व मकान

1. नाफ़ेअ ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा मुझे बतायें ख़ुदा कब से है फ़रमाया वह कब न था कि मैं बताऊँ कि वह कब से है पाक है वह ज़ात जो हमेशा से है और हमेशा रहेगी। वह अकेला है बे नियाज़ है न उसके बीबी है न बच्चे।

2. एक शख़्स इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम के पास आया वराअ नहरे बलख़ से और कहने लगा मैं आप अ0 से एक सवाल करता हूँ अगर आप अ0 ने जवाब दे दिया तो मैं आप अ0 की इमामत का मोतक़िद हो जाऊँगा। फ़रमाया जो चाहे पूछ ले। उसने कहा यह बतायें कि आप का रब कब से है और कैसा है और किस चीज़ पर सहारा किये हुए है। हज़रत ने फ़रमाया उसने हर जगह वाले को जगह वाला बनाया। उसके लिये कोई जगह नहीं वह कैफ़ियतों का पैदा करने वाला है ख़ुद साहबे

कैफ़ियत नहीं उसका एतमाद अपनी कुदरत पर है यह सुन कर वह शख़्स उठा और हज़रत के सर को बोसा दिया और कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद स0 रसूल हैं और अली अ0 वसीए रसूल स0 हैं और रसूलुल्लाह को जिस राह पर क़ाएम किया था क़ाएम है और आप लोग सच्चे इमाम हैं और आप उनके सहीह जानशीन हैं।

3. अबू बसीर से मरवी है कि एक शख़्स इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पास आया और कहा मुझे बतायें आप का रब कब से है फ़रमाया वाय हो तुझ पर वह कब न था मेरा रब है और हमेशा रहेगा। वह बग़ैर किसी कैफ़ियत के ज़िन्दा है और उस के लिये होना नहीं है। वह हर कैफ़ियत का पैदा करने वाला है उसके लिये कोई जगह नहीं न वह किसी शै में है न वह किसी शै पर है न वह एक जगह से दूसरी जगह जाता है न वह क़वी अशिया को पैदा करने के बाद और न किसी शै को पैदा करने के बाद कमज़ोर हुआ। न वह किसी शै को पैदा करने से पहले घबराया हुआ था और न मज़कूरा अशिया में से किसी चीज़ के मुशाबेह है न वह पैदा करने से पहले मुल्क से अलग था और न उनके ज़वाल के बाद अपनी हुकूमत से अलग हुआ। बग़ैर हयात के ताल्लुक़ के वह हमेशा से ज़िन्दा है और साहेबे कुदरत हाकिम रहा। क़ब्ल उसके कि वह किसी चीज़ को पैदा करे और पैदा करने से पहले भी वह मलिक जब्बार रहा। उसके लिये न कोई कैफ़ियत है न जगह है न हद है और अपनी मुशाबेह चीज़ से नहीं पहचाना जाता और न तूले

बक़ा से वह बूढ़ा होता है वह मुज़तरिब नहीं होता किसी चीज़ से बल्कि तमाम मख़लूक़ उसके ख़ौफ़ से मुज़तरिब होती है वह हई है लेकिन हयात उसमें पैदा नहीं हुई और न वह होने से मौसूफ़ है और न किसी कैफ़ियत में महदूद है और न किसी जगह ठहरा हुआ है और न वह कोई जगह है कि किसी चीज़ को जगह दे। वह हई है कि जिसकी मारेफ़त हासिल की जाती है वह हमेशगी के साथ मालिक है उसकी कुदरत और हुकूमत हमेशा रहने वाली है उसने जो चाहा और जैसा चाहा पैदा किया अपने इरादे से न उसकी कोई हद है न उसका कोई जुज़ है न वह फ़ना होने वाला है वह बग़ैर किसी तग़य्युर के अव्वल है और बग़ैर किसी जगह में होने के आख़िर है सिवाये उसकी ज़ात के हर शै हलाक होने वाली है ख़ल्क़ और अम्र का ताल्लुक़ उसी से है वह ज़ाते पाक रब्बुल आलमीन है। अफ़सोस ऐ साएल तुझ पर, मेरा रब वह है जिसको औहाम नहीं घेरते और शुब्हात उसके साख़त कुदस में दाख़िल नहीं होते, हुदूस का उससे ताल्लुक़ नहीं उससे किसी चीज़ के मुताल्लिक़ सवाल नहीं किया जाता। वह कोइ काम करके नादिम नहीं होता न उसे ऊँघ आती है न नींद। आसमानों में ज़मीनों में जो उनके दरमियान है और जो ज़मीन के नीचे है सब उसी का है।

4. कुछ यहूदी रासुल जालूत के पास जमा हुए। और कहा कि यह शख़्स (अमीरूल मोमिनीन अ0) आलिम है हमारे साथ उनके पास चलो ताकि उनसे सवाल करें। पस वह आये उनसे कहा गया। हज़रत क़स्र में हैं जब

आप बरामद हुये तो रासुल जालूत ने कहा हम आप से सवाल करने आयें हैं। फ़रमाया जो चाहो पूछो। उसने कहा मैं आप के रब के मुताल्लिक़ पूछता हूँ कि वह कब से है। फ़रमाया उसके होने की इबतेदा नहीं, न उसके लिये कोई कैफ़ियत है, वह हमेशा से है बग़ैर किसी मुद्दत और कैफ़ियत के वह है और उसके क़ब्ल कोई नहीं और पहले से पहले है उसकी कोई हद व इन्तेहा नहीं, इन्तेहा का ताल्लुक़ ही उससे नहीं, वह हर इन्तेहा की इन्तेहा है रासुल जालूत ने अपने साथियों से कहा। चलो यह जो कुछ कह रहें हैं उसके बड़े आलिम हैं।

5. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि यहूदियों का एक आलिम अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के पस आया और कहने लगा यह बतायें कि आप का रब कब से है फ़रमाया तेरी मां तेरे मातम में बैठे। वह कब न था कि यह कहा जाये कि वह कब से है वह हर शै से पहले है उससे पहले कुछ नहीं वह हर शै के बाद है उसके बाद कोई नहीं उसके लिये इन्तेहा नहीं उसने कहा क्या आप नबी हैं फ़रमाया वाय हो तुझ पर मैं मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुलामों में से एक गुलाम हूँ

एक रवायत में है कि हज़रत से पूछा गया हमारा रब कहां था। ज़मीन व आसमान को पैदा करने से पहले फ़रमाया यह सवाल मकान से है और ख़ुदा के लिये मकान नहीं।

6. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रासुल जालूत ने कहा मुसलमानों का ख़्याल है कि

हज़रत अली अ0 मआरिफ़े मक़ीनिया के सब से बडे जानने वाले हैं। मेरे साथ उनके पास चलो ताकि मैं एक सवाल ऐसा करू कि उनकी ख़ता ज़ाहिर हो जाये। उसने अमीरूल मोमिनीन की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहा। मैं आप से एक सवाल का जवाब चाहता हूँ। फ़रमाया जो चाहे पूछ उसने कहा यह बतायें कि हमारा रब कब से है फ़रमाया कब से हो न तो उसके लिये कहा जायेगा जो पहले न हो। वह तो हमेशा से है इस लिये कोई वक़्त और ज़माना नहीं वह बग़ैर किसी कैफ़ियत के है। हाँ हाँ ऐ यहूदी उससे पहले का क्या तआल्लुक़। जो क़ब्ल से क़ब्ल हो बग़ैर किसी इन्तेहा के उस के लिये तो हद्दे इन्तेहा है ही नहीं। तमाम हदें उसके साहते जलाल तक पहुँच कर ख़त्म हो जाती हैं वह हर इन्तेहा की इन्तेहा है यह सुन कर उस ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि आप का दीन हक़ है और जो उसके ख़िलाफ़ है वह बातिल है।

7. जो़शरा ने कहा में ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा। अल्लाह था और उस के सिवा कुछ न था। फ़रमाया हां कोई चीज़ न थी मैने कहा फिर वह कहां था। हज़रत तकिया लगाये हुये बैठे थे पस सीधे हुए और फ़रमाया तूने ग़लत ख़याल करके मोहाल बात पूछी। ऐ ज़ोरारा तूने मकान का सवाल उसके लिये किया जिस के लिये मकान नहीं।

8. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक यहूदी आलिम हज़रत अली अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा यह बतायें

कि आप का रब कब से है, फ़रमाया वाये हो तुझ पर कब का सवाल तो उस के लिये होगा जो पहले न हो और जो पहले से हो उसके लिये कब कैसा, वह हर पहले से पहले है और हर बाद के बाद है उसकी हदो इन्तेहा नहीं वह हर इन्तेहा की इन्तेहा है उसने कहा क्या आप नबी हैं फ़रमाया नहीं फ़रमाया तेरी मा तेरे मातम में बैठे मैं तो गुलामाने मोहम्मद स0 में से एक गुलाम हूँ।

सॉंतवा बाब

बाब-ए-निस्बत

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कुछ यहूदी हज़रत रसूले ख़ुदा के पास आये और कहने लगे अपने रब का नसब नामा बतायें। हज़रत ने तीन दिन तक कुछ जवाब उनको न दिया। फिर सूरए कुल हुवल्लाह आख़िर तक नाज़िल हुआ।

2. रावी कहता है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कुल हुवल्लाहो अहद के मुताल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया अल्लाह की निसबत उसकी मख़लूक़ से यह है कि वह अहद व समद है साया उसको पकड़ता नहीं तमाम अशिया का साया उसके कब्ज़े में है वह हर मज़हूल शै का जानने वाला है और हर जाहिल का पहचाना हुआ है अकेला है मख़लूक़ उसके अन्दर नहीं वह हवास से महसूस नहीं होता न किसी चीज़ के अन्दर महबूस है निगाहें उसको इदराक नहीं कर सकती, बा वजूद बलन्दी के क़रीब है और बा वजूद नज़दीकी के

दूर है नाफ़रमानों को बख़्श देता है। वह अपनी कुदरत से हर शै का उठाने वाला है हमेशगी वाला है अज़ली है न तो भूलता है न लहब लाब में मुबतिला होता है उसके इरादे में फ़स्ल नहीं। और उसका फ़ैसला आमाल का बदला है उसका हर अम्र वाक़े होने वाला है उसका कोई बेटा नहीं कि उसका वारिस हो। वह किसी का बेटा नहीं कि उसकी दौलत में शरीक हो। कोई उसका कुफ़ो और हमसर नहीं।

3. हज़रत अली इब्नुल हुसैन अलैहिस्सलाम से तौहीद के बारे में पूछा गया, फ़रमाया ख़ुदा के इल्म में यह बात थी कि आख़िर ज़माने में कुछ लोग ऐसे होगें जो ख़ुदा के बारे में यहूदियों, ज़िन्दीक़ों और फ़लासेफ़ां की तरह सोचें गें, लेहाज़ा उसने सूरए कुल हुवल्लाहो अहद और सूरए हदीद की आयतें व हुवा अलीमुम बिज़ातिस्सुदूर नाज़िल करदीं पस जिस ने उसके सिवा दूसरा एतक़ाद रखा हलाक हुआ।

4. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से मैने दरयाफ़्त किया। तौहीद के मुताल्लिक़ फ़रमाया, जिसने सूरए कुल हुवल्लाहो अहद को पढ़ा और उस पर ईमान लाया, उसने मारेफ़ते तौहीद हासिल की। मैने पूछा उसे कैसे पढ़ा जाये। फ़रमया जैसे लोग पढ़ते हैं और फिर कहे कज़ालेका अल्लाहों रब्बी – कज़ालेकल्लाहों रब्बी।



आठवाँ बाब

कैफ़ियत में कलाम करने की मुमानियत

1. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ालिक़ के मुताल्लिक़ कलाम करो। लेकिन ख़ुदा के बारे में नहीं, ख़ुदा के बारे में कलाम करने से आदमी की हैरत बढ़ती है और एक रवायत में है कि हर शै के मुताल्लिक़ कलाम करो सिवाये ज़ाते बारी के।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने, ख़ुदा फ़रमाता है तुम्हारे रब की तरफ़ इन्तेहा है पस जब कलाम की इन्तेहा रब की तरफ़ हो तो ख़ामोश हो जाओ।

3. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि लोग तरह तरह की चेमीगोइयाँ किया करते हैं यहाँ तक कि वह ख़ुदा के बारे में कलाम करते हैं जब तुम ऐसा कलाम सुनो तो कहा "ला इलाहा इल्लल्लाह" वह ऐसा वाहिद है कि कोई शै उसकी मिस्ल नहीं।

4. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने, ऐ ज़याद परहेज़ करो मज़हबी नज़ाआ से कि यह शुकूक को पैदा करने वाली चीज़ है और साहबे नज़ाअ को मुस्तहक़े जहन्नम बना देती है और कभी वह ऐसा कलाम कर जाता है कि जिस को ख़ुदा नहीं बख़्शेगा। गुज़िश्ता ज़मानों में ऐसे लोग हुये हैं कि उन्होंने इल्म को छोड़ दिया। जिसका जानना उन्हें लाज़िम था और ग़ैर ज़रूरी को हासिल किया। यहाँ तक कि उनका मुबाहेसा ज़ाते

बारी तक पहुँचा जिसने उन्हें हैरत में डाल दिया यहाँ तक कि अगर कोई पीछे से उसको पुकारे तो जवाब आगे से देते हैं और जब आगे से पुकारे तो पीछे से।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने, जिस ने अल्लाह की कैफ़ियत पर ग़ौर किया वह हलाक हुआ।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि एक अज़ीमुल मरतबा फ़रिश्ता ख़ुदा के बारे में ग़ौर करने लगा। पस वह पता न चला सका कि ख़ुदा कहाँ है यानी आदमी का क्या ज़िक्र फ़रिश्ते को भी हक़ीक़ते बारीए तआला का इल्म नहीं।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा के बारे में तफ़क्कुर से बचो लेकिन अगर तुम चाहते हो कि उस की अज़्मत पर ग़ौर करो तो उसकी अज़ीम मख़लूक़ को देखो।

8. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ऐ इब्ने आदम अ0 अगर एक ताएर तेरे क़ल्ब को खा ले तो उसका पेट न भरेगा और अगर एक सूई का नाका तेरी आँख पर रख दिया जाये तो वह उसको ढांप लेगा तो क्या इन दोनों चीज़ों से निज़ामे समावात व अर्ज़ को जानना चाहता है अगर तू इस इरादे में सच्चा है तो यह सूरज उसकी मख़लूक़ में से एक मख़लूक़ है अगर तेरी आखों में ताक़त है तो ज़रा नज़र जमा कर देख ले तो मालूम हो कि जैसा तू कहता है वैसा ही है।

9. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है

कि एक यहूदी सबिख़त नामे हज़रत रसूले ख़ुदा स0 की ख़िदमत में आया और कहा मैं आप से एक सवाल करना चाहता हूँ अगर आप ने जवाब दिया तो ठीक है वरना वापस चला जाऊँगा, फ़रमाया जो चाहे पूछ। उसने कहा कि यह बतायें आप का रब कहाँ है फ़रमाया हर जगह है किसी मकान में महदूद नहीं। पूछा फिर वह किस हाल में है फ़रमाया मैं अपने रब की कैफ़ियत क्यों कर बताऊँ। कैफ़ियत तो उसकी मख़लूक़ है और मख़लूक़ के वुस्फ़ से उसकी तारीफ़ नहीं हो सकती। उसने कहा फिर कैसे पता चले कि आप अल्लाह के नबी हैं पस कोई हजरया मद्र ऐसा बाक़ी न रहा, जिसने साफ़ अरबी में यह न कहा हो, ऐ सबिखत यह रसूलल्लाह हैं यह सुन कर सबिखत ने कहा। मै ने आज से ज़्यादा इस मामले में वाज़ेह तर और कोई दिन नहीं देखा। फिर उसने तैहीदे बारीए तआला ओर आं हज़रत सल्लम की रिसालत की गवाही दी।

10. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सिफते बारीए तआला के मुताल्लिक़ पूछा गया। आप ने आसमान की तरफ़ हाथ उठा कर फ़रमाया बलन्द मरतबा है ख़ुदा, बलन्द मरतबा है ख़ुदा, जिसने उसकी कोहना ज़ात को मालूम करना चाहा तो वह हलाक हुआ।

नवाँ बाब

इब्ताले रिवायत

1. अबू यूसुफ से मरवी है कि मैने इमाम हसन असकरी

अलैहिस्सलाम को लिखा कि जब बन्दे ने अपने रब को देखा ही नहीं तो वह उसकी इबादत कैसे करे। आप ने जवाब में लिखा, ऐ अबू यूसुफ़ मेरा सरदार, मेरा मौला, मेरा आक़ा, मेरा मुन्इम बाला तर है उससे कि देखा जाये। मैने पूछा क्या मेराज में हज़रत रसूले ख़ुदा ने अपने रब को देखा था आप ने जवाब में लिखा कि ख़ुदा ने दिखाया क़ल्बे रसूल को अपने नूरे अज़मत से जितना चाहा।

2. सुफ़यान बिन यहया से मरवी है कि मुझसे अबू कुर्रा ने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से मिलने की ख़्वाहिश की। मैंने हज़रत से इजाज़त चाही, वह आया और उसने हज़रत से हलाल व हराम के मुताल्लिक़ सवाल किया। उसके बाद तौहीद का नम्बर आया। उसने कहा हम से यह बयान किया गया है कि ख़ुदा ने तक़सीम किया रवायत और कलाम को दो नबियों पर, मूसा अलैहिस्सलाम को कलाम से मख़सूस किया और मोहम्मद स0 को रोयत से। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ख़ुदा की तरफ़ से जिन्नों इन्स की तरफ़ वह कौन भेजा गया है, जिस ने यह ख़बर दी बीनाइयां उसका इदराक नहीं करतीं और अज़रूए इल्म उसका इदराक और उसका अहाता मुम्किन नहीं और उसका मिस्ल कोई नहीं। क्या यह ख़बर देने वाले मोहम्मद स0 नहीं। उसने कहा वहीं हैं फ़रमाया कैसे मुम्किन है कि एक शख़्स तमाम मख़लूक़ की तरफ़ आये और कहे कि मैं अल्लाह की तरफ़ से आया हूँ फिर वह हुक्मे ख़ुदा से लोगों को अम्रे ख़ुदा की तरफ़ दावत दे और कहे, वह ऐसा है कि बीनाइयां उसे

नहीं पातीं। और इल्म उसका अहाता नहीं करते ओर वहीं यह भी कहे कि वह बशरी सूरत पर है क्या तुम को हया नहीं आती कि ज़िन्दीक़ों की तरह हज़रत को निशानाये मलामत बनाओ इस बात पर कि वह कभी ख़ुदा की तरफ़ से एक बात बयान करते हैं और कभी उसके ख़िलाफ़, अबू कुर्रा ने कहा कि ख़ुदा ही तो फ़रमाता है कि उन्होंने देखा उसको नज़लहू अख़्रा में। हज़रत ने फ़रमाया उसके बाद की आयत यह भी तो है कि जो कुछ मोहम्मद स0 ने देखा। उसके दिल ने उसे झुठलाया नहीं। फिर यह भी बताया कि कैसा देखा। ख़ुदा आयतों में से एक बड़ी आयत देखी और आयाते इलाहिया, अल्लाह के ग़ैर हैं। ख़ुदा ने फ़रमाया है कोई अज़रूए इल्म उसका अहाता नहीं कर सकता और जब आँखें उसे देख लें तो इल्म ने अहाता कर लिया और मारेफ़त वाक़े होगी। अबू कुर्रा ने कहा आप ने रवायत की तकज़ीब की।

हज़रत ने फ़रमाया, जो रवायतें मुख़ालिफ़े कुरआन हों उनकी तकज़ीब करता हूँ और मुसलमानों का उस पर इजमाअ है कि कोई इल्म ख़ुदा का अहाता नहीं कर सकता और यह कि बीनाइयां उसको नहीं पा सकतीं और उसकी मिस्ल कोई शै नहीं।

3. मोहम्मद बिन अबीद से मरवी है कि मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को मसलए रोयत और आम्मा और ख़ास्सा की रवायत के मुताल्लिक़ लिखा और उसकी शरह चाही। हज़रत ने अपने क़लम से तहरीर फ़रमाया कि मुख़ालिफ़ों का उस पर इजमाअ है कि ख़ुदा की

मअरेफत अज़रूए रोयत ज़रूरी है और जब अल्लाह को आँख से देखना जाएज़ होगा तो उसकी मअरेफ़त भी ज़रूरी होगी। पस उस क़िस्म की मअरेफ़त या तो अज़रूए ईमान होगी या अज़रूए ईमान न होगी। अगर अज़रूए रौयत यह मअरेफ़ते ईमान क़रार पायेगी तो जो मअरेफ़त इस दुनिया में आसार कुदरत के मुआएने से हासिल होगी वह ईमान क़रार न पायेगी क्यों कि ज़िदे रोयत है इस सूरत में कोई मोमिन दुनिया में पाया ही न जायेगा। क्योंकि किसी ने ख़ुदा को नहीं देखा और अगर यह मअरेफ़त अज़रूए रोयत न होगी तो उस मअरेफ़त में कोई ख़राबी पैदा न होगी जो अज़रूए इकतेसाब होगी क़यामत में भी यह मअरेफ़त क़ाएम रहेगी। यह दलील है उसकी कि ख़ुदा आँख़ से देखा नहीं जाता। क्योंकि आँख से देखना वही ख़राबी पैदा करता है जिसको हम ने बयान किया।

4. अहमद बिन इसहाक़ से मरवी है कि मैंने इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को मसअलए रोयत और उसके इख़्तेलाफ़ के मुताल्लिक़ बताया। फ़रमाया नहीं जाएज़ है रोयत जब तक राई व मरई के दरमियान हआ न हो (रोशनी) जो बीनाई को उस चीज़ तक पहुचाये अगर देखने वाले और देखी जाने वाली के दरमियान हुआ न हो तो देखना मुम्किन न होगा और शुब्हात भी पैदा होगें (क्योंकि या तो राई की तरफ़ से कोई रूकावट होगी या मरई की तरफ़ से या दोनों की तरफ़ से) इस लिये कि राई जब बराबर हो गया मरई के इस सबब में जो उन के दरमियान रोयत में है तो इशतेबाह लाज़िम होगा और

यह इस लिये होगा कि असबाबे इत्तेसाल मसीय्यात से ज़रूरी है यानी जब तक असबाबे रोयत जेहते मकान, रंग, वुजूदे हआ वग़ैरा मौजूद न हों गे रोयत मुम्किन न होगी और इस सूरत में भी इशतेबाहात वाक़े होंगे।

5. रावी कहता है मैं इमाम मो़हम्मद बाकि़र अलैहिस्सलाम की खि़दमत में हाज़िर हुआ। एक ख़ारजी आया और कहने लगा ऐ अबू जाफ़र किस की इबादत करते हैं। फ़रमाया अल्लाह की, उसने कहा क्या आप ने उसे देखा है फ़रमाया हां, लेकिन इन आँख़ों से नहीं बल्कि दिलों ने उसको देखा है। हक़ाएके़ इमान के साथ। वह क़यास से नहीं पहचाना जाता और न इदराक से महसूस होता है न लोगों से मुशाबेह है वह अपनी निशानियों से मौसूफ़ है और अपनी अलामात से पहचाना हुआ है वह अपने हुक्म में जुल्म नहीं करता। यह है अल्लाह। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं। यह सुन कर यह कह निकला। अल्लाह बेहतर जानता है कि अपनी रिसालत को कहां क़रार दे।

6. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक यहूदी आलिम अमीरूल मोमिनीन अ0 के पास आया और कहने लगा। ऐ अमीरूल मोमिनीन जब से आप ने इबादत की है कभी अपने रब को देखा है फ़रमाया वाये हो तुझ पर मैं उस रब की क्यों इबादत करता जिसको नहीं देखता। उसने कहा कैसा देखा, फ़रमाया वायें हो तुझ पर यह आँखें अपनी बीनाइयों से उसे नहीं पातीं लेकिन दिल उसे देखते हैं हक़ाएक़ ईमान के साथ।

7. रावी कहता है कि मैनें इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रोयत के मुताल्लिक़ रवायात का ज़िक्र क्या फ़रमाया। सूरज नूर कुर्सी के सत्तर जुज़ों में से एक जुज़ है और कुर्सी नूरे अर्श के सत्तर जुज़ों में से एक जुज़ है और अर्श नूरे हिजाब के सत्तर जुज़ों में से एक है पस अगर वह लोग सच्चें हैं तो जबकि बादल न हों तो सूरज से पूरी तरह आँख मिला कर तो देख लें।

8. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से मरवी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब शबे मेराज मुझे आसमान की तरफ़ ले गये तो जिब्राईल ने मुझे ऐसी जगह पहुँचाया जहाँ जिब्राईल का क़दम उससे पहले कभी न गया था। पस पर्दा हटाया गया और दिखाया ख़ुदा ने अपने नूरे अज़मत को जिसको अल्लाह ने चाहा।

9. आयएला तुदरेको हुल्बसार के मुताल्लिक़ इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस आयत से मुराद यह है कि इन्सान का वहम उसका एहाता नहीं कर सकता, क्या तुम ने इस आयत पर ग़ौर नहीं किया क़द जाअ कुम बसाएरे मिन रब्बेकुम इसमें बसाएर से मुराद बसर उयून नहीं जैसा कि आगे फ़रमाया है फ़मन अब्सरा फ़लेनफ़्सेही इस से मुराद आँख से देखना नहीं और फिर फ़रमाया व मन अमी फ़अलैहा इस से मुराद आँखों से अन्धा होना नहीं बल्कि एहातए वहम मुराद है यानी दिल से अक़्ल से काम लेना। जैसा कहा जाता है फ़लां शेर में बसीर है फ़ला रूपया पैसे में फ़ला कपड़ें में अल्लाह की ज़ात उससे अज़ीम तर है कि आँखें उस को देखें।

10. रावी कहता है मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सवाल किया, अल्लाह का वस्फ़ बयान किया जाये। फ़रमाया तूने कुरआन पढ़ा है, मैंने कहा हाँ, फ़रमाया क्या तूने यह नहीं पढ़ा? बीनांइयाँ उसका इदराक नहीं करतीं वह बीनाइयों का इदराक करता है। मैंने कहा यह आयत पढ़ी है, फ़रमाया तूमने अबसार को समझा है मैंने कहा हाँ, बताओ उनसे क्या मुराद है। मैंने कहा आँखों का देखना, फ़रमाया कुलूब के औहाम अबसारे उयून से ज़्यादा बड़े हैं। पस उसके मानी यह हैं कि औहाम से उसका इदराक नहीं होता, अलबत्ता वह इदराके औहाम करता है।

11. अबू हाशिम जाफ़री से मरवी है कि मैने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से आयए ला तुदरेकोहुल्अब्सार के मुताल्लिक़ सवाल किया आप ने फ़रमाया ऐ अबू हाशिम औहामे कुलूब अबसारे उयून से ज़्यादा लतीफ़ व अदक़ हैं तुमने अपने वहम व ख़याल से सिन्ध व हिन्द और उन शहरों का इदराक कर लिया जिन में तुम नहीं गये हांलां कि तुम ने आँख से उनका इदराक नहीं किया पस जब औहामे कुलूब ज़ाते बारी का इदराक नहीं कर सकते तो आँख से देखने का तो ज़िक्र ही कैसा।

12. हश्शाम इब्ने हकम ने फ़रमाया कि अशिया का इदराक दो चीज़ों से होता है हवास से और क़ल्ब से, और हवास से इदराक की चन्द सूरतें हैं। या मुदाख़ेलत से या मस करने से या न दख़ल से न मस से। जो इदराक मुदाख़ेलत से हो वह आवाज़ें हैं जो कान में

आयीं या ख़ुशबुयें जो नाक में आयीं या ज़ाएक़ा जो जबान पर कोई चीज़ रखने से हुआ और जो इदराक छूने से होता है वह मारेफ़त है अशिया की बायें तौर कि मुरब्बा हैं या मुसल्लस नर्म हैं या सख़्त, गर्म हैं या सर्द जो बिला दख़ल व मस हैं वह देखता है कि आँख बग़ैर दख़ल व मस मालूम करती है न वह किसी जगह में दाख़िल होती है और न कोई चीज़ उसमें और इदराके बसर के लिये सबील व सबब का होना ज़रूरी है सबील से मुराद है फ़िज़ा या हवा और सबब से मुराद है रोशनी जब हआ मुत्तसिल हुआ। राई (देखने वाला) और मरई (दिखा हुआ) के दरमियान और रौशनी भी हो। तो आँख रंगें अशख़ास को देखती है और जब आँख को रास्ता बढ़ने का नहीं मिलता तो निगाह लौट आती है और बयान करती है और अपने पीछे का हाल जैसे आइने का देखने वाला कि बीनाई आइने के अन्दर नुफ़ूज़ नहीं करती और जब वह आगे बढ़ ने की राह नहीं पाती तो नज़र करने वाले की निगाह लौट कर हाल बयान करती है अब रहा दिल उसको हवा पर ग़लबा है वह जो कुछ हवा में है उसको इदराक करता है और समझता है जब दिल मुतवज्जेह होता है उस चीज़ की तरफ़ जो हवा में नहीं है तो लौट आता है और उसी को बयान करता है जो फ़िज़ा में है पस अक़्लमन्द को नहीं चाहिये कि अपने क़ल्ब को मुतवज्जेह करले उस चीज़ को मालूम करने की तरफ़ जो फ़िज़ा में मौजूद ही नहीं यानी ज़ाते बारीए तआला। और अगर ऐसा करना चाहे गा तो वह उसी चीज़ का इदराक करेगा जो फ़िज़ा में होगी न कि ज़ाते बारी का जो किसी में नहीं और न अपनी मख़लूक़ से

मुशाबेह है। खुलासा यह है कि ज़ाते बारी न तो हवास से महसूस होती है और न दिल उसकी ज़ात की हक़ीक़त को समझ सकता है वह न कोई आवाज़ है कि कुव्वते सामेआ से उसका इदराक हो न खाने पीने की अशिया में से है कि ज़बान इदराक करे। न वह छूने की चीज़ों में से है कि कुव्वते लामेसा इदराक करे और न दिल में उसकी हक़ीक़त आ सकती है क्योंकि दिल का ताल्लुक़ भी उन ही चीज़ों से है जो फ़िज़ा में मौजूद हों।

दसवाँ बाब

उस वस्फ़ की नही जो ख़ुदा ने अपने लिये नहीं बयान किया

1. अब्दुर्रहमान से मरवी है कि मेने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम को ख़त में लिखा कि ईराक़ की एक क़ौम अल्लाह की तारीफ़ सूरत और ख़त व ख़ाल से करती है आप मुझे तौहीद के बारे में मज़हबे सहीह से मुत्तेला फ़रमाए। हज़रत ने मुझे लिखा। ख़ुदा तुम पर रहमत नाज़िल करे तुम ने तौहीद के मुताल्लिक़ और पहले लोगों के मज़हब के मुताल्लिक़ सवाल किया है ज़ाते बारीए तआला उस से बलन्द तर है कि कोई चीज़ उसकी मिस्ल हो, वह बड़ा सुनने वाला और देखने वाला है उसका ग़लत वस्फ़ करने वाले और मख़लूक़ से उसकी तशबीह देने वाला अल्लाह पर इफ़्तेरा करने वालों में है ख़ुदा की रहमत तुम पर हो, यह जान लो कि तौहीद के बारे में मज़हबे सहीह वही है जो कुरआन ने

सिफ़ाते बारीए तआला बयान की हैं बुतलान और तशबीह को अल्लाह से दूर रखो, न तो उसकी बयान करदा सिफ़ात की नफ़ी करनी चाहिये और न उसे उसकी मख़लूक़ से तशबीह देनी चाहिये उस की ज़ात साबित व मौजूद है और बलन्द तर है उस ग़लत औसाफ़ से जिन को लोग उसके मुताल्लिक़ बयान करते हैं कुरआन से तजावुज़ न करो वरना गुमराह हो जाओ गे।

2. अबू हमज़ा से मरवी है कि मैंने इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम से तौहीद के मुताल्लिक़ पूछा, फ़रमाया ख़ुदा की तारीफ़ महदूद सूरतों से नहीं की जाती। वह ज़ाएद बर ज़ाद सिफ़तों से मुबर्रा है फ़िर महदूदियत से उसका क्या ताल्लुक़, बीनाइयां उसका इदराक नहीं करती। वह अबसार का इदराक करता है वह लतीफ व ख़बीर है।

3. इब्राहीम मोहम्मद बिन हुसैन से मरवी है कि उन दोनों ने कहा हम इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हमने बयान किया हज़रत रसूले ख़ुदा ने शबे मेराज अपने रब को एक कामिल नौ जवान की सूरत में देखा जिसका सिन तीस बरस का था। और हमने यह भी कहा कि हश्शाम बिन सालिम मोमिने ताक़ और यतीमी कहते हैं कि ख़ाली है नाफ़ तक और बक़िया रूहानी है, हज़रत सजदे में गये और फ़रमाया ऐ माबूद तू पाक ज़ात है लोगों ने तुमको पहचाना नहीं और तुझे वाहिद न जाना। इसी लिये तेरा वस्फ़ ग़लत बयान करते हैं जिस तरह तूने ख़ुद अपना वस्फ़ बयान किया है कैसा मुतीअ बनाया उनके नफ़्सों ने उनको कि तुझे मुशाबेह

क़रार दिया तेरे ग़ैर से ख़ुदा वन्दा मैं तेरा वहीं वस्फ़ बयान करता हूँ जो तूने अपनी ज़ात का वस्फ़ ख़ुद बयान किया है मैं तेरी मख़लूक़ से तुझे मुशाबे क़रार नहीं देता। तू हर अच्छाई का अहल है पस तू मुझे ज़ालिमों में से क़रार न दे। फिर हज़रत हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया, जो ज़ात तुम अपने ख़याल में लेते हो वह अल्लाह का ग़ैर है फिर फ़रमाया हम औलादे रसूल हैं, हम उम्मते वस्त हैं ख़ाली हमारी मारेफ़त हासिल नहीं कर सकता और पीछे आने वाला हम पर सबक़त नहीं करता। ऐ मोहम्मद आगाह हो जब रसूलुल्लाह ने अपने रब की अज़मत पर नज़र की तो वह उस वक़्त एक कामिल नौ जवान की सूरत में था। जो तीस साल का हो। ऐ मोहम्मद पाक है मेरा रब उससे कि उसमें मख़लूक़ की सिफत हो मैने कहा वह कौन था जिस के दोनों पाओं सबज़े में थे फ़रमाया जब आं हज़रत ने अपने क़ल्ब को देखा तो ख़ुदा ने उनके लिये एक नूर को पैदा किया जो नूरे हिजाब की तरह था उस से हिजाब के अन्दर की हर शै रौशन हो गयी। यह नूरे ख़ुदा सब्ज़ व सुर्ख़ व सफेद वग़ैरा था। ऐ मोहम्मद जो किताब व सुन्नत में है हम उसी की गवाही देते हैं और उसी के क़ाएल हैं।

4. फ़रमाया हज़रत अली बिन हुसैन अ० ने अगर तमाम आसमानों और ज़मीनों वाले जमा होकर ख़ुदा की अज़मत की तारीफ़ करना चाहें तो उस पर क़ादिर न होंगे।

5. इब्राहीम बिन मोहम्मद हमदानी से मरवी है कि मैने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को लिखा कि हम

से पहले आप के दोस्तों ने तौहीद के बारे में इख़्तेलाफ़ किया है बाज़ कहते हैं वह जिस्म है बाज़ कहते हैं वह सूरत है हज़रत ने अपने क़लम से तहरीर फ़रमाया पाक है वह ज़ात जिसके लिये हद नहीं और जिसका वस्फ़े औसाफ़े मख़लूक़ से नहीं किया जाता। उसकी मिस्ल कोई शै नहीं।

6. मोहम्मद बिन हकीम से मरवी है कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने मेरे बाप को लिखा कि अल्लाह तआला आला व अजल व अज़ीम है उस से कि कोई उसकी वुसअत की हक़ीक़त को पहुंच सके। पस उसकी तारीफ़ करो जो उसने अपने नफ़्स की ख़ुद की है उसके सिवा तारीफ़ से बचो।

7. मुफ़ज़्ज़ल से मरवी है कि मैने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से पूछा सिफ़ाते बारीए तआला के मुताल्लिक़, फ़रमाया क़ुरआन से तजावुज़ न करो।

8. मोहम्मद बिन अली क़ासानी से मरवी है कि मैं ने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम को लिखा कि हम से पहले लोगों ने तौहीद के बारे में इख़्तेलाफ़ किया है हज़रत ने लिखा ख़ुदा के लिये हद नहीं और न सिफ़ाते मख़लूक़ से मुत्तसिफ़ है उसकी मिस्ल कोई शै नहीं वह समीअ व बसीर है।

9. बशर से मरवी है मैने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को लिखा कि हम से पहले लोगों ने तौहीद में इख़्तेलाफ़ किया है बाज़ कहते हैं वह जिस्म है बाज़ कहते हैं वह सूरत है। फ़रमाया पाक है वह ज़ात

जिसकी तारीफ़ हद से नहीं की जाती, न मख़लूक़ के वस्फ़ से उसका वुस्फ़ किया जाता है और न उस से कोई शै मुशाबेह है और वह समीअ व बसीर है।

10. सहल से मरवी है कि मैंने अबू मोहम्मद इमाम हसन असकारी अलैहिस्सलाम को 255 हि. में लिखा कि ऐ मेरे सरदार हमारे असहाब ने तौहीद के बारे में इख़्तेलाफ़ किया है बाज़ कहते हैं वह जिस्म है बाज़ कहते है वह सूरत है अगर आप मुझे तालीम दें तो मैं उस पर क़ाएम रहूँ और तजावुज़ न करूँ और आप के गुलाम पर आप का बड़ा एहसान हो। आप ने अपने दस्ते मुबारक से लिखा तुमने तौहीद के मुताल्लिक़ सवाल किया जो सूरतें तुमने बयान कीं तुम उनसे अलग हो। अल्लाह एक है न उसने किसी को पैदा किया और न किसी ने उसको, न उसका कोई मिस्ल है, न मानिन्द, वह ख़ालिक़ है मख़लूक़ नहीं, अजसाम वग़ैरा से जो चाहता है पैदा करता है, वह जिस्म नहीं, वह जैसी सूरत चाहता है बना देता है वह ख़ुद सूरत नहीं। उसकी सना में बन्दगी है उसके असमा में तक़दीस है वह बरी है उस से कि कोई उससे मुशाबेह हो उसकी मिस्ल कोई नहीं वह समीअ व बसीर है।

11. फ़सल बिन यसार से मरवी है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना कि ख़ुदा का वस्फ़ बयान नहीं किया जा सकता और क्यों कर बयान किया जाये जब कि वह अपनी किताब में फ़रमाता है कि लोगों ने उसकी ताज़ीम का हक़ अदा नहीं किया, पस जिस अन्दाज़ से उसकी ताज़ीम की जायेगी वह उस से कहीं ज़्यादा होगा।

12. इमाम जाफ़रे सदिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है। आप ने फ़रमाया अल्लाह तआला बुज़ुर्ग व बरतर है बन्दे उसकी वुसअत बयान करने पर क़ादिर नहीं और न उसकी अज़मत की हक़ीक़त तक पहुंच सकते हैं बीनाइयां उसको नहीं पातीं, वह बीनाइयों का इदराक करता है वह लतीफ़ व ख़बीर है उसका वस्फ़ कैफियत से नहीं होता। न जगह और हैसियत से और कैफ़ियत से उसकी तारीफ़ क्योंकर हो जबकि वह कैफ़ियत का पैदा करने वाला है वह क्योंकर कैफ़ियत से मुताल्लिक़ होगा। हमने कैफ़ की मारेफ़त हासिल की है जबकि उसने हम को मुत्तकीफ़ ब कैफ़ियत किया है।

हम क्योंकर मौसूफ़ करेंगे उसको जगह से, दरआंहालेकि वह जगह का पैदा करने वाला है उसको पैदा करने के बाद जगह का इतलाक़ हुआ है पस हादिस है हमने जगह की मारेफ़त उस वक़्त हासिल की कि उसने जगह को बनाया और किसी हालत व हैसियत से हम उसको मौसूफ़ कैसे कर सकते हैं ज़बकि हर हैसियत को हैसियत उसने दी है पस ख़ुदा अपनी कुदरत से हर जगह में दाख़िल है और हर जगह से अलहिदा है (उसके लिये न कोई कैफ़ियत है न मकान न हैसियत, वह इन सब चीज़ों का ख़ालिक़ है और यह उसकी मख़लूक़ और हादिस है और मख़लूक़ का वस्फ़ ख़ालिक़ से नहीं हो सकता) ख़ुदा का इदराक बीनाइयां नहीं करतीं। अलबत्ता उन का इदराक करता है और वह लतीफ़ व ख़बीर है।

ग्यारहवां बाब

नही-ए-जिस्म व सूरत

1. अली बिन हमज़ा से मरवी है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि हश्शाम बिन हकम ने आप हज़रात से यह रवायत की है कि ख़ुदा जिस्म है समदी और नूरानी है और उसकी मारेफ़त ज़रूरी है अपनी मख़लूक़ में जिस पर चाहता है एहसान करता है हज़रत ने फ़रमाया पाक है वह अल्लाह जिसे कोई नहीं जानता कि वह कैसा है कोई माबूद उसके सिवा नहीं उसकी कोई मिस्ल नहीं वह समीअ व बसीर है न उसकी कोई हद है न वह महसूस होता है न तलाश किया जाता है बीनाइयां और हवास उसको नहीं पा सकते न कोई शै उसका एहाता करती है न वह जिस्म है न सूरत न उसके लिये ख़त है न हद।

2. हमज़ा बिन मोहम्मद ने बयान किया कि मैने इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम से सवाल किया। जिस्म व सूरत के मुताल्लिक़ आप ने तहरीर फ़रमाया पाक है वह अल्लाह जिस की मिस्ल कोई नहीं। न वह जिस्म न सूरत।

3. मोहम्मद बिन ज़ैद से मरवी है कि मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से तौहीद के मुताल्लिक़ सवाल किया। आप ने लिख कर भेजा। हम्द है उस ख़ुदा के लिये जो अशिया का पैदा करने वाला है और उसने अपनी कुदरत व हिकमत से चीज़ों को ईजाद किया, कोई इजाद को

बातिल क़रार नहीं दे सकता और न उसके लिये कोई इल्लत है कि उसकी इब्तेदा सही न हो। उसने जो चाहा पैदा किया। और वह अकेला है और यह पैदा करना अपनी हिकमत के इज़्हार और अपनी रूबूबियत के एलान और उसकी हक़ीक़त के बयान के लिये था। उक़ूल उसको ज़ब्त में नहीं ला सकते, औहाम उस तक पहुच नहीं सकते अबसार उसका इदराक नहीं करते और किसी मिक़दार से उसका एहाता नहीं हो सकता और इबादतें उसके औसाफ़ के बयान से आजिज़ हैं और बीनाइयां उसके साहते जलाल तक पहुचने से थक गई हैं और सिफ़ात के तग़य्युर वहां तक जा कर गुम हो गये हैं वह पोशीदा है मगर बग़ैर किसी परदे के और मसतूर है बग़ैर किसी रोक के वह पहचाना हुआ है बग़ैर देखे हुए वह वस्फ़ किया जाता है बग़ैर सूरत के और तारीफ़ किया जाता है बग़ैर जिस्म के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह बुजुर्ग और आली मरतबा है।

4. मोहम्मद बिन हकीम से मरवी है कि मैने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से बयान किया क़ौले हश्शाम बिन सालिम अल्जवालीक़ी का और हश्शाम बिन हकम का कि ख़ुदा जिस्म है और हज़रत ने फ़रमाया अल्लाह तआला मुशाबेह नहीं किसी चीज़ से जो ना–माकूल है और जिस में माद्दए फसाद है यानी हादिस व फ़ानी है और अज़ीम तर है हर उस शख़्स के क़ौल से जो वस्फ़ बयान करता है ख़ालिक़े अशिया का जिस्म और सूरत से और आज़ाए मख़लूक़ से या उसके लिये हद बन्दी करता है या आज़ा तजवीज़ करता है पाक है अल्लाह उन

तमाम बातों से और उसकी शान बहुत अरफ़ा व आला है।

तौज़ीह : उस हदीस में और इस से पहले भी एक हदीस में हश्शाम बिन सालिम और हश्शाम बिन हकम के मुताल्लिक़ यह बयान किया गया है कि यह जिस्मे तआला के क़ाएल थे लेहाज़ा यह महले नज़र है क्योंकि यह दोनों बुज़ुर्ग इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम के असहाबे ख़ास में से थे या तो उन दोनों ने किसी जगह ब—सूरते तक़य्या ऐसा कहा होगा या इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होने से पहले यह लोग उस अक़ीदे के होंगे या यह सूरत होगी कि किसी जलसे में एक फ़र्ज़ी निज़ाअ क़ाएम करके मुख़ालिफ़ों के दलाएल के सुन्ना चाहा होगा और फिर उसका जवाब दिया होगा या यह कि सुनने वाले ने उनके कलाम को समझा नहीं। उन्होंने जिस्म फ़र्ज करके उसकी तरदीद में अदिल्ला बयान की होंगी या उन का कलाम मुख़ालिफ़ के कलाम से मख़लूत कर दिया गया है या मुख़ालिफ़ों ने इस अक़ीदे को उनकी तरफ़ मन्सूब करके बयान किया है और इस हदीस के रावी ने मुख़ालिफ़ों से सुन कर इमाम के सामने बयान किया है चुनान्चे उन मुख़ालिफ़ों ने ऐसे ग़लत अक़ीदे ज़ोरारा, मोमिने ताक़ और मसीमी के मुताल्लिक़ भी लोगों के सामने भी बयान किये थे इमाम ने मसलेहतन यह न कहा कि उन लोगों के मुताल्लिक़ लोगों का ग़लत प्रोपगन्डा है बल्कि उसके बजाये जो अक़ीदा की सहीह सूरत थी वह बयान करदी। जनाब सय्यद मुरतज़ा इल्मुल्हुदा ने हश्शामैन की इस

अक़ीदे से बराअत के मुताल्लिक़ बहुत सी दलीलें किताबे शाफ़ी में बयान फ़रमायी हैं।

5. मोहम्मद बिन अल फरज से मरवी है कि मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को हश्शाम बिन हकम और हश्शाम बिन सालिम के मुताल्लिक़ लिखा कि वह जिस्म व सूरत के क़ाएल हैं हैरान लोगों की हैरत को छोड़ो और शैतान के मुताल्लिक़ ख़ुदा से पनाह मांगो, दोनों हश्शाम ने जैसा कहा यह बात नहीं है यानी ख़ुदा न साहेबे जिस्म है न सूरत।

6. मोहम्मद बिन ज़ियाद से मरवी है कि मैने यूनुस बिन ज़िबयान को कहते सुना कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से अर्ज़ की कि हश्शाम बिन हकम ने एक बहुत बड़ी बात बयान की है उसको इख़तेसार के साथ बयान करता हूँ, उसका गुमान यह है कि अल्लाह जिस्म रखता है और दलील यह बयान की है कि तमाम अशिया की दो चीज़ें हैं एक जिस्म दूसरे फेले जिस्म। पस सानेए बमानी फेल तो है नहीं पस ला–मुहाला मबनी फ़ाएल होगा।

हज़रत ने फ़रमाया वाय हो उस पर क्या वह यह नहीं जानता कि जिस्म महदूद व मुतनाही है इसी तरह सूरत, पस जिसको महदूद मान लिया गया उसके लिये ज़्यादती व नुक़सान भी मानना पड़ेगा। और जिसके लिये नुक़सान व ज़्यादती है वह मख़लूक़ है रावी कहता है मेने कहा। फ़िर मैं क्या कहूँ, फ़रमाया वह न जिस्म है न सूरत, वह जिस्मों का पैदा करने वाला और सूरतों का बनाने वाला है न वह साहेबे अजज़ा है और उसकी

इन्तेहा है न कम होता है न ज़ाएद, अगर वह ऐसा होता जैसा लोग कहते हैं तो ख़ालिक़ व मख़लूक़ के दरमियान कोई फ़र्क़ न होता और न पैदा करने वाले और पैदा होने वाले के दरमियान, वह पैदा करने वाला है फ़र्क़ है मख़लूक़ के और उसके दरमियान जो जिस्मों का बनाने वाला, सूरत गरी करने वाला और ईजाद करने वाला है क्योंकि वह न किसी चीज़ से मुशाबेह है न उससे कोई शै।

7. रावी कहता है कि मैने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से कहा कि हश्शाम इब्ने हकम का अक़ीदा यह है कि अल्लाह साहेबे जिस्म है उसकी मिस्ल कोई शै नहीं। वह आलिम है समीअ व बसीर है। क़ादिर है नातिक़ है मुतकल्लिम है और कलाम म कुदरत व इल्म व क़ाएम मक़ाम ज़ाते वाहिद के लिये हैं उनमें से कोई चीज़ मख़लूक़ नहीं। फ़रमाया अल्लाह उसको क़त्ल करे क्या उसे नहीं मालूम कि जिस्म महदूद होता है और कलाम मुताकल्लिम का ग़ैर होता है ख़ुदा की पनाह कि मैं अल्लाह को उस क़ौल से बरी जानता हूँ उसके न जिस्म है न उसके लिये हद है उसके सिवा हर शै मख़लूक़ है तमाम चीज़ें उसके इरादे व अख़तियार से पैदा होती हैं लेकिन उसके लिये न कलाम करने की ज़रूरत है न उसके नफ़्स में हरकत पैदा होती है और न उसका ताल्लुक़ ज़बान से है।

तौज़ीह : जैसा कि हम पहले बयान कर आयें हैं। हश्शाम बिन हकम का यह अक़ीदा सोहबते इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम में आने से पहले होगा। रावी ने

बाद के अक़ीदे से बे ख़बर होकर उसी को बयान कर दिया और इमाम अलैहिस्सलाम ने जो क़ातेलोहुल्लाह फ़रमाया यह ख़बर माज़ी से मुताल्लिक़ है न हाल से और मुम्किन है यह कलाम हश्शाम बिन सालिम के साथ किसी बहेस में हो और क़ातेलोहुल्लाह की ज़मीर उस क़ौल के क़ाएल की तरफ़ हो।

8. मोहम्मद बिन हकीम से मरवी है कि मैंने इमाम रिज़ा अलैहस्सिलाम से हश्शाम जवालीक़ी का यह क़ौल बयान किया कि ख़ुदा एक ख़ूबसूरत जवान है और हश्शाम बिन हकम का क़ौल भी बयान किया, फ़रमाया वह किसी चीज़ से मुशाबेह नहीं।

बारहवां बाब

सिफ़ातुज़्ज़ात

1. अबू बसीर से मरवी है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम को कहते हुये सुना कि ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल हमारा रब हमेशा से है इल्म उसकी ज़ात है वह हमारा जाना हुआ नहीं, समअ उसकी ज़ात है वह सुना हुआ नहीं, बसर उसकी ज़ात है वह देखा हुआ नहीं, कुदरत उसकी ज़ात है वह कुदरत दिया हुआ नहीं, (यानी उसकी तमाम सिफ़ात ऐन ज़ात हैं हुदूस का उनसे ताल्लुक़ नहीं उसकी सिफ़ात हमारी सी नहीं कि वह हमारी ज़ात को आरिज़ होती हैं) उसने चीज़ों को पैदा किया और वह मालूम नहीं है और हमारा इल्म वाक़े हुआ, पैदा होने के बाद, उसी तरह समअ से मसमूअ पर

और बस्सर से मुबस्सर और कुदरत से मक़दूर पर वाकेउलइल्म अलल्मालूम से मुराद यह है कि वह मुताल्लिक़ हुआ उस चीज़ से जो उसको मालूम थी अज़ल में उसका इल्म उस पर मुनतबिक़ हुआ। वुकूए इल्म अलल्मालूम से मक़सूद यह है कि वह चीज़ उसके इल्म में हाज़िर व मौजूद थी और उस का इल्म मुताल्लिक़ था उस शै से।

अला वजहिग़ैबत उसका वजूद बाद में हुआ पस तग़य्युर का ताल्लुक़ मालूम से है न कि इल्म से रावी कहता है मैने कहा तो अल्लाह तआला हमेशा मुतहर्रिक रहा ब–हरकते फ़िकरिया। इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा बुजुर्ग व बरतर है उससे क्योंकि हरकत एक सिफ़ते हादिस है फ़ेल के साथ, यानी मख़लूक़ एक फ़ेल है दूसरे फेल की तरह। मोहताज हरकत है न कि ख़ालिक़, वरना उस में और मख़लूक़ में फ़र्क़ न रहे गा।

रावी ने कहा तो क्या ख़ुदा हमेशा कलाम करने वाला रहा है फ़रमाया कलाम तो एक सिफ़ते हादिस है क़दीम नहीं, अल्लाह तआला हमारी तरह कलाम करने वाला नहीं।

2. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल है और उसके सिवा कोई शै नहीं वह हमेशा से आलिम है पस ख़ल्क़े आलम से पहले भी उसका इल्म उस तरह से था जैसा कि उसके बाद।

3. रावी कहता है कि मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा, इस तरह दुआ करने के मुताल्लिक़ हम्द है उस ख़ुदा की जिस का इल्म इन्तेहा दरजा का है हज़रत

ने लिखा ऐसा न कहो। उसके इल्म के लिये इन्तेहा का लफ़्ज़ कहना दुरूस्त नहीं, बल्कि यू कहो हम्द है उस ख़ुदा की जिसको रिज़ा इन्तेहा दरजे की है।

4. रावी कहता है मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा और ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल के मुताल्लिक़ यह सवाल कैसा ? क्या वह ख़ल्क़ व तकवीने अशिया से पहले उन चीज़ों को जानता था या नहीं जानता था और जब जाना तो इरादा उनकी ख़ल्क़ व तकवीन का किया या उस वक़्त इल्म हुआ जब उनको पैदा किया। हज़रत ने अपने क़लम से यह जवाब लिखा, वह अशिया के मुताल्लिक़ हमेशा से इल्म रखने वाला है उनकी ख़िलक़त से पहले भी उसका इल्म अशिया के मुताल्लिक़ वैसा ही था जैसा उसकी ख़िलक़त के बाद।

5. रावी कहता है कि मैने इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को लिखा कि आप के दोस्तों ने इख़्तेलाफ़ किया है इल्मे बारीए तआला के मुताल्लिक़, बाज़ कहते हैं वह हमेशा से आलिम क़ब्ल फेले अशिया, बाज़ कहते हैं कि यह न कहो कि ख़ुदा हमेशा से आलिम है क्योकि वह जानता है कि मानी हैं वह करता है। पस अगर हम इल्म का अज़ली होना भी साबित करेंगे तो उसके साथ कोई चीज़ साबित करना होगी जिस का उसे इल्म हो। मैं आप पर फ़िदा हों उसके बारे में मुझे बतायें ताकि मैं उस पर क़ाएम रहूँ और तज़ावुज़ न करूं। हज़रत ने अपने क़लम से मुझे तहरीर फ़रमाया कि ख़ुदाए तबारक व तआला हमेशा से आलिम है।

6. रावी कहता है कि मैने इमाम मोहम्मद बाक़िर

अलैहिस्सलाम से कहा आप मुझे यह बतायें कि आया ख़ुदा मख़लूक़ को पैदा करने से पहले उसका इल्म रखता था। आप के शिया इस अम्र में मुखतलिफ़ अक़ीदा रखते हैं कि वह मख़लूक़ को पैदा करने से पहले उस का इल्म रखता था। बाज़ कहते हैं यअंलम (जानता है) के मानी यफअल (करता है) हैं पस वह आज (ब–वक़्ते ख़िलक़त जानता है) कि क़ब्ल ख़ल्के अशिया उसके सिवा और कोई नहीं जानता। पस वह यह दलील लाते हैं कि अगर हम यह साबित करें कि वह हमेशा से आलिम था इस बात का कि उसका ग़ैर नहीं तो फिर हम ने यह साबित किया कि उसका ग़ैर हमेशा से उसके साथ है पस ऐ मेरे सरदार आप मुझे तालीम दें ताकि मैं उसके सिवा दूसरा अक़ीदा न रखूं। हज़रत ने जवाब में लिखा कि ख़ुदा वन्देआलम हमेशा से आलिम है।

तौज़ीह : इस हदीस में इमाम अलैहिस्सलाम ने जवाबे शबीह बयान नहीं फ़रमाया। सिर्फ़ हक़ीक़त की नक़ाब कुशाई की है शायद उसकी वजह यह हो कि साएल को उस क़ाबलियत का न पाया हो कि वह उस शुबहे के जवाब को ठीक ठीक समझ सके या कि दूसरों के सामने पूरी तरह बयान कर सके या मुख़ालेफ़ीन से किसी ज़रर का अन्देशा हो। वल्लाहो आलम बिस्सवाब।

तेहरवां बाब

ततिम्मा बाबे साबिक़

1. मोहम्मद बिन मुस्लिम से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने सिफते क़दीम के बारे में फ़रमाया

कि वह वाहिद व समद है एक ही मानी हैं बहुत से मानी नहीं (कि अलाहिदा अलाहिदा ज़ातें समझी जायें) मैंने कहा ईराक़ के कुछ लोग यह गुमान करते हैं कि वह सुनता है बग़ैर उस चीज़ के जिस से देखता है और देखता है बग़ैर उस चीज़ के जिस से सुनता है। फ़रमाया वह झूटे हैं मुल्हिद हैं और ख़ुदा को मुशाबेह बनाने वाले। अल्लाह तआला उस से पाक है (वह बग़ैर किसी आले) के समीअ व बसीर है जिस (कुदरत) से वह सुनता है उसी से देखता है। मैंने कहा वह लोग गुमान करते हैं कि वह उस सूरत से बसीर है जैसा कि वह उसको समझते हैं फ़रमाया ख़ुदा उस से बलन्द व बरतर है जो उनकी अक़्ल में आता है वह मख़लूक़ की सिफ़त है अल्लाह ऐसा नहीं।

2. हश्शाम बिन हकम ने एक मुलहिद की बात बयान की कि उसने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा। क्या आप कहते है कि ख़ुदा समीअ व बसीर है। लेकिन सुनने वाला हैं बग़ैर किसी अज़ो के और देखने वाला है बग़ैर किसी आले के वह अपने नफ़्स से सुनता है और अपने नफ़्स से देखता है और यह मैने नफ़्स कहा उस से यह मुराद नहीं कि वह और है और नफ़्स और है बल्कि मैने इरादा किया उस लफ़्ज़ का अपने नफ़्स से क्यों कर सवाल किया गया है और तेरे समझाने के लिये क्योंकि तू साएल है मैं कहता हूँ वह अपने कुल से सुनता है लेकिन वह यह कुल नहीं जिस के आगे बाज़ हो यह बाज़ हमारे लिये है मैंने तो यह तेरे समझाने और अपने नफ़्स से उसको अलग करने के लिये कहा। मेरा मक़सद

उस कुल से यह है वह समीअ व बसीर है अलिम है ख़बीर है बिला इख़्तेलाफ़े ज़ात वइख़्तेलाफ़े मानी।

चौहदवां बाब

इरादा सिफ़ाते फ़ेल से है और तमाम सिफ़ाते फ़ेल

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रावी ने पूछा क्या अल्लाह हमेशा से साहबे इरादा है। फ़रमाया मुरीद के लिये यह देखना होगा। मिसदाक़े मुराद क्या है अल्लाह हमेशा से आलिम व क़ादिर है। फिर उसने इरादा किया यानी इल्म व कुदरत ब–लिहाज़े मफ़हूम व मिसदाक़ इरादे से अलग है क्योंकि मिसदाक़े इल्म व कुदरत एक चीज़ है यानी ज़ाते बारीए तआला पस इल्म व कुदरत सिफ़ाते ज़ात हैं और इरादा सिफ़ाते फ़ेल लेहाज़ा वह सिफ़ते ज़ात नहीं।

2. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि इल्म व मशीयते इलाही अलग अलग हैं या मुत्तफ़िक़ हैं फ़रमाया इल्म मशीयत नहीं है क्या तुम ने ग़ौर नहीं किया कि तुम कहते हो मै यह काम इन्शा–अल्लाह करूंगा और यूं नहीं कहते कि अगर अल्लाह ने चाहा तो करूंगा और यूं भी नहीं कहते कि अगर अल्लाह ने जाना तो करूंगा यह दलील है कि अल्लाह ने नहीं चाहा। जब चाहे गा तो वही होगा जो उस उने चाहा है ख़ुदा साबिक़ है मशीयत पर।

3. रावी कहता है कि मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम

से कहा कि इरादए ख़ुदा और इरादए ख़ल्क़ से मुत्तला फ़रमायें। फ़रमाया इरादाए ख़ल्क़ ज़मीर की आवाज़ है जिस के बाद उन से कोई फ़ेल ज़ाहिर होता है लेकिन इरादाए बारी एहदास यानी ख़ल्क़ करने के सिवा और कुछ नहीं है क्योंकि उस का ताल्लुक़ फ़िक्र व रोयत से नहीं, न ग़ौर व ताम्मुल से, यह सिफ़ात उससे दूर हैं यह तो मख़लूक़ की सिफ़ात हैं अल्लाह का इरादा उसका फ़ेल है वह किसी चीज़ से कहता है कुन (हो जा) पस वह हो जाती है यह कुन कहना न लफ़्ज़ से ताल्लुक़ रखता है न ज़बान की गोयाई से, न हिम्मत व तफ़क्कुर से और न किसी कैफ़ियत से क्योंकि कैफ़ियत उसके लिये है ही नहीं।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने पहले नफ़्से मशीयत को पैदा किया। फ़िर मशीयत से अशिया को पैदा किया। (तौजीह : मशीयत के मानी हैं अल्लाह की ख़्वाहिश अव्वल जिसका ताल्लुक़ वजूदे निज़ामे आलम से है और मशीयत से मुराद यहां मिसदाक़े मशीयत है कि जिस के बग़ैर मशीयत का तहक़्क़ुक़ नहीं होता और वह पानी है जो माद्दा है सबसे पहले मख़लूक़ है।)

5. रावी कहता है मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की मजलिस में हाज़िर था उमर अ० बिन अबीद (मोतज़िल) आया और कहने लगा। आयाए व मन महलिल अलैहे मज़बी क़क़द होवा से ग़ज़ब से क्या मुराद है? हज़रत ने फ़रमाया इस से मुराद है अज़ाब, ऐ उमर जिसने यह गुमान किया ख़ुदा एक हाल से दूसरे

हाल की तरफ़ बदलता है उसने मख़लूक़ की सिफ़त से ख़ुदा को मुत्तसिफ़ किया ख़ुदा वन्दे आलम को कोई शै बरअन्गेख्ता नहीं करती कि उस की हालत में तग़य्युर है।

6. हश्शाम बिन हकम से मरवी है कि एक ज़िन्दीक़ ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सवाल किया ख़ुदा के लिये ख़ुशनूदी है और गुस्सा है हज़रत ने फ़रमाया हां है लेकिन उसकी मिसाल यह नहीं जो मख़लूक़ में है रिज़ा या ख़ुशनूदी एक हालत में है जो किसी शख़्स पर तारी होती है और एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ बदल देती है मख़लूक़ की शान यह है कि वह चीज़ों का असर कुबूल करती है और उन के अमल को अपने ऊपर लेती है और जज़ा से मरकब है अशिया उसमें दाख़िल होती हैं और हमारा ख़ालिक़ वह है जिसमें कोई चीज़ दाख़िल नहीं होती। क्योंकि वह वाहिद है और ज़ात के लेहाज़ से यकता है और मानी के लेहाज़ से यगाना है पस उसकी ख़ुशनूदी उसका सवाब अता करना और गुस्सा अज़ाब नाज़िल करना है बग़ैर उसके कि कोई शै उसमें दाख़िल हो कर उसे हैजान में लाये और एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ मुनतक़िल करे, क्योंकि यह तो मख़लूक़ और आजिज़ों और मोहताजों की सिफ़त है।

7. रावी कहता है फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मशीयते बारीए तआला यानी मिसदाक़े मशीयते आलम हादिस और मख़लूक़ होना है।

ज़ाबताए सिफ़ाते ज़ात व सिफ़ाते फ़ेल

हर दो चीज़ें जिससे तारीफ़ बारीए तआला की जाये अगर वह दोनों वजूदे बारी में जमा हो सकीं तो सिफ़ाते फ़ेल हैं।

तौज़ीह : अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की सिफ़ात दो क़िस्म की हैं, ज़ाती व सिफ़ाती, ज़ाती वह हैं कि एक सिफ़त और उसकी ज़िद, दोनों उसकी ज़ात में जमा नहीं होतीं मसलन हयात व मौत, कि यह दोनों उसकी ज़ात में जमा नहीं हो सकतीं, पस हयात उसकी सिफ़ाते ज़ाती है और जो दो सिफ़ते उसकी ज़ात में जमा हो जायें वह सिफ़ाते फ़ेली हैं जैसे रिज़ा व सतख़त (ख़ुशनूदी व ग़ज़ब)।

तफ़सीर उस जुम्ले की यह है कि तुम साबित करते हो वजूदे बारी के लिये कि वह इरादा करता है और नहीं इरादा करता और ख़ुश होता है और ग़ज़बनाक होता है और मुहब्बत करता है और बाज़ रखता है पस अगर इरादा सिफ़ाते ज़ात से होता, इल्म व कुदरत की तरह तो यह कहना कि वह इरादा नहीं करता उसका तोड़ने वाला होगा। यह कहना कि वह इरादा करता है और अगर यह कहना कि वह मोहब्बत करता है तो उस के ख़िलाफ़ यह न कहा जाता कि वह बाज़ रखता है क्या तुम नहीं ग़ौर करते कि हम उसके वुजूद को अदमे इल्म और कुदरत से मौसूफ़ नहीं कर सकते, क्योंकि इल्म व कुदरत ज़ात हैं हम उसको मौसूफ़ नहीं करते कुदरत

और यह कहना जाएज़ नहीं कि वह कुदरत रखता है जान[illegible]र और नहीं रखता उस पर कि न जाने

और कुदरत रखता है उस पर कि मालिक हो और नहीं कुदरत रखता कि मालिक न हो, और कुदरत रखता है उस पर कि हकीम व अज़ीज़ हो और नहीं कुदरत रखता इसपर कि हकीम व अजीज़ न हो और कुदरत रखता है उस पर कि जवाद हो और नहीं कुदरत रखता है कि जवाद न हो और कुदरत रखता है उस पर कि ग़फ़ूर हो और नहीं कुदरत रखता है उस पर कि ग़फ़ूर न हो।

यह कहना जाएज़ नहीं कि ख़ुदा ने इरादा किया उस बात का कि वह रब हो और क़दीम हो और अज़ीज़ हो और हकीम हो और मालिक व आलिम व क़ादिर हो क्योंकि यह सब सिफ़ाते ज़ात हैं और इरादा सिफ़ाते अफ़आल से है सिफ़ाते फ़ेल से है क्या तुम ग़ौर नहीं करते कि कहा जाता है कि उसने यह इरादा किया और यह इरादा नहीं किया। सिफ़ाते ज़ात नफ़ी करती है हर उस सिफ़त की जिसकी ज़िद हो कहा जाता है ख़ुदा हुई, व समीअ व बसीर व अज़ीज व हकीम मालिक, हलीम व आदिल व करीम है पस ज़िदे आलिम जेहेल है ज़िदे कुदरत आजिज़ी ज़िदे हयात मौत, ज़िदे इज़्ज़त ज़िल्लत, ज़िदे हिकमत ख़ता है और ज़िदे हिल्म जल्दी और जिहालत और ज़िदे अदल जुल्म व जौर है उन का उस से ताल्लुक़ नहीं।

पन्द्रहवां बाब

हुदूसे असमा

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने एक इस्म को हुरूफ़ से पैदा

किया लेकिन उन हुरूफ़ की आवाज़ न थी और लफ़्ज़ बोला न जाता था और वजूद बग़ैर जिस्म था और किसी तसबीह से मौसूफ़ न था न किसी रंग में रंगा हुआ। अतराफ़ की उससे नफ़ी थी हुदूद उससे दूर थे हर हिस से पोशीदा था अल्लाह ने उस को कलेमए ताम्मा क़रार दिया। मतलब यह है कि मज़कूरा बाला चीज़ें उस इस्म से चूंकि बाद में पैदा हुईं लेहाज़ा उसका ताल्लुक़ उन चीज़ों से न था, उस कलेमए ताम्मा के उसने एक साथ चार जुज़ क़रार दिये (ज़ात मफ़हूम हो व मफ़हूम, अलिफ़ व लाम व मफ़हूम, अल्लाह तआला उन चीज़ों में तक़द्दुम व ताख़्ख़ुर नहीं उस से तीन नाम ज़ाहिर किये। क्यों कि ख़ल्क़ को उनकी तरफ़ एहतियाज थी और एक को पोशीदा रखा। पस यह असमा जो ज़ाहिर हुए वह लफ़्ज़े अल्लाह से ज़ाहिर हुए और उन तीनों नामों के ताबे बनाया चार अरकान को, पस यह बारह रूक्न हो गये। फ़िर हर रूक्न से तीस इस्मे फ़ेली पैदा किये जो मन्सूब हैं असमा की तरफ़ और वह रहमान व रहीम व मालिक व कुद्दूस व ख़ालिक़ व मुसव्विर हई व क़य्यूम न उसको उंघ है न नींद, व अलीम व ख़बीर, समीअ व बसीर, हकीम व अज़ीज़ व जब्बार व मुतकब्बिर, आला व अज़ीम व मुक़तदिर व क़ादिर व सलाम व मोमिन व मुहैमिन हादी व माशी व बदीअ व रबीअ व जलील व करीम राज़िक़ व मुही व मुमीत व बाएस व वारिस हैं यह और तमाम असमाए हुसना मिल कर तीन सौ साठ हुए हैं जो तीन नामों से मनसूब हैं और यह तीन अरकान व हुज्जत हैं इस्मे वाहिद के जो पोशीदा है उन तीन असमा में मुराद है क़ौले बारी से मुल अदऊ (अलख) है हक़ीक़त

यह है कि हदूसे असमा के मुताल्लिक़ जो ऊपर बयान हुआ वह असरारे इलाहिया से है जिनको नबी व इमाम के सिवा दूसरा नहीं समझ सकता हम उसके सिवा कुछ नहीं कह सकते कि अल्लाह इस्मे ज़ात है उसकी हक़ीक़त कोई नहीं समझ सकता क्योंकि उसकी हक़ीक़त अक़्ल व वहम व हवास हर शै से मसतूर है उसके अलावा जो और उसके असमाए हुसना हैं हम उनकी मारेफ़त उनके ज़रिये से करते हैं

2. सनान से मरवी है कि मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सवाल किया, क्या मख़लूक़ को ख़ल्क़ करने से पहले ख़ुदा अपने नफ़्स का आलिम था। फ़रमाया हां मैने कहा क्या वह उसको देखता और सुनता था फ़रमाया वह उसका मोहताज न था कि वह अपना नाम ले। क्योंकि वह किसी मुश्किल में सवाल करने वाला और किसी का तलबगार नहीं उसका नफ़्स उसकी ज़ात है और उसकी ज़ात उसका नफ़्स है उसकी कुदरत जारी होने वाली है वह उसका मोहताज नहीं कि उसकी ज़ात का नाम रखा जाये। लेकिन उसने कुछ नाम अपने लिये मुनतख़ब किये हैं जो उसकी ज़ात के ग़ैर हैं वह उन्हीं नामों से पुकारा जाता है क्योंकि अगर किसी नाम से पुकारा न जाता तो उसकी मारेफ़त न होती पस सबसे पहले उसने अपना नाम अली अज़ीम रखा क्योंकि वह तमाम चीज़ों से आला है उसकी ज़ात अल्लाह है अली अज़ीम उस का नाम है वह उसका सबसे पहले नाम है वह हर शै से बलन्द तर है।

3. और उसी सनद के साथ मोहम्मद बिन सनान से

मरवी है कि मैने सवाल किया कि इस्म क्या है फ़रमाया मौसूफ़ की सिफ़त है।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि इस्म अल्लाह का ग़ैर है हर वह शै जिसके लिये कोई नाम हो मख़लूक़ है सिवाए अल्लाह के जिसको ज़बानें ताबीर करती हैं और हाथ उसमें काम करते हैं वह मख़लूक़ है उस ख़ालिक़ पर हक़ का नाम उसके निशानात में से एक निशान है और जिस का निशान हो वह निशान से अलाहेदा ज़ात होती है और ग़ायत या निशान मौसूफ़ होता है और जो मौसूफ़ होता है वह मसनूअ है और ख़ालिक़ अशियाए ग़ैर मौसूफ़ है मुसम्मा की हद में वह पैदा नहीं हुआ कि उसके होने को ग़ैर की सिफ़त से पहचाना जाये ओर उसके लिये हद व इन्तेहा भी नहीं कोई निशान भी नहीं और जो है वह उसका ग़ैर है कभी लग़ज़िश नहीं खायेगा वह जिसने इस बात को समझ लिया और यही तौहीद है ख़ालिस तौहीद, उसकी रियायत करो, उसकी तसदीक़ करो और ब इज़्ने ख़ुदा उसे समझो। जिस ने गुमान किया कि उसने अल्लाह को हिजाब या सूरत या मिसाल से पहचाना वह मुशरिक है क्योंकि हिजाब और सूरत और मिसाल उसके ग़ैर हैं वह ज़ाते वहदहू ला शरीक है जिसने अल्लाह को इस तरह से पहचाना उस ने ख़ुदा की मारेफ़त हासिल की। और जिसने इस तरह न पहचाना उसने ख़ुदा को न पहचाना और उसके ग़ैर को पहचाना। ख़ालिक़ व मख़लूक़ के दरमियान कोई शै मुशतरक नहीं। ख़ुदा ख़ालिक़े अशिया है वह किसी चीज़ से ख़ुद नहीं पैदा हुआ उस के नामों

से उसे मौसूम किया जाता है लेकिन उसकी ज़ात नामों से अलग है और वह नामों से अलग है।

सोलहवां बाब

असमा के मानी और उनका इशतेक़ाक़

1. अब्दुल्लाह बिन सनान से मरवी है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की तफ़सीर पूछी फ़रमाया "बे" से बहा यानी उसका ग़ालिब होना मुराद है और "सीन" से सना यानी उसकी रिफ़अत व अज़मत मुराद है "मीम" से मजदुल्लाह यानी बुज़ुर्गीए ख़ुदा और बाज़ के नज़दीक बादशाहते ख़ुदा मुराद है और अल्लाह हर शै का माबूद है रहमान है अपनी मख़लूक़ पर और रहीम है ख़ास कर मोमिनीन पर।

2. हश्शाम बिन हकम ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से असमाए इलाहिया और उनके इशतेक़ाक़ के मुताल्लिक़ सवाल किया। हज़रत ने फ़रमाया ऐ हश्शाम अल्लाह मुशतक़ है इलाह से (माबूद) और इलाह के लिये ज़रूरी है कि इबादत करने वाला भी हो और इस्म मुसम्मा के ग़ैर होता है पस जिस ने मानी को छोड़ कर नाम की इबादत की उसने कुफ़्र किया और किसी चीज़ की भी इबादत न की और जिसने नाम और मानी दोनों की इबादत की उसने शिर्क किया और दो की इबादत की और जिसने सिर्फ़ मानी की इबादत की तो यह तौहीद है ऐ हश्शाम तुम समझ गये, मैने कहा कुछ और फ़रमायें। फ़रमाया अल्लाह के 99 नाम हैं अगर हर नाम एक ज़ात

होता तो हर नाम एक माबूद बन जाता लेकिन अल्लाह का एक मफ़हूम है जो उन सब नामों पर एक दलालत करता है और वह मफ़हूम उन तमाम असमा का ग़ैर है ऐ हश्शाम समझो, रोटी एक माकूल चीज़ का नाम है (नाम और रोटी अलग अलग चीज़ें हैं) पानी एक मशरूब चीज़ का नाम है लिबास एक मलबूस चीज़ का नाम है, आग एक जलाने वाली चीज़ का नाम है। ऐ हश्शाम तुम समझ गये अब इस दलील से हमारे दुश्मनों को रोकना। जो अल्लाह के साथ उस के ग़ैर को भी माबूद बनायें हुए हैं। मैंने कहा मैं ख़ूब समझ गया। हश्शाम कहते हैं वल्लाह इस मसलए तौहीद में कोई मुझ पर ग़ालिब न आया और मैं हर जगह अपने मक़ाम पर क़ाएम रहा।

3. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से किसी ने अल्लाह के मानी के मुताल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया अल्लाह के मानी यह हैं कि वह ग़ालिब है हर दक़ीक़ व जलील चीज़ पर।

4. अब्बास बिन हिलाल से मरवी है कि मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से यह आयत "अल्लाहो नूरुस्समावाते वल्अर्ज़" के मुताल्लिक़ सवाल किया फ़रमाया उसके मानी यह हैं कि वह आसमान व ज़मीन का हिदायत करने वाला है और एक रवायत में है वह हिदायत है आसमान और ज़मीन के लिये।

5. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा उस क़ौले ख़ुदा के क्या मानी हैं कि "वह अव्वल है वह आख़िर है" अव्वल को तो हमने समझ लिया। लेकिन आख़िर के मानी बयान फ़रमायें।

हज़रत ने फ़रमाया "दुनिया की हर शै हलाक होती और मुतागय्यर होती है एक रंग से दूसरे रंग की तरफ़, एक सूरत से दूसरी सूरत की तरफ़, एक सिफ़त से दूसरी सिफ़त की तरफ़, ज़्यादती से नुक़्सान, और नुक़्सान से ज़्यादती की तरफ़ ले जाती है और रब्बुल आलमीन की ज़ात को न ज़वाल है न होगा और न उसकी सिफ़ात व असमा में कोई इख़्तेलाफ़ है जैसे कि उस के ग़ैर में होता है मिस्ले इन्सान के जो एक बार मिट्टी होता है फिर गोश्त फिर ख़ून, फिर बोसीदा हड्डी या जैसे ख़ुरमा कि पहले फूल होता है फिर कच्चा ख़ुरमा फिर तिब तमर इस इख़्तेलाफ़ के साथ उसके नाम बदलते रहते हैं अल्लाह की ज़ात के लिये यह नहीं।"

6. रावी कहता है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से अव्वल व आख़िर के मुताल्लिक़ सवाल किया गया। आप अ० ने फ़रमाया अव्वल है लेकिन उससे पहले कोई नहीं, किसी ने इब्तेदा में उस पर सबक़त नहीं की। वह आख़िर है मगर उसकी नेहायत नहीं यह तो मख़लूक़ की सिफ़त है जो ज़ाते क़दीम अव्वल व आख़िर है वह हमेशा से है और हमेशा रहेगी न उसकी इब्तेदा है न इन्तेहा न उसका ताल्लुक़ हदूस से है और न एक हाल से दूसरे हाल की तरफ़ बदलता है वह हर शै का ख़ालिक़ है।

7. अबू हाशिम जाफ़री से मरवी है कि एक बार इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से एक शख़्स ने सवाल किया क्या किताबे ख़ुदा में अल्लाह के असमा व सिफ़ात हैं और आया वह उसकी ज़ात हैं। फ़रमाया उसके

कलाम की दो सूरतें हैं अगर तुम्हारा यह मतलब है कि असमा व सिफ़ात के साथ वह साहेबे अदद व कसरत है तो ख़ुदा उससे बलन्द व बरतर है अगर मुराद यह है कि यह असमा व सिफ़ात अज़ली नहीं है तो उसके दो मानी का एहतेमाल है अगर तेरी मुराद यह है कि असमा व सिफ़ात उसके इल्म से थे कि अहादिस होंगे और मख़लूक़ उनके ज़रिये से ख़ुदा को याद करेगी तो ठीक है और अगर तेरी मुराद यह है असमा की तसवीरें, उनके हिज्जे और उनके टुकड़े भी हमेशा से अल्लाह के साथ हैं, तो ख़ुदा की पनाह कोई चीज़ जो उसका ग़ैर है उसके साथ नहीं हो सकती, ख़ुदा था और मख़लूक़ न थी उसने असमा को पैदा कर दिया ताकि वह उसके और उसके असमा के दरमियान वसीला बन जाये लोग उनकें ज़रिये से ख़ुदा के सामने फ़रयाद करें और उसकी इबादत करें और इबादत क्या? उसका ज़िक्र, ख़ुदा था जब कि उसका ज़िक्र न था और न वह अपने ज़िक्र से ज़िक्र किया हुआ था (क्योंकि वह क़दीम है और हमेशा से है और, असमा व सिफ़ात उसकी मख़लूक़ हैं और उन से मुराद है वह अल्लाह जिस के लिये न मुख़्तलिफ़ होना लाएक़ है न मुतवल्लिफ़ होना, क्योंकि अलग होना या मिलना। उस चीज़ के लिये होता है जो साहिबे तजज़िया हो पस यह नहीं कहा जायेगा कि ख़ुदा मुरक्कब है और न यह कहा जायेगा कि वह क़लील या कसीर है बल्कि वह अपनी ज़ात में क़दीम है वाहिद के सिवा जो है वह साहबे अजज़ा है और अल्लाह वाहिद है, साहेबे अजज़ा नहीं और न क़िल्लत व कसरत का उससे ताल्लुक़ है वह

मख़लूक़ है और उसकी दलील है कि उसका कोई ख़ालिक़ है पस तुम्हारा यह कहना कि ख़ुदा क़दीर है, यह उस अम्र की ख़बर देता है उसको कोई शै आजिज़ नहीं बनाती, पस तुमने क़दीर कह कर अजिज़ी की, उससे नफ़ी की और इज्ज़ को उससे अलग क़रार दिया। ऐसे ही जब तुम ने आलिम कहा तो उस से जेहेल की नफ़ी की। यानी जेहेल को उस से अलग क़रार दिया। पस जब फ़ना करेगा अशिया को तो फ़ना करेगा अपने असमा की सूरत, हैजा व तक़तीअ को भी और वह हमेशा से आलिम है (मतलब यह है कि सिवाये उसकी ज़ाते क़दीम के तमाम चीज़ें हादिस व फ़ानी हैं। ख़्वाह उसके असमा हों या उनकी सूरतें।)

एक शख़्स ने कहा : हम अपने रब का नाम सुनने वाला कैसे रखें। फ़रमाया वह ऐसा सुनने वाला है कि जो बातें कानों से सुनी जाती हैं वह उस पर मख़फी नहीं लेकिन हम उसका वस्फ़ उन कानों से नहीं करे गे जो सर में होते हैं ऐसे ही हम उसका नाम बसीर रखें गे इस लिये जो बीनाईयां जिन चीज़ों का इदराक करती हैं रंग या वजूद वग़ैरा उसकी ज़ात पर मख़फ़ी नहीं लेकिन हम उसका वस्फ़ न बयान करेंगे उन आख़ों के साथ जो सर में होती हैं, ऐसे ही हम उनको लतीफ़ कहते हैं क्योंकि वह छोटी से छोटी चीज़ के मुताल्लिक़ इल्म रखता है जैसे मच्छर या उससे भी ख़फ़ी तर कोई चीज़ और उसकी नशो नुमा को और अक़्ल को और उसकी जन्नती खाने की ख़्वाहिश को अपनी नस्ल पर मेहरबान होने को और बाज़ का बाज़ के साथ रहना सहना और

खाने पीने की चीज़ों को ले जाना अपनी औलाद के लिये पहाड़ों जंगलों वादियों चटयल मैदानों में पस हमने जान लिया कि हमारा ख़ालिक़ लतीफ़ है उसके लिये कोई कैफियत नहीं क्योंकि कैफ़ियत तो मख़लूक़ के लिये होती है पस उसी तरह हमने नाम रखा अपने रब का क़वी लेकिन न ऐसा ज़ोर व कुव्वत वाला, जैसा मख़लूक़ में मशहूर है अगर उसकी कुव्वत मख़लूक़ की सी कुव्वत होती तो मख़लूक़ से उसकी तशबीह हो जाती, ज़्यादती के एहतेमाल की बिना पर और जहां ज़्यादती का एहतेमाल होता है वहां कमी का भी होता है और जो नाक़िस होता है वह ग़ैरे क़दीम होता है और ग़ैरे क़दीम आजिज़ होता है हमारा रब उससे बलन्द व बरतर है कोई उसका शबीह नहीं, उसकी ज़िद नहीं, उसकी नज़ीर नहीं, न उसके लिये कोई कैफ़ियत है और न नेहायत, न वह आँख़ से देखता है। हराम है कुलूब पर उसकी तमसील बनाना, अक़लों पर उसकी हद क़ाएम करना और इन्सानीज़मीरों या दिलों पर कि उसकी सूरत गरी करें। ख़ुदा की ज़ात बुजुर्ग व बरतर है कि उसमें मख़लूक़ के से आलात व असबाब हों और मख़लूक़ के से आसार हों ख़ुदा की शान उससे बहुत अरफ़ा व आला है।

8. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मनकूल है कि एक शख़्स ने आप के सामने कहा। अल्लाहो अकबर, फ़रमाया बताओ वह किस से बड़ा है उसने कहा हर शै से फ़रमाया तूने उसके लिये हद क़ाएम करदी। उसने कहा फ़िर कैसे कहूं फ़रमाया यूं कहो कि अल्लाह बुजुर्ग है उस से कि उसकी तारीफ़ की जाये।

9. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह किस चीज़ से बड़ा है मैने कहा हर शै से, फरमाया जब उससे पहले कोई चीज़ न थी तो उस वक़्त हर शै से बड़ा कैसे हुआ। मैने कहा फिर वह क्या है फ़रमाया वह बुजुर्ग व बरतर है उस से कि उसका वुस्फ़ बयान किया जाये।

10. रावी कहता है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुब्हानल्लाह के मानी पूछे फ़रमाया उसको मुनज़्ज़ा और मुबर्रा जानता है हर उस शै से जो उसके लाएक़ न हो।

11. हश्शाम से मरवी है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुब्हानल्लाह के मानी पूछे फ़रमाया उसकी ज़ाते पाक को (सिफ़ाते मख़लूक़ से) मुनज़्ज़ा जानना।

12. रावी कहता है मैने इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से पूछा अल्वाहिद के क्या मानी हैं फ़रमाया उसकी वहदानियत पर लोगों का इजमाअ है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है अगर लोगों से तुम पूछो गे कि उन्हें किसने पैदा क़िया तो कहें गे अल्लाह नें।

सत्तरहवां बाब

असमाए अल्लाह और असमाए मख़लूक़ के मानी में फ़र्क़

1. रावी कहता है कि मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को यह कहते हुए सुना वह लतीफ़ व ख़बीर है समीअ व

बसीर है वाहिद व अहद व समद है लम यलिद व लम युदल है कोई उस का हम सर नहीं अगर वह ऐसा होता जैसा मुशब्बह फ़िरक़ा कहता है तो उन्हो ने ख़ालिक़ को मख़लूक़ से अलग कर के पहचाना ही नहीं और न पैदा करने वाले को, पैदा होने वाले से जुदा किया, पैदा होने वाला अलग है उस से जिस ने जिस्म व सूरत दी और पैदा किया, न कोई शै उस से मुशाबेह है न वह किसी शै से, मैने कहा, आप अ० ने फ़रमाया वह अहद व समद है और नहीं मुशाबेह उस से कोई शै, अल्लाह वाहिद है इन्सान वाहिद है क्या वहदानियत में दोनों मुशाबेह नहीं। फ़रमाया ऐ फ़तह तूने एक मोहाल बात बयान की। ख़ुदा तुझे साबित क़दम रखे, तश्बीह का लफ़्ज़ ब–लेहाज़े मानी है वरना ब–लेहाज़े असमा जो वहदत है वह मारिज़े बहस में नहीं और इस्म दलील मुसम्मा है और वह इन्सान है अगर कहा जाये कि वह वाहिद है यानी जैसा वाहिद है वह नहीं है लेकिन नफ़्स तो एक नहीं क्योंकि उसके मुख़तलिफ़ आज़ा हैं मुख़तलिफ़ रंग हैं और मुख़तलिफ़ुल्अल्वान है वह वाहिद नहीं हो सकता। दर आंहांलेकि वह बहुत से अजज़ा से मुरक्कब है जो मसावी नहीं उस का ख़ून उसके गोश्त से अलग एक चीज़ है और पुट्ठें उसकी रगों से, एक एक चीज़ हैं उसके बाल और हैं उसकी जिल्द और उसकी सियाही और है उसकी सफ़ेदी और, यही हाल तमाम मख़लूक़ का है पस इन्सान नाम के लेहाज़ से वाहिद है न कि मानी के लेहाज़ से और ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर वाहिद है न कि उसका ग़ैर, उसमें न कोई इख़तेलाफ़ है न फ़र्क़, न ज़्यादती न कमी, बर ख़िलाफ़ उसके इन्सान मख़लूक़ व

मसनूअ और अजज़ाए मुख़ल्लेफ़ा से मुरक्कब है और मुख़तलिफ़ जौहर उसके अन्दर हैं उनका मजमूआ शै वाहिद नहीं कहा जा सकता। मैने कहा मैं आप अ० पर फ़िदा हूँ आप ने मेरी मुश्किल आसान की। अल्लाह आप की मुश्किल आसान करे अब आप लतीफ़ व ख़बीर की तारीफ़ भी इसी तरह बयान कीजिये, जिस तरह लफ़्ज़े वाहिद की बयान की है मैं समझता हूँ ख़ुदा का लुत्फ़े ख़िलाफ लुत्फ़े मख़लूक़ है ताहम मैं आप से तशरीह चाहता हूँ। फ़रमाया ऐ फ़तह हम ने लतीफ़ कहा है ख़ल्क़े लतीफ़ के लेहाज़ से और शै लतीफ़ का इल्म रखने की बिना पर, क्या तुम नहीं देखते उसकी सनअत के आसार को, नाजुक नबातात में और छोटे छोटे हैवानों में जैसे मच्छर और पिस्सू या जो इन से भी ऐसे छोटे छोटे हैवान हैं जो आख़ों से नज़र नहीं आते और यह भी पता नहीं चलता कि नर हैं या मादा और मौलूद व हादिस क़दीम से अलग हैं यह छोटे छोटे कीड़े उसके लुत्फ़ की दलील हैं फिर उन कीड़ों का, जुफ़्ती पर राग़िब होना और मौत से भागना और अपनी ज़रूरियात को जमा करना दरियाओं के कुडलों से, और दरख़्तों के खोखलों से, जन्गलों और मैदानों से, और फिर एक का दूसरे की बोली समझना और ज़रूरियात का अपनी औलाद को समझाना और फ़िज़ाओं का उनकी तरफ़ पहुचाना फिर उनके रंगों की तरकीब सुरख़ी व ज़रदी के साथ और सफ़ेदी सुरख़ी से मिलाना और ऐसी छोटी मख़लूक़ का पैदा करना। जिन को आख़ें नहीं देख सकतीं और न हाथ छू सकते हैं तो हम ने जाना कि उस मख़लूक़ का ख़ालिक़ लतीफ़ है उसने अपने लुत्फ़ से

पैदा किया बग़ैर आज़ा व आलात के, हर सानेअ किसी माद्दे से बनाता है। ख़ुदा को उस की ज़रूरत नहीं (वह कुन कह कर पैदा कर देता है और वह अल्लाह ख़ालिक़े लतीफ़ व जलील है उस ने बग़ैर किसी की मदद के पैदा किया है।)

इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया (ऐ रावी) जान तू ख़ुदा तुझे नेकी की तालीम दे कि ख़ुदा तबारका व तआला क़दीम है और क़दीम ही वह सिफ़त है जो एक अक़्लमन्द के लिये रहनुमाई करती है उस बात की तरफ़ कि न तो क़दामत में कोई शै उससे पहले हो सकती है और न उसके बाद, और हम पर ज़ाहिर हुआ उन आम लोगों के इक़रार से जिन्होंने सिफ़ते क़दामत को वसीअ मानों में इस्तेमाल किया है कि कोई शै न उस के क़ब्ल है न उस के साथ, अगर बक़ा में कोई शै उसके साथ होती तो फिर उसके लिये ख़ालिक़ होना जाएज़ न होता। क्योंकि दूसरी चीज़ हमेशा उसके साथ है उसका ख़ालिक़ होना क्या मानी और अगर उस से पहले है तो अव्वल के लिये ख़ालिक़ होना औला होगा न कि बाद वाले के लिये ख़ुदा ने अपने नफ़्स का वस्फ़ बयान फ़रमाया कुछ असमा से और जब मख़लूक़ को पैदा किया तो उनको बुलाया ओर उनसे अपनी इबादत चाही और उनको आज़माइश में डाला ताकि वह उन्हें मानों से पुकारे पस इस लिये अपनी ज़ात का नाम रखा। समीअ व बसीर व क़ादिर व क़ाएम व नातिक़, ज़ाहिर, व बातिन, लतीफ़ व ख़बीर व क़वी व अज़ीज़ व हकीम व अलीम या जो इन नामों से मुशाबेह हैं पस जब हमारे

दुश्मनों और झूटों ने यह नाम देखे और हम को इस तरह बात करते सुना कि कोई शै उस की मिस्ल नहीं और न मख़लूक़ में कोई शै उसकी हालत से मुशाबेह है तो वह लोग कहने लगे हमें यह बतायें जब आप लोगों का अक़ीदा यह है कि ख़ुदा की मिस्ल कोई नहीं और किसी को उससे मुशाबेहत नहीं तो फिर उसके अस्माये हुस्ना में दूसरे शरीक क्यों हैं। तुम ने ख़ुदा के सब नामों पर अपने नाम रख लिये हैं यह दलील है इस बात की कि तुम तमाम हालात में या बाज़ हालात में ख़ुदा के मिस्ल हो। उनसे कहा गया कि जो ख़ुदा के नाम बन्दों पर बोले जाते हैं उनके मानी मुख़तलिफ़ हैं हर एक नाम के दो मानी होते हैं (हक़ीक़ी और मजाज़ी) और उसकी दलील लोगों की वह बात चीत है जो उनके दरमियान राएज है अल्लाह तआला ने ख़िताब किया अपनी मख़लूक़ से इस तरह कि वह उसको समझें ताकि उन पर हुज्जत हो इस मफ़हूम के मुताल्लिक़ जो उन्होने अपनी ग़लत तावील से ज़ाए किया इन्सान के लिये आम तौर पर बोला जाता है। शेर है कुत्ता है गधा है या बैल है या मीठा फल है या कड़वा फल है यह सब लफ़्ज़ इन्सान के ख़िलाफ़ और उसके हालात के ग़ैर हैं जिन मानी के लिये यह अल्फ़ाज़ बनाये गये हैं यह उन मानी में इस्तेमाल नहीं होते बल्कि उसके मजाज़ी मानी हैं क्योंकि इन्सान न शेर है न कुत्ता है ख़ुदा तुम पर रहेम करे। इस बात को समझो। ख़ुदा का नाम आलिम है लेकिन उस का इल्म हादिस नहीं कि पहले न हुआ बाद में आया हो और उसने अशिया को जाना हो और इस इल्मे हादिस से उसने मदद चाही हो अपने पेश आने वाले मामलात की हिफ़ाज़त में और ग़ौर

करने में मख़लूक़ के ख़ल्क़ करने या जो बना चुका है उसके मिटाने में इस इल्म हादिस से मदद चाही। अगर इल्मे बारीए तआला ऐने ज़ात न होता तो वह जाहिल व ज़ईफ़ क़रार पाता जैसा कि हम दुनिया के उलमा को पाते हैं कि वह आलिम कहलाते हैं अज़रूए इल्मे हादिस क्योंकि उनमें जिहालत थी फिर इल्म उनमें आया और बाज़ औक़ात वह इल्म उन से ज़ाएल हो जाता है और वह जेहल की तरफ़ लौट आते हैं और ख़ुदा के आलिम होने के मानी यह हैं कि किसी वक़्त भी जेहल का उससे ताल्लुक़ नहीं रहता पस लफ़्ज़े आलिम का इतलाक़ अगर चे ख़ालिक़ व मख़लूक़ दोनों पर होता है मगर उनके दरमियान ब-लेहाज़े मानी फ़र्क़ है इसी तरह हमारे रब का नाम समीअ है लेकिन उसके लिये सूराख़े गोश नहीं जिस से आवाज़ सुनी जाती है और उस से देखा नहीं जाता जैसे कि हमारे कान का सूराख़ जिस से हम सुनते तो हैं मगर उस से देखते नहीं। लेकिन ख़ुदा के लिये असवात से कोई चीज़ मख़फ़ी नहीं और जैसे हमारे सुनने के लिये एक हद है उस के लिये नहीं, पस सामेअ का लफ़्ज़ अगर चे ख़ालिक़ व मख़लूक़ दोनों पर बोला जाता है मगर मानी मुख़तलिफ़ हैं उसी तरह से बसीर है कि उस के लिये देखने को कोई आंख की पुतली नहीं, जैसे कि हम आँख की पुतली से देखतें हैं और सिवाये देखने के किसी हास्से का काम उस से नहीं ले सकते और अल्लाह ऐसा बसीर है कि उसे उसकी ज़रूरत नहीं कि देखने के लिये किसी का वजूद उसके सामने हो पस बसर की सिफ़त तो दोनों जगह है मगर मानी मुख़तलिफ़ हैं और वह क़ाइम है लेकिन उसके यह मानी नहीं कि वह

अपनी पिंडली पर सख़्ती के साथ खड़ा है जैसे तमाम चीज़ें खड़ी होती हैं बल्कि क़ाएम के मानी हाफ़िज़ के हैं जैसे कहे कि हमारा हाफ़िज़ हमारे मामले में फ़लां है अल्लाह का हर नफ़्स के लिये उसके कस्ब का क़ाएम और क़ाएम के मानी मुहाविरए अरब में बाक़ी के हैं और क़ाएम के मानी किफ़ायत करने वाले के भी हैं जैसे तुम कहो कि खड़े हो फ़लां शख़्स के लिये यानी उसके काम को पूरा करो जिसके मानी में हम क़ाएम बोलते हैं वह साख पर ख़ड़े होने वाले के हैं। पस लफ़्ज़ मुशतरक है और मानी मुख़तलिफ़ हैं।

और लतीफ़ से यह मुराद नहीं कि वह कम है या दुबला है या छोटा है बल्कि उसके मानी यह हैं कि मुशाबेहत नहीं है उसको अशिया से और उसकी ज़ात का इदराक ममनूअ है उसी मानी में एक शख़्स किसी से कहता है बारीक हुआ यह अम्र मेरे लिये यानी पिन्हा हो गयी उस की हक़ीक़त और इस तरह भी बोला जाता है कि फलां शख़्स अपनी राह व रविश में बारीक हो गया यानी अक़्ल उसमें डूब कर रह गयी और जुसतुजू ख़त्म हो गयी वह बड़ा गहरा और बारीक हो गया, अक़्ल उसका इदराक नहीं कर सकती पस यही मानी हैं अल्लाह तआला के लतीफ़ होने के जिस के मानी यह हैं कि वह किसी हद से इदराक नहीं किया जाता और न किसी वस्फ़ में महदूद है हमारे लेहाज़ से लताफ़त के मानी छोटाई और कमी के हैं ख़ुदा के लिये यह मानी नहीं पस इस्म एक है और मानी मुख़तलिफ़ हैं।

और ख़बीर वह है कि कोई शै उस से पोशीदा न

हो और न उसके क़ब्ज़े से जाये उसका ताल्लुक़ न तजुरबे से है और न मख़लूक़ की हालत के एतेबार से, तजुरबा और एतबार दो क़िस्म के इल्म हैं अगर वह न हों तो इल्म नदारद, क्योंकि बे तजुरबा और एतबार वाला जाहिल होगा। अल्लाह ऐसा नहीं वह हमेशा से ख़बीर है यानी इल्म रखने वाला हर उस चीज़ का जो उसने पैदा की है और आदमी को जो ख़बीर कहा जाता है वह उस मानी में कि ख़बर हासिल करता है दूसरों से, पस लफ़्ज़ एक है और मानी मुख़तलिफ़।

और ख़ुदा ज़ाहिर है न बईं मानी कि अशिया आलम पर बलन्द हुआ सवार हो कर उनके ऊपर के हिस्से पर और चढ़ कर उनकी चोटियों पर, बल्कि वह तमाम अशिया पर अपनी कुदरत से ग़ालिब आया है मुहावरे में कहा जाता है, मैं अपने दुश्मन पर ग़ालिब आया या ख़ुदा ने मेरे दुश्मन पर मुझे ग़ालिब किया पस उसी मानी में है ज़ाहिर यानी ग़ालिब होना अल्लाह का मख़लूक़ पर एक वजह और भी है कि वह ग़ालिब है हर उस चीज़ पर जिस का वह इरादा करे। उस पर कोई शै मख़फी नहीं वह मुदब्बिर है हर उस शै का जिस को उस ने पैदा किया है पस कौन ग़ालिब व अग़लब व वाज़ेह है अल्लाह तआला से क्योंकि तुम उस की सनअत को पाओ गे जहां कहीं भी तुम हो और तुम्हारे अन्दर उसकी कुदरत के बे शुमार निशान हैं जिन से तुम बे परवाह नहीं हो और ज़ाहिर का लफ़्ज़ हमारे लिये जिस माना में बोला जाता है अपने नफ़्स से ज़ाहिर होना और एक हद तक जाना हुआ होना है पस लफ़्ज़ तो एक है मगर मानी

मुख़्तलिफ़।

और ख़ुदा की सिफ़त बातिन है तो उस के यह मानी नहीं कि वह किसी चीज़ के अन्दर ढ़का हुआ छुपा हुआ है बल्कि उसके मानी यह हैं कि वह अशिया के अन्दरूनी हालात को अपने इल्म व हिफ़्ज़ व तदबीर से जानता है मुहावरे में कहा जाता है यानी मैं उसके पोशीदा भेद से वाक़िफ़ हो गया और हमारे लेहाज़ से बातिन का लफ़्ज़ किसी शै में ग़ायब व मुसतर चीज़ के लिये बोला जाता है पस लफ़्ज़ एक है मानी मुख़्तलिफ़।

और ख़ुदा का क़ादिर होना। तो उसके यह मानी नहीं कि वह आज़ा से काम लेता है या उसे तकान महसूस होती है या वह हीले और मक्र से काम लेता है बन्दों में मक़हूर क़ाहिर बन जाते हैं और क़ाहिर मक़हूर बन जाते हैं ख़ुदा के लिये ऐसा नहीं उसकी तमाम मख़्लूक़ अपने ख़ालिक़ के सामने ज़लील व मग़लूब है किसी की ताक़त नहीं कि उसके इरादा को रोक दे और एक आने वाहिद के लिये उस की हुकूमत से बाहर हो जाये जब वह कहता है होजा , पस वह चीज़ हो जाती है और हम में जो क़ाहिर कहलाते हैं यह औसाफ़ हम में नहीं पस लफ़्ज़ एक है और मानी मुख़्तलिफ़ हैं यही सूरत तमाम असमाये इलाही के लिये हैं हम सब का ज़िक्र नहीं करते सिर्फ़ चन्द नाम के मुताल्लिक़ तुम को बता दिया है ख़ुदा अपनी हिदायत व तौफीक़ में तुम्हारी और हमारी मदद करे।

अटठारहवां बाब

तावील लफ़्ज़े समद

1. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से पूछा कि मै आप अ० पर फ़िदा हूँ समद के क्या मानी हैं फ़रमाया वह ज़ात जिस की तरफ़ कम व ज़्यादा में लोगों की रूजूअ और हाजत हो।

2. जाबिर जाफ़ी ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से तौहीद के मुताल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया अल्लाह के तमाम नाम मुबारक हैं जिन से उसे पुकारा जाता है वह अपनी कोहना ज़ात में बलन्द व बरतर है वह अकेला है और अपनी तौहीद में बे-मिस्ल है फ़िर उसने वहदत (मजाज़ी) को मख़लूक़ के लिये जारी किया। पस वह वाहिद है हर एक की उस की तरफ़ हाजत है वह पाक ज़ात है हर चीज़ उसकी इबादत करती है ओर उसी की मोहताज़ है और उस का इल्म हर शै पर हावी है।

तावील समद के सही मानी यही हैं न जो मुशबेह फ़िरक़े वाले बयान करते हैं कि समद के मानी ऐसा ठोस के हैं जो बीच से ख़ाली न हो अगर यह मानी लिये जायें तो यह जिस्म की सिफ़त है और अल्लाह उस से बुजुर्ग व बरतर है वह आज़म व अजल है उससे कि उकूल व औहाम उसके सिफ़ात तक पहुंच सके और उसकी अज़मत की हक़ीक़त मालूम कर सके अगर सिफ़ते बारी में समद की तावील ऐसी ठोस होती जिस में जोफ़ न हो। जैसे पत्थर और लोहा और तमाम ठोस चीज़ें जिन में जोफ़ नहीं होता तो ख़ुदा की ज़ात उससे पाक है और उसके

मुताल्लिक़ जो अहादीस में आया है तो हक़ीक़ी आलिम (इमाम) उसका सबसे ज़्यादा जानने वाला है यह है वह जो इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया और लफ़्ज़े समद से मुराद है वह सरदार जिसकी तरफ़ रूजू हो और यह मुवाफ़िक़ है ख़ुदा के उस क़ौल के कि उसकी मिस्ल कोई नहीं मसमूद के मानी लुग़त में भी उस ज़ात के हैं जिस की तरफ़ क़सद किया जाये अबू तालिब ने इसी मानी में एक शेर के अन्दर मदहे रसूल अ० की है।

और जमरा का जब लोग क़स्द करते हैं। तो उसके ऊपर संगरेज़े मारते हैं यानी उसकी तरफ़ क़स्द करते हैं और उसको मारते हैं जनादिल यानी छोटी कंकरियों से जिसको जेमार (जमरा) कहते हैं।

शाएरे जाहिलयत से एक का शेर है।

मैं नहीं गुमान करता था अल्लाह का ज़ाहिरी घर, जो अतराफे मक्का में है उसका क़स्द किया जाये गा। यानी यसमेदू के मानी हैं कि लोग उसकी तरफ़ क़स्द करेंगे।

और इब्नुज़्जिबरक़ान ने कहा है कि वह सरदार जिस की तरफ़ रूजू हो और शद्दाद बिन माविया ने हुज़ैफ़ा बिन बदर के मुताल्लिक़ कहा हैं

मैं ने तलवार के ज़ोर से उसको बलन्द करके कहा ले उसको ऐ हुज़ैफ़ा तू बे नियाज़ सरदार है। ऐसी बहुत सी मिसालें हैं जो उसकी दलील है कि समद के मानी यह हैं अल्लाह की वह ज़ात है कि जिन और इन्सान अपनी अपनी हाजतों में उसकी तरफ़ रूजू करते हैं और

सख़्तियों में उससे पनाह मागतें है उसकी रहमत और उसकी नेमतों की बर–क़रारी के लिये दुआ करते हैं और उससे इल्तेजा करते हैं कि इन से मुसीबतों को दूर रखे।

उन्नीसवां बाब

हरकत व इन्तेक़ाल

1. रावी कहता है इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम के सामने उन लोगों का ज़िक्र आया जो कहते हैं कि ख़ुदा आसमान दुनिया की तरफ़ उतरता है फ़रमाया। अल्लाह तआला न उतरता है और न उसे उतरने की ज़रूरत है ब–लेहाज़ मन्ज़र उसके लिये नज़दीक व दूर बराबर है न क़रीब उससे दूर है और न बईद उससे क़रीब है वह किसी का मोहताज नहीं बल्कि हर शै उसकी मोहताज है वह साहिबे कुव्वत है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह अज़ीज व हकीम है जिन लोगों ने कहा है कि वह उतरता है उन्होने निसबत दी है ख़ुदा को कमी और ज़्यादती की तरफ़ हर मुतहर्रिक हरकत देने वाले का मोहताज है, और जिसके साथ उसकी हरकत हो जिस ने ऐसे बुरे गुमान ख़ुदा के मुताल्लिक़ किये वह हलाक हुआ। पस ख़ुदाई सिफ़ात के बारे में तवक़्कुफ़ से काम लो उसको महदूद न करो व कमी व ज़्यादती हिलने या हिलाने ज़वाल या उतरने उठने और बैठने की उससे निसबत न दो, अल्लाह तआला की तारीफ़ करने वाले की तारीफ़ से बलन्द व बरतर है, तुम ख़ुदाए अज़ीज़ व रहीम पर भरोसा करो वह, वह है। ऐ रसूल स० जिस ने तुम को ख़ड़े देखा और तुमको सजदा

करने वालों की पुश्तों में गरदिश दी।

2. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं यह नहीं कहता कि वह क़ाएम है इस हैसियत से कि मै हटांऊ उसको उसकी जगह से। और न मैं उसको महदूद करता हूँ किसी जगह में और न मैं यह कहता हूँ कि वह हरकत करता है अपने आज़ा व जवारेह से या बोलता है मुंह से जब वह किसी शै के लिये कहता है हो जा पस वह हो जाती है उसके इरादे से बग़ैर किसी तरद्दुद के और समद व फर्द है कोई उसका शरीक उसके मुल्क में नहीं और न अबवाबे इल्म उस पर खोले जाते हैं।

3. इब्ने अबी औजा ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा आप ख़ुदा को ग़ाएब कहते हैं फ़रमाया वाये हो तुझ पर ग़ाएब कहा जायेगा वह जो अपनी मख़्लूक़ के साथ मौजूद है और रगे गरदन से ज़्यादा क़रीब है उनका कलाम सुनता है और उनके वजूद को देखता है और उनके भेदों को जानता है अबू ओजा ने कहा कि ऐसा है कि वह हर जगह है पस अगर आसमान में है तो ज़मीन में कैसे होगा और अगर ज़मीन में है तो आसमान मे कैसे होगा। हज़रत ने फ़रमाया यह तो मख़्लूक़ की सिफ़त है कि जब वह एक मकान से मुनतक़िल हो तो दूसरे में जा रहे और पहला मकान उससे ख़ाली हो जाये, और उसे यह ख़बर न रहे कि पहले मकान का क्या हाल है और उसमें क्या हो रहा है। अल्लाह तआला की यह शान नहीं उससे कोई जगह ख़ाली नहीं और न किसी मकान में वह समाया हुआ है

और न कोई जगह ब–निसबत दूसरी जगह के उससे ज़्यादा क़रीब है।

4. मोहम्मद बिन ईसा से मरवी है कि मैने इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को लिखा। ऐ मेरे सय्यद व सरदार मैं आप पर फ़िदा हूँ मुझ से कहा गया है कि ख़ुदा एक जगह है दूसरी जगह नहीं वह अर्श पर बैठा है और हर रात आख़िरे शब में आसमान दुनिया पर उतरता है और यह भी बयान करतें हैं कि वह आख़िर रोज़े अरफ़ा उतरता है और अपनी जगह चला जाता है इस सूरत में हवा उससे ज़रूर मिले गी और उसके चार तरफ़ हो जायेगी क्योंकि हवा एक जिस्में लतीफ़ है वह हर शै के गिर्द है पस ख़ुदा के गिर्द कैसे होगी। आप ने जवाब में लिखा, हर शै का इल्म उस के पास है और उसे हर शै का बेहतरीन अन्दाज़ है (उसे किसी जगह जाने की क्या ज़रूरत) जब वह समा दुनिया में हो तो ऐसा ही है जैसे अर्श पर क्योंकि चीज़ें सब बराबर हैं ब–लेहाज़े इल्म व कुदरत व मुल्क व एहाता।

और ऐसी ही रवायत मोहम्मद बिन जाफ़र कूफ़ी ने मोहम्मद बिन ईसा से बयान की है।

5. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह जो आयत है कि जहां तीन सरगोशी करते हैं वह उनका चौथा होता है और जहां पांच हों तो वह उसका छटा होता है तो वह वाहिद है और यगाना बिज़–ज़ात है और अपनी मख़लूक़ से अलग है इसी लिये उसने अपना वस्फ़ यह बयान किया वह हर शै पर मुहीत है अज़–रूए इल्म व एहाता व कुदरत कोई ज़र्रा आसमान में हो या

ज़मीन में उससे पोशीदा नहीं चाहे उससे भी छोटा हो या बड़ा। वह अपने ज़ाती इलम से एहाता किये हुये है। तमाम मक़ामात महदूद हैं महदूदे अरबा अगर ख़ुदा भी अपनी ज़ात से एहाता करने वाला होता तो वह भी हुदूदे अरबा में महदूद हो जाता।

6. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा गया कि क्या मानी हैं *आमए अर्रहमान अलल अर्श इस्तवा* के, फ़रमाया वह हर शै पर ग़ालिब है कोई शै ब–निसबत दूसरी शै के उससे क़रीब नहीं।

7. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत *आमए अर्रहमान अलल अर्श इस्तवा* के मुताल्लिक़ पूछा फ़रमाया वह हर शै पर ग़ालिब है कोई ब–निसबत किसी शय के उस से ज़्यादा क़रीब है न दूर और वह सबसे ज़्यादा क़रीब है हर शै के।

8. इब्ने हज्जाज ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयत *आमए अर्रहमान अलल अर्श इस्तवा* के बारे में दरयाफत किया आप ने फ़रमाया इस्तवा हर शै में के मानी यह हैं कि कोई चीज़ उससे क़रीब तर न हो और न उससे दूर हो ऐसी दूरी कि उससे क़रीब तर न हो। मज़ीद यह कि न उससे ज़्यादा दूरी मुम्किन हो न उससे ज़्यादा कुरबत (यहीं हैं इस्तवा अल अर्श के मानी)

तौज़ीह : दूरी और नज़दीकी अल्लाह के लिये कोई मानी नहीं रखती। जिस तरह हम किसी दूर मक़ाम पर रहने वाले को आवाज़ नहीं दे सकते, यह ख़ुदा के लिये नहीं है।

9. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस ने यह गुमान किया कि अल्लाह किसी चीज़ से है या किसी चीज़ में है या किसी चीज़ पर है तो उसने कुफ़्र किया। रावी ने कहा ज़रा और वज़ाहत कीजिये। फ़रमाया मेरा मतलब यह है कि वह किसी चीज़ से घिरा हुआ है न रुका हुआ है और न किसी चीज़ ने उस पर सबक़त की है और एक दूसरी रवायत में है कि जिस ने गुमान किया कि ख़ुदा किसी शै से है उसने ख़ुदा को हादिस समझा और जिसने कहा किसी शै में है उसने उसे महदूद बना दिया और जिसने कहा क़िसी शै पर है उस ने ऐसी चीज़ बना दिया जो उठाई जाये।

10. हश्शाम बिन हकम से मरवी है कि अबू शकिर अद्दैमानी कुरआन में एक आयत हमारे अक़ीदे के मुवाफ़िक़ है मैने कहा वह क्या है उसने कहा आसमान में भी ख़ुदा है और ज़मीन में भी ख़ुदा है (यानी कई ख़ुदा हैं) मुझे उसका जवाब न बन आया। मैने इस का ज़िक्र इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से किया। फ़रमाया यह कलाम किसी ज़िन्दीक़ ख़बीस का है जब तुम उसके पास जाओ तो कहना तेरा नाम कूफ़े में क्या है वह कहेगा फलां, पस उससे पूछना बसरे में तेरा नाम क्या है वह कहेगा फलां, पस उससे कहना। ऐसा ही हमारा रब है वह आसमान में इलाह है और ज़मीन में भी, दरयाओं में भी और जंगलों में भी, उसी तरह हर जगह पस मै उसके पास पहुंचा और यह जवाब दिया। उसने कहा यह हिजाज़ से नक़्ल हो कर आया है।

बीसवां बाब

बयाने अर्श व कुर्सी

1. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम से एक यहूदी आलिम ने कहा मुझे यह बतायें कि अल्लाह अर्श को उठाये हुए है या अर्श अल्लाह को। आप अ0 ने फ़रमाया खुदाए अज़्ज़ व जल्ल आसमानों व ज़मीन जो कुछ इन दोनों के अन्दर है उन सब की रोक थाम करने वाला है जैसा कि फ़रमाया अल्लाह आसमानों और ज़मीन को ज़ाएल होने से रोकने वाला है अगर उसके अलावा कोई दूसरा रोक थाम करने वाला होता तो यह कारख़ाना कब का मलियामेट हो चुका होता, बेशक ख़ुदा हलीम व ग़फूर है उसने कहा मुझे ख़ुदा के उस क़ौल का मतलब बतायें तेरे रब का अर्श उस रोज़ लोगों के ऊपर आठ फरिशते उठाये होंगे। पस क्यों कर मुवाफिक़त होगी आप के उस क़ौल से। वह उठाता है अर्श को आसमानों और ज़मीनों को, हज़रत ने फ़रमाया अर्श से मुराद मख़लूक़ है जिसको ख़ुदा ने चार नूरों से पैदा किया है सुर्ख नूर जिस से सुर्ख़ी पैदा की और सब्ज़ नूर जिस से सब्ज़ी पैदा की, और ज़र्द नूर जिससे ज़र्दी पैदा हुई, और सफ़ेद नूर जिससे सफ़ेदी पैदा हुई यह वह इल्म है जिसको बार किया गया हामिलाने अर्श पर यानी तफ़सील से यह इल्म उनको दिया गया कि यह नूर उसका नूरे अज़मत है पस उसने अपनी अज़मत व नूर से कुलूबे मोमिनीने ख़ास को बीना किया और उसी के अज़मत व नूर से जाहिलों ने उससे दुश्मनी की (अपनी ग़लत

फ़हमी की बिना पर) और उसी के अज़मत व नूर से मख़लूक़ाते समावी व अर्ज़ी ने अपने मुख़तलिफ़ आमाल से और मुशतबा अदयान से उसकी तरफ़ वसीला ढूंढ़ा। पस हर उठाया हुआ जिसको अल्लाह ने अपने नूरे अज़मत से और अपनी कुदरत से उठाया है न अपने नफ़्स के लिये नुक़्सान की ताक़त रखता है न नफ़े की न ज़िन्दगी की न हश्र व नश्र की। पस हर शै महमूल है और अल्लाह तआला अपनी कुदरत से आसमान व ज़मीन को ज़ाएल होने से रोके हुए है और उन दोनों का एक शै से एहाता किये हुए है और वह हर शै की ज़िन्दगी है और हर शै का नूर है लोग जो कुछ ग़लत बयानी करते हैं उसके बारे में वह उससे बहुत बलन्द व बाला है।

उस ने कहा मुझे बतायें अल्लाह कहां हैं हज़रत ने फ़रमाया वह यहां भी है और वहां भी, ऊपर भी, नीचे भी, हमारा एहाता (इल्म व कुदरत से) किये हुए है और हर जगह हमारे साथ है। जैसा कि फ़रमाया है जहां तीन की सरगोशी है वह चौथा है जहां पाँच है वह छटा है उससे कम हों या ज़्यादा हर जगह उन के साथ है और कुरसी (मुराद इल्मे बारीए तआला) एहाता किये हुए है आसमानों और ज़मीनों और जो कुछ उन के दरमियान है और जो ज़मीन के नीचे है और ज़्यादा वाज़ेह हो तो वह हर एक छिपे हुए भेद को जानता है और यही मुराद है ख़ुदा के उस क़ौल से, घेर लिया है उसकी कुरसी (इल्म) ने आसमानों और ज़मीनों को और इन दोनों की हिफ़ाज़त उसे थकाती नहीं वह बलन्द मरतबा और बुज़ुर्गी वाला है। हामिलाने अर्श से मुराद वह उलमाए दीन हैं जो

उलूमे इलाहिया को उठाये हुए हैं। (अम्बिया और औसिया) और कोई शै जो मलकूते ख़ुदा में ख़ल्क़ हुई है चार मज़कूरा बाला नूरों से ख़ाली नहीं (नूरे एहमर, नूरे अज़फ़र, नूरे अख़ज़र और नूरे अबियज़) यहीं मलकूत हैं जिन्हें ख़ुदा ने अपने असफ़िया को दिखाया है यही अपने ख़लील को दिखाये थे। जैसा कि फ़रमाया है कि हम ने इब्राहीम को आसमानों और ज़मीनों और ज़मीन के मलकूत दिखाये ताकि वह यक़ीन करने वालों में से बने रहें और क्योंकि हामिलाने अर्श, अर्श को उठा सकते है दर आं हालेंकि उसकी हयात से उनके कुलूब में ज़िन्दगी आयी है और उसी के नूर से उस की मारेफ़त की तरफ़ हिदायत हुई है (ख़ुलासए कलाम यह है कि कुर्सी से मुराद वह कुर्सी नहीं जो हमारे ज़ेहन में है बल्कि वह तमाम उलूम मुराद हैं जिनम का ताल्लुक़ आसमानों और ज़मीन के तमाम निज़ामों से है बल्कि सिवाये अम्बिया व औसिया दूसरा कोई उन का हामिल हो ही नहीं सकता। अब रहे हामिलाने कुर्सी, वह हामिलाने उलूमे अर्श क़रान नहीं पा सकते क्योंकि यह उलूम मुख़तस ब–ज़ाते बारीए तआला हैं। बात यह है कि यह मुसतेलाहाते मख़सूसा हैं जिन का मफ़हूम अम्बिया व औसिया व अईम्मा के सिवा दूसरे के ज़ेहन में नहीं आ सकता, शहरे इल्म और बाबे इल्म भी इसी तरह की इस्तेलाहें हैं।)

2. सफ़वान बिन यहिया से मरवी है कि अबू कुर्रा मोहद्दिस ने मुझ से दरख़्वास्त की कि मैं उसके लिये इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से हाज़िर होने की इजाज़त लूं चुनांचे उसने हाज़िर होकर हलाल व हराम के बारे में

पूछा फ़िर उसने कहा कि क्या आप इस का इक़रार करते हैं कि अल्लाह ने उठाया हुआ है यानी आप का अल्लाह अर्श पर है और अर्श को मलाएका उठाये हुए हैं तो अल्लाह महमूल हुआ। हज़रत ने फ़रमाया हर महमूल वह है जिस पर फेल का असर वाक़े हो और वह अपने ग़ैर की तरफ़ मुनअतिफ़ हो वह मोहताज होता है और महमूल होना ब–लेहाज़े लफ़्ज़ बाएसे नक़्स है और हामिल फ़ाएल होता है और ब–लेहाज़े लफ़्ज़ वह बाएसे मदह होता है जैसे कि लफ़्ज़े फ़ौक़ व तहत व आला व असफ़ल से नुक़सान व मदह होता है अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ख़ुदा के लिये अस्माए हुस्ना हैं तुम उन्हीं से उसे पुकारो, अपनी किताबों में उसने यह नहीं कहा कि वह महमूल है बल्कि यह कहा है कि वह हामिल है ख़ुशकी व तरी में और आसमानों और ज़मीनों को गिरने से रोकने वाला है महमूल तो मा–सिवाए अल्लाह को कहा जाता है किसी ऐसे शख़्स को जो अल्लाह तआला पर और उसकी अज़मत पर ईमान रखने वाला है। कभी यह कहते नहीं सुना गया कि उसने अपनी दुआ में अल्लाह को महमूल कह कर पुकारा हो। अबू कुर्रा ने कहा कि ख़ुदा कहता है कि तेरे रब के अर्श को उस दिन उनके ऊपर आठ उठाने वाले उठाये होंगे। हज़रत ने फ़रमाया अर्श अल्लाह नहीं है अर्श नाम है इल्म व क़ुदरते इलाही का जिसके अन्दर हर शै है ख़ुदा ने हमल की निसबत दी है अपने ग़ैर की तरफ़ और वह अललाह की मख़लूक़ में से एक मख़लूक़ है क्योंकि हामिले अर्श के साथ ख़ुदा ने अपनी एक मख़लूक़ से इबादत चाही और अपनी एक मख़लूक़ को तसबीह से मख़सूस किया जो उसके अर्श के गिर्द

तसबीह करते हैं और कुछ मलाएका आमाले एबाद को लिखते हैं और अहले अर्ज़ से इबादत चाही अपने घर के गिर्द तवाफ़ करने की आयत *वल्लाहो अलल अर्शे इस्तवा* ऐसा ही है जैसा दूसरे मुक़ामात पर फ़रमाया *वल्अर्श वमन बिहौलेही व मन खव्वलल्अशिल्लाह़* जो उनका हामिल है वहीं उनका रोकने वाला और हर नफ़्स का क़ाएम करने वाला, हर शै से माफौक़, हर शै से बाला तर है उसे बजाये हामिल के महमूल कैसे कहा जा सकता है न असफ़ल से उसे निसबत दी जा सकती है वरना लफ़्ज़ और मानी दोनों फ़ासिद हो जायेंगे अबू कुर्रा ने कहाकि यह तो उस रवायत की सरासर तकज़ीब है कि जब ख़ुदा को गुस्सा आता है तो उसका वज़्न हामिलाने अर्श के कन्धों को महसूस होने लगता है और वह सजदे में गिर जाते हैं और जब गुस्सा ख़त्म हो जाता है तो अर्श का वज़्न हलका पड़ जाता है और वह अपने मौक़िफ़ की तरफ़ रूजूअ करते हैं हज़रत ने फ़रमाया मुझे बताओ अल्लाह तआला ने जब से इबलीस पर लानत की उस वक़्त से अब तक वह उससे कब राज़ी हुआ इससे मालूम होता है कि वह उस वक़्त से लेकर अब तक गुस्से में ही है इबलीस पर भी और उसके औलिया व इत्तेबा पर भी और मलाएका उसका वज़्न महसूस कर के सजदे में ही पड़े हुए हैं ऐ अबू कुर्रा तुमने कैसे जुर्रात की कि अपने रब को मौसूफ किया तग़ीर के साथ बई तौर कि वह एक हाल से दूसरे की तरफ़ बदलता है और मख़लूक़ की सी बातें उसमें पाई जाती हैं अल्लाह तआला बलन्द व बरतर है उन तमाम बातों से

वह बदलने वालों के साथ बदलता नहीं हर शै उसके यदे कुदरत व तदबीर के अन्दर है और सब उसके मोहताज हैं और वह अपने मा सिवा से बे परवाह है।

तौज़ीहे अव्वल : अबू कुर्रा ने जो हदीस पेश करके एतराज़ किया वह दर हक़ीक़त उसका मतलब समझा ही नहीं हदीस में ग़ज़ब से मुराद अज़ाब का नाज़िल करना है और मलाएका का सिक़्ले अर्श महसूस करना। उससे मुराद यह है कि उन को नुज़ूले अज़ाब के मुक़द्दमात से आगाह किया जाता है और सजदे में जाने से मुराद यह है कि वह ख़ुज़ूअ व ख़ुशूअ करते हैं अल्लाह के सामने बिना पर उस के अज़ाब से ख़ौफ़ करके और जब नुज़ूले अज़ाब ख़त्म हो जाता है तो मलाएका जो हामिलाने अर्श हैं मुतमईन हो जाते हैं क्योंकि मुक़द्दमाते रहमत नाज़िल होने लगते हैं और वह तलबे रहमत की तरफ़ रग़बत करते हैं इमाम अलैहिस्सलाम ने उसके एतराज़ को यूं दफ़ा किया कि अगर ग़ज़बे इलाही का बोझ फरिशते महसूस करते और सजदे में जाते तो आदम और शैतान के वाक़िए से अब तक हामिलाने अर्श को सजदे ही में होना चाहियें क्योंकि ख़ुदा की उस वक़्त से आज तक शैतान पर लानत चली आ रही है और लानत से मुराद उस का ग़ज़ब है। हक़ीक़त यह है कि लोगों ने अपने हालात और तग़य्युरात का क़यास ख़ुदा पर कर के आयात व अहादीस के अलफ़ाज़ का ज़ाहिरी मफ़हूम मुराद ले लिया है हमारे अइम्मा ने अपना फ़र्ज़ समझा कि लोगों से अलफ़ाज़ की सहीह तावील बयान करें ताकि वह गुमराही से महफ़ूज़ रहें।

तौज़ीहे दोएम : इस हदीस में इमाम अलैहिस्सलाम ने अर्श के जो मानी बयान किये हैं वह उस मफ़हूम से जुदा गाना हैं जो अज़हाने अवाम में मुरतकिज़ हैं आम लोगों की नज़र के सामने माद्दी अशिया हैं अगर किसी चीज़ की हक़ीक़त को माद्दी मिसालों से न समझाया जाये तो दुनिया वाले उस को समझने से क़ासिर रहते हैं मसलन नेमाते जन्नत में रूतब, एनब, रुम्मान वग़ैरा का ज़िक्र कुरआन में मौजूद है। आम लोग यह समझते हैं कि यह फल ऐसे ही या उनसे कुछ बेहतर होंगे जैसे हमारी दुनिया में पाये जाते हैं हालां कि वह सेब व अनार वग़ैरा कुछ और ही होंगे जन्नती मेवों के मुताल्लिक़ तो यह है कि न आँखों ने देखा होगा न कानों ने सुना होगा और न उनका तसव्वुर किसी के दिल में आया होगा लेकिन क्या ऐसी नेमतों का कोई हलका सा तसव्वुर भी अरब के बद्दुओं बल्कि माद्दा परस्त दुनिया के किसी फ़र्द के दिमाग़ में आ सकता था और जब लोगों की समझ में जन्नत के मेवे आते ही नहीं तो वह उनकी तरफ़ रग़बत क्या करते। इस लिये लामुहाला हक़ीक़त को मजाज़ के साचे में ढ़ाला गया।

इसी तरह लफ़्ज़े सिरात है अवाम के ज़हन में वह एक पुल है जिस पर से रोज़े क़ियामत लोगों को गुज़रना होगा लेकिन दूसरा मफ़हूम उसका कुछ और है यानी फ़ज़ाएले चहारगाना अख़लाक़ का दसती ख़त चूकि यह मफहूम इतना बारीक था कि अवाम का क्या ज़िक्र, ख़वास के ज़ेहन में नहीं आ सकता था लेहाज़ा सिरात के मजाज़ी मानी की तरफ़ तवज्जोह दिलाई गयी।

इसी तरह क़यामत में मीज़ान का नस्ब होना और उसमें आमाल का तोला जाना वग़ैरा बहुत से अलफ़ाज़ हैं जिन का मफ़हूम अवाम के नज़दीक कुछ और है ख़वास के नज़दीक कुछ और, उन्हीं में लफ़्ज़े अर्श भी है आम लोग उस को एक अज़ीमुश्शान नूरानी तख़्त या अरास्ता मस्नद समझते हैं ख़वास की नज़र में इस लफ़्ज़ के मफ़ाहीम और हैं और उनमें सहीह तरीन मफ़हूम वह है जो इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने उस हदीस में बयान फ़रमाया। अर्श ब–मानी तख़्त अगर लिया जाये तो दर अस्ल उसका मफ़हूम एक अलामत होगा। यानी तख़्त निशान है किसी के रफीउल मरतबा होने का। इमाम अलैहिस्सलाम के इरशााद के मुताबिक़ अर्श भी एक अलामत है क़ादिरे मुतलक़ के उलूवे शान की क्योंकि उससे मुराद वह इल्मे इलाही है कि जिस को हस्ब ज़ैल आठ क़िस्म की मख़लूक़ उठाये हुए है अव्वल हामिलाने अर्श यानी वह फ़रिशते जो हामिलाने किताबे इलाही हैं और आदमं अ0 और उनके औसिया, दूसरे नूह अ0 और उनके औसिया, तीसरे इब्राहीम अ0 और उनके औसिया, चौथे मूसा अ0 और उनके औसिया, पांचवे ईसा अ0 और उनके औसिया, छटे मोहम्मद स0 और उनके औसिया, सातवें रिज़वान और जन्नत के तमाम ख़ाज़िन, आठवें मालिक और दोज़ख़ के तमाम ख़ाज़िन।

यह है वह इल्म का ख़ज़ाना जिस का नाम अर्श है और जिसकी ख़ाज़िन मज़कूरा बाला हँसतियां हैं यह मफ़हूम इस क़द्र लतीफ व दक़ीक़ है कि वहबी इल्म रखने वालों के दूसरे उसको समझ ही नहीं सकते।

लेहाज़ा उमूमन मजाज़ी मानी की तरफ़ ही लोगों को मुतवज्जेह किया गया। यही वजह है कि अर्श के मफहूम में बहुत कुछ इख़तेलाफ़ पैदा हो गया। बाज़ के नज़दीक वह अज़ीमुश्शान निहायत मुसतहकम व ठोस तख़्त है जिस पर बैठा है और वह उसके बोझ से चर चराता है बाज़ के नज़दीक वह ख़ुदा की सबसे बड़ी मख़लूक़ है।

* बाज़ के नज़दीक वह नवां आसमान है
* बाज़ के नज़दीक सबसे ऊँचा सय्यारा है
* बाज़ के नज़दीक मरकज़े अन्वारे काएनात है
* बाज़ के नज़दीक वह एक छत है आसमान जैसी कि जिसके साये में फरिशते रहते हैं।
* बाज़ के नज़दीक आलमे इम्कान की हद्दे नज़र है।

3. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से आयते वसेअ कुसिय्योहु स्समावाते वल्अर्ज़ के मुताल्लिक़ पूछा। फ़रमाया ऐ फुज़ैले कुर्सी में हर शै है आसमान व ज़मीन हर शै कुरसी में है।

4. रावी कहता है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा वसेअ कुर्सियो (अलख़) के मुताल्लिक़ क्या आसमानों और ज़मीन में कुर्सी की गुन्जाइश है या कुर्सी में आसमान व ज़मीन के समाने की। फ़रमाया कुर्सी में गुन्जाइश है आसमान व ज़मीन व अर्श के समाने की उस में गुन्जाइश है।

5. ज़ुरारा बिन आयुन ने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से आयत वसेअ कुर्सिय्यो (अलख़) के बारे में मालूम

किया कि क्या ज़मीन व आसमान में कुर्सी समा सकती है या कुर्सी में ज़मीन व आसमान समा सकते हैं। आप ने फ़रमाया बल्कि कुर्सी में समावात, ज़मीन व अर्श और अर शय समा सकती है। कुरसी में हर शै के समाने की गुन्ज़ाइश है। (उससे मुराद कुदरते ख़ुदा है।)

6. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हामिलाने अर्श (अर्श से मुराद इल्म है) आठ है चार हम में से हैं और चार वह हैं जिनको अल्लाह ने चाहा। तफसीरे कुम्मी में है कि पहले चार से मुराद मोहम्मद स0 अली अ0 हसन अ0 व हुसैन अ0 हैं और आख़िर चार से मुराद नूह अ0 व इब्राहीम अ0 मूसा अ0, व ईसा अ0 हैं यानी रोज़े क़यामत इल्मे इलाही के हामिल आठ शख़्स होंगे उन्हीं के इल्म के मुताबिक़ लोगों की जांच पड़ताल होगी।

7. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा इस आयत का क्या मतलब है काना अर्शहू अलल्माऊ फ़रमाया लोग क्या कहते हैं मैने कहा उनका कहना यह है कि अर्शे ख़ुदा पानी पर था और ख़ुदा उस पर बैठा था। फ़रमाया झूठे हैं जिस ने ऐसा गुमान किया उसने ख़ुदा को महमूल (उठाया हुआ) क़रार दिया और मख़लूक़ की सिफ़त से ख़ुदा को मौसूफ़ केया और यह लाज़िम क़रार दिया कि जो चीज़ उठाई जाती है उठाने वाला उससे क़वी होता है मैने फिर कहा इसका मतलब आप अ0 बयान फ़रमायें। फ़रमाया ख़ुदा ने अपने दीन और इल्म को पानी पर बार किया (उससे मालूम हुआ कि मादि्दयत में अव्वल मख़लूक़ पानी है

सब से पहले इल्म और कुदरते इलाही का उसी से ताल्लुक़ हुआ) क़ब्ल इसके कि ज़मीन व आसमान या जिन व इन्स या चान्द सूरज को पैदा करे। पस जब ख़ुदा ने अपनी मख़लूक़ को पैदा करने का इरादा किया तो उनको अपने सामने हाज़िर करके पूछा कि बताओ तुम्हारा रब कौन है? पस सबसे पहले रसूलल्लाह स० गोया हुए फिर अमीरूल मोमिनीन और दीगर अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ने कहा। तू हमारा रब है ख़ुदा ने उनको हामिल क़रार दिया अपने इल्म व दीन का फिर मलाएका से फ़रमाया। यह लोग मेरे इल्म और मेरे दीन के हामिल हैं और मेरी मख़लूक़ है मेरी तरफ़ से अमीन हैं और उनसे सवाल किया जायेगा। फ़िर बनी आदम से फ़रमाया। अल्लाह की रूबूबियत का इक़रार करो और इन लोगों की विलायत और इताअत का उन्हों ने कहा ठीक है ऐ हमारे रब हमने इक़रार किया। ख़ुदा ने मलाएका से फ़रमाया तुम इन पर गवाह हो मलाएका ने कहा हम गवाह हैं ताकिं यह लोग कल को यह न कहें कि हम उनसे ग़ाफिल थे या यह कह दे कि उससे पहले हमारे आबा व अजदाद ने शिर्क किया था और उनके बाद हम उनकी औलाद क़रार पाये तो क्या बातिल परस्तों के जुर्म में तू हम को हलाक करेगा। ऐ दाऊद (रावी) हमारी विलायत बहुत ज़्यादा ताकीद के साथ थी।

इक्कीसवां बाब

बयाने रूह

1. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़

अलैहिस्सलाम से रूहे आदम के मुताल्लिक़ पूछा जिसके लिये ख़ुदा ने फ़रमाया नफ़ख़्तो फीहे मिन रूही यह रूह भी मख़लूक़ है और वह रूह भी जो ईसा अलैहिस्सलाम में थी।

2. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा रूहुम्मिन्हो (हज़रत ईसा अ0) के मुताल्लिक़ फ़रमाया वह रूह मख़लूक़ है जिसको अल्लाह ने आदम व ईसा में पैदा किया।

3. मोहम्मद बिन मुस्लिम से मरवी है कि मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मानी पूछे कि नफ़ख़्तो फ़ीहे मिन रूही मैने जो नफख़ का ज़िक्र है वह नफ़ख़ क्योंकर हुआ। फ़रमाया रूहे हव्वा की तरह मुतहर्रिक है इस लिये उसका नाम रूह रखा गया है क्योंकि वह रीह से मुशतक़ है और यह इस लिये कि अरवाह रीह की हम जिन्स हैं और रूह को अपने नफ़्स की तरफ़ निसबत दी है क्योंकि उस का इस्तेफ़ा (इन्तेख़ाब) किया है तमाम अरवाह में जैसे कि घरों में से एक घर को रसूलों में से एक रसूल को अपना घर और अपना ख़लील और उसकी मिसल और भी हैं लेकिन यह सब मख़लूक़ हैं हादिस हैं परवरिश किये हुए हैं और उनमें किस मुदब्बिर की तदबीर का असर है।

4. मोहम्मद बिन मुस्लिम से मरवी है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि लोग कहते हैं ख़ुदा ने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया। इस का क्या मतलब है फ़रमाया ख़ुदा ने आदम को हादिस मख़लूक़ बनाया है और उनकी सूरत को इन्तेख़ाब किया है तमाम

मुख़तलिफ सूरतों में से और फिर उसकी निस्बत अपनी तरफ़ दी जैसे कि काबे को अपनी तरफ़ निस्बत दी और फ़रमाया मेरा घर। उसी तरह फ़रमाया मैने उस में अपनी रूह को फूँका

बाइसवां बाब

जवामेउत्तौहीद

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने दूसरी बार (बादे जंगे सिफ्फीन) लोगों को माविया से लड़ने के लिये उभारना चाहा तो लोगों को जमा करके फ़रमाया। हम्द है उस ख़ुदा की जो वाहिद व यगाना और बे–नयाज़ व तन्हा है वह न किसी चीज़ से बना है और न किसी माद्दे से ख़ल्क़ हुआ है वह कुदरते महज़ है वह अशिया से अलग ज़ात है और अशिया उस से अलग हैं उसकी सिफ़त का इदराक नहीं होता न कोई ऐसी तारीफ़ है कि उसकी मिसाल बयान की जाये। थक कर रह गयी हैं उसकी सिफ़ात के बयान में अहले ज़बान की ताक़ते लेसानी और गुम हो गयी अल्लाह के बारे में उन सिफ़ात के ख़ुसूसियात व अक़साम जो लोगों के अज़हान में हैं और हैरान हो कर रह गयी उसकी कुदरत के बारे में ग़ौर व फ़िक्र की गहराइयां (यानी कुदरते बारी के अक़साम पर ग़ौर करने से ऐसे हैरान व सरगरदां हुए कि आख़िर गुमराह हो कर मुनकिरे कुदरत हो गये) और उसके इल्म के बारे में वह तमाम सिफ़ात आजिज़ व दरमान्दा हो गये जो बड़े वसीउल मानी थे। और उसके छिपे हुए असरार

तक ग़ैब के बहुत परदे हाएल हैं यानी उसके राज़हाये कुदरत को इन्सानी उकूल पा नहीं सकतीं और उसके लतीफ़ व नाजुक उमूर के दरयाफ़्त करने में दूर रस उकूल हैरान हो कर रह गये।

पाक है वह अल्लाह कि हिम्मतों की दूरियां उस तक नहीं पहुंच सकतीं और अक़्ल व शऊर की गहराइयां उसको पा नहीं सकतीं साहबे अज़मत व बुज़ुर्गी है वह ज़ात जिस के लिये न शुमार में आने वाला वक़्त है और न कोई लम्बी मुद्दत उसके सिफात बग़ैर अम्बिया के बताये कोई बता नहीं सकता। वह ऐसा अव्वल है कि उससे पहले कुछ नहीं वह ऐसा आख़िर है कि उससे आख़िर कोई नहीं वह पाक ज़ात वैसी ही है जैसी उसने अपने नफ़्स की तारीफ़ ख़ुद की है वरना तारीफ़ करने वाले उसकी तारीफ़ को पा नहीं सकते। तमाम अशिया की हद उस तक ख़त्म हो जाती है वह उन सब से जुदा है और उन में हुलूल किये हुए नहीं कि कहा जाये कि वह फलां शै के अन्दर है और न दूर है कि कहा जाये वह उन से जुदा है कोई जगह उस से ख़ाली नहीं कि कहा जाये कि वह वहां है बल्कि उस पाक ज़ात का इल्म हर शै का एहाता किये हुए है और उस की सिफ़त को मज़बूत बनाये हुए है और उसका हिफ़्ज़ उनका एहसा किये हुए है कुरहे हवा की बारीक से बारीक पोशीदगियां उस पर पोशीदा नहीं और तारीक रातों की हर शै उस पर ज़ाहिर है आसमानों की बलन्दियों से ले कर ज़मीन की निचाई तक वह हर शै का हाफिज़ व निगेहबान है उस का इल्म हर शै का एहाता किये हुए है वह वाहिद

व अहद व समद है। ज़मानों की गरदिश उस में कोई तग़य्युर पैदा नहीं करती और न किसी शै की सनअत उसे थकाती है वह किसी शै को ख़ल्क़ करना चाहता है तो कहता है हो जा पस हो जाती है और उसने बग़ैर किसी साबिक़ मिसाल के हर शै को ईजाद किया और न उसे कोई तकान महसूस हुई और न रंज पहुंचा। उसके सिवा हर सानेअ जो कुछ बनाता है वह किसी सनअत को पेशे नज़र रख कर बनाता है और हर आलिम जिहालत के बाद आलिम होता है और अल्लाह कभी जाहिल न था और न कभी हुसूले इल्म का मोहताज हुआ उसका इल्म हर शै का एहाता किये हुए है अशिया के पैदा होने से पहले वह उन का आलिम है उनके पैदा होने से उस के इल्म में कोई इज़ाफ़ा नहीं होता। उसका इल्म क़ब्ले तकवीन भी वैसा ही है जैसा कि उन की अशिया की तकवीन के बाद उसने चीज़ों को पैदा नहीं किया। अपनी सलतनत को मज़बूत बनाने के लिये न ख़ौफ़े ज़वाल व नुक़सान से उसे किसी हमला आवर दुश्मन के मुक़ाबले मदद की ज़रूरत नहीं और न किसी साथी और शरीक की। तमाम मख़लूक़ का रब वही है और सब उसके सामने ज़लील व हक़ीर हैं।

पाक व मुनज़्ज़ा है वह ज़ात जिसे नहीं थकाता इब्तदाअन किसी चीज़ का पैदा करना और न तदबीर करना उस मख़लूक़ की जिस को पैदा किया है और जो कुछ उसने ख़ल्क़ किया न उसमें इज्ज़ को दख़ल है न सुस्ती को जो उसने पैदा किया उस का इल्म रखता है और जो इल्म रखता है उस को पैदा किया इल्मे हादिस

में उसे फ़िक्र की ज़रूरत नहीं जो पैदा किया उसमें न ग़लती का इमकान है न शुबहे की गुन्जाइश जो कुछ उसका हुक्म है अम्रे लाज़िम है इल्मे मोहकम और अम्रे मुत्तफ़िक़ है वह अकेला रब है उस ने अपने नफ़्स को वहदानियत से ख़ालिस किया है और मजद व सना को अपने लिये रखा है वह यकता व यगाना है तौहीद व बुजुर्गी व शान में वह वाहिद है हम्द करने के साथ बुजुर्ग है अपनी अज़्मत के साथ वह बुजुर्ग व बरतर है कि उसके औलाद हो वह पाक व पाकीज़ा है उससे कि उससे औरतों की मूजामेअत हो या शरकार की मुसाबेहत हो। न कोई उसकी ज़िद है न कोई उसकी मिस्ल है उसके मुल्क में कोई उसका साझी नहीं। वह वाहिद व यगाना है बे नयाज़ है हमेशा से है और हमेशा रहेगा। यकताई वाला है अज़ली है ज़मानों की इब्तेदा से क़ब्ल है और उमूरे दुनिया की गरदिश के बाद है वह न हलाक होने वाला है न ख़त्म होने वाला उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसकी शान सबसे अज़ीम है वह बड़ा जलीलुश्शान है और सबसे ज़्यादा अज़ीज़ है ज़ालिम लोग जो कुछ उसके मुताल्लिक़ कहते हैं वह उससे पाक व पाकीज़ा है।

यह जनाबे अमीर अलैहिस्सलाम के ख़ुतबों में से एक ख़ुतबा है यहां तक कि दुश्मनों ने उसे हिक़ारत की नज़र से देखा है हालें कि वह काफ़ी है उस शख़्स के लिये जो इल्मे तौहीद का तालिब हो बशर्ते कि उस में ग़ौर व फ़िक्र करे और उसके मानी व मतालिब को समझे। अगर नबी स0 को छोड़ कर दुनिया के तमाम जिन व इन्स जमा हो कर मसाएले तौहीद बयान करे तो

ऐसा वाज़ेह और मुकम्मल बयान करने पर हरगिज़ क़ादिर न होंगे। अगर अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम उन मसाएल को बयान न फ़रमाते तो लोग जानते ही नहीं कि तौहीद का रास्ता क्या है तुमने हज़रत के उस क़ौल पर ग़ौर नहीं किया कि वह किसी चीज़ से पैदा नहीं हुआ और न उसको पैदा करने के लिये किसी माददे की पहले से होने की ज़रूरत थी इस क़ौल से साबित हुआ कि ज़ाते बारीए तआला हादिस नहीं बल्कि क़दीम है और उसके सिवा जितनी मख़लूक़ है वह सब हादिस है ख़ुदा की तमाम इजादात बग़ैर किसी नमूने को सामने रखे हुए हैं अमीरूल मोमिनीन के उस क़ौल से नफ़ी हुई इस अक़ीदे की कि अशयाए आलम में एक चीज़ ने दूसरी चीज़ को पैदा किया है और इबताल है दो ख़ुदा होने के अक़ीदे का जिन्होने यह गुमान किया है कि कोई चीज़ हनीं पैदा होती मगर किसी असल से और नहीं तदबीर की जाती उस में मगर जब कि उसके मुक़बिल कोई मिसाल हो। पस हज़रत के इस इरशाद ने *ला मिन शैइन ख़लका मा काना सनविया* (दो ख़ुदा मानने वालों) की तमाम दलीलों को बातिल कर दिया क्यों कि दुदेसे आलम में अकसर सनाविया फ़िर्क़े वाले इस अक़ीदा के हैं कि ख़ालिक़ के लिये ज़रूरी है ख़ल्क़े अशिया किसी शै से करे (यानी माद्दा उसकी ज़ात के साथ होना चाहिये) या किसी ऐसी चीज़ से जो ला–शै है पस उनका मिन शै (किसी चीज़ से पैदा करना) कहना ग़लती है और मिन ला शै से नफ़ी लाज़िम आयेगी अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने निहायत बलीग़ अलफ़ाज़ में इस अक़ीदे का इबताल किया बई तौर कि फ़रमाया *ला मिन शैइन*

ख़लक़ा मा काना पस उस से नफ़ी हुई सनविया के उस अक़ीदे की कि ख़ुदा ने हर शै को एक माद्दे से पैदा किया है जो उसकी ज़ात के साथ क़दीम व क़ाएम है फिर हज़रत अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस के लिये कोई सिफ़त ऐसी नहीं कि उक़ूल पा लें और न कोई ऐसी हद है कि उसकी मिसाल दी जाये। उसकी सिफ़ात के मामले में लोगों की ज़बानें क़ासिर हैं हज़रत ने नफी की है मुशब्बह के अक़वाल की जबकि उन्हों ने तशबीह दी है ख़ुदा को पिघली हुई चांदी और बल्लूरा वग़ैरा से और रद किया उनकी बातों को ख़ुदा के तूल व अर्ज़ के मुताल्लिक़ और तरदीद की उनके उस क़ौल की कि जब तक क़ुलूबे इन्सानी की वाबस्तगी ख़ुदा की किसी कैफ़ियत और इस्बाते हैअत से न होगी वुजूदे सानेअ साबित न हागा। अमीरूल मोमिनीन ने बयान फ़रमाया कि वह वाहिद है बग़ैर किसी कैफ़ियत के और क़ुलूब उसको बग़ैर क़िसी सूरत और हद के पहचानते हैं।

फिर अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह वह है कि बलन्द से बलन्द हिम्मतें उस तक नहीं पहुच सकतीं और न अक़्ल व फ़हम की गहराइयां उसको पा सकती हैं उसके लिये शुमार किया हुआ कोई वक़्त है और न कोई सिफ़त मुअय्यन है यानी उसकी ज़ात के साथ कोई सिफ़त महदूद सूरत में नहीं है फिर फ़रमाया वह अशिया में हुलूल किये हुए नहीं। इस लिये उसके लिये यह नहीं कहा जाता कि वह फुलां शै के अन्दर है और न वह अशिया से दूर है पस उसके लिये यह नहीं कहा जाता कि वह फंला शै से जुदा है।

अमीरूल मोमिनीन अ० ने इन दो कलमों से उस से एराज़ व अजसाम की नफी करदी। क्योंकि अजसाम की सिफ़त एक दूसरे से दूर होना और अलग रहना है और एराज़ की सिफ़त है कि अजसाम के अन्दर हुलूल किए हुवे हों और अजसाम से अलग न हों फ़िर हज़रत ने फ़रमाया कि उसका इल्म तमाम चीज़ों को घेरे हुए है और उसकी सनअत ने हर शै को मज़बूत किया है अशिया में एहाता व तदबीर से पाया जाता है न कि उनसे मुत्तसिल होकर।

2. इमाम जाफ़रे सदिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का नाम मुबारक है उसका ज़िक्र बलन्द है और उसकी सना बुजुर्ग है वह लाएक़े तसबीह व तक़दीस है वाहिद व यगाना है। हमेशा से है हमेशा रहेगा वह अव्वल है वह आख़िर है वह ज़ाहिर है वह बातिन है वह अव्वल है मगर उसकी अव्वलियत की इब्तेदा नहीं, वह अपने मरतबे में सबसे बलन्द है बलन्द अरकान और बलन्द बुनयाद और अज़ीम कुव्वत वाला नेमतों का आम करने वाला, तारीफ़ करने वाले उसकी सिफ़त की हक़ीक़त बयान करने में आजिज़ हैं और उसकी उलूहियत की मारेफ़त को उठाने की ताक़त नहीं रखते। उसके अख़्तियार को महदूद नहीं कर सकते क्योंकि कैफ़ियत (तग़य्युर व तबद्दुल) का उससे ताल्लुक़ नहीं।

3. फ़तह बिन यज़ीद जोजानी से मनकूल है कि जब मैं मक्के से ख़ुरासान वापस हो रहा था तो इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से राह में मुलाक़ात हुई मैने हज़रत से

सुना जो अल्लाह से डरता है लोग उससे डरते हैं और जो अल्लाह की इताअत करता है लोग उसकी इताअत करते हैं मैने चूंकि पूरा मतलब नहीं समझा था लेहाज़ा दूसरे वक़्त हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम किया। आप ने जवाब दे कर फ़रमाया ऐ फ़तह जो ख़ुदा को राज़ी रखता है मख़लूक़ की नाराज़गी की परवाह नहीं करता और जिसने ख़ालिक़ को नाराज़ किया तो ख़ुदा नाराज़ मख़लूक़ को उस पर मुसल्लत करता है ख़ालिक़ की तारीफ़ वैसी ही करनी चाहिये जैसी ख़ुद उसने अपनी तारीफ़ की है कहा तारीफ़ हो सकती है उस ज़ात की जिस के इदराक से हवास आजिज़ हैं और औहाम उसको पा नहीं सकते ख़तराते क़ल्बी उसकी हद बन्दी कर नहीं सकते बीनाइयां उसको देखने से क़ासिर हैं तारीफ़ करने वाले जितनी उसकी तारीफ़ करते हैं उसकी शान उस से कहीं बलन्द व बरतर है वह बा–वजूद क़रीब होने के दूर है और बा–वजूद दूर होने के क़रीब है दूरी में कुरबत और कुरबत में दूरी है वह कैफ़ियतों का पैदा करने वाला है पस किसी कैफ़ियत से उसका क्या ताल्लुक़? वह जगह का पैदा करने वाला है पस वह किसी जगह में क्यों हो उसके लिये न कैफ़ियत है न मकानियत।

4. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया एक रोज़ अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम मिम्बरे कूफ़ा पर ख़ुत्बा बयान फ़रमा रहे थे कि ज़ालब नामी जो एक मर्दे बलीग़ और दिलेर था खड़े होकर कहने लगा। ऐ अमीरूल मोमिनीन क्या आप ने अपने रब को देखा है

फ़रमाया वाये हो तुझ पर मैं बिन देखे की इबादत कैसे करता। उसने पूछा फिर आप ने उसको कैसा देखा। फ़रमाया ऐ ज़ालब उसको उन आँखों से नहीं देखा जाता। बल्कि उसको क़ल्ब ने हक़ाएक़े इमान के साथ देखा है वाये हो तुझ पर ऐ ज़ालब बड़ा लतीफ़ है लेकिन ऐसी लताफ़त नहीं कि बयान में आ सके और बड़ी अज़मत वाला है लेकिन ऐसी अज़मत नहीं जिस का वस्फ़ बयान हो सके वह साहबे किब्र व किबरिया है लेकिन न ऐसा कि उसका तकब्बुर बयान में आ सके वह हर शै से पहले है और हर शै के बाद है लेकिन यह नहीं कहा जाता कि कोई शै उसके बाद है उसने अशिया को ख़ल्क़ किया लेकिन पाने वाली हिम्मत से नहीं न मक्र व फ़रेब को उसकी मशीयत में राह है वह हर शै में है लेकिन किसी चीज़ से मिला हुआ नहीं और न जुदा है ज़ाहिर है लेकिन इस तरह नहीं जैसे अजसाम ज़ाहिर होते हैं वह रौशन है लेकिन यह रौशनी उस तरह नहीं दिखाई जाती जिस तरह चाँद (हिलाल) को अबरू पर हाथ रख कर देखते हैं वह दूर है मगर ब—लेहाज़े मसाफ़त क़रीब है लेकिन न ब—लेहाज़े जगह लतीफ़ है न ब—लेहाज़े जिस्म मौजूद है लेकिन अदम के बाद नहीं फाएल है लेकिन इज़्तेरारी सूरत से नहीं और न इरादे की हरकत से सुनने वाला है लेकिन आले से नहीं देखने वाला है लेकिन किसी अज़ो से नहीं, जगह उसको घेरती नहीं, औक़ात के तअय्युन का उससे ताल्लुक़ नहीं, उसकी सिफ़ात की हद नहीं, नींद और पेंग का उससे ताल्लुक़ नहीं, उसका वजूद औक़ात से क़ब्ल है और अदम से उसके वजूद का ताल्लुक़ नहीं वह अज़ली है मशाइर

यानी हवास (चश्म व गोश) उसके ख़ल्क़ करने से पहचाने गये और यह जाना गया कि इन हवास का उससे ताल्लुक़ नहीं और जवाहिर (अनासिर वग़ैरा) उसके पैदा करने से ज़ाहिर हुए वह ख़ुद कोई जौहर नहीं और अशिया के दरमियान तज़ाद ने बताया कि वह किसी चीज़ के क़रीन नहीं, जैसे नूर की ज़िद ज़ुलमत है, ख़ुश्क की तर और सख़्त की नर्म, सर्द की गर्म, वह ज़िद कुव्वतों को एक दूसरे से मिलाने वाला है और मिली हुई को जुदा करने वाला है और उनका अलग होना उसकी दलील है कि कोई उनका जुदा करने वाला है और उनका मिलाना उसकी दलील है कि कोई उनका मिलाने वाला है फरमाता है और हर शै से हम ने जोड़ा पैदा किया ताकि तुम याद करो, उससे क़ब्ल और बाद में तफ़रीक़ की ताकि लोग जान लें कि न उसके लिये क़ब्ल है न बाद और मुतज़ाद चीज़ों को मिला कर एक मिज़ाजे शख़्सी बनाना उसकी दलील है कि कोई बनाने वाला है और औक़ाते मुअय्यना का होना दलील है उसकी कि वक़्त और ज़माने का पैदा करने वाला कोई है और बाज़ चीज़ का हिजाब बनना बाज़ के लिये उसकी दलील है कि ख़ुदा और मख़लूक़ के दरमियान कोई हिजाब नहीं और वह रब था उस वक़्त भी जब कोई मरबूब न था और माबूद था उस वक़्त भी जब कोई इबादत करने वाला न था और आलिम था उस वक़्त भी जब कोई मालूम न था और सुनने वाला था उस वक़्त भी जब कि कोई मसमूअ न था।

5. इस्माईल बिन कुय्यबा से मरवी है कि मैं और ईसा

बिन शलक़ान हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। आप अ० ने कलाम की इबतेदा यूं फ़रमायी कि ताज्जुब है उन लोगों पर जो अमीरूल मोमिनीन के मुताल्लिक़ ऐसे कलाम को मन्सूब करते हैं जो हज़रत ने कभी बयान ही नहीं फ़रमाया। आप अ० ने कूफ़े में लोगों के सामने बयान फ़रमाया कि हम्द है उस ख़ुदा के लिये जिस ने अपने बन्दों के दिलों में अपनी हम्द का इलहाम किया और अपनी रूबूबियत की मारेफ़त पर उनको पैदा किया उसकी मख़लूक़ उस के वजूद की दलील है और उसकी मख़लूक़ का हादिस होना उसको अज़ली होने का सुबूत और मख़लूक का बाहम मुश्बेह होना उसकी दलील है कि उसकी ज़ात के लिये मुशाबेहत नहीं। उसकी आयात उसकी कुदरत की गवाह हैं सिफ़ात से उसकी ज़ात का पता चलाना ममनूअ है आँखों से उसकी रोयत मुम्किन नहीं। और औहाम उसका एहाता नहीं कर सकते। उसके होने की मुद्दत नहीं। उसकी बक़ा की कोई हद नहीं, हवास उसको पा नहीं सकते, हिजाब उसको रोक नहीं सकते और हिजाब उसके और उसकी मख़लूक़ के दरमियान मख़लूक़ का हादिस होना बताते हैं क्योंकि जिन चीज़ों का इमकान मख़लूक़ में है ख़ालिक़ की तरफ़ उनकी निसबत मना है और सानेअ व मसनूअ और महदूद करने वाले और रब और मरबूब में फ़र्क़ है वह वाहिद है लेकिन अदद जैसा वाहिद नहीं, वह ख़ालिक़ है लेकिन किसी हरकत के साथ नहीं। वह देखने वाला है लेकिन किसी आले व अज़ो से नहीं, वह सुनने वाला है मगर किसी आले के ज़रिये से नहीं वह हाज़िर है लेकिन चीज़ से मस होने

वाला नहीं।

वह बातिन है लेकिन किसी चीज़ के अन्दर छिपा नहीं हां ज़ाहिर के मानी यह हैं कि वह जुदा है लेकिन ब-लेहाज़े मसाफत नहीं उसका अज़ली होना अफकार की जौलांगाह से दूर है और उसका दवाम उकूले इन्सानी की दस्तरस से बाहर है दूर रस बीनाइयां उसकी कोहना ज़ात तक पहुंचने से आजिज़ हैं और तेज़ परवाज़ औहाम को उसके वजूद ने बेकार बना दिया है पस जिस ने औसाफ़े मख़लूक़ से ख़ालिक़ को मौसूफ किया उसने ख़ुदा के लिये हद मुक़र्रर कर दी (क्योंकि मख़लूक़े ख़ुदा की हर सिफ़त के लिये एक हद है) और जिसने उसके लिये हद बन्दी की। उसने उसे शुमार में ले लिया (यानी एक ख़ुदा दूसरे मक़ाम तीसरे जेहात चौथे वक़्त वग़ैरा) और जिस ने उसे शुमार किया उसकी अव्वालियत को बातिल क़रार दिया। जिस ने कहा कि वह कहां है तो उसने गुमराही अख़्तियार की और एक जगह से दूसरी जगह जाने की ज़हमत को उससे मुताल्लुक़ किया और जिसने कहा कि किस तरह पर है उसने एक जगह को उससे ख़ाली और जिसने कहा किस चीज़ में है उसने उस को किसी चीज़ के बीच में ले लिया।

6. रावी कहता है मैने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से तौहीद के बारे में सवाल किया हज़रत ने अपने क़लम से जवाब लिखा। सज़ावारे हम्द है वह ज़ात जिस ने अपने बन्दों को अपनी हम्द का इलहाम फ़रमाया। फिर फ़रमाया उसके वजूद ने उकूल और औहाम की जौलानियों को बेकार बना दिया है फिर फ़रमाया दीन में सब से

पहली चीज़ ख़ुदा की मारेफ़त है और उसकी मारेफ़त का कमाल उसकी तौहीद है और कमाले तौहीद सिफ़ाते मख़लूक़ की उस से नफ़ी है हर सिफत उस पर गवाह है कि वह मौसूफ़ से अलाहिदा है और यह दोनों उस पर गवाह हैं कि अज़ली नहीं जिस ने कैफ़ियात से ख़ुदा की तारीफ़ की उसने ख़ुदा के लिये हद बन्दी करदी और जिस ने उसे महदूद किया उसने गोया उसे गिन लिया और जिसने शुमार किया उसने अज़ली होने को बातिल क़रार दिया। ज़िस ने उसके मुताल्लिक़ क्योंकर है से सवाल किया उसने मख़लूक़ के औसाफ़ से उसे मौसूफ़ किया जिस ने कहा किस चीज़ में है उसने उस को बीच में ले लिया। और जिसने कहा किस चीज़ पर है वह उससे जाहिल रहा और जिसने कहा वह कहां है उसने एक जगह को उससे ख़ाली क़रार दिया जिसने कहा वह क्या है उसने उसकी तारीफ़ करनी चाही और जिसने कहा कहां तक है उसने हद क़ाएम की वह आलिम था जबकि कोई मालूम न था वह ख़ालिक़ था जबकि कोई मख़लूक़ न थी और वह उस वक़्त भी रब था जब कोई मरबूब न था इस तरह हमारे रब का वस्फ़ बयान होता है उस की ज़ात व सिफ़त बयान करने वालों के वस्फ़ से बालातर है।

7. हारिस आवर से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने बाद अस्र ख़ुतबा पढ़ा लोगों ने उसकी हुस्ने सिफत पर ताज्जुब किया और ख़ुदा वन्दे आलम की अज़मत व जबरूत के मुताल्लिक़ जो बयान फ़रमाया लोग उससे हैरत में आ गये। अबू इसहाक़ कहते हैं मैने

हारिस से कहा क्या तुम ने हज़रत के ख़ुत्बे को याद कर लिया है उस ने कहा मैंने लिख लिया है पस उसने हमें भी लिखवा दिया। वह ख़ुत्बा यह है : हम्द है उस ख़ुदा के लिये जिस के लिये मौत नहीं और जिस की कुदरत के अजाएबात ख़त्म होने वाले नहीं इस लिये कि वह हर रोज़ एक नई ईजाद करता है वह किसी को पैदा करने वाला नहीं। यानी उसका कोई बेटा नहीं कि इज़्ज़त में उस का शरीक हो कि न उसका कोई बाप है कि उसकी मीरास का मालिक हो औहाम का उसकी साख़्त जलाल तक ज़िक्र ही नहीं कि उसके मुताल्लिक़ कोई हलका सा अन्दाज़ भी हो सके न उसकी अव्वलियत की कोई हद है और न उसकी आख़ेरत की। वक़्त ने उस पर सबक़त नहीं की और न ज़माना उससे मुक़द्दम हुआ और ज़्यादती और नुक़सान का उस से तअल्लुक़ नहीं उसका वस्फ़ यूं नहीं किया जाता कि वह कहां है और कैसे है और उसकी कोहना ज़ात बारीक से बारीक चीज़ से ज़्यादा मख़्फ़ी है और उसकी तदबीर की अलामतें जो मख़लूक़ में हैं उकूले इन्सानी उन्हीं की मारेफ़त हासिल करती हैं यही उसकी कुदरत के असरार हैं जिन के मुताल्लिक़ अम्बिया से भी सवाल किया जायेगा पस उस की तारीफ़ न हद के साथ होती है न बाज़ियत के साथ बल्कि उसके फेल की तारीफ़ की जाती है और उसकी आयात उसके कमाले कुदरत की दलील हैं जिन का इन्कार करने वालों की अक़्लें इन्कार कर नहीं सकतीं क्योंकि आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान या उनके ऊपर है सब उसी की सनअत है किस की

ताक़त है कि उसकी कुदरत के अमल को दफ़ा कर सके खुदा अपनी मख़लूक़ से अलग है कोई शै उसकी मिस्ल नहीं। उसने अपनी मख़लूक़ को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है और अपनी इताअत पर उनको कुदरत दी है और अपने अम्बिया व मुरसलीन को भेज कर अपनी हुज्जत बन्दों पर तमाम कर दी पस जिसको हलाक होना था वह नाफ़रमानी करके हलाक हुआ और ख़ुदा के एहसान के साथ जिस को नजात पानी थी नजात पा. गया ख़ुदा के लिये फ़ज़्ल व बुजुर्गी है अव्वल में और आख़िर में बेशक अल्लाह वह है जिसने अपने नफ़्स के लिये हम्द की इब्तेदा की और अपनी हम्द पर दुनिया का ख़ातमा किया और हक़ के साथ लोगों का फैसला किया और हम्द है रब्बुल—आलमीन के लिये।

और हम्द है उस अल्लाह के लिये जिसने किब्र का लेबास बे जिस्म के पहना, जिसने जलाल की रिदा बग़ैर किसी पैकर के ओढ़ी जो अर्श पर ग़ालिब आया। बग़ैर किसी तग़य्युर और किसी ज़वाल के वह अपनी मख़लूक़ से बलन्द व बरतर है बग़ैर उनसे दूरी के और उसका मख़लूक़ से कोई इत्तेसाल नहीं, उसके लिये कोई हद नहीं जो किसी जा पहुच कर ख़त्म हो न उसकी मिस्ल व मानिन्द कोई है कि वह उसके ज़रिये से पहचाना जाये ज़लील हुआ जिसने उसके ग़ैर की कुव्वत को तसलीम किया और हक़ीर हुआ जिसने उसके ग़ैर को बड़ा जाना उसकी अज़मत के सामने हर शै का सर झुका हुआ है और उसकी इज़्ज़त और कुव्वत के सामने हर शै ने अपनी इताअत का इज़हार किया है आँखें

उसके इदराक से थक गयी हैं और ख़लाएक़ की उकूल उसकी सिफ़त की इन्तेहा तक पहुंचने से क़ासिर हैं वह अव्वल है यानी शै से पहले है कोई उससे पहले नहीं है हर शै के बाद है कोई उसके बाद नहीं। वह अपनी कुव्वत से हर शै पर ज़ाहिर से तमाम मक़ामात पर मौजूद है बग़ैर इसके कि किसी जगह की तरफ़ मुन्तक़िल हो छूने वाली कोई चीज़ उसे छू नहीं सकती और कोई हास्सा उसका इदराक नहीं कर सकता और आसमान में भी मौजूद है और ज़मीन में भी। वह बड़ी हिकमत वाला है और बड़ा जानने वाला है उसने जिस चीज़ के बनाने का इरादा किया तो उसे बना दिया। बग़ैर किसी नमूने को सामने रखे और किसी क़िस्म की थकावट का ताल्लुक़ उससे नहीं होता उसने जिस चीज़ की इब्तेदा का इरादा किया तो कर दिखाया और जिन व इन्स में से जिस चीज़ को ईजाद करना चाहा उसे बे रोक टोक पैदा कर दिया ताकि लोग उसकी रूबूबियत को पहचानें और उसकी इताअत पर कुदरत रखें।

और हम ख़ुदा की हम्द करते हैं उसके तमाम महामिद के साथ और उसकी तमाम नेमतों का शुक्रिया अदा करते हैं और नेक उमूर में उससे हिदायत चाहते हैं और बद आमालियों से उसकी पनाह चाहतें हैं और जो गुनाह हम से पहले हो चुके हैं उन की माफ़ी चाहते हैं और इसकी गवाही देते हैं कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद उसके अब्द उसके रसूल स0 हैं उसने उन को हक़ के साथ रसूल स0 बना कर भेजा है जो हक़ की तरफ़ दलालत करता है और हक़ की तरफ़

हिदायत करने वाला है पस आं हज़रत स0 की वजह से ज़लालत से बचे और जेहालत से महफूज़ रहे जिसने अल्लाह और उसके रसूल की उसने पूरी कामयाबी हासिल की और बड़ा सवाब हासिल किया और जिसने ख़ुदा और रसूल स0 की नाफ़रमानी की वह ख़ुले ख़सारे में मुबतेला हुआ ओर दर्दनाक अज़ाब का मुस्तहक़ हुआ। पस फलाह हासिल करो इस तरह कि जो हक़ तुम पर क़ाएम किया गया है उसे ख़ुशी से कुबूल करो और सच्चे दिल से नसीहत को मानो और एक दूसरे की अच्छी तरह मदद करो और सिराते मुस्तक़ीम पर क़ाएम रह कर अपने नफ़्सों की मदद करो और उमूरे मक्र को छोड़ो और अपने दरमियान हक़ का लेहाज़ रखे और एक दूसरे की मदद करो और जाहिल ज़ालिम के हाथों से बचाओ और नेक बातों का हुक्म दो और बुरी बातों से रोको और साहेबाने फ़ज़ीलत की फज़ीलत को पहचानों, ख़ुदा हम को और तुम को हिदायत की पनाह में रखे और तक़वे पर हम को और तुम को साबित क़दम रखे और मैं ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार करता हूँ तुम्हारे और अपने लिये।

तेइसवां बाब

बाबुन्नवादिर

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सवाल किया गया। इस क़ौले ख़ुदा के मुताल्लिक़ हर शै हलाक होने वाली है मगर वह और उसकी वजह, हज़रत ने पूछा। लोग क्या कहते हैं रावी ने कहा वह कहते हैं हर शै हलाक होने वाली है सिवाये रूए अल्लाह के। फ़रमाया

पाक है अल्लाह उससे उन्होंने बहुत बुरी बात कही है अगर चेहरा माना जाये तो जिस्म भी मानना होगा इससे मुराद वह रास्ता है जो ख़ुदा की तरफ़ ले जाने वाला है।

2. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि *कुल्ला शैइन हालेकुन इल्ला वज्हहू* के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि मुराद वह रास्ता है जिस से ख़ुदा की तरफ़ आयें और वह इताअते मोहम्मद है वही वजहुल्लाह है जिस को हलाकत नहीं और वही मुराद है जिस ने अल्लाह के रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की।

3. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मरवी है हम में वह मसानी (दो बार नाज़िल होने वाली सूरत हम्द) जो अल्लाह ने अपने नबी स0 को दी। हम वजहुल्लाह हैं यानी अल्लाह की तरफ़ तवज्जेह की जाती है हम तुम्हारे रू–ब–रू रूए ज़मीन पर आमदोरफ़्त रखते हैं और ऐनुल्लाह हैं ख़ुदा की मख़लूक़ पर, हम बन्दों पर रहमत के लिये ख़ुदा से खुला हुआ हाथ है जिस ने पहचाना उसने हमें पहचाना, जो हम से जाहिल रहा वह जाहिल रहा, हम मुत्तक़ियों के इमाम हैं

4. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत *लिलाहिल्अस्माउल हुसना* के मुताल्लिक़ फ़रमाया हम है अल्लाह के असमाए हुस्ना बग़ैर हमारी मारेफ़त के बन्दों का कोई अमल क़ुबूल न होगा।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ0 ने, अल्लाह तआला ने हक़ को पैदा किया और बेहतरीन सूरत दी और हम को अपने बन्दों में अपनी आँख क़रार दिया और अपनी मख़लूक़ पर लेसाने नातिक़ बनाया और बन्दों पर हम को

दस्त कुशादा क़रार दिया, मेहरबानी और रहमत के लिये अपना "वजह" बनाया। जिस से इस की तरफ़ तवज्जेह की जाती है और हमें अपना दरवाज़ा क़रार दिया जिससे उसकी तरफ़ पहुंचना होता है हम ज़मीन व आसमान में उस के ख़ज़ाना हैं हमारी वजह से दरख़्त फल लाते हैं। हमारी वजह से फल पकते हैं और अनहार जारी होते हैं और हमारी वजह से बादल बरसते हैं और ज़मीन घास उगाती है हमारी इबादत की वजह से ख़ुदा की इबादत हुई। अगर हम न होते तो अल्लाह की इबादत न होती।

6. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस आयत के मुताल्लिक़ *फ़लम्मा आसफ़ून* फ़रमाया कि ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल का अफ़सोस हमारा अफ़सोस। मगर हमारा जैसा नहीं उस ने अपने कुछ औलिया को ख़ल्क़ फ़रमाया है जो नाराज़ होते हैं और राज़ी होते हैं वह ख़ुदा की मख़लूक़ और मरबूब हैं उसने उनकी मर्ज़ी को अपनी मर्ज़ी और उनके गुस्से को अपना गुस्सा क़रार दिया है क्योंकि वह लोगों को उस की तरफ़ बुलाने वाले हैं और गुमराहों को इस तरह हिदायत करने वाले हैं उसी वजह से वह ऐसे क़रार दिये गये। ख़ुदा अपनी मख़लूक़ से जो इत्तेसाल रखता है वह उसी मानी से है इसी लिये उसने (हदीसे कुदसी में) जिसने मेरे वली की एहानत की उसने मुझ से जंग की और मुझे जंग की तरफ़ बुलाया। ख़ुद फ़रमाता है जिस ने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और फ़रमाया जो लोग ऐ रसूल तुम्हारी बैअत करते हैं वह अल्लाह से बैअत करते हैं और फ़रमाया अल्लाह उनके हाथ के

ऊपर है पस और उस जैसी दूसरी आयत से यही मुराद है कि औलिया के काम को ख़ुदा ने अपना काम क़रार दिया है पस ऐसे ही रिज़ा व ग़ज़ब वग़ैरा को समझो अगर रंज और दिल तंगी का ताल्लुक़ ख़ुदा से होता तो उसकी ज़ात में तग़य्युर लाहिक़ होता तो फिर उसके लिये हलाकत भी होती और पैदा करने वाले और पैदा होने वाले में कोई फ़र्क़ न रहता। और क़ादिर व मक़दूर अलैह और ख़ालिक़ व सादिक़ यकसां हो जाते। ख़ुदा उन बातों से बालातर है वह तमाम अशिया का बग़ैर किसी हाजत के ख़ालिक़ है और जब उस के लिये हाजत नहीं तो हद्दे कैफ़ियत भी नहीं पस समझो अल्लाह तआला को।

7. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हम हुज्जतुल्लाह हैं, हम बाबुल्लाह हैं, हम लेसानुल्लाह हैं, हम वजहुल्लाह हैं, हम उसकी मख़लूक़ हैं हम ऐनुल्लाह हैं, हम उसके बन्दों में उलिल अम्र हैं।

8. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं ऐनुल्लाह हूँ मैं जम्बुल्लाह हूँ मैं बाबुल्लाह हूँ।

9. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने आयत *या हसरता अलामा फरत्तो* के मुताल्लिक़ फरमाया जम्बुल्लाह से मुराद अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम हैं और उसी तरह उनके बाद में होने वाले औसिया और यह अम्र उनके आख़िर (हज़रत हुज्जत अ० पर) ख़त्म होगा।

10. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की इबादत (तमाम मख़लूक़ में) की गयी, हम से

अल्लाह की मारेफ़त हुई हम से अल्लाह की वहदानियत क़ाएम हुई और मोहम्मद स0 अल्लाह के हिजाब हैं।

11. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने आयत *व मा ज़लमूना* के मुताल्लिक़ कि ज़ाते बारीए तआला बहुत ज़्यादा बुज़ुर्ग व बरतर और अजल्ल व अरफ़ाअ है उससे कि उस पर जुल्म किया जाये बल्कि उसने अपने नुफ़ूस से मुराद हमारे नफ़्स लिये हैं उसने हमारे ऊपर जुल्म को अपना जुल्म क़रार दिया है और हमारी विलायत को अपनी विलायत बताया है जैसा कि फ़रमाता है *इन्नमा वलीयोकुमुल्लाहो व रसूलोहू वल्लज़ीना आमनू* यानी वह इमाम जो हम में से हैं दूसरे मौक़े पर फ़रमाया *वमा ज़लमूना व ला किन कानू अन्फोसाहुम मज़लेमून*

चौबीसवां बाब

बाबुल्बदाअ

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की इबादत बदअ की बराबर और किसी चीज़ ने नहीं की गयी और बरादियत हश्शाम बिन सालिम, हज़रत ने फ़रमाया बदअ की बराबर अज़मते इलाही का इज़हार और किसी चीज़ से नहीं हुआ।

2. रावी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत का मतलब पूछा *यमहुल्लाहा मा यशाओ व मुसबेतो* फ़रमाया महो हो गयी वही चीज़ जो पहले साबित हो और नही साबित मगर वही चीज़ जो पहले न हो।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने, ख़ुदा ने किसी को नबी नहीं बनाया जब तक तीन बातों का अहद नहीं ले लिया अव्वल इसका इक़रार कि वह अल्लाह का बन्दा है दूसरे ख़ुदा का कोई शरीक नहीं और तीसरे ख़ुदा जिसको चाहता है मुक़द्दम करता है और जिसको चाहता है मोअख़्ख़र करता है।

4. रावी कहता है मैने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सूरए अनआम की इस आयत के मुताल्लिक़ पूछा *व क़ज़ा अजलन व अजलुन मुसम्मा* फ़रमाया मौत दो क़िस्म की होती है एक अजले महतूम यानी जिसका इल्म ख़ुदा के बाज़ बन्दों को हो जैसे अम्बिया क़ो बाज़ लोगों की मौत का वक़्त बता दिया जाता है दोम अजले मौक़ूफ़ जिसका इल्म ख़ुदा के सिवा दूसरे को नहीं होता।

5. रावी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से सूरए मरयम की इस आयत के मुताल्लिक़, हमने इन्सान को मिट्टी से पैदा किया पहले दर आं हालेंकि वह कुछ न था। हज़रत ने फ़रमाया न उसकी कोई सूरत थी न रहम और न इसतिक़रार, फ़िर मैंने सूरए दहर की इस आयत के मुताल्लिक़ पूछा क्या इन्सान पर ऐसा वक़्त नहीं आया कि वह कोई ज़िक्र की हुई चीज़ न था फ़रमाया इल्मे इलाही में था ख़ारिज में कोई वजूद न था।

6. रावी कहता है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को फ़रमाते हुए सुना कि इल्म की दो क़िस्में हैं एक इल्म तो वह है जो ख़ुदा के पास है और

किसी दूसरे को उस पर इत्तेला नहीं और एक इल्म वह है जो उसने मलाएका और मुरसलीन को दिया है और जो उसने फ़रिशतों और रसूलों को इल्म दिया है तो उसमें न वह अपने नफ़्स की तकज़ीब करता है और न अपने मलाएका और मुरसलीन की और जो इल्म उसके पास महफूज़ है उस में वह जिस चीज़ को चाहता है मुक़द्दम कर देता है और जिसे चाहता है मोअख़्ख़र करता है और जिसे चाहता है साबित करता है।

7. रावी कहता है मैने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना कुछ उमूर ऐसे हैं जिन का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है वह जिसे चाहता है मोक़द्दम करता है और जिसे चाहता है मोअख़्ख़र करता है।

8. रावी कहता है फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के इल्म की दो क़िस्में हैं एक इल्मे मकनून व मख़ज़ून है ख़ुदा के सिवा उसको कोई नहीं जानता और उसी से बदाअ का ताल्लुक़ है और एक वह इल्म है जो उसने अपने मलाएका और मुरसलीन व अम्बिया को दिया है हमारे इल्म का ताल्लुक़ इसी से हैं।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि किसी चीज़ में अल्लाह के लिये बदाअ वाक़े नहीं हुआ मगर यह कि उस के ज़ाहिर होने से पहले वह उसके इल्म में था।

10. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा को जिहालत से कभी बदाअ वाक़े नहीं हुआ।

11. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़

अलैहिस्सलाम से पूछा क्या कोई अम्र आज ऐसा है जिसका इल्म एक दिन पहले ख़ुदा को न हो। फ़रमाया नहीं जो ऐसा कहे ख़ुदा उसको ज़लील करेगा। मैने कहा क्या जो कुछ हो चुका है और जो क़यामत तक होने वाला है वह सब इल्मे इलाही में है फ़रमाया बेशक मख़लूक़ के पैदा करने से पहले हर बात का उसको इल्म था।

12. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अगर लोग जानते कि इक़रारे बदाअ में कितना सवाबे अज़ीम है तो वह उसके मुताल्लिक़ गुफतुगू करने से रूगरदानी न करते (क्योंकि वह ईमान बिल ग़ैब है)

13. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि कोई नबी, नबी नहीं बनाया गया मगर पाँच चीज़ों का इक़रार करने के बाद बदाअ, मशीयत, सजदा, बन्दगी और इताअत।

14. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने आगाह किया हज़रत रसूले ख़ुदा स0 को, जब से दुनिया बनी और जब तक ख़त्म न होगी तमाम बातों से और ख़बर दी वक़्ते मोअय्यन पर होने वाली चीज़ों से और मुसतसना किया मा–सिवा को यानी कुछ बातें ऐसी थीं कि जिनका इल्म हज़रत को न दिया गया।

15. रावी कहता है मैने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम को फ़रमाते सुना, ख़ुदा ने नहीं मबऊस किया किसी नबी को मगर यह कि उस पर शराब को हराम किया और बदाअ का उससे इक़रार लिया।

16. रावी ने पूछा क्योंकर जाना अल्लाह ने निज़ामे

मख़लूक़ात को आया इजाद से क़ब्ल इल्म था कि बाद में हुआ। फ़रमाया उसने जाना, इरादा किया, अन्दाज़ा किया, हुक्म दिया, उस को जारी किया, पस जारी किया, जिस का हुक्म दिया और जो हुक्म दिया, उस का अन्दाज़ा किया और जो अनदाज़ा किया वह इरादा किया। पस इल्म के साथ उस की मशीयत है और मशीयत के साथ इरादा है और इरादे के साथ अन्दाज़ा है अन्दाज़े के साथ हुक्म है और हुक्म के साथ इजरा है पस इल्म मुक़द्दम है मशीयत पर, मशीयत का नम्बर दूसरा है और इरादे का तीसरा, और तक़दीर यानी अन्दाज़ा वाक़े होता है हुक्म बिल इजरा पर पस ख़ुदा के लिये बदाअ है इल्म में जबकि उसकी मशीयत हो और उसमें इरादा किया चीज़ों के अन्दाज़ के लेहाज़ से। पस जब क़ज़ा बग़ैर इमज़ा हो तो उस में बदाअ नहीं। पस मालूम का इल्म उस के होने से पहले है मशीयत मन्शा में क़ब्ल उसके वजूद के है। और इरादा मुराद में क़ब्ल उसके क़याम के है और तक़दीर उन मालूमात में क़ब्ल तफ़सील के है और क़ब्ल अजज़ा के मिलने के ज़ाहिरन और ब-लेहाज़े वक़्त और जो क़ज़ा इमज़ा के साथ हो वह मुसतहकम है उनके दूसरे उमूर से जो उन साहेबाने जिस्म से मुताल्लिक़ हों जो हवास से महसूस होते हैं और जो साहेबे वज़न व रंग व नाप हैं और उनमें दाख़ेला है इन्स व जिन, परिन्दों और दरिन्दों वग़ैरा का जो हवास से उनका इदराक होता है तो अल्लाह के लिये उनमें बदाअ होता है जिन का वजूद नहीं और जब ग़ैरे मफ़हूम मुदरिक ब-हवास हो तो बदाअ नहीं। ख़ुदा जो

चाहता है वह करता है पस अपने इल्म से उसने अशिया को जाना उनके पैदा होने से क़ब्ल और मशीयत से उनकी सिफ़ात को पहचाना और उनके हुदूद व इन्शा को क़ब्ल उनके ज़ाहिर करने के और इरादे से जुदा किया उनके नफ़्सों को उनके ऐवान से और सिफ़ात से और तक़दीर से अन्दाज़ा किया। उनकी रोज़ियों का और पहचाना गया उनका अव्वल उनके आख़िर से और क़ज़ा से जुदा किया उन लोगों को उनके अमाकिन से और उनकी तरफ़ हिदायत की और इमज़ा से उनके असबाब की शरह की और उनके अम्र को ज़ाहिर किया यह है अज़ीज़ व हकीम ख़ुदा की तक़दीर।

तौज़ीह : क़ब्ल इसके कि हम मसअलए बदाअ पर थोड़ी सी रौशनी डालें इन इस्तेलाहों का मफ़हूम बयान करना ज़रूरी है जो मज़कूरा बाला अहादीस में मज़कूर है ईजादे काएनात से ताल्लुक़ रखने वाली छः चीज़े हैं।

अव्वल : इल्म यानी इल्मे इलाही है हर शै अपनी ख़िलक़त से क़ब्ल थी इल्मे इलाही बिज़्ज़ात में नक़्स और ज़्यादती से उसका ताल्लुक़ नहीं मलाएक और मख़सूस बन्दों को बाज़ का इल्म दिया गया बाज़ का नहीं ताकि वह इल्म में उसके मोहताज रहें।

दूसरे : मशीयत यानी ख़्वाहिशे निज़ामे आलम मसलन उसने पहले पानी ईजाद किया जो तमाम अजसाम का मादा है जैसा कि फ़रमाता है *व जअल्ना मिनल्माए कुल्ला शैइन हई* और अजसामे माद्दिया से अशियाए काएनात को इजाद किया।

तीसरे : इरादे और मशीयत के बाद उस पानी से किसी दूसरे अम्र के अमल में लाने का क़स्द है मसलन उस पानी को ख़ुशगवार बनाया ताकि उससे एहले जन्नत और अहले इताअत को बनाये और बाज़ पानी खारी बनाया कि उससे अहले जहन्नम और एहले मासियत को बनाये।

चौथे : तक़दीर यानी इरादे की ताकीद फ़ेले दीगर के लिये ताकि निज़ामे काएनात की बुनियाद क़ाएम हो मसलन ज़मीन व आसमान का इस तरह ईजाद करना कि उन से रात और दिन पैदा हों और उनमें छः माह के दिन साल में रातों से बड़े हों और छः माह की रातों से छोटे और उनसे चार फ़स्लें बनें ताकि उनसे लोगों को रिज़्क़ हासिल हो यह है अन्दाज़े इलाही जिस पर अमल हो रहा है।

पाँचवें : क़ज़ा और उसका ताल्लुक़ निज़ामे आलम की बक़िया तमाम चीज़ों से है यानी इन्सान का मुकल्लफ़ बनाना, अम्बिया की बेअसत किताबों का नाज़िल करना वग़ैरा।

छटे : इमज़ा यानी निज़ामे आलम का बाक़ी रखना उस वक़्त तक कि उसका फ़ाएदा मुरत्तब हो।

ख़ुलासा : यह है कि अव्वल इल्मे इलाही है दूसरे मशीयत, तीसरे इरादा, चौथे तक़दीर, पाँचवे क़ज़ा, छटे इमज़ा यानी इस आलिम कौन व फ़साद में जो उमूर वाक़े हो रहे हैं वह मज़कूरा बाला चीज़ों के तहत हैं उनमें बाज़ का इल्म ख़ुदा ने अपने बन्दों को दिया है

बाज़ का नहीं। पस जो अम्र बन्दों के इल्म व गुमान के ख़िलाफ़ ज़हूर में आये उसको बदाअ कहते हैं।

मसलाए बदाअ : यहूदियों का अक़ीदा यह है कि दुनिया को एक बार ईजाद करने के बाद ख़ुदा मोअत्तल हो गया अब वह कुछ नहीं करता। कुरआन उसकी हिकायत यूँ करता है यहूदियों ने कहा *यदुल्लाहे मग़लूलह* (ख़ुदा के हाथ बन्धें हुए हैं) जवाब में फ़रमाता है उन्हीं के हाथ बन्धें, उनकी उस गुफ़्तार पर लानत "बल यदा मब्सूततान" (बल्कि ख़ुदा के हाथ तो खुले हुए हैं) "कुल्ला यौमिन होवा फ़ी शान" (हर रोज़ उसकी एक नई शान) फलासेफ़ा का अक़ीदा यह है कि ख़ुदा ने सब से पहले अक़्ल को पैदा किया, अक़्ले अव्वल ने अक़्ले दोम को इसी तरह उक़ूले अशरा की ख़िलक़त हुई और वही दुनिया का कारोबार चलाने वाले हैं। ख़ुदा का अब किसी काम से ताल्लुक़ नहीं। इस्लाम के नज़दीक यह दोनों अक़ीदे बातिल हैं हक़ीक़त यह है कि जो अफ़आल इन्सान के इरादे व अख़्तियार से मुताल्लिक़ हैं ख़ुदा का उन से कोई ताल्लुक़ नहीं अलबत्ता अच्छे और बुरे अफ़आल की जज़ा और सज़ा का ताल्लुक़ उस से है नीज़ यह कि ऐसे ही उमूर में बदाअ वाक़ेयअ होता है यानी जो बात बन्दों के वहम व गुमान में नहीं होती, ख़ुदा की तरफ़ से वह ज़ाहिर की जाती है। इल्मे इलाही की दो सूरतें हैं एक का नाम लौहे महफ़ूज़ है यानी वह उमूर जिन का इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को है ही नहीं दूसरे लौहे महो व इस्बात ("*यम्हुल्लाह मा यशाओ व युस्बेतो व इन्दहू उम्मुल्किताब*") है। फरिशतों और अम्बिया का इल्म उसी

से मुताल्लिक़ है उसमें कमी बेशी होती रहती है लेकिन उस का इल्म ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे को नहीं होता यह तबदीली किसी ख़ास मसलेहत की बिना पर किसी शर्त के तहत वाक़े होती है इस शर्त का इल्म अम्बिया और मलाएका को नहीं होता। मसलन लौहे महो व इस्बात में एक शख़्स की उम्र पचास साल है अम्बिया के इल्म का ताल्लुक़ चूंकि इसी लौह से है लेहाज़ा एक नबी उसी इल्म की बिना पर किसी को यह ख़बर देता है कि वह फ़लां वक़्त मर जायेगा लेकिन वह नहीं मरता जिस की वजह यह है कि उस मर्ग के साथ इल्मे इलाही में एक शर्त थी जिसका इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को न था और वह शर्त यह थी कि अगर वह शख़्स सदक़ा देगा तो यह बला हट जायेगी यह सिले रहम करेगा तो उसकी उम्र इतने साल बढ़ जायेगी चुनानचें जब यह सूरत पेश आती है तो उसको बदाअ कहते हैं उससे एक तो यह मालूम होता है कि ख़ुदा मोअत्तल नहीं वह अपने इल्म बिज़्ज़ात का इज़हार करता रहता है दूसरे यह पता चले कि अल्लाह और बन्दों के इल्म में क्या फ़र्क़ है तीसरे जिस मसलेहत की बिना पर बदाअ हुआ है लोगों को उससे फ़ाएदा पहुंचे। चौथे अम्बिया उसकी तरफ़ अपने इल्म में मौहताज रहें और यह कहते रहें *रब्बे ज़िद्नी इल्मा*।

बदाअ से न ख़ुदा का इल्म लाज़िम आता है न पहले अमल पर पछताना या अपनी ग़लती का एहसास करके उसकी इसलाह करना जैसे कि हज़रात एहले सुन्नत ने बदाअ का ग़लत मफ़हूम समझ कर हम पर

एतेराज़ किया है। माज़अल्लाह बदाअ की यह सूरत हो तो ज़रा बतायें कि शरीअतों का मन्सूख़ करना क्या माज़अल्लाह उस बिना पर था कि ख़ुदा ने पहले अहकाम में ग़लती की थी और उनकी इसलाह के लिये दूसरी शरीयत भेजी। पस जो मसलेहत नसख़े शरअए में होती है उसी तरह की कोई मसलेहत बदाअ में होती है बदा की बहुत सी मिसालें कुरआन में मौजूद हैं जैसे मूसा अ० से तीस रात के वादे के बाद चालीस रात करना, क़ौमे यूनुस पर अज़ाब की ख़बर दे कर फ़िर अज़ाब न लाना, ज़िब्हे इसमाईल को ख़वाब में दिखाना फिर बचा लेना वग़ैरा। बदाअ की मुकम्मल बहस, हमारे रिसाले "मसलए बदाअ व इसमते अम्बिया" में देखो।

पच्चीसवां बाब

सात चीज़ों के बग़ैर आसमान व ज़मीन में कुछ पैदा नहीं हो सकता

1. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, आसमान व ज़मीन में कोई शै बग़ैर उन सात ख़सलतों के हो नहीं सकती, मशीयत, इरादा कुदरत, कज़ा इज़्न, किताब, अजल, जिन का गुमान यह हो कि उन में से किसी एक को तोड़ दे गा तो उसने कुफ़्र किया।

तौज़ीह : हदीस में मज़कूर का मतलब यह है कि बन्दों का कोई फेल ख़्वाह ज़मीन में हो या आसमान में नहीं होता मगर उन सात सिफतों से।

अव्वल : मशीयत यानी हर अम्रे हादिस के मुताल्लिक़ तदबीर उन में बन्दों का फ़ेल या तर्के फ़ेल भी दाख़िल है। पस सब से पहले मशीयते बारी का ताल्लुक़ ख़िलक़ते आब से हुआ। यह मादा है सब से पहली चीज़ है।

दूसरे : इरादा यह कि एक के बाद दूसरी तदबीर है जो माद्दे से किसी चीज़ को पैदा करने में मशीयत की मद्दगार हो यानी बन्दों के दिल में फेल या तर्के की तहरीक पैदा होना यानी पहले किसी अम्र की ख़्वाहिश होना फिर उस फ़ेल का इरादा।

तीसरे : क़द्र यानी सुदूरे फेल से पहले अन्दाज़ा करना कमी या ज़्यादती का।

चौथे : क़ज़ा यानी जिस का इरादा किया है उसे पूरा करना।

पाँचवें : इज़्न यानी बन्दों को अफ़आल पर कुदरत देना।

छटे और सातवें : किताब व अजल यानी कुरआन व क़यामत यानी कुरआनी अहकाम के मुताबिक़ अमल और अमल की जज़ा व सज़ा क़यामत।

2. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कोई चीज़ आसमानों और ज़मीन में नहीं हुई मगर सात चीज़ों से क़ज़ा व क़द्र व इरादा व मशीयत और किताब व अजल व इज़्न, जो इसके ख़िलाफ़ समझने वाला है उसने अल्लाह पर झूठ बोला या क़ौले ख़ुदा को रद करने वाला बना।

हक़ीक़त यह है कि इलाहियात के मसाएल बहुत दक़ीक़ हैं अवाम का क्या ज़िक्र ख़वास के लिये भी समझना मुशकिल है मज़कूरा बाला अहादीस में जो सात बातें बयान की गयी हैं उनके दरमियान बहुत बारीक फ़र्क़ है जिसको समझाने के लिये बहुत से औराक़ दरकार हैं। हम ने चूकि तरजुमे की ज़िम्मादारी ली है न कि शरह की। लेहाज़ा जहां जहां ज़्यादा ज़रूरते तौज़ीह होती है वहां मुख़तसर वज़ाहत ज़रूर कर देते हैं इस मक़ाम पर इतनी बात ज़रूर समझ लेनी चाहिये कि फ़िलासेफ़ा और ज़नादेक़ा का अक़ीदा यह है कि माद्दा अपने अजज़ा, ख़ुद फ़राहम करके चीज़ों को हैअते तरक़ीबी देता चला जाता है न उसको किसी के अम्र व इरादे की ज़रूरत है न क़ज़ा व क़द्र की। लेहाज़ा उन अहादीस में यह वाज़ेह किया गया है कि दुनिया की हर चीज़ यह बताती है कि उस में किसी साहबे कुदरत फ़ाएल के इरादे, हुकम के अन्दाज़ा और ख़्वाहिश वग़ैरा को दख़ल है।

छब्बीसवां बाब

बाबे मशीयत व इरादा

1. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कोई शै नहीं हुई मगर जब अल्लाह ने चाहा, इरादा किया, अन्दाज़ा किया और वजूद में लाया, रावी कहता है मैने पूछा मशीयत के क्या मानी हैं फ़रमाया आग़ाज़े फ़ेल यानी तदबीर हर हादिस है वक़्ते एहदास मैने कहा इरादा के क्या मानी है? फ़रमाया वह बाक़ी रहता है

किसी चीज़ के एहदासे फ़ेल पर, मैने कहा तक़दीर क्या है फ़रमाया अन्दाज़ा करना किसी चीज़ के तूल व अज़ वग़ैरा का फिर मैने पूछा क़ज़ा के क्या मानी हैं वह तै करता है किसी चीज़ के पेदा करने को।

2. रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि बन्दों से जो अफ़आल सरज़द होते हैं क्या उन में ख़ुदा की मशीयत, इरादा, और क़ज़ा व क़द्र को दख़्ल है और आया वह उस को दोस्त भी रखता है फ़रमाया नहीं रावी ने कहा। जब वह दोस्त ही नहीं रखता तो फिर मशीयत और इरादे का ताल्लुक़ क्यों है फ़रमाया हम पर ऐसा ही ज़ाहिर हुआ है।

कुरआन में बहुत सी आयात हैं जिन से ज़ाहिर होता है कि अफ़आले इन्सानी हत्ता कि मआसी से भी मशीयत व इरादा का ताल्लुक़ है जैसे आयत *व लौ शाअल्लहो मक़ततलू 2/253* अगर अल्लाह चाहता तो वह क़िताल नहीं करते (अल बक़रा) और सूरए हूद में फ़रमाता है (अगर अल्लाह गुमराह करना तुमको चाहे तो मेरी नसीहत तुम्हारे लिये मुफीद नहीं हो सकती और सूरए दहर और तकवीर में फ़रमाया *व मा तशाऊना इल्ला अन यशाअल्लाह* (तुम नहीं चाहते मगर वही जो अल्लाह चाहता है) लेकिन मआसी को वह दोस्त नहीं रखता जैसा कि फ़रमाता है *ला युहिब्बुल्लाहुल्जहरा बिस्सू* (ख़ुदा बुराई के इज़हार को दोस्त नहीं रखता) और फ़रमाता है *इन्नल्लाहा मुहिब्बुत्तव्वाबीन* ख़ुदा तौबा करने वालों को दोस्त रखता है।

3. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

अल्लाह ने हुक्म दिया, मगर चाहा नहीं और कहीं चाहा है और हुक्म नहीं दिया जैसे इबलीस को सजदए आदम अ0 का हुक्म तो दिया और चाहा यह कि वह सजदा न करे अगर चाहता कि सजदा करे तो ज़रूर करता और आदम अ0 को दरख़्ते मम्नूआ खाने से मना किया और चाहा कि यह आदम अ0 खा लें अगर न चाहता तो आदम हर गिज़ न खाते।

तौज़ीह : मशीयत का ताल्लुक़ हर उस चीज़ से है जो वाक़ेअ हो और अम्र का ताल्लुक़ है ताक़त से है ख़्वाह वाक़ेअ हो या न हो। ब–लेहाज़े दीगर ख़ुदा ने इबलीस को सजदे का हुक्म दिया वह बजा न लाया और गुनाहगार रहा लेकिन मशीयते ईज़दी में गुज़र चुका था कि वह सजदा न करेगा लेकिन अगर वह चाहता कि इबलीस सजदा ज़रूर करे तो इबलीस की क्या ताक़त थी कि वह सजदा न करता उसी तरह आदम अ0 को मना किया समरे दरख़्त न खाने से और बे शुमार मसालेह की बिना पर चाहा कि खा ले चुनान्चें खा लिया अगर वह चाहता कि न खायें तो आदम खा न सकते।

4. रवायत है कि इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा के दो इरादे और दो मशीयतें हैं इरादा ख़त्म और इरादा अज़्म। वह एक अम्र को मना करता है दर आं–हालेकि उसकी मशीयत होती है और वह हुक्म देता है दर आं–हालेकि मशीयत नहीं होती। क्या तुमने ग़ौर नहीं किया कि उसने आदम अ0 व हव्वा को दरख़्त का समर खाने से मना किया दर आं हालेकि उसकी मशीयत थी अगर न होती तो वह न खाते क्योंकि

उनकी मशीयत, मशीयते ख़ुदा पर ग़ालिब न आ सकती थी इसी तरह इब्राहीम अ0 को ज़िब्हे इसहाक़ का हुक्म दिया गया लेकिन उनके ज़िब्ह करने में मशीयत न थी अगर मशीयत होती तो मशीयते इब्राहीम मशीयते ख़ुदा पर ग़ालिब नहीं आ सकती थी।

इरादा व मशीयत मुतलाज़िम हैं लेहाज़ा इस हदीस में एक बयान पर इकतेफ़ा की गयी।

तौज़ीह : इरादा हतमी से मुराद यह है कि बन्दों को उसके मुराद की ज़िद पर कुदरत न हो और इरादए अज़्म वह है कि बन्दों को ज़िदे मुराद पर कुदरत हो *यन्ही व होवा यशाअ* मिसाले मशीयत अज़्म है क्योंकि ताल्लुक़ ख़तमे इलाही का *मन्ही अन्हो* से मुहाल है और *यामुरू ला यशाओ* मिसाले मशीयत ख़त्म की है इस लिये ला यशा के मानी यह होंगे यशाए अदमा (वह उसका अदम चाहता है और अल्लाह की जानिब से मामूर बिही के अदम की मशीयत दो क़िस्म पर है और मशीयते हतम और मशीयते अज़म यहां मुराद क़िस्मे अव्वल और अदमे मामूर बिही से हतम इलाही का ताल्लुक़ मुम्किन है यानी ज़िब्ह के मानी है रगे गरदन का काट देना, पस ज़िब्हा उस हैसियत से मामूर बिही है और ग़ैर मामूर बिही है दूसरी हैसियत से और अदमे ज़िब्ह की सूरत में मशीयते हतमिया इलाही का ताल्लुक़ है दूसरी हैसियत से मुम्किन है लेहाज़ा अम्रे ज़िब्हा मन्सूख़ नहीं हुआ और इब्राहीम अ0 का जो ज़िब्ह का मामूर बिही था उस को बजा लाये और उनकी मशीयत, मशीयते इलाही पर ग़ालिब न हुई उसकी सूरत यह है कि इब्राहीम अपने दिल में चाहते थे

कि बेटे का गला न कटे और इब्ने बाब्बैह ने किताब अल ख़ेसाल में लिखा है कि ज़िब्ह करना चाहते थे ताकि उस मुसीबत पर सब्र का अज्र मिले, इब्राहीम को ख़ुदा ने ज़िब्ह का हुक्म दिया और मशीयत अज़्मे ज़िब्ह के लिये न हुई यानी मशीयत थी अदमे ज़िब्ह पर अगर मशीयत का अज़्म ज़िब्ह कराना होता तो मशीयते इब्राहीम, मशीयते ख़ुदा पर ग़ालिब न आ सकती थी।

तौज़ीह नम्बर–2 : इस हदीस से ऐसा मालूम होता है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ग़लती की, क्योंकि वह मामूर हुए ज़िब्हे इसहाक़ पर और उन्हों ने आग़ाज़ किया ज़िब्हे इसमाईल से इस तावील की बिना पर कि उन्होंने ख़्वाब में इसमाईल को ज़िब्ह करते देखा है हालां कि ज़िब्हे इस्हाक़ अ0 से रूगरदानी करना उनकी वालिदा सारा के ख़ौफ़ से था इस एतराज़ का दफ़ा यूं होगा कि ज़िब्ह का हुक्म सराहतन इसहाक़ के लिये न होगा बल्कि ज़िब्हे फ़रज़न्द के लिये मामूर होंगे ख़्वाह वह हो जो मौजूद हो या वह हो जो मौजूद नहीं है यानी अभी पैदा नहीं हुआ। (इसहाक़) मुवाफ़िक़े अदब यह होना चाहिये था कि इस हुक्म की सूरत में इब्राहीम अ0 मामूर बिही–फरज़न्द के तअय्युन का इन्तेज़ार करते लेकिन इब्राहीम ने ऐसा न किया और महज़ ख़्वाब की बिना पर इसमाईल का ज़िब्ह शुरू कर दिया। लेहाज़ा इस की सूरत यह होगी कि मामूर हुए ज़िब्हे इसहाक़ अ0 पर लेकिन उसको तर्क कर दिया हो। पस इस सूरत में ज़िब्हे इसहाक़ के हुक्म का इसतेमाल बतौरे मजाज़ होगा इस बिना पर सूरए साफ़्फ़ात में इसमाईल का यह

क़ौल *या अबतिफ़्अल मा तूमर* (ऐ पदर जो हुक्म आप को दिया गया है वही बजा लायें) इस अम्र का इज़हार होगा कि जिन तलब के साथ अपने को बचाना चाहो यानी ज़िस के (इसहाक़) ज़िब्ह का हुक्म हो। वही कीजिये लेकिन यह तावील ग़लत है क्योंकि आयत में साफ़ अज़बहोका मैं तुझ को ज़िब्ह करता हूँ मौजूद है। ख़ुलासा यह है कि इस बारे में रवायात मुख़तलिफ़ हैं कि ज़िब्ह का ताल्लुक़ इसहाक़ से था या इसमाईल से। लेहाज़ा मुसन्निफ़े काफ़ी ने ज़िब्हे इसहाक़ वाली रवायत को तरजीह दी।

ख़ुलासा इस बहस का यह है कि ख़ुदा वन्दे आलम बिना बर किसी मसलेहत के एक अम्र का हुक्म देता है लेकिन उसकी मशीयत उसके वुक़ूअ से मुताल्लिक़ नहीं होती। मसलन उसने इब्राहीम अ0 ज़िब्हे फ़रज़न्द का हुक्म तो दिया लेकिन ज़िब्ह होना चाहा नहीं लेहाज़ा ज़िब्ह की सूरत गो सादिक़ आ गयी यानी गरदन पर छुरी तो चली मगर हक़ीक़तन ज़िब्ह वाक़े न हुआ क्योंकि मशीयते इज़दी उस से मुताल्लिक़ न थी इब्राहीम झूठे भी क़रार न पाये क्योंकि ख़्वाब की तसदीक़ उन्होने की है लेकिन चूंकि ख़ुदा की मशीयत पर उनकी मशीयत ग़ालिब न आ सकी थी लेहाज़ा वही हुआ जो ख़ुदा ने चाहा।

5. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा ने चाहा और इरादा किया हर चीज़ के वुक़ूअ का लेकिन बाज़ को दोस्त न रखा और बाज़ से राज़ी न हुआ। शाअ के मानी यह हैं कि कोई शै नहीं होती।

मगर उसके इल्म व इरादा से और वह दोस्त नहीं रखता इस बात को कि कहा जाये कि वह तीन में तीसरा है जैसा कि नसारा कहते हैं क्योंकि वह अपने बंदों के कुफ्र पर राज़ी नहीं।

6. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने हदीसे कुदसी में कहा ऐ इब्ने आदम अ0 मेरी मशीयत से तू इस क़ाबिल बना कि अपने नफ़्स के लिये जो चाहता है कर लेता है मेरे कुव्वत देने से तूने अपने फ़राएज़ को अन्जाम दिया और मेरी नेमतों की वजह से तू मेरी ना–फ़रमानी पर क़वी दिल बना। मैने तुझे सुनने वाला और देखने वाला और कुव्वत वाला बनाया। जो अच्छाइयां तुझ को हासिल हुई वह अल्लाह की तरफ़ से जान और जो बुराईयां तुझ से मुताल्लिक़ हुई उनको अपने नफ़्स की तरफ़ से समझ, तेरी नेकियों का मैं तुझ से ज़्यादा हक़दार हूँ तू अपने गुनाहों का मुझ से ज़्यादा हक़दार है मैं जो कुछ करता हूँ मुझ से पूछ गछ नहीं हो सकती अलबत्ता बन्दों से सवाल होगा।

सत्ताइसवां बाब

इब्तेला व अख़्तियार

1. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद स0 ने किसी का हुक्म बजा ना लाना और किसी नहीं का बजा लाना मगर यह कि उस में मशीयत और क़ज़ा व इब्तेलाए इलाही को दख़ल है (लेकिन न वह इसियां पर किसी को मजबूर करता है और न इसियां से राज़ी होता है चूंकि

उसने बन्दे को फ़ाएले मुख़तार बनाया है जैसा जो कुछ वह करना चाहता है उसे वह रोकता नहीं वरना जब्र हो जाये।)

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हुक्मे ख़ुदा और नबीए ख़ुदा के मुताल्लिक़ जो अफ़आल बजा लाये जाते हैं उनमें इब्तेला और क़ज़ाए इलाही को दख़ल है।

अटठाइसवां बाब

सआदत व शक़ावत

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने अपनी मख़लूक़ को पैदा करने से पहले सआदत (आफ़ियत ब–ख़ैर) व शक़ावत (आफ़ियत ब–ख़ैर न होना) को पैदा किया। जिस को सईद पैदा किया उस से कभी दुश्मनी न की अगर चे उस ने कोई बुरा काम किया उसके अमल से बुग़्ज़ रखा उसकी ज़ात से नहीं और जिसको शक़ी पैदा किया उसकी ज़ात को महबूब न रखा अगर उसने अच्छा काम किया तो उसके काम को तो पसन्द किया लेकिन उसकी ज़ात से दुश्मनी रखी। ख़ुदा जब किसी शै को दोस्त रखता है तो फिर उस से दुश्मनी नहीं करता और जिस से दुश्मनी रखता है उसे कभी दोस्त नहीं रखता उसे कभी दोस्त नहीं बनाता जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले मसलन काफ़िर को वह दुश्मन रखता है पस बहालते कुफ़्र वह कभी उसको दोस्त न रखेगा चाहे वह कैसा नेक काम क्यों न करे। हां

अगर इस्लाम कुबूल करले गा तो अदावत मोहब्बत में बदल जायेगी।

2. रावी कहता है इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स ने सवाल किया यबना रसूलिल्लाह अहले मासियत को शक़ावत लाहिक़ कहां से हुई कि ख़ुदा ने अपने इल्म में उन के लिये बद आमाली पर अज़ाब का हुक्म दिया। हज़रत ने फ़रमाया ऐ साएल हुक्मे ख़ुदा किसी को उस का हक़ अदा करने पर मजबूर नहीं करता जब हुक्म देता है तो अपने मोहब्बत वालों को अपनी मारेफ़त के लिये कुव्वत देता है और सख़्त आमाल को उनसे हटा लेता है और उनको क़ाबिलियत के लेहाज़ से तकलीफ़ देता है और अहले मासियत को कुव्वत देता है ताकि जो साबिक़ में उसके इल्म में गुज़र चुका है वह सहीह हो और न दी उन को इसतेताअते क़बूल या तौफ़ीक़े सब्र, पस उन का अमल मुवाफ़िक़ हुआ उस इल्मे इलाही के जो साबिक़ में उनके मुताल्लिक़ हो चुका था और वह ऐसे हालात पैदा करने पर क़ादिर न हुए जो अज़ाबे ख़ुदा से उनको नजात दे देते कि इल्मे इलाही औला है हक़ीक़त तसदीक़ के लिये और निशाने अहले मोहब्बत व अहले मासियत के लिये क्यों क़रार दिये हैं यह अल्लाह का राज़ है जिस को उसके सिवा कोई नहीं जानता।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कभी मर्दे सईद अशक़िया की राह पर गामज़न होता है और लोग कहने लगते हैं यह उन से किस कदर मुशाबे है बल्कि उन ही में से है फिर उस को सआदत पा लेती

है और शक़ावत उससे बरतरफ़ हो जाती है पस जिस को अल्लाह ने सईद क़रार दे दिया है उस का ख़ातमा सआदत पर होगा अगर चे दुनिया की मुद्दत इतनी कम रह जाये जितनी एक उटनी की दूध दोहने की होती है।

तौजीह : इस हदीस से यह न समझा जाये कि सईद व शक़ी ख़ुदा बनाता है वरना इस सूरत में बन्दा मजबूरे महज़ हो जायेगा बल्कि सूरत उसकी यह है कि जिस तरह किसी शख़्स के गुज़िश्ता वाक़ेआत पर नज़र रख कर किसी को सईद और किसी को शक़ी कहते हैं उसी तरह अल्लाह तआला अपने इल्म से हर शख़्स के उन अफ़आल को जान लेता है जो वह ज़िन्दगी में करने वाला है लेहाज़ा उसी इल्म के लेहाज़ से उस को शक़ी व सईद कहा जाता है इस इल्मे इलाही के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता लेकिन यह न समझना चाहिये कि इल्मे इलाही में गुज़र जाने के बाएस बन्दा उन अफ़आल पर मजबूर होता है इल्म तो उस के तमाम अफ़आल का फोटो है जिस तरह हमारा इल्म किसी के गुज़िश्ता अफआल बजा लाने का सबब क़रार नहीं पाता उसी तरह इल्मे इलाही बन्दें को उस के नेक व बद अफ़आल पर मजबूर नहीं करता।

उन्तीसवां बाब

ख़ैर व शर

1. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही की

और तौरैत में नाज़िल भी फ़रमाया कि मैं अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैने मख़लूक़ को पैदा किया और ख़ैर को पैदा किया और उस को जारी किया उस शख़्स के हाथों पर जिस को मैं दोस्त रखता हूँ पस बशारत हो उस के लिये जिस के हाथों से ख़ैर जारी हो।

2. हज़रत इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने अपनी किताबों में नाज़िल फ़रमाया कोई माबूद नहीं मेरे सिवा मैंने ख़ैर को पैदा किया और मैंने शर को पैदा किया पस ख़ुशखबरी हो उसके लिये जिसके हाथों पर मैं ने ख़ैर को जारी किया और वाये हो उस पर जिसके हाथों पर मैंने शर को जारी किया और वाये हो उस पर जो कहे ऐसा क्यों हुआ और वैसा क्यों हुआ।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा ए अज़्ज़ व जल्ल ने फ़रमाया मैं अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ख़ालिक़े ख़ैर व शर हूँ, वाये हो उस पर जिस के हाथों में शर जारी करूँ और वाये हो उस पर जो उस मामले में चूं चरा करे।

यूनुस ने कहा : ऊपर की हदीस से जो इन्कार करे वह ब—तकल्लुफ़ अक़्लमन्द बनता है अस्ल में अक़्लमन्द नहीं।

तौज़ीह : मज़कूरा बाला अहादीस से यह शुब्हा पैदा होता है कि शर का पैदा करने वाला और जारी करने वाला जब ख़ुदा है तो फिर बन्दा मजबूर क़रार पाया इस क़िस्म के वसवास शैतानी हैं अल्लाह तआला ने तमाम बुराइयों की जड़ शैतान को पैदा किया। लेकिन अपने

बन्दों को उस की शरारतों से बचने का हुक्म दिया जिस से मालूम हुआ कि वह शर पसन्द करने वाला नहीं इन्सान को अग़वाए शैतानी के दफ़ा करने के लिये अक़्ल भी दी जो उसका सुबूत है कि शर उसकी तरफ़ से नहीं उसने शैतान को शैतान बनाया नहीं बल्कि अपनी ना–फ़रमानी और बद आमाली से वह ख़ुद शैतान बना। अल्लाह तआला ने दुनिया में जितनी चीज़े पैदा की हैं वह सब ख़ैर हैं लेकिन उनका ग़लत इसतेमाल और किसी चीज़ के ख़्वास से ना–वाक़िफ होना उसके नुक़सान का बाएस हो जाता है और उसको शर कहा जाने लगता है मसलन अंगूर इन्सान के लिये बेहतरीन ग़िज़ा है लेकिन अगर इन्सान उसको शराब की शक्ल में ले आये तो यह ख़ैर को शर बनाना इन्सान का काम है चूंकि बिल–वास्ता हर शै का ताल्लुक़ कुदरते इलाही से है लेहाज़ा ख़ुदा ने तख़लीक़ व अजज़ाए शर को अपनी ज़ात की तरफ़ निसबत दे दी। ख़िलक़ते शर ब–लेहाज़ बन्दों की इस्लाह के लिये है वरना ख़ुदा ने शर वाली कोई चीज़ पैदा ही नहीं की, ज़हर हज़ार बीमारियों का इलाज है इस लिये वह ख़ैर है लेकिन उस का ग़लत इसतेमाल शर है लेकिन चूंकि ज़हर का ख़ालिक़ ख़ुदा है लेहाज़ा एक दूर की निसबत शर को उससे हो जाती है अगर ख़ुदा शर पसन्द होता तो शर की मज़म्मत क्यों करता और उस के बजा लाने वाले को मुसतहक़े अज़ाब क्यों क़रार देता।



तीसवां बाब

अलजब्र वलक़द्र व अम्र बैनलअमरैन

1. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम जंगें सिफ्फीन से वापसी पर एक रोज़ कूफ़े में बैठे थे कि एक शख़्स आप अ० की ख़िदमत में आया और आप अ० के सामने बैठ कर कहने लगा। ऐ अमीरूल मोमिनीन अ०! मुझे बतायें कि अहले शाम से मुक़ाबले के लिये हमारा जाना आया क़ज़ा व क़द्रे इलाही से था। हज़रत ने फ़रमाया हां ऐ शख़्स हमने तय नहीं की कोई बलन्दी और न कोई पस्ती मगर क़ज़ा व क़द्रे इलाही से। शेख़ ने कहा तो ऐ अमीरूल मोमिनीन अ० मेरी उस तकलीफ़ का ख़ुदा से अज्र मिलेगा। फ़रमाया सुन ऐ शेख़, ब–ख़ुदा अल्लाह तआला ने बड़ा सवाब रखा है। तुम्हारे चलने में जबकि तुम राहे ख़ुदा में जेहाद के इरादे से चलने वाले थे और तुम्हारे क़याम में जबकि तुम दुश्मन के सामने खड़े होने वाले थे और तुम्हारे बाज़ गश्त में जब कि तुम ईमान के साथ लौटने वाले थे और तुम अपने उन तमाम हालात में किसी वक़्त कराहत करने वाले थे और न इज़्तेराब ज़ाहिर करने वाले थे तो तुम्हारा यह जाना लड़ना और लौटना सब क़ज़ा व क़द्रे इलाही से था। शेख़ ने कहा चूकि यह सब ख़ुदा ही की तरफ़ से था और हम उस फ़ेल पर मजबूर थे और फ़ेल अख़्तियारी न था तो हम क्यों होते इन हालात में किसी हाल में कराहत करने वाले और इज़्तेराब करने वाले जबकि यह सब तहते क़ज़ा व क़द्रे इलाही था ख़्वाह चलना हो या ठहरना या

वापस आना। हज़रत ने फ़रमाया तो क्या और तेरा ख़याल यह है कि क़ज़ा के मानी यह हैं कि बन्दों को उनके अफ़आल पर मजबूर कर दिया जाये और क़द्रे लाज़िम ज़ाते बारी हो जिस का करना ख़ुदा के .... तो सवाब व अज़ाब और अम्र व नही और ख़ुदा की तरफ़ से ज़जर सब अबस और वादा वईद सब साक़ित और फिर गुनहगार के लिये मलामत कैसी और नेकी करने वाले के लिये तारीफ़ कैसी बल्कि गुनाहगार नेकूकार से ज़्यादा एहसान का मुसतहक़ होगा और नेकूकार गुनाहगार से ज़्यादा अज़ाब का मुसतहक़ होगा (क्योंकि जब कोई फेल बन्दों के इख़्तियार में नहीं तो बद से बद कराने वाला ख़ुदा हुआ। लेहाज़ा इस बदी में जो तकलीफ़ें दुनिया में उसे पहुंचीं आख़िरत में उस का अच्छा बदला मिलना चाहिये। इसी तरह नेकूकारों को सज़ा मिलनी चाहिये।

यानी जब्र का क़ाएल होना बरादराने मुफव्वुज़ा का अक़ीदा है और यह मुफ़व्वेज़ा बुत परस्त हैं और दुशमनाने ख़ुदा हैं और शैतानी गिरोह हैं और क़दरिया उस उम्मत के मजूस हैं।

तौज़ीह : जबरिया फ़िरक़े का अक़ीदा यह है कि बन्दा अपने हर फेल में मर्ज़ीए इलाही से मजबूर है ख़ुदा जो चाहता है बन्दा वही करता है मीर तक़ी मीर ने इसी की तरजुमानी ज़ेल के शेर में की है।

ना हक़ हम मजबूरों पर यह तोहमत है मुख़तारी की।
चाहते हैं सो आप करें हम को अबस बदनाम किया।।

मुफव्वेज़ा फिरक़े का अक़ीदा है कि ख़ुदा ने काफ़िर

से इताअत को चाहा और शैतान ने मअसियत को। पस जो शैतान ने चाहा वह हुआ और वह ग़ालिब रहा। मुफ़व्वेज़ा का यह भी अक़ीदा है कि ख़ुदा ने चन्द लोगों के सिपुर्द अपना काम करके मोअत्तल हो बैठा।

क़ादरिया फ़िरक़ा हर क़िस्म की कुदरत व तदबीर को अपनी तरफ़ निसबत देते हैं ख़ुदा को किसी काम में दख़्ल नहीं।

क़ादरिया फ़िरक़े के मुताल्लिक़ रसूलुल्लाह सलल्ल लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम ने फ़रमाया *अल्क़दरिया मजूसुन हाज़ेहिल्उम्मत* फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि क़दरिया इस उम्मत के मजूस हैं यही वह हैं जिन्होंने अदल के साथ ख़ुदा की तारीफ़ का इरादा किया। मगर उसकी सलतनत से उसको ख़ारिज़ कर दिया इन्हीं के बारे में यह आयत है रोज़े क़यामत उनको जहन्नम की तरफ़ मुंह के बल ख़ींचा जायेगा और कहा जाये गा। जहन्नम का ज़ाएक़ा चख़ो हमने हर शै को सही अन्दाज़ पर पैदा किया है।

बेशक अल्लाह ने मोकल्लफ़ बनाया है इन्सान को फ़ाएले मुख़तार की सूरत में और डरा कर बुरी बातों से रोका है और क़लील अमल पर कसीर सवाब दिया है और उसकी नाफ़रमानी इस लिये नहीं की गयी कि वह मग़लूब है और न उसकी इताअत जबरन कराई गयी है और न उस ने अपनी हुकूमत दूसरों के सिपुर्द की है और न उसने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है ग़लत पैदा किया है और न अम्बिया को जो बशारत देने वाले थे बेकार भेजा।

काफ़िरों ने ग़लत ख़याल किया है पस वाये हो उन पर जिन्हो ने कुफ्र किया। जहन्नम उनके लिये है पस उस शेख़ ने यह दो शेर पढ़े।

आप अ0 इमाम हैं हम रोज़े क़यामत आप अ0 की इताअत। की वजह से मग़फ़िरते इलाही की उम्मीद रखते हैं।।

आप अ0 ने हमारे तमाम शुबहात दूर कर दिये। खुदा आप अ0 को जज़ा दे एहसान का बदला एहसान ही होता है।।

रफ़ए इशतेबाह : इस सफ़े के शुरू में जो मज़मूने हदीस नक़ल किया गया हैं यह किताब "साफ़ी" शरहे उसूले काफ़ी में है जो न मालूम किस वजह से असल हदीसे अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम और शेख़ के दरमियान दाख़िल किया गया जो बिलकुल ग़ैर मरबूता है और जिसने हदीसे साबिक़ का सिलसिला क़ता कर दिया है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जिस ने गुमान किया कि अल्लाह बुराइयों का हुक्म देता है तो उसने अल्लाह पर झूठ बोला और जिसने यह गुमान किया कि ख़ैर व शर ख़ुदा की तरफ़ से है उसने ख़ुदा पर झूठ बोला।

3. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से पूछा क्या ख़ुदा ने तमाम मामलात को बन्दों के सिपुर्द कर दिया है फ़रमाया ख़ुदा की शान उस से बलन्द है मैने कहा तो फिर क्या उसने बन्दों को गुनाहों पर मजबूर किया है। फ़रमाया वह इस से बढ़ कर इन्साफ़ करने वला और हुक्म करने वाला है। फिर फ़रमाता

ख़ुदा फ़रमाया है (हदीसे कुदसी) ऐ इब्ने आदम मैं तेरी नेकियों का तुझ से ज़्यादा मुसतहक़ हूँ और तू अपनी बुराइयों के हक़ को मुझ से ज़ियादा हक़दार है क्योंकि तूने उस कुव्वत की वजह से गुनाह किये जो मैने तेरे अन्दर क़रार दी है।

4. यूनुस बिन अब्दुर्रहमान ने कहा कि फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने ऐ यूनुस क़दरिया का क़ौल न कहो क्योंकि उन्होने न तो अहले जन्नत की सी बात कही और न अहले दोज़ख की सी और न इबलीस की सी, अहले जन्नत ने कहा "हम्द है उस ज़ात के लिये जिसने हम को अपने दीन की तरफ़ हिदायत की और अगर वह हम को हिदायत न करता तो हम हिदायत पाते ही नहीं और अहले नार ने कहा : ऐ हमारे रब हम पर बदबख़ती ग़ालिब आई थी और हम गुमराह क़ौम से हो गये और इबलीस ने कहा ऐ पालने वाले तूनें तो गुमराही में छोड़ा ही है------ मैंने कहा मैं उनके क़ौल का क़ाएल तो नही यानी मोतज़ेला की तरह तफ़वीज़ का क़ाएल नहीं लेकिन यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ होता है अल्लाह की मशीयत और इरादे और क़ज़ा व क़द्र के तहत होता है फ़रमाया ऐ यूनुस ऐसा नहीं है। नहीं होती कोई चीज़ मगर उसकी मशीयत और इरादे और उसके क़ज़ा व क़द्र से।

तौज़ीह : इमाम अलैहिस्सलाम ने यह ज़ाहिर फ़रमाया कि मशीयत व इरादा और क़ज़ा व क़द्रे इलाही का ताल्लुक़ उमूरे ख़ैर से है नीज़ यह कि मशीयते इलाही बन्दों जैसी मशीयत नही है कि उस का ताल्लुक़ मआसी

से हो मआसी से ताल्लुक़ होना मनाफ़ीए अदालत हैं

फ़रमाया ऐ यूनस तुम जानते हो, मशीयत क्या है? मैने कहा नहीं। फ़रमाया मशीयते इलाही तदबीरे अव्वल है फिर फ़रमाया तुम जानते हो इरादा क्या है।? फ़रमाया वह बाक़ी रहना है उस ख़्वाहिश पर जिसे चाहा है तुम जानते हो क़द्र क्या है? मैंने कहा नहीं। फ़रमाया वह तदबीरे इलाही है मअय्यन करने में हरकात व अतराफ़ को अपने बन्दों के और उसके हुदूद व बक़ा व फ़ना का तईन, इसके बाद फ़रमाया क़ज़ा का ताल्लुक़ फेल बन्दा की उस्तवारी और अपने किसी फेल की ईजाद है।

5. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह ने मख़लूक़ को पैदा किया है और वह जानता था कि उन की बाज़गश्त उसी की तरफ़ होगी उसने उन को बाज़ चीज़ों के करने का हुक्म दिया है और बाज़ के करने से रोका है और जिस चीज़ के बजा लाने का उन को हुक्म दिया है इस के तर्क करने का रास्ता भी उन के लिये क़रार दिया (ताकि फेले इख़्तियारी रहे वरना एक ही सूरत में मजबूरी लाज़िम आती और जो कुछ करने वाले हैं। या नहीं करने वाले हैं वह तहते क़ुदरते इलाहिया हैं ऐसा नहीं कि हर अम्र बन्दों को तफ़वीज़ करके ख़ुद मोअत्तल हो बैठा। अगर वह चाहे तो हर बुरे अम्र से रोक सकता है लेकिन चूंकि बन्दा को फ़ाएले मुख़तार बना दिया है लेहाज़ा रोकता नहीं यही इज़्ने इलाही है।

6. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) ने फ़रमाया जिस ने यह

गुमान किया कि अल्लाह बुराइ और बदकारी का हुक्म देता है उस ने अल्लाह पर झूठ बोला और जिसने यह गुमान किया कि ख़ैर व शर बग़ैर मशीयते ख़ुदा है उसने अल्लाह को उसकी सलतनत से अलाहेदा कर दिया और जिसने गुमान किया मआसी बग़ैर ख़ुदा की दी हुई कुव्वत के बजा लाता है उसने ख़ुदा पर झूठ बोला और ऐसे का ठिकाना जहन्नम है।

7. रावी कहता है मस्जिदे मदीना में एक शख़्स क़ज़ा व क़द्र के बारे में कलाम कर रहा था और लोग उसके पास जमा थे। मैं ने कहा ऐ शख़्स मैं तुझसे कुछ पूछना चाहता हूँ उसने कहा पूछ। मैने कहा मुल्के ख़ुदा में कोई अम्र ऐसा भी हो सकता है जिस को वह न चाहता हो (यानी यह कि उस की कुदरत से बाहर हो) उसने अपना सर झुका लिया और फिर सर उठाया और कहा अगर मैं कहता हूँ कि उसके मुल्क में वह होता है जिस को वह नहीं चाहता तो वह मग़लूब व मकहूर क़रार पाता है और अगर यह कहता हूँ कि उसके मुल्क में वही होता है जिसका वह इरादा करे तो मैंने तेरे मआसी का इक़रार कर लिया। रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से बयान किया कि मैने उस क़दरिया से यह सवाल किया। पस उसने ऐसा ऐसा जवाब दिया। फ़रमाया उसने अपने नफ़्स पर ग़ौर किया अगर वह उसके ख़िलाफ़ कहता तो मुसतहक़े जहन्नम होता।

8. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रावी ने पूछा क्या मआसी पर ख़ुदा ने अपने बन्दों को मजबूर किया है फ़रमाया नहीं पूछा फिर क्या अपना मामला

उनके सिपुर्द कर दिया है। फ़रमाया यह भी नहीं पूछा फिर क्या है? फ़रमाया ख़ुदा का लुत्फ़ है उन दोनों के दरमियान यानी इन्सान मजबूर है न मुख़तारे कुल बल्कि उनके दरमियान एक मन्ज़िल है वह अपने फ़ेल का मुख़तार है लेकिन असबाबे फ़ेल मोहय्या करना उसके अख़्तियार में नहीं वह अपने काले रंग को गोरा नहीं बना सकता, अपने लम्बे क़द को छोटा नहीं कर सकता।

9. इमाम मोहम्मद बाक़िर और इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा इस से ज़्यादा मेहरबान है कि वह अपनी मख़लूक़ को गुनाहों पर मजबूर करे और फिर उस पर उनको सज़ा भी दे और ख़ुदा ज़्यादा इज़्ज़त व बुज़ुर्गी वाला है इससे कि वह किसी अम्र का इरादा करे और वह न हो। पूछा गया क्या जब्र व क़द्र के दरमियान कोई तीसरी मन्ज़िल और है फ़रमाया है वह आसमान और ज़मीन की वुसअत से ज़्यादा है।

10. किसी ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से जब्र व क़द्र के मुताल्लिक़ पूछा। फ़रमाया न जब्र है न क़द्र है बल्कि उन दोनों के दरमियान एक मन्ज़िलत है और वही हक़ है नहीं जानता उसको मगर आलिम या वह जिसे आलिम ने तालीम दी हो।

11. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा क्या ख़ुदा ने अपने बन्दों को गुनाहों पर मजबूर किया है फ़रमाया जबकि ख़ुदा आदिल है तो यह कैसे मुम्किन है कि वह अपने बन्दों को मआसी पर भी मजबूर करे और फिर अपना अज़ाब भी नाज़िल करे। रावी ने कहा तो क्या ख़ुदा ने हर मामले को बन्दों के सिपुर्द कर

दिया है फ़रमाया अगर सिपुर्द कर दिया जाता तो उनके लिये अम्र व नही के बताने की क्या ज़रूरत थी, रावी ने फिर कहा । उनके लिये तीसरी मन्ज़िल है। फ़रमाया वह ज़मीन व आसमान से ज़्यादा वसीअ है।

12. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से कहा कि हमारे बाज़ असहाब जब्र के क़ाएल हैं और बाज़ इसतेताअत के। हज़रत ने मुझ से फ़रमाया लिखो *बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* फ़रमाया इमाम जैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने कहा कि ख़ुदा ने फ़रमाया ऐ इब्ने आदम मेरी मशीयत से तूने कोई चीज़ चाही और मेरी दी हुई कुव्वत से तूने मेरे फ़राएज़ अन्जाम दिये और मेरी नेमत की वजह से तू मेरी मासियत पर क़वी दिल हुआ। मैने तुझ को सुनने वाला और देखने वाला बनाया पस जो नेकी तुझ से होती है वह अल्लाह की तरफ़ से है और जो बुराई होती है वह तेरे नफ़्स की तरफ़ से है ग़ौर कर तेरी नेकियों का मैं तुझ से ज़्यादा हक़दार हूँ और बुराइयों का मुझसे ज़्यादा तू। मुझ से सवाल का किसी को हक़ नहीं और बन्दों से सवाल होगा जिस बात को तू इरादा करता है उस का इन्तेज़ाम मैं करता हू।

13. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया न जब्र न तफ़वीज़ है बल्कि एक अम्र है उन दोनों अम्रों के दरमियान, रावी ने पूछा वह क्या है फ़रमाया उसकी मसल है कि एक शख़्स मसीयत पर आमादा तुम्हारे पास आया। तुमने उसको बाज़ रखना चाहा। वह बाज़ नहीं आया तुम ने उसे छोड़ दिया। उस ने हर बुराई कर डाली और तुम्हारी बात न सुनी तो क्या

उस सूरत में यह कहा जायेगा कि तुमने उसे मअसीयत का हुक्म दिया। मुराद यह है कि अल्लाह तो अपने अहकाम के ज़रिये से बुरे कामों से रोकना चाहता है लेकिन जब्र से नहीं पस जो बन्दा गुनाह से बाज़ नहीं आता तो उसका इलज़ाम ख़ुदा पर क्या?

14. हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह की शान इससे बुजुर्ग है कि वह लोगों को ऐसे उमूर की तकलीफ़ दे जिस की वह ताक़त नहीं रखते और यह अम्र इज़्ज़ते बारीए तआला के ख़िलाफ़ है कि उसकी हुकूमत में कोई ऐसा काम हो जिस को वह नहीं चाहता।

इकतीसवां बाब

अल इस्तेताअत

1. रावी कहता है मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से पूछा इसतेताअत से क्या मुराद है फ़रमाया बन्दा चार ख़सलतों से मुसततीअ होता है अव्वल राहे अमल मुज़ाहेमत से ख़ाली हो या दूसरे उसका बदन ऐब से ख़ाली हो। जैसे बीमारी की हालत में आदमी पूरा काम नहीं कर सकता तीसरे असबाब व आलात में कमी न हो (जैसे माल वग़ैरा का कम होना) चौथे मशीयते इलाही का उससे ताल्लुक़ होना।

रावी ने कहा मैं आप अ0 पर फ़िदा हूँ इसकी तौज़ीह कीजिये फ़रमाया अगर कोई बन्दा बग़ैर मुज़ाहेमत के हो, सहीह जिस्म हो और आज़ा दुरूस्त हो और वह

ज़िना का इरादा करे मगर औरत न मिले फिर अगर मिल जाये तो उसका नफ़्स अपने को बचाने की तरफ़ मुतवज्जेह हो पस वह रूक जाये जैसे यूनुस अ0 रूक गये थे या उसके और उसके इरादे के दरमियान ख़लल पैदा हो जाये यानी तौफीक़े इलाही और मशीयते ईज़दी उस के साथ न हो और ज़िना करे तो उसको ज़ानी कहा जायेगा। दर सूरत अपने को बचाने के लिये उसने इताअते ख़ुदा पर मजबूर हो कर नहीं की और दर सूरते मआसीयत उसने ख़ुदा पर ग़लबा नहीं पा लिया।

2. अली बिन हकम और अब्दुल्लाह बिन यज़ीद से बसरे के एक शख़्स ने कहा मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि इसतेताअत से क्या मुराद है इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या तू इस पर कुदरत रखता है कि वह इबादत ब–सूरते अदा बजा लाये जो ज़मानए माज़ी में तुझसे क़ज़ा हो गयी है उसने कहा नहीं हज़रत ने फ़रमाया क्या तू कुदरत रखता है इस बात पर कि अपने को बाज़ रखे उस मअसीयत से जो तू कर चुका है ज़मानए माज़ी में और दूर करदे ज़मानए माज़ी की मअसीयत को उस ने कहा नहीं फिर फ़रमाया तुझे कुदरत कब हासिल हुई उस ने कहा नहीं जानता।

फ़रमया हज़रत ने कि ख़ुदा ने जिन लोगों को मुकल्लफ़ बनाया है तो आलाते इसतेताअत भी दिये हैं ताकि वह फेल अमल में ला सके जिसका मुकल्लफ़ बनाया गया है यह इसतेताअते वक़्त फेल से मुताल्लिक़ है न कि उस को कुल्ली इख़्तियार सिपुर्द कर दिये गये हों पस लोग कुदरत रखते हैं वक़्ते फ़ेल जबकि वह फ़ेल

अमल में लाया जाये। (न क़ब्ले फ़ेल न बादे फ़ेल। बल्कि यह इसतेताअत सिर्फ़ वुकूएं फेल के वक़्त है।)

पस अगर अम्र मुकल्लफ़ बिही को बजा न लाये तो वह साहेबे इसतेताअत न कहा जायेगा क्योंकि फेल का इज़हार न हो पाया जैसा कि मूसा से ख़िज़्र ने कहा *"लन तस्ततीआ तएया सब्रो"* क्योंकि सब्र का वक़्त वुकूंए फेल इज़हार न हुआ। और अल्लाह तआला बलन्द व बरतर है उस से कि मुल्क में कोई ज़िद बन कर रहे यानी जिस को वह न चाहे वह अम्र वाक़े हो इस सूरत में उस की सलतनत ज़ईफ़ हो जायेगी।

बसरी ने कहा कि इस सूरत में तो लोगों का मजबूर होना लाज़िम आयेगा। फ़रमाया अगर मजबूर क़रार दिये गये तो फिर वह क़ाबिले माफ़ी होने चाहिये। उस ने कहा अगर मजबूर नहीं तो फिर तफ़वीज़ है। फ़रमाया ऐसा भी नहीं कि ख़ुदा अपने अख़्तियार खो बैठा हो। उसने कहा तो लोगों के लिये क्या सूरत होगी जबकि न जब्र है न तफ़वीज़। फ़रमाया ख़ुदा के इल्म में यह बात थी कि फ़लां शख़्स अमल करेगा लेहाज़ा ख़ुदा ने लोगों के लिये अमल करने का सामान फ़राहम कर दिया पस अगर उन्होने कोई काम करना चाहा तो उसकी इसतेताअत उन में मौजूद थी बसरी ने कहा कि यह हक़ है और मैं गवाही देता हूँ कि आप अहलेबैते नबूवत व रिसालत से हैं।

3. सालेह नैली ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा क्या बन्दों में कोई काम करने की इसतेताअत है फ़रमाया जब वह कोई काम करते हैं तो वह उसके करने

पर कुदरत रखते हैं और यह ख़ुदा की दी हुई ताक़त होती है उनके अन्दर। मैंने कहा उस की सूरत क्या है। फ़रमाया ज़िना की तरह है जब कोई ज़िना पर आमादा हो तो ज़िना के वक़्त उस में कुदरते ज़िना होती है और अगर वह ज़िना तर्क करे तो उसके तर्क की भी कुदरत होती है (लेकिन न वह मजबूरे महज़ है और न बिलकुल मुख़तार)।

फिर फ़रमाया क़ब्ले फ़ेल किसी को कुदरत हासिल नहीं होती है चाहे वह काम कम हो या ज़्यादा लेकिन फ़ेल के फ़ाएल या तारिक होने की सूरत में इसतेताअत होती है कुल्लिया हर हालत में नहीं न क़ब्ल न बाद जो कुछ है वह तहते मशीयते इलाही है उस के दाएरे कुदरत से बाहर नहीं।

मैंने कहा जब बन्दे को अख़्तियारात और कुदरत ही नहीं तो ख़ुदा अज़ाब क्यों देता है इसलिये कि उसने अम्बिया व मुरसलीन के ज़रिये हर नेक व बद को समझा दिया उनको गुनाह व तर्के गुनाह पर कुदरत भी दे दी और मअसीयत पर किसी को मजबूर भी नहीं क्या। ख़ुदा के इल्म व इरादे में यह बात आ चुकी है कि फ़लां फ़लां लोग ख़ैर की तरफ़ आने वाले नहीं हैं मैंने कहा तो ख़ुदा ने उनके कुफ़्र का इरादा किया। फ़रमाया मैं यही हों कि यह बात उस के इल्म में थी कि फ़ंला लोग कुफ़्र करेगे तो उसने अपने इस इल्म की तजह से अपने इरादे को उनके कुफ़्र से मुताल्लिक़ किया। लेकिन यह इरादा हतमी नहीं बल्कि अख़्तियारी है यानी उसने कुफ़्र को उन पर लाज़िम नहीं क़रार दिया बल्कि कुफ़्र अख़्तियार

करना या न करना लोगों के अख़्तियार में था पस जो बात उसके इल्म में आ चुकी थी उसके मुताबिक़ उस का इरादा हुआ।

4. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा। इसतेताअत क्या है हज़रत ने जवाब न दिया मैं दूसरी बार फिर हाज़िरे ख़िदमत हुआ और कहा अल्लाह तआला आप को हिफ्ज़ व अमान में रखे। मेरे दिल में एक ख़याल है जो उस वक़्त तक दिल से दूर न होगा जब तक आप से जवाब न सुन लूँ। फ़रमाया जो वसवसा तेरे दिल में है तुझे ज़रर न पहुंचाये गा। मैंने कहा मैं कहता हूँ कि ख़ुदा ने अपने बन्दों को तकलीफ़ नहीं दी उस अम्र की जिस पर वह कुदरत नहीं रखते और नहीं तकलीफ़ दी मगर उसी चीज़ की जिस की वह ताक़त रखते हैं और यह कि वह नहीं करते वही मगर वही जो अल्लाह करता है इरादा और उसकी मशीयत होती है और क़ज़ा व कुदरत हो फ़रमाया यही अल्लाह का दीन है जिस पर मैं भी हूँ और मेरे आबा भी थे।

तौज़ीह : अल्लाह तआला ने इन्सान को उस के अफ़आल में मुख़तार बनाया है पस जो कुछ वह करना चाहता है या नहीं करना चाहता ख़ुदा उस को फ़ेल या तर्के फ़ेल पर कुदरत देता है ताकि वह इरादी से बजा ला सके वरना बन्दे को अपनी मजबूरियों का उज़्र होगा लेकिन यह अख़्तियार इन्सान को वक़्ते फ़ेल दिया जाता है न क़ब्ल न बाद जो पहले हो चुका वह उसको आगे नहीं ला सकता और जो आगे होने वाला है उसको हाल में कर दिखाने की उस में ताक़त नहीं। उस के हर अमल

से इरादाए इलाही का ताल्लुक़ इस बिना पर हो जाता है कि अगर वह किसी अमल के लिये उसके असबाब फ़राहम न करे तो बन्दा मजबूर होकर रह जाये लेकिन उस से शिरकत फ़िल अमल लाज़िम नहीं आयी।

बत्तीसवां बाब

बयान व तारीफ़ व लुज़ूमे हुज्जत

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा ने अपने बन्दों पर हुज्जत तमाम की है दो चीज़ों से अव्वल अपनी नेमतें जो उसको दी हैं और दूसरे अपने अम्बिया व मुरसलीन के ज़रिये हिदायत करा के।

2. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा मारेफ़त (अल्लाह रसूल व इमाम) का ताल्लुक़ किस की तदबीर से है फ़रमाया तदबीरे इलाही से है बन्दों से ताल्लुक़ नहीं, यानी असबाबे मारेफ़त वह मोहय्या करता है अपनी आयात से अम्बिया और मुरसलीन की बेसत से उस के बाद बन्दों का फ़र्ज़ है कि वह मारेफ़त हासिल करें।

3. सालबा बिन मैमून ने हमज़ा बिन मोहम्मद तय्यार से और उन्हों ने पूछा इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से उस क़ौले ख़ुदा के बारे में अल्लाह किसी क़ौम को उसकी हिदायत के बाद गुमराह नहीं करता हत्ता कि वह उन्हें उन चीज़ों को बता दे जिन से वह परहेज़ करे। यहां तक कि ख़ुदा मारेफ़त करा देता है उन चीज़ों की जिन से वह राज़ी होता है और जिन से नाराज़ होता है।

और फ़रमाया (आयत) पस इलहाम कर दिया उसने नफ़्स पर उस फुजूर व तक़वे को, फ़रमाया ज़ाहिर कर दिया कि उसे करना है और कैसा छोड़ना है।

और फ़रमाया (आयत) हमने हिदायत की उसे राहे दीन की, वह चाहे शुक्रगुज़ार हो चाहे कुफ्र करे फ़रमाया उसके मानी यह हैं कि हमने उसे मारेफ़त क़रा दी उस चीज़ की जिसे लेने वाला है और जिसे छोड़ने वाला है।

और इस आयत के मुताल्लिक़ समूद को हमने हिदायत की। पस उन्हों ने हिदायत पर गुमराही को दोस्त रखा इसके मानी यह हैं कि हमने उन को मारेफ़त करा दी थी लेकिन हिदायत को छोड़ कर गुमराही अख़्तियार की। दर आं हाले कि वह हिदायत की मारेफ़त हासिल कर चुके थे।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने (आयत) हम ने दोनों रास्ते दिखा दिये यानी ख़ैर व शर।

5. मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा ख़ुदा आप अ0 की मुहाफ़िजत करे क्या ख़ुदा ने आदमियों में से ऐसे आलात व असबाब पैदा किये हैं कि वह उनसे मारेफ़त हासिल करे फ़रमाया नहीं। मैंने कहा फिर तकलीफ़े मारेफ़त क्यों दी गयी। फ़रमाया अल्लाह पर उमूरे मारेफ़त का बयान लाज़िम है वह किसी नफ़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता बल्कि उतनी ही देता है जिस को बरदाश्त कर सके।

रावी कहता है मैने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुताल्लिक़ पूछा। अल्लाह हिदायत के बाद किसी क़ौम पर ज़ुल्म नहीं करता।

फ़रमाया वह उन को मारेफ़त करा देता है इस बात की कि क्या इस अम्र की रिज़ा का बाएस है।

6. फ़रमाया इमाम अलैहिस्सलाम ने अगर ख़ुदा अपने बन्दों को नेमत देता है तो उस पर अपनी हुज्जत तमाम करता है ताकि वह सहीह तरीक़े से इसतेमाल करे। पस जिस को उस ने अपने एहसान से क़वी बनाया तो उस पर लाज़िम क़रार दिया कि वह अपने से कम ताक़त वाले और ज़ईफ़ का बोझ उठाले, और जिसको मालदार बनाया उस पर लाज़िम क़रार दिया कि वह फ़ुक़रा की मदद करे और जिसको अपने एहसान से उसके ख़ानदान को इज़्ज़त वाला बनाया। अच्छी सूरत अता की तो उस के लिये लाज़िम हुआ कि उस पर ख़ुदा की हम्द करे और किसी पर ज़ुल्म न करे कमज़ोरों के हक़ को रोके नहीं। अपने शरफ़ व जमाल के वक़्त।

तेतीसवां बाब

ततिम्मा बाबे साबिक़

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि छः चीज़े हैं जिन में बन्दों की तदबीर को दख़्ल नहीं, मारेफ़त, जेहालत, रिज़ा, ग़ज़ब, सोना और जागना।

चौंतीसवां बाब

मख़लूक़ पर ख़ुदा की हुज्जतें

1. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि मख़लूक़े ख़ुदा के लिये नहीं है यह बात कि वह

ख़ुदा को पहचानें बल्कि ख़ुदा पर लाज़िम है कि वह पहचनवाये और मख़लूक़ पर लाज़िम है कि जब ख़ुदा मारेफ़त करा दे तो उस को कुबूल करे।

2. मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने सूछा। अगर कोई मारेफ़ते बारीए तआला को पहचानने का ज़रिया न रखता हो तो उस पर कोई इलज़ाम होगा। फ़रमाया नहीं।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा ने अपने कमज़ोर (ज़ईफुल अक़्ल) बन्दों से दलाएले रूबूबियत से जो पोशीदा रखा है तो उन से तकलीफ़ बर तरफ़ है।

4. हम्ज़ा बिन तय्यार ने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि आप ने फ़रमाया। हमारा यह क़ौल लिखो कि अल्लाह तआला ने अपनी नेमतें दे कर अपने बन्दों पर हुज्जत तमाम की है और उनको अपनी मारेफ़त कराई है फिर उन की तरफ़ अपने रसूल को भेजा और उन पर किताब नाज़िल की और उसमें अम्र व नही का ज़िक्र किया, हुक्म दिया नमाज़ का रोज़े का, रसूले वक़्ते सुब्ह ख़्वाब में थे। ख़ुदा ने कहा मैं ही तुझे सुलाता हूँ मैं ही तुझे जगाता हूँ मैं ही बीमार डालता हूँ (जो रोज़ा ब-हालते बीमारी तर्क हो गया हो) उसे बाद में अदा करो।

फिर हज़रत ने फ़रमाया उसी तरह जब तुम नज़र करो गे तमाम अशिया में तो तुम किसी को दिल तंगी में न पाओगे (क्योंकि अहकामे शरअ तकलीफ़े माला मुताक़

नहीं) और किसी को न पाओगे उस पर ख़ुदा की हुज्जत तमाम न हुई हो। और अल्लाह की इसमें मशीयत न हो और मैं यह नहीं कहता कि लोग जो चाहें वह कर गुज़रें बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत करता है और जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है।

और फ़रमाया लोगों को हुक्म नहीं दिया गया। मगर उनकी ताक़त से कम और जिस काम का हुक्म दिया गया है वह उसकी ताक़त रखते हैं और जिस की ताक़त नहीं रखते उसकी तकलीफ़ नहीं दी गयी। लेकिन वह ख़ैर वाले लोग फिर फ़रमाया कमज़ोरों और बीमारों को तकलीफ़ नहीं दी गयी और न उन लोगों को जो राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के लिये कुछ नहीं रखते फिर फ़रमाया नेकी करने वालों पर कोई इलज़ाम नहीं अल्लाह बख़्शने वाला है और रहम करने वाला है और उन लोगों पर जो तुम्हारे पास इस लिये आते हैं कि तुम उन को सवारी दो। फ़रमाया उन से तकलीफ़ हटा ली गयी, क्योंकि उनके पास कुछ नहीं।

पैतीसवां बाब

हिदायत मिन जानिब अल्लाह है

1. साबित इब्ने सईद से मरवी है कि इमाम जाफरे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ साबित तुम हमारे दुश्मनों से क्यों मिलते हो। उन के इख़तेलाफ़ से बाज़ रहो और उनमें से किसी को अपने मज़हब की तरफ़ न बुलाओ। ख़ुदा की क़सम अगर तमाम अहले ज़मीन और

आसमान उस बन्दे की हिदायत करना चाहें जिसे ख़ुदा ने गुमराही में छोड़ने का इरादा कर लिया है तो वह उसकी हिदायत पर कुदरत न रख सकें गें। अगर तमाम अहले आसमान व ज़मीन उस शख़्स को गुमराह करना चाहें ख़ुदा जिसकी हिदायत का इरादा रखता हो तो उनकी ताक़त से बाहर है।

लोगों (हमारे दुश्मनों) से बाज़ रहो और कोई यह न कहे कि यह मेरा चचा है मेरा भाई है यह मेरा चचेरा भाई है यह मेरा पड़ोसी है क्योंकि अल्लाह तआला जिस बन्दे के लिये नेकी का इरादा करता है उसकी रूह को पाक करता है पस वह अच्छी बात को कुबूल करता है और बुरी बात से नफ़रत करता है ख़ुदा उसके दिल में ऐसा कलमा डाल देता है कि उसके ईमान के तमाम अजज़ा जमा हो जाते हैं।

2. इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, जब ख़ुदा किसी से नेकी का इरादा रखता है तो उसके दिल में एक नूर का नुक़्ता लगा देता है और दिल के मसामात को खोल देता है और एक फरिशते को मुकर्रर करता है ताकि वह उसकी बुराई को रोक दे और जिस किसी के लिये बुराई चाहता है उसके दिल में सियाह नुक़्ता पैदा कर देता है और उसके दिल तक आवाज़ पहुंचने को बन्द कर देता है और शैतान को उस पर मुक़र्रर करता है ताकि वह उसको गुमराह करदे फिर यह आयत तिलावत की। ख़ुदा जिसको हिदायत करना चाहता है इसलाम के लिये उसका सीना कुशादा कर देता है और जिसको गुमराही में छोड़ना चाहता है उसके

सीने को तंग बना देता है इसके लिये कुबूले इस्लाम गोया आसमान पर चढ़ना हो जाता है।

तौज़ीह : इस हदीस से बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है बन्दा मजबूर है ख़ुदा जिसको चाहता है बद कर देता है लेकिन अगर ऐसा हो तो जज़ा और सज़ा सब बेकार, हक़ीक़त यह है कि हदीसे मज़कूर में जो कुछ बयान हुआ है उसका ताल्लुक़ ख़ुदा की तौफ़ीक़ और तफ़ज़्ज़ुल से है जब उसके इल्म में यह बात होती है कि फ़ंला शख़्स ख़ैर पसन्द और नेकूकार होगा तो उसकी तौफीक़ व तफ़ज़्ज़ुल का ताल्लुक़ आलमें वुजूद में आने के बाद उससे हो जाता है वरना नहीं।

फ़रमाया इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जो कलाम करो अल्लाह के लिये करो बन्दों की ख़ुशी के लिये न करो जो काम अल्लाह के लिये होता है वह अल्लाह ही के लिये होता है और जो काम बन्दों के लिये होता है वह अल्लाह तक पहुंचता नहीं और दीन के मामले में अल्लाह से झगड़ा न करो क्यों कि उस से दिल मुबतिलाये आफ़त हो जाता है।

ख़ुदा ने अपने नबी स0 से फ़रमाया तुम जिस को दोस्त रखते हो उसे मतलूब तक नहीं पहुंचा सकते (सिर्फ़ इरादतुत्तरीक़ कर सकते हो) लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है मतलूब तक पहुंचा देता है और यह भी फ़रमाया, तुम्हें यह बात ना–गवार गुज़रती है कि सब लोग मोमिन क्यों नहीं हो जाते। (रावी से) तुम लोगों को छोड़ो, क्योंकि उन्होंने जो हासिल किया है लोगों से हासिल किया है और तुम ने जो कुछ लिया है वह रसूलुल्लाह स0 से लिया है।

मैंने अपने पदरे बुजुर्गवार हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना है कि जब ख़ुदा लिख देता है किसी बन्दे के लिये कि वह तसदीक़े इमामत में दाख़िल हो तो उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ता है जैसे ताएर अपने आशियां की तरफ।

फ़ुज़ैल बिन यसार से मरवी है कि मैंने इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा। हम लोगों को अम्रे इमामत की तरफ़ बुलायें। फ़रमाया नहीं। ऐ फ़ुज़ैल नही। जब ख़ुदा किसी बन्दे से नेकी का इरादा करता है तो फ़रिशते को हुक्म देता है वह उसकी गरदन पकड़ कर इस अम्र की तरफ़ मुतवज्जेह कर देता है चाहे वह ख़ुश हो या ना ख़ुश।

तौज़ीह : चूंकि हर ज़माने में हुकूमतें हमारे अइम्मा के ख़िलाफ़ रही हैं लेहाज़ा उन्हों ने खुल्लम खुल्ला इमामत की तरफ़ बुलाने से रोका है और इस मामले को तौफीक़े इलाही के सिपुर्द किया।

बिहम्दिल्लाह किताब उसूले काफ़ी का पहला हिस्सा जिस में किताबुल अक़्ल वल जेहल और किताबुत्तौहीद शामिल है ब–ख़ैर व ख़ूबी ख़त्म हो गया। अब हम ख़ुदा से मदद के ख़्वासतगार हो कर किताबे हुज्जत शुरू करते हैं।

जिल्द अव्वल तमाम

✦✦✦✦✦✦✦

अब्बास बुक एजेन्सी

की हिन्दी में प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

No.	Writer / Translated by	Price
अनवार	मौलाना अदीब–उल–हिन्दी	12/–
इस्लाम के पथप्रदर्शक	आयतुल्ला–हिल–उज़्मा सैय्यद अली नक़ी	25/–
बोहलोल दाना	सैय्यदा आबिदा नर्जिस	20/–
खुरूजे मुख़्तार	सैय्यद मोहम्मद अली इफ़्ज़ाई	10/–
आदाबे ज़िन्दगी	हज़रत अली अ0 की नज़र में	10/–
इस्लाम और सेक्स	डॉ0 मोहम्मद तक़ी अली आबिदी	35/–
इस्लाम और पर्दा	अल्लामा सैय्यद ज़ीशान हैदर जवादी	12/–
मुस्लिम पर्सनल लॉ	आयतुल्लाह–हिल–उज़मा सै0 अली नक़ी नक़वी	8/–
क़यामते सुग़रा	सैय्यद मो0 अब्बास क़मर ज़ैदी	35/–
. ज़ंजीर–ए–बार्मुदा	सैय्यद मो0 अब्बास क़मर ज़ैदी	30/–
. मरने के बाद क्या होगा	(शेख़ अब्बास कुम्मी) अनुवाद बी0एस0 नक़वी	40/–
. उठो ख़ूने हुसैन का इन्तिक़ाम लो	सैय्यदा आबिदा नर्जिस	38/–
. इस्लामी तालीम	(मुख़तसर तर्जुमा तहज़ीबुल इस्लाम) अल्लामा मजलिसी	20/–
. एलिया	हकीम सैय्यद महमूद गीलानी	12/–
. ओम और अली	हकीम सैय्यद महमूद गीलानी	10/–
. जनाबे फ़िज़्ज़ा	राहत हुसैन नासरी	12/–
. कुरआन और साइंस	डॉ0 कल्बे सादिक़ साहब (बारह मजलिस अमेरिका)	45/–
. नहजुल बलाग़ह	(कलामे हज़रत अली अ0) सै0 हामिद रिज़वी करारवी	170/–
. सच्ची कहानियां भाग – 1–2	अल्लामा मुर्तज़ा मुतहरी	75/–
. तौज़ीहुल मसाएल	आयतुल्लाह सय्यद अली सीस्तानी	50/–
. नज़्म–उल–अज़ा (तारीख़वार नौहे)	बदरून्निसां	35/–
. हज़रत आयशा की तारीख़ी हैसियत	फ़रोग़ काज़मी	45/–
. तफ़सीरे करबला	फ़रोग़ काज़मी	70/–
. उसूले तरबियत	अल्लामा सै0 इब्ने हसन नजफ़ी, अनु0 बी0ए0नक़वी	25/–
. ज़िन्दगी मौत के बाद	इम्तियाज़ हैदर प्रतापगढ़ी	35/–
. मजालिसे ख़्वातीन	मौलाना सै0 ज़फ़र हसन अमरोही	45/–
. मुझे रास्ता मिल गया	डॉ0 मो0 तीजानी समावी	50/–
. आलमे बरज़ख़	दसतग़ैब शीराज़ी, अनु0 अब्बास इरशाद नक़वी	25/–
इमाम जाफ़र–ए–सादिक अ0 और वैज्ञानिक अविष्कार	अनु0 बी0ए0 नक़वी	50/–
. उसूल नमाज़ रंगीन आर्ट पेपर	मौलाना सै0 जव्वाद हैदर साहिब	12/–
. 100 तारीख़ी कहानियां	अनुवाद–अब्बास इरशाद नक़वी	40/–
. हज़रत अली अ0 के फ़ैसले	उर्दू अनुवाद–सैय्यद मो0 बाक़र नक़वी	60/–
. इस्लाम का आर्थिक विधान	सै0 मो0 रज़ी जंगीपुरी तर्जुमा सदफ़ जौनपुरी	35/–
. तारीख़े इस्लाम – भाग–1 (नबियों के हालात)	फ़रोग़ काज़मी हिन्दी अनु0–फेथ पब्लिशिंग सर्विसेज़	60/–
. तारीख़े इस्लाम – भाग–2 (हज़रत मो0 स0अ0 के हालात)	फ़रोग़ काज़मी हिन्दी अनु0–फेथ पब्लिशिंग सर्विसेज़	90/–
. तारीख़े इस्लाम – भाग–3 (तारीख़े ख़िलाफ़त के तीन दौर)	फ़रोग़ काज़मी हिन्दी अनु0–फेथ पब्लिशिंग सर्विसेज़	55/–
. तारीख़े इस्लाम – भाग–4 (हज़रत अली अ0 जुहूर इमाम तक के हालात)	फ़रोग़ काज़मी हिन्दी अनु0–फेथ पब्लिशिंग सर्विसेज़	90/–
. चौदह सितारे (हालात चौदह मासूमीन)	मौलाना नजमुल हसन करारवी अनु0	150/–
. तोहफ़तुल अवाम (ज़रूरी मालूमात के साथ)	डॉ0 मो0 तक़ी अली आबिदी	100/–
. कुरआने मजीद	(तर्जुमा मो0 फ़रमान अली) अनु0–सै0 अ0इ0 ज़ैदी	160/–
. तहज़ीबुल इस्लाम	अल्लामा मजलिसी	120/–
. ताजदारे वफ़ा (हालात हज़रत अब्बास अ0स0)	हसन लखनवी	20/–
. इरफ़ान–ए–इमामत (ज़रूरी मालूमात के साथ)	जफ़र अब्बास कश्मीरी	70/–
. मौत से क़यामत तक	सै0 सईद अख़्तर रिज़वी	35/–
. हज़रत अली अ0 का जीवन परिचय	अनीस फ़ात्मा	20/–
. मजालिसे अज़ीम	मौलाना कल्बे आबिद साहब	35/–
. बदरुल अज़ा	तारीख़वार नौहे	45/–
. दोस्ती और दोस्त	आयतुल्लाह हिल उज़मा सै0 मो0 हुसैन फ़ज़लुल्लाह	30/–
. नमाज़ व दीनियात	मौ0 सै0 फ़रमान अली साहब	7/–
. कुरआनी किस्से	अनीस फ़ातिमा	25/–

The Holy Qur'an : 500/- By : M.M.M. Pooya Yazdi & S.V. Mir Ahmad Ali (2) Nahj-al-Balaghah : 0/- By : Amiral-Mu'Minin, Ali ibn Abi Talib (a.s.) (3) Tohfatul Awam : 50/- By : Allama Ghulam-e-Ali ji Naji (4) Abu Dhar Ghafari in Islamic History : 30/- By : S.M. Jaffar (5) Al-Muraja'at : 150/- By yed Abdul Husain Sharfuddin-al-Musavi (6) The Caliphate : 120/- By : Agha Muhammad Sultan Mirza) 40 Hadith By : Ayatullah Khumaini (8) Shaheed-e-Insaniyat, 120/- By : Allama Ali Naqi Naqvi

लने का पता : **अब्बास बुक एजेन्सी** रूस्तम नगर, लखनऊ। फोन 647590, 501816 फैक्स – 647910